6115. Price R. 1-0-0

शार्ङ्गधर संहिता

सارنگ دهر

भाषा टीका सहित

जिस में

श्री शार्ङ्गधर महाराज ने सज्जन मनुष्यों के मन रञ्जन के अर्थ सुश्रुत चरक आदि अनेक प्राचीन वैद्यों के निश्चित किये प्रसिद्ध योग निज इष्ट देव शिव पार्वती की वन्दना पूर्वक अति प्रयत्न से सम्पूर्ण रोगों की व्याख्या उत्पत्ति लक्षण यत्न सङ्ग्रह कर रचे हैं

बाजपेयि परिडत राम रत्न के द्वारा शुद्ध होय

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के शिलायन्त्रालय में मुद्रित हुवा

मार्च सन् १८७७ ई०

इस महीने अर्थात् मार्च सन् १८७७ ई॰ पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैय्यार हैं वह इस सूची पत्र में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर नियत हुवा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्योपार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर कीमत का निर्णय करलें।

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
दुर्गा पाठ सटीक	विक्रम विलास	बहार विन्द्रा बन
अपराध भञ्जन स्तोत्र	अवध यात्रा	हनूमान बाहुक
मार्कण्डेय पुराण	ज्ञान चालीसी	सुन्दरी चरित्र
श्रीमद्भागवत सटीक	रस राज	पद्मा वती खण्ड आल
१२ स्कन्ध	सामुद्रिक	खण्ड
लघु कौमदी	बारह मासा फ़क़ीर	याज्ञ वल्क्य टीका सहित
शङ्कर दिग्विजय भाषा	अला बख़्श	मुहूर्त्त चिन्ता मणि भाषा
वैद्य जीवन	मनु स्मृति उर्दू टीका सहित	शब्दार्थ कोष
किताब पटवारी ४ भाग	इन्द्र जाल नागरी	लावनी व शेर बनारसी
वैताल पच्चीसी नागरी	कथा गङ्गाजी	अमर विनोद
दान लीला नागलीला	रामायण नागरी देवकी	पारा शरी सटीक
ब्रह्म सार	रामायण जिल्द बंधी	युगल विलास
परमार्थ सार	रामायण तुलसी कृत	ज्ञान माला
प्रेम सागर	रामायण तुलसी कृत सटीक	भाषा महा भारत मुक्तावली
सूर सागर	सत सई रामायण	रमल सार नागरी
राग प्रकाश	कवित्ता वली रामायण	दैवज्ञा भरण
भक्त माल	गीता वली रामायण	जनक पच्चीसी
महिम्न स्तोत्र	रामायण दोहा वली	शृंगार प्रकाश
सभा विलास	कायस्थ कुल भास्कर	नानार्थनी सङ्कुला वली
वैद्य मनोत्सव	क़िस्सह गोपी चन्द्र भरतरी	सङ्कुला वली
लीला वती भाषा	शीघ्र बोध	दूसरी पुस्तक रामायण
अमृत सागर	श्री गोपाल सहस्र नाम	माला
अमृत सागर बड़ी	गर्गोक्त कामधेनु	तीसरी रामायण गीत शब्द

शार्ङ्गधर संहिता

वार्तिक तिलक सहित

जिसमें

श्री शार्ङ्गधर महाराज ने सज्जन मनुष्यों के मन रञ्जन के अर्थ सुश्रुत
चरक आदि अनेक प्राचीन वैद्यों के निश्चित किये प्रसिद्ध योग निज
इष्टदेव शिव पार्वती की वन्दना पूर्वक अति प्रयत्न से सम्पूर्ण
रोगों की व्याख्या उत्पत्ति लक्षण यत्न सङ्ग्रह कर रचे हैं

वाजपेयि पण्डित राम रत्न के द्वारा शुद्ध होय

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के शिलायन्त्रालय में मुद्रित हुवा
मार्च सन् १८७७ ई०

श्री गणेशाय नमः श्री परमात्मने नमः श्री सरस्वत्यै नमः वार्तिक तिलक लिख्यते श्रियमिति सकहे सो श्री के देन वारे मोकूं जो पुरारि कैसे हैं पुरारि जिन के तेज प्रसारित अंग में भवानी विराज मान हैं कैसी हैं भवानी जिन के निर्मल मुख मयंक की चंद्रिका कहैं चांदनी प्रकाश करि रही है कैसिव काकी नाईं जैसे हिम कहैं पाला आद्रि कहैं पर्वत हिमाद्री विषैं महा औषधि संजीवन्यादि ज्वलित कहैं प्रकाशित होइ रही हैं यह अर्द्धांगी अनूप स्वरूप निराकार निर्विकार जगदाधार सदा शिव परमेश्वर ने अनादि स्वनादि सकल लोप करि अनेकत्व प्रकाश करन इच्छा समय अर्द्ध प्रकृति पुरुष से युक्त दृश्यमान अर्द्धांगी स्वरूप धारण किया है इस स्वरूप की महिमा वा उपमा वेद शास्त्र पुराण काव्यादि नहीं कहि सके काहे सेकि एक ही रूप है इस स्वरूप की उपमा विना है रूप संयुक्त किये नहीं हो सकी और है उपमा से द्वैत भासित होता है इसलिये परमेश्वर की उपमा हिमाद्रि परमेश्वरी की उपमा महौषधि करते भये फिरि हिमाद्रि गुण शीतलता भगवती के मुख चंद्र की चंद्रिका में घटित करी और औषधिन की प्रज्वलिता भगवान् के तेज में घटित करि

श्री गणेशाय नमः श्रियं सदद्यात्स पुरारिर्यदङ्गे तेजःप्रसरे भवानी विराजते निर्मलचंद्रिका या महौषधीव ज्वलिता हिमाद्रौ ॥१॥

अथवा तेज चंद्रिका एक ठौर होना असंगित है परन्तु यहां दोनों समान प्रकाश करते हैं क्योंकि भगवती की शीतल चंद्रिका करिकै सदा शांति मूर्ति सतो गुणी श्वेत कर्पूर वरण विश्वनाथ शोभित हो रहे हैं और श्री भगवान के तेज करिकै त्रैलोक जननी श्री पार्वती जी कांचन वरण दीप्यमान हो रही हैं अर्थात् दोनों उपमा अर्द्धांगी सूचित भई क्योंकि प्रकृति की उपमा के गुण पुरुष में पाये गये पुरुष की उपमा के गुण प्रकृति में पाये गये पुनरर्थः प्रथम कवि लोग अपने इष्ट देव से मंगला चरण में याच्य मान होइ ग्रंथ को घटित करते हैं कि महादेव जी का तेज उष्ण पित्ताधि पति पार्वती जी की चंद्रिका शीतल श्लेष्माधिपति और प्रसारण धर्म वा व्याल भूषण करिकै वाय्वाधिपति जैसे गौरी शंकर को शोभा रूपी गुण सहित सेइ रहे तैसे शार्ङ्गधर वेत्ता वैद्यों की सेवा में श्री यश के देने वाले होंयगे कैसा है शार्ङ्गधर जैसे हिमाद्रि महा औषधीन करि ज्वलित कहैं प्रकाशित

वार्तिकतिलक शार्ङ्गधर जू कहते हैं कि मैंने सज्जन मनुष्यन के मन रंजन के निमित्त सुश्रुत चरकादि मुनि और श्रेष्ठ प्राचीन वैद्यों को निश्चित किये प्रसिद्ध योग या शार्ङ्गधर में संग्रह करि ग्रंथित करे हैं १ प्रथम वैद्य इन पंच प्रकार में न्युत्पन्न होय हेतु आदि रूप आकृति सात्म्य जाति भेद २ तब पीड़ित रोगी की निदान पूर्व क कर्षण बृंहणादि चिकित्सा करै कर्षण कहें घटावना बृंहण बढ़ाना वातादि दोषन को घटावै हेत्वादि लक्षना हेतु कहें निदान आदि कारण जिससे रोग की उत्पत्ति है १ आदि रूप कहें प्रथम रोगी की देह टूटना जंभवाई आवना २ आकृति कहें चेष्टा मलिन होना तृषा मूर्छा संभ्रम दाह निद्रा नाश ३ सात्म्य कहें रोगी की अपेक्षा जिस वस्तु को मन चाहै यथा गरमी लगै पौन प्यास में पानी वा हित कारक जैसे जाड़ा लगै वस्त्र हित करै ४ जाति कहें इंद्री परिज्ञान अपने अंग के सावधान वा विह्वलता ५ जैसे वृंदारक कहें देवतन में बहुत श्रेष्ठ गुण विस्फुरित कहें प्रकाशित तैसे ही दिव्य कहें उत्तम औषधिन में भी भासित हैं सो ज्ञात्वा

प्रसिद्ध योगा मुनिभिः प्रयुक्ता चिकित्सकैर्ये बहुशोनुभूताः विधीयते शार्ङ्गधरेण तेषां सुसंग्रहस्सज्जन रंजनाय २ हेत्वादि रूपाकृति सात्म्य जाति भेदैस्समीक्ष्यातुर सर्व रोगान् चिकित्सितं कर्षण बृंहणाख्यं कुर्वीत वैद्यो विधिवत्सुयोगैः ३ दिव्यौषधीनां बहवः प्रभेदाः वृंदारकाणामिव विस्फुरंति ज्ञात्वेति संदेहमपास्य धीरैस्संभावनीया विविध प्रभावाः ४ स्वाभाविकागंतुक कायिकांतरा रोगा भवेयुः किल कर्मदोषजाः तच्छेदनार्थं दुरितापहारिणः श्रेयो प्रयान्योगवरान्निबोधयेत् ५ प्रयोगभागा मास्यि ज्ञान्प्रत्यक्षादनुमानतः सर्वलोक हितार्थाय वक्ष्याम्यनति विस्तरात् ६

कहें जानिके धीर वैद्य संदेह छोड़ि कै ऐसी संभावना करै कि मेरे निश्चय से भी अधिक गुण प्रभाव औषधिन में हैं ४ औरस्वाभाविक आगंतुक कायिक अंतरिक ४ इन चारों से वा तीनों दोषन से वा प्रारब्ध कर्म से रोग होइ तिनके नाश करिवे को दुरित कहें पातक प्रहार करन वारे श्रेष्ठ योग वैद्य करै स्वभावादि लक्षना स्वाभाविक विहाराहार विषमता यथा विन क्षुधा वा क्षुधा रहन वा हीन विपरीत भोजन वा निभोजन योंही तृषा और जन्म ते मरण पर्यंत अवस्था से विपरीत कर्म होना १ आगंतुक शस्त्र पाषाण पतन प्रहार विषम सर्प पशु पीड़ितादि २ कायिक व्यायाम श्रम मैथुनादि धातु न्यूनाधिकत्व ते दोषत्व कुपित होना ३ अंतर मन खेद क्रोध चिंता शोक मूर्छा संन्यास श्वास निरोधादि ४ ५ प्रत्यक्ष से और अनुमान से

वा॰ या शार्ङ्गधर के तीन खंड हैं ताके प्रथम खंड में पहिले परिभाषा कहे औषधि की तोल की फिरि भैषज्याख्यान कहै. औषधि भक्षणविधि फिरि नाड़ी परीक्षा स्वप्न शकुन विचार और दीपन अग्नि ज्वलित करना पाचन जो मल को भस्म करि पचावै ७ ताके पीछे औषधि भक्षण समय फिर आहार अंतरप्रवेश गति कही और रोगों की संख्या कही इतनी बातें प्रथम खंड में हैं ८ अथ मध्य खंडे अनुक्रमणिका इष्यन का रस काढ़ा रात्रि की भिजोई औषधि प्रात जल लेइ इसे हिम कहिये कल्क कहें पीठी चूर्ण गोली अवलेह तेल मद प्रकार ९ धातु शुद्धिः रसक्रिया ये मध्य खंड में कही अथोत्तर खंड अनुक्रमणिका घृत

प्रथमं परिभाषा स्याद्भैषज्याख्यानकं तथा नाडी परीक्षादि विधिस्ततो दीपन पाचनं ७ ततः कालादिकाख्यान माहारादि गतिस्तथा रोगाणां गणनाचैव पूर्वखण्डोयमीरितः ८ स्वरसः क्वाथफांटौच हिमः कल्कश्च चूर्णकं तथैव गुटिका लेहौ स्नेह संधान मेव च ९ धातु शुद्धि रसाश्चैव खण्डोयं मध्यमः स्मृतः स्नेह पानं स्वेद विधिर्वमनंच विरेचनं १० ततस्तु स्नेह वस्तिः स्यात्ततश्चापि निरूहणं ततश्चाप्युत्तरोवस्ति स्ततो नस्यविधिर्मतः ११ धूम पान विधिश्चैव गंडू षादि विधिस्तथा लेपादीनां विधिःख्यातस्तथा शोणित विस्रुतिः नेत्रकर्म प्रकारश्च खण्डःस्यादुत्तरस्त्वयं १२ द्वात्रिंशत्प्रमिताध्यायैर्युक्तेयं संहिता स्मृता षड्विंशति शतान्यत्र श्लोकानां गणिका निच १३ मानेन विना युक्तिर्द्रव्याणां जायते क्वचित् अतः प्रयोगकार्यार्थमानमत्रोच्यते मया १४ जालांतरगते भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः ॥

तेल पीना सेकना वमन विरेचन १० स्नेह वस्ति कहैं गुद मार्ग से पिचकारी देना निरूहण कहैं काढ़ा दूध की पिचकारी देना उत्तर वस्ति कहैं पिचकारी का विधान नासविधि ११ धुआं पीने की विधि गंडूष विधि जिसे पवन कुल्ला कहते हैं लेप रक्त निकालना नेत्रांजन ये सब उत्तर खंड में कहे हैं १२ यह बत्तिस अध्याय में कहा इसमें दो सहस्र छःसे श्लोक हैं १३ बिन तुली औषधि अयोग्य है इसलिये मागध परिभाषा कहता हूं १४ जो छिद्र में सूर्य की आभा से रजकण उड़ते देख पड़ते हैं उसके तीसरे भाग

वा॰ छह वंशी की एक मरीची छः मरीचि की एक राई तीन राई की एक सरसों आठ सरसों का एक जौ चार जौ की एक रत्ती छः रत्ती का एक मासा सो हेम और धानक कहे हैं २७ चार मासे का एक शाण यही धरण और टंक कहता है दो टंके का एक कोल उसी को क्षुद्र कवट द्रक्षण कहते हैं २८ दो कोल का कर्ष होता है उसे पाणि मानिका अक्ष पिचु: पाणितल किंचित्पाणि तिंदुक विडाल पदक षोडशी कर मध्य हंसपद सुवर्ण कवल ग्रह २९।३० और उदंबर कहते हैं ये सब कर्ष के

तस्य त्रिंशत्तमो भागः परमाणुः स उच्यते २५ त्रसरेणुर्बुधैः प्रोक्तस्त्रिंशता परमाणुभिः त्रसरेणुस्तु पर्यायैर्नाम्ना वंशी निगद्यते २६ षड्वंशीभिर्मरीचिः स्यात्ताभिः षड्भिस्तु राजिका तिसृभी राजिकाभिश्च सर्षपः प्रोच्यते बुधैः २७ यवोष्टसर्षपैः प्रोक्तो गुंजा स्यात्तच्चतुष्टयं षड्भिस्तु रक्तिकाभिः स्यान्माषको हेमधान्यको माषैश्चतुर्भिः शाणः स्याद्धरणः स निगद्यते टंकः स एव कथितः सद्द्वयं कोल उच्यते क्षुद्रः कोलवटश्चैव द्रक्षणः स निगद्यते २८ कोलद्वयं च कर्षः स्यात्स प्रोक्तः पाणिमानिका अक्षं पिचुः पाणितलं किंचित्पाणिश्च तिंदुकः २९ विडालपदकं चैव तथा षोडशिका मता करमध्यो हंसपदं सुवर्णं कवलग्रहः ३० उदुंबरश्च पर्यायैः कर्ष एव निगद्यते स्यात्कर्षाभ्यामर्द्धपलं शुक्तिरष्टमिका तथा ३१ शुक्तिभ्यां च पलं ज्ञेयं मुष्टिराम्रं चतुर्थिका प्रकुंचः षोडशी विल्वं पलमेवात्र कीर्त्यते ३२ पलाभ्यां प्रसृतिर्ज्ञेया प्रसृतश्च निगद्यते प्रसृतिभ्यामंजलिः स्यात्कुडवोऽर्द्धसरावकः ३३ अष्टमानं च संज्ञेयः कुडवाभ्यां च मानिका:

पर्याय हैं दो कर्ष को अर्द्धपल शुक्ति अष्टमिका कहते हैं ३१ दो शुक्ति को एक पल और मुष्टि आम्र चतुर्थिका प्रकुंच षोडशी विल्व कहते हैं ये सब पल की पर्याय कहिये ३२ दो पल की एक प्रसृति और प्रसृति कहते हैं दो प्रसृत को अंजली कुडव अर्द्ध सराव कहते हैं ३३ और अष्ट मान भी कहते हैं दो कुडव को मानिका सराव अष्ट पल कहते हैं जो सद्वैद्य हैं ३४

वार्तिक तिलक है सराव की एक प्रस्थ संज्ञा है प्रस्थ वा आठ सराव वा चौंसठ पलकी आढक संज्ञा है इसे भाजन और कांस्य पात्र भी कहते हैं २५ आढक चारकी एक द्रोण इस के सात नाम हैं कलश आनल्वण अर्मण उन्मान घट राशि २६ दो द्रोण का एक सूर्य कुंभ चौसठि सरावभी कहते हैं है सूर्यकी एक द्रोणी और बाह्र और गोणी २७ चार द्रोणी की एक खारी चार सहस्र छ्यानवे पलकी खारी संज्ञा है २८ है सह-

मण बोडषपलंतत्त्रज्ञेयमत्रविचक्षणैः २४ शरावाभ्यांभवेत्प्रस्थश्चतुः प्रस्थैस्तथाढकं भाजनंकांस्यपात्रंच चतुः षष्ठिपलं चतत् २५ च-
तुर्भिराढकैर्द्रोणः कलशो नल्वणः अर्मणः उन्मानश्च घटोराशि द्रोण पर्यायसंज्ञितः २६ द्रोणाभ्यां सूर्यकुंभौच चतुः षष्ठिस-
राव कः सूर्याभ्यांच भवेद्द्रोणी वाह्रो गोणी च सा स्मृता २७ द्रोणी चतुष्टयं खारी कथिता सूक्ष्मबुद्धिभिः चतुसहस्र प-
लिका षण्णव त्याधिका च सा २८ पलानां द्वि सहस्रंच भार एकः प्रकीर्त्तितः तुला पलं शतंज्ञेयं सर्वत्रैवैषनिश्चयः ॥
२९ माषटं काक्ष विल्वानि कुडवः प्रस्थमाढकं राशिर्गोणी खारि केति यथोत्तर चतुर्गुणाः ३० गुंजादि मानमारभ्य
यावत्स्यात्कुडव स्थितिः द्रव्यार्द्रशुष्क द्रव्याणां तावन्मानं समं मतं ३१ प्रस्थादिमान मारभ्य द्विगुणं द्रव्य मार्द्रयोः
मानं तथा तुलायास्तु द्विगुणं न क्वचित्स्मृतम् ३२ मृद्वृक्ष वेणु लोहादे भांडियंच्चतुरंगुलं विस्तीर्णंच त-
थोच्चंच तन्मानं कुडवं वदेत् ॥ ३३ ॥

स्र पलको भार कहिये सौ पलको तुला कहिये सब ठौर यही निश्चय जानो २९ मासे से चौगुना टंक टंकते चौगुना अक्ष अक्षतं ४ विल्व विल्वते ४ कुडव कुडवते चौगुना प्रस्थ प्रस्थते ४ आढक आ-ढकते ४ राशि राशितें ४ गोणी गोणी ते ४ खारी एकते एक चौगुनी जानो ३० गुंजातें कुडव लौं म जल वस्तु समलेना कुडवते तुला लौ सजली दूनी लेना तुला ते ऊपर ओदी द्रव्य दूनी लेना ३१।३२ चार अंगुल का चौडा ऊंचा समान वासन मांटी वांस लोहादि किसी का होइ उसकी कुडव संज्ञा जानो ३३

वार्तिक जिस रोग पर जो औषधि कहैंगे तिस में जिस द्रव्य का प्रथम नाम आवै उसी को योग निश्चित करते हैं जो रास्नादि क्वाथ इस में प्रथम नाम रास्न है इति मागध परिभाषा ३७ अथ कलिंग परिभाषा मात्रा का कुछ प्रमाण नहीं स्थित करा समय अवस्था अग्नि बल प्रकृति रोग देश देखि कहै वैद्य मात्रा का प्रमाण करै ३५ क्योंकि कलियुग में मनुष्य मंदअग्नि लघु शरीर बल हीन होवैगे इस्से सद्वैद्यों का मत है कि मात्रा रोगी को यथा

यद्यद्यधंतु प्रथमं यस्य योगस्य कथ्यते तन्नाम्नैव स योगो हि कथ्यतेत्र विनिश्चयः ३४ स्थितिर्नास्त्येव मात्रायाः कालमग्निंवयोबलं प्रकृतिं दोष देशौच दृष्ट्वा मात्रां प्रकल्पयेत् ३५ यतो मंदाग्नयो ह्रस्वा हीन सत्वा नराः कलौ अतस्तु मात्रा तद्योग्या प्रोच्यते सुज्ञसम्मता ३६ यवो द्वादश भिर्गौर सर्षपैः प्रोच्यते बुधैः यवद्वयेन गुंजास्यात्त्रिगुंजो वल्ल उच्यते ३७ माषो गुंजाभिरष्टाभिः सप्तभिर्वा भवेत्क्वचित् स्याच्चतुर्माषकैः शाणः स निष्कष्टंक एवच ३८ गद्याणो माषकैः षड्भिः कर्षः स्याद्दश माषकः चतुःकर्षैः पलं प्रोक्तं दश शाण मितं बुधैः ३९ चतुः पलैश्च कुडवः प्रस्थाद्याः पूर्ववन्मताः ४० कालिंगं मागधं चेति द्विविधं मान उच्यते कालिंगान्मागधं श्रेष्ठमिति मान विदो विदुः ४१ नवान्येव हि योज्यानि द्रव्याण्यखिल कर्मसु विना विडंग कृष्णाभ्यां गुड धान्याज्य माक्षिकैः ४२॥

योग्य देना ३६ बारह गौर सरसों का एक जौ है जो की एक गुंजा तीन गुंजा का एक वल्ल ३७ आठ गुंजा तथा सात गुंजा का मासा चार मासे का शाण उसी को निष्क और टंक भी कहते हैं ३८ छः मासे का गद्याण दस मासे का कर्ष चार कर्ष का पल उसे दस शाण भी कहते हैं चार पल का कुडव और प्रस्थादिक की प्रथम कही रीति से जानो ३९ कलिंग प्रमाण से मागध प्रमाण सद्वैद्य उत्तम मानते हैं ४० सर्व कर्मन में सब औषधि नवीन लेना विना पीपरि विडंग धनिया

प्रा.
टी.
प्र.
८

वार्निक गुरु वकुलेवा वसा कुष्मड़ा सेत सतावरि असगंध पीतकट सरैया रक्त कट सरैया सोंफ गंध प्रसारणी ये द्रव्य स्रोटे दूनी न लेना और सूखे द्रव्य सकल प्रयोग में नवीन देना और ओदी द्रव्य सरसो से दूनी देना ४२ जिस औषधी के खान पान काल नहीं कहा उस का प्रातःकाल जानना और जिस औषधि के अंग का नाम नहीं लिखा तहां मूल लेना जहां कई औषधि हैं और भाग भेद नहीं है वहां सम भाग लेना जहां औषधि ब-नाने की पात्र की जाति नहीं लिखी तहां माटीका पात्र ही लेना जहां औषधि को गीली करना होय और रस वा पानी वा दूध क्षिलका वा मूल कुछ न-

गुडूची कुटजो वासा कूष्मांडश्च शतावरी अश्वगंधा सहचरी शतपुष्प प्रसारिणी प्रयोक्तव्यास्सदैवार्द्रा द्विगुणा नैव कारयेत् ४२ कालेनुक्ते प्रभातं स्यादंगे नुक्ते जटा भवेत् भागे नुक्ते च साम्यं स्यात्पात्रे नुक्ते च मृण्मयं ४३ एकमप्यौषधं योगे यस्मिन्यत्पुनरुच्यते मानतो द्विगुणं प्रोक्तं तद्द्रव्यं तत्वदर्शिभिः ४४ चूर्णस्नेहासवालेहाः प्रायशश्चंदना-न्विताः कषाय लेपयोः प्रायो युज्यते रक्तचंदनम् ४५ गुणहीनं भवेद्वर्षादूर्ध्वं तद्रूपमौषधं मासद्वयात्तथा चूर्णं ही-नवीर्यत्वमाप्नुयात् ४६ हीनत्वं गुटिकालेहौ लभेते वत्सरात्परं हीनाः स्युर्घृततैलाद्याश्चतुर्मासाधिकात्तथा ४७ औषध्यो लघुपाकाः स्युर्निर्वीर्या वत्सरात्परं पुराणाः स्युर्गुणैर्युक्ता आसवाधातवो रसाः ४८

हीं लिखा तहां जल लेना ४३ जिस प्रयोग में ग्रंथ कार एक औषधि को दोइ वार लिखे तहां वह औषधि दोइ भाग लेना या प्रकार तत्व दर्शी वैद्य कहते हैं ४४ और चूर्ण तेल घृत हिम आरक अवलेह आदिकन में केवल चंदन लिखा हो तहां स्वेत लेना काढे और लेप में लाल चंदन लेना ४५ वर्ष भर में औषधि में गुण रहता है फिर कम हो जाता है दो मास बीते चूर्ण का छीन होता है ४६ वर्ष बीते गोली अवलेह का गुण हीन होता है सोलह मास बीते घी तेल गुण रहित होते हैं ४७ वर्ष बीते लघु पाक निर्गुण होते हैं जैसे मेथी मोदक और दारु धातु रस पुराने गुण प्रद होते हैं ॥४८॥

त्रिफलादिक का फल लीजे धव आदिक के पुष्प लीजे सेहुंडादिक का दूध लीजे यह रीति जहां केवल वृक्ष का नाम है अंग नहीं है ५५ इति शार्ङ्गधर व्याख्यायां परिभाषाध्यायः प्रथमः १ वार्तिक वैद्य लोग औषधि सबेरे खवावें और कषायादि विशेष प्रातःसमय फांट हिम स्वरस कल्क आवश्यक देना और जो औषधि देने का समय है सो आगे कहता हों १ औषधि खाने के पांच समय हैं प्रथम काल सूर्योदय दूजा भोजन समय तीसरा संध्या को चौथा निशि में भोजन समय पांचवां सोने के समय ५।१ जिस मनुष्य को पित्त और कफ का वेग हो उसे रेचन वा वमन वाले खन क्रिया प्रातःकाल करै लेखनक्रिया

तालीसादेश्च पत्राणि फलं स्यात्त्रिफलादितः धातक्यादेश्च पुष्पाणि स्नुह्यादेः क्षीरमाहरेत् ५५ इति शार्ङ्गधरे परिभाषाध्यायः १ भैषज्यमभ्यवहरेत्प्रभाते प्रायशो बुधः कषायांश्च विशेषेण तत्र भेदस्तु दर्शितः २ ज्ञेयः पंचविधः कालो भैषज्यग्रहणे नृणां किंचित्सूर्योदये जाते तथा दिवसभोजने सायंतने भोजने च मुहुश्चापि तथा निशि ३ प्रायः पित्तकफोद्रेके विरेकवमनार्थयोः लेखनार्थं च भैषज्यं प्रभातेऽनन्नमाचरेत् एवं स्यात्प्रथमः कालो भैषज्यग्रहणे नृणां ३ भैषज्यं विगुणेऽपाने भोजनाग्रे प्रशस्यते अरुचौ चित्रभोज्यैश्च मिश्रं रुचिरमाहरेत् ४ समानवाते विगुणे मंदाग्न्यावन्हिदीपनं दद्याद्भोजनमध्ये च भैषज्यं कुशलो भिषक् ५ व्यानकोपे च भैषज्यं भोजनांते समाहरेत् हिक्काक्षेपककंपेषु पूर्वमंते च भोजनात् एवं द्वितीयः कालश्च प्रोक्तो भैषज्यकर्मणि ६॥

प्रातःकाल करै लेखन कहैं चमड़े की पट्टी माथे पर बांधि कै औषधि भरे पित्त के अधिकार में वमन कफ के अधिकार में रेचन और लेखन यह औषधि करने का प्रथम काल बांधा ३ अपान वायु के विगरे भोजन सो प्रथम औषधि देइ अरुचि में विचित्र भोजन के संग रुचि कारक औषधि खवावै ४ सदैव समान वायु और मंदाग्नि में अग्निज्वलित कारक द्रव्य भोजन के मध्य में देइ ५ व्यान वायु के कोप में भोजन के अंत में खवावै और हिचकी आक्षेपक कंप वायु में भोजन के आदि अंत में देइ यह दूसरा काल है ६

वार्तिक टीका जो औषधि रोग को अवगुण प्रद होति से गृंथ की लिखी भी त्याग देइ और जो रोग को हित करै सो अन लिखी भी ग्रहण करै ४९ दक्षिण के विंध्याचलादि पर्वत उस्न प्रकृति हैं उन पर उत्पन्न औषधी भी उस्न प्रकृती होती हैं उत्तर के हिमाचलादि पर्वत शीतल हैं उन पर की उत्पन्न औषधि भी ठंढी होती हैं और बन उपबन में जो द्रव्य होती है सो जैसा उस पृथ्वी का स्वभाव होता है वैसाही उस की उत्पन्न द्रव्य का भी स्वभाव होता है ५० मनुष्य प्रातः समय पवित्र हो शुभ दिन मौन हो के हृदय में शिव का ध्यान करि सूर्य के सन्मुख हो औषधि लावै सा-

व्याधेरयुक्तं यद्द्रव्यं गणोक्तमपितं त्यजेत् अनुक्तमपि युक्तं हि योजयेत्तत्र तद्बुधः ४९ आग्नेया विंध्य शैलाद्याः सौम्यो हिमगिरिर्मतः अतस्तदौषधा निस्युरनुरूपाणि हेतुभिः अन्येऽपि प्रदेहंति बने सूपवने सुच ५० गृह्णी पा- तानि सुमनाः शुचिः प्रातः सुवासरे आदित्य सन्मुखो मौनी नमस्कृत्य शिवं हृदि साधारण धराद्द्रव्यं गृह्णीयादुत्तरा श्रितं ५१ वाल्मीक कुत्सितानूप श्मशानोखर मार्गजाः जंतु वन्हि हिमा व्याप्ता नौषध्यः कार्य साधिकाः ५२ शर द्य खिल कार्यार्थं ग्राह्यं सरसमौषधं विरेक वमनार्थे च वसंतांते समा हरेत् ५३ अतिस्थूल जटा यास्तु तासां ग्राह्या स्त्वचो बुधैः गृह्णीयात्सूक्ष्म मूलानि सकलान्यपि बुद्धिमान् ५४ न्यग्रोधादेस्त्वचो ग्राह्याः सारस्या द्बीजकादितः॥

धारण जगह की द्रव्य उत्तर मुख ही होके लेना ५१ और दूलनी जगह की द्रव्य न लेना सर्प की बांबी कुत्सित भूमि जहां रण भया हो मशान की उस र जहां रेह चूना निकलता होइ खर मार्ग की जहां गदहे लोटते हैं और मार्ग की दल दल कृमि स्थान की दग्ध भूमि की पाला मारी हुई इत्यादि भूमि की द्रव्य कार्य साधक नहीं ५२ सर्व कार्य के अर्थ शरद ऋतु में ओदी औषधि लावै और वमन विरेचन के अर्थ वसंत के अंत में ओदी वस्तु लावै ५३ और अ- ति स्थूल वृक्ष की जड़ की छाल सदैव लेते हैं और छोटे वृक्ष की जड़ ग्राह्य है ५४ और बरगदादि वृक्षन की छाल ग्राह्य है विजैसारादि वृक्ष का हीर लीजै

वातेद गुण भू गुरु जल चिकन कहि अग्नि तेज वातेद तिलक स्वर भंग करने वाली उदान वायु के कोप में ग्रास ग्रास के अंत में औषधि देइ संध्या समय ७ प्राण वायु के कोप में सांझ को भोजन के अंत में देय यह त्रतीय काल बांधा ८ और वार वार प्यास छर्दि हिच की श्वास में और विष पीडित को अन्न के संग औषधि देय यह चौथा काल बांधा ९ गले के ऊपर करो रोग नेत्र मुख नासिका के रोगन में लेखन के निमित्त रात को बिना अन्न पाचन समय औषधि देइ यह पंचम काल जानना १० औषधि के पांच अधिकार हैं रस १ गुण २ वीर्य ३ बिपाक ४ शक्ति ५। ११ सब द्रव्य न में छः स्वाद

उदाने कुपिते वाते स्वरभंगादिकारिणि ग्रासे ग्रासांतरे देयं भेषज्यं सांध्य भोजनं ७ प्राणे प्रदुष्टे सांध्यस्य भुक्तस्यांते च दीयते औषधं प्रायशो धीरैः कालोयं स्यात्तृतीयकः ८ मुहुर्मुहुश्च तृट् छर्दि हिक्का श्वास गरेषु च सान्नं च भेषजं दद्यादिति कालश्चतुर्थकः ९ ऊर्ध्व जंतु बिकारेषु लेखने बृंहणे तथा पाचनं शमनं देयमनन्नं भेषजं निशि इति पंचम कालः स्यात्प्रोक्तो भेषज्य हेतवे १० द्रव्ये रसो गुणो वीर्यं बिपाकः शक्तिरेव च संवेदन क्रमादेताः पंचावस्थाः प्रकीर्तिताः ११ मधुरोम्लः पटुश्चैव तिक्तः कटु कषायकः इत्येते षट् रसाख्याता नाना द्रव्य समाश्रिताः १२ धरां बुभ्यामनल जल ज्वलनाकाश मारुतैः वाय्वग्निक्ष्मानिलैर्भूतद्वये रस भवः क्रमात् १३ गुरुः स्निग्धश्च तीक्ष्णश्च रूक्षो लघुरिति क्रमात् धरां बु बन्हि पवन व्योम्नां प्रायो गुणाः स्मृताः एष्वेवांतर्भवस्यन्ये गुणेषु गुण संचयाः १४ ॥

हैं मधुर १ खट्टा २ लवण ३ तीक्ष्ण ४ कडुवा ५ कषाय ६। १२ पृथ्वी और जल से मधुर रस होता है १ पृथ्वी पवन से खट्टा होता है जल और अग्नि से लवण होता है ३ आकाश और वायु से तीक्ष्ण होता है ४ वायु और अग्नि से कडुवा होता है ५ पृथ्वी और अग्नि से कसेला होता है ६ यों दो तत्व मिल के एक रस होता है इति रस उत्पत्ति १३ अथ गुण पृथ्वी का गुण भारी है जल का चिकना अग्नि का तेज वायु का रूखा

आकाश का गुण हलका है ये पांचों तत्व के पांच गुण हैं और जो गुणादि भी इन के मेल से होते हैं सो अनुमान से जानना इति गुण २४ अथ वीर्य, त द्द्रव्य का स्वभाव गरम या ठंडा होता है सो सूर्य या चंद्रमा करिके उत्पन्न होते हैं इन्हीं दोनों सेती मधुरादि स्वाद द्रव्य के अंत उत्पन्न होता है इति वीर्य २५ अथ विपाक मीठे लुन खरे से मधुर रस होता है खट्टा विपाक परभी खट्टा रहता है कषाय कटु तिक्त ये तीनों बिपाक पर कडुवे होते हैं २६ मधुर रस से कफ होता है अम्ल से पित्त होता है कडुए से वायु होता है रसों के पाक से तीनों दोष होते हैं इति विपाकः २७ अथ प्रभाव गुण आंवरे का रस गुण वीर्य बिपाक अधिकार ने समान गुण है यद्यपि हलका है तो भी तीनों दोष नाश कहे कहीं लकुचस्य ऐसा पाठ है आंवरे का गुण वीर्य बिपाक त्रिदोषनाशक

वीर्यमुष्णं तथा शीतं प्रायशो द्रव्यसंश्रयं यत्सर्वमग्निषोमीयं दृश्यते भुवनत्रये अन्ये वां तर्भ विव्यंति वीर्यारयन्या नियान्यपि २५ मिष्टः पटुश्च मधुरमम्लोऽम्लं पच्यते रसः कषाय कटु तिक्तानां पाकः स्यात्प्रायशः कटुः २६ मधु रास्या ज्जायते श्लेष्मा पित्तमम्लाच्च जायते कटुका ज्जायते वायुः कर्माण्येतानि पाकतः २७ प्रभावस्तु यथा धा त्र्या लघुश्चापि रसादिभिः समोपि कुरुते दोष त्रितयस्य विनाशनं २८ क्वचित्तु केवलं द्रव्यं कर्म कुर्यात्प्रभावतः ज्वरं हंति शिरोबद्धा सहदेवी जटा यथा २९ क्वचिद्रसो गुणो वीर्यं बिपाकः शक्तिरेव च कर्म स्वं स्वं प्रकुर्वंति द्रव्यमाश्रित्य [illegible]

है और बड हलका गुण वीर्य बिपाक त्रिदोष कारक है जो दोनों मिलाय के देइ तौ भी आंवरा अपने प्रभाव से त्रिदोष नाश करता है यह [illegible] का मत है २८ कोई कोई द्रव्य के केवल प्रभाव से रोग दूर हो जाता है जैसे सहदेई की जड माथे पर बांधने से ज्वर छूट जाता है इति प्रभाव २९ किसी औषधि का रस किसी का गुण किसी का वीर्य किसी का विपाक किसी की शक्ति ये सब द्रव्य के आधीन हैं अपनी अपनी प्रकृति के अनुसार गुण करती हैं गुर्च का रस कडुआ और गरम है तो भी पित्त नाश करता है इति रस [illegible] गुण [illegible] ॥

कडुई है तोभी कफ करती है वीर्य उष्ण बड़े पंच मूल का काथ कटु है तो भी वात समन कर्त्ता है क्योंकि उष्ण वीर्य है विपाक ड॰ सोंठि तीक्ष्ण है तो भी वात समन है क्योंकि मधुर विपाक है शक्ति उ॰जैसे सुश्रुत में कहा है कि खैर कुष्ठ को नाश कर्त्ता है २० वार्त्तिक वात पित्त कफ के बढ़ाने वाली औ र कुपित करने वाली सम करने वाली ऋतु का प्रमाण संक्रांति से है २१ मेष की संक्रांति से वृष की संक्रांति तांई ग्रीष्म ऋतु है मिथुन से कर्क तांई प्रावि ट् है सिंह से कन्या तांई वर्षा है तुला से वृश्चिक तांई शरद है धनु से मकर तांई हेमंत है कुंभ से मीन पर्यंत वसंत है यों यों दो दो मास की एक एक ऋतु होती

चय कोप समा यस्मिन्दोषाणां संभवंतिहि ऋतु खट्कं तदा ख्यातं रवे राशिषु संक्रमात् २१ ग्रीष्मो मेष वृषौ प्रोक्तौ प्रा· विट् मिथुन कर्कयोः सिंह कन्ये स्मृता वर्षा तुला वृश्चिक योः शरत् धनु र्ग्राहौच हेमंतो वसंतः कुंभ मीनयोः २२ ग्री· ष्मे संचीयते वायुः प्राविट् काले प्रकुप्यति वर्षायां चीयते पित्तं शरत्काले प्रकुप्यति २३ हेमंते चीयते श्लेष्मा वसंतेच प्र· कुप्यति प्रायेण प्रशमं याति स्वय मेव समीरणः २४ शरत्काले वसंतेच पित्तः प्रावृट् ऋतौ कफः कार्त्तिकस्य दिना न्यष्टा वष्टावाग्रयणस्यच यम दंष्ट्रा समा ख्याता अल्पा हारी सजीवति २५

हैं २२ ग्रीष्म में वायु संचित कहिं इकट्ठी हो प्राविट में कोप करती है वर्षा में पित्त बढ़ के शरद में कोप करता है २३ हेमंत कहे शिशिर में कफ इकट्ठा हो वसंत में कोप करता है और वायु इन महीनन के बीते आपु से आप पंचवें महीने में समान हो जाती हैं २४ शरद ऋतु और वसंत ऋतु में पित्त सम हो जा ता है और प्राविट् ऋतु पाइ के कफ समवर्ती होता है और कार्त्तिक शुक्ल पक्ष की अष्टमी से मार्ग कृष्ण अष्टमी तांई सोलह दिन पर्यंत इन दिनों की यम दंष्ट्रा संज्ञा है इस यम दंष्ट्रा भर सूक्ष्म अहार करने वाला मनुष्य सुखी रहता है क्योंकि इन दिनों में पित्त के कोप से विशेष अग्नि ॥

दीप्त हो रुचि बढ़ाता है तो भोजन विशेष करता है विशेष भोजन अग्नि संतुष्ट कर देता है तिस के आगे की ऋतु में कफ संचय होता है उससे अग्नि मंद होती है तब अन्न के परिपाक न होने से रोग उत्पन्न होते हैं और जो यम दंष्ट्रा के दिनों में अग्नि संतुष्ट न हो तो वर्ष पर्यंत अग्नि दीप्ति रहै २५ जो मनुष्य अहार विहार के समय का संयम रखते हैं उन के दोष सम रहते हैं और जो समय से विपरीत करते हैं उन के दोष घटते बढ़ते कोप करते सम होते रहते हैं २६ और हलके रूखे थोड़े ठंढे अहार से श्रम से संध्या के समय मैथुन से शोक भय चिंता राति के जागने से २७ चोट से पैरने से वासी भोजन से धातु

चयकोप प्रशमान्दोषान्विहाराहारसेवनैः समानैर्यान्त्यवाप्तिं विपरीतैर्विपर्ययं २६ लघुरूक्षमिताहाराद्अतिशीता-च्छ्रमात्तथा प्रदोषे कामशोकाभ्यां भीचिंता रात्रिजागरैः २७ अभिघातादपां गाहाज्जीर्णान्ने धातुसंक्षयात् वायुः प्रकोपं यात्येभिः प्रत्यनीकैश्च शाम्यति २८ विदाहिकटुकाम्लोष्णभोज्यैरत्युष्णसेवनात् मध्याह्ने क्षुत्तृषारोधाज्जीर्यत्यन्ने ऽर्द्धरात्रके पित्तं प्रकोपं यात्येभिः प्रत्यनीकैश्च शाम्यति २९ मधुरस्निग्धशीतादिभोज्यैर्दिवसनिद्रया मंदेऽग्नौ च प्रभाते च भुक्तमात्रे तथा श्रमात् श्लेष्मा प्रकोपं यात्येभिः प्रत्यनीकैश्च शाम्यति ३० इति भैषज्याख्यानके द्वितीयोऽध्यायः २ करस्यांगुष्ठमूले या धमनी जीवसाक्षिणी तच्चेष्टया सुखं दुःखं ज्ञेयं कायस्य पंडितैः १

क्षय से वात कोप करता है जो इन से बचे तो वायु सम रहै इति वायुः २८ ओझा खाली वस्तु कटु खट्टी गरम अति गरम वस्तु सेवन दोपहरी को भूष प्यास रोकना आधी राति के भोजन इन से पित कुपित होता है इन से सावधान रहै सम होता है इति पित्त २९ मीठा स्वद मिट्ठा ठंढा दिन निद्रा भूखे रहना सवेरे खाना श्रम इन से कफ कुपित होता है इति कफ ३० इति भैषज्याख्यान द्वितीयोऽध्यायः २ अथ नाड़ी परीक्षा हाथ के अंगूठे की जड़ में जो नाड़ी चलती है सो जीव की साक्षी है वैद्य उस की चेष्टागति देखि के दुख सुख पहिचान लेइ १

प्रा० टी० भ० १५

वायु प्रधान नाड़ी जौंक सर्प की नाईं चलती है पित्त प्रधान नाड़ी गौरा की और मेढक की चाल चलती है कफ प्रधान नाड़ी हंस और कबूतर की चाल चलती है २ सन्निपात की तीतर बटेर की चाल चलती है द्वंद्वज दो दोष नाड़िका की नाड़ी कहीं धीरी कहीं जलदी चलती है और जो नाड़ी अपने स्थान को त्याग देतो प्राण की हनने वाली है ३ जो नाड़ी ठहर पांच वेर चल के बंद हो हो चले वा अति धीरी चले और अति ठंडी हो तो रोगी न जिये तो ४ ज्वर की नाड़ी गरम है जलदी चलती है कामातुर की और क्रोधी की नाड़ी जलदी चलती है चिंता और भय की नाड़ी क्षीण होती है ५

नाड़ी धत्ते मरुत्कोपे जलौकासर्पयोर्गतिं कुलिंगकाकमंडूकगतिं पित्तस्य कोपतः १ लवातितिरवर्तीनां गमनं सन्निपाततः कदाचिन्मंदगमना कदाचिद्वेगवाहिनी द्विदोषकोपतो ज्ञेया हंति च स्थानविच्युता २ स्थित्वा स्थित्वा चलति या सा स्मृता प्राणनाशिनी अतिक्षीणा च शीता च जीवितं हंत्यसंशयं ४ ज्वरकोपेन धमनी सोष्मा वेगवती भवेत् कामक्रोधाद्वेगवहा क्षीणा चिंताभयप्लुता ५ मंदाग्नेः क्षीणधातोश्च नाडी मंदतरा भवेत् असृक्पूर्णा भवेत्कोष्णा गुर्वी सामा गरीयसी ६ लघ्वी वहति दीप्ताग्नेस्तथा वेगवती मता सुखितस्य स्थिरा ज्ञेया तथा बलवती स्मृता ७ दूताः स्वजातयो ऽव्यंगाः पटवो निर्मला वराः सुखिनोश्ववृषारूढाः शुभ्रपुष्पफलैर्युताः ॥ ८ ॥

मंदाग्नि और धातु क्षीण होती है ५ मंदाग्नि और धातु क्षीण भये नाड़ी अति धीरी चलती है रक्त विकार की कुछ गरम हो पत्थर सी भारी चलती है आंव संयुक्त रक्त दे महिष की गति होती है ६ जिस की अग्नि दीप्त है उस की नाड़ी हल की और जलदी चलती है आरोग्य की अस्थिर बलवान होती है भूखे की चपल अघाने की स्थिर चलती है ७ इति नाड़ी परीक्षा अथ दूतलक्षण अच्छी जाति वा अपनी जाति अंग शुद्ध से तांदर धारी चतुर सुखी घोड़े पर सवार श्वेत फूल फल युक्त दूत हो सो श्रेष्ठ दूत जानिये ॥ ८ ॥

वार्तिक अपनी जाति हो सुंदर हो और वैद्य की चलत स्वासा की ओर बैठि वैद्य के पास शुभ समय जाइ तो रोगी सुखी होय और दूत वैद्य को बु-
लाने जाते राह में शुभ शकुन ते अशुभ अशुभ तें शुभ जानो ९।१० जब वैद्य रोगी के यहांयात्रा करै तब सौम्य शकुन होइ तो शुभ है ११
चिकित्सा योग्य जो रोगी की प्रकृति और वर्ण जैसेका तैसा हो और सत्व संयुक्त हो और रोगी को वैद्य में भक्ति होय अर्थात् वैद्य के वाक्य में
निश्चय होय और जितेंद्रिय होय अर्थात् कुपथी न होय इंद्रिन के संयम में सावधान हो ऐसा रोगी चिकित्सा योग्य है १२ रोगी स्वप्न में

सुजातय स्सुचेष्टाश्च सजीव दिशि संश्रिताः भिषजं समये प्राप्ता रोगिण स्सुखहेतवे ९ वैद्याह्वानाय दूतस्य गतो
यो रोगिणः कृतेन शुभं सौम्य शकुनं प्रदीप्तंच सुखावहं १० चिकित्सां रोगिणः कर्तुं गच्छतो भिषजः शुभं यात्रेयं
सौम्य शकुनं प्रोक्तं दीप्तं न शोभनं ११ निजप्रकृतिवर्णाभ्यां युक्त स्सत्वेन संयुतः चिकित्स्यो भिषजः रोगी वैद्य भ-
क्तो जितेंद्रियः १२ स्वप्नेषु नग्नान्मुंडांश्च रक्त कृष्णांबरावृतान् व्यंगांश्च विकृतान्कृष्णान्सपाशान्सायुधानपि १३
बध्नतो निघ्नतश्चापि दक्षिणां दिशिमाश्रितान् महिष्योष्ट्र खरारूढान्स्त्री पुंसोर्यस्तु पश्यति स स्वस्थो लभते व्या-
धिरोगी यात्येव पंचतां १४ अधोयो निपतत्युच्चा ज्जले ग्नौ वा विलीयते श्वापदैर्हन्यते योपि मत्स्याद्यै र्गिलितो भवेत् १५

नंगा शिर मुंडा रक्त कृष्ण वस्त्र पहिरे भयंकर अंग भंग काला फांसी और शस्त्र धरै १३ बांधता मारता किसी को दक्षिण लिये जाता भाव-
ता देखे वा खर ऊंट भैंसे पर सवार नारी पुरुष कोई देखे तो अरोग को रोग होइ और रोगी हो तो मर जाय १४ और ऊंचे से नीचे गि-
रा जल में बूडा अग्नि में जलता विपति में पड़ा सिंह बांधव वा मकरादि के मुख में लीलता हुआ देखे ॥ १५ ॥

आर्तिके नेत्रतें अंध भय दीखे दीपक बुझता देखे तैल सुरा पिये स्वप्न में तिल वा लोहा पावे १६ पक्वान्न खाते कुआं में गिरे वा रसातल जाय ऐसे स्वप्न देखनेवाला अच्छा होतो रोगी हो रोगी हो तो मरे १७ ऐसे स्वप्न देखि के किस्हू सैन कहें सवेरे नहा के सोना तिल लोह दान करे १८ तीन दिन स्तोत्रादि पाठ करें और रात्रि को देव स्थान में रहे तो दुःस्वप्न फल नाश होइ १९ अथ सुस्वप्न स्वप्न में देवता और राजा और जीववत मित्र ब्राह्मण गऊ यज्ञ तीर्थादि ऐसा

यस्य नेत्रे विलीयेते दीपो निर्वाणतां व्रजेत् तैलं सुरापिवेद्वापि लोहं वा लभते तिलान् १६ पक्वान्नं लभते श्नाति विशे

कूपं रसातलं (कूपं च) रसातलं स स्वस्थो लभते व्याधिं रोगी यात्येव पंचतां १७ दुःस्वप्नान्येवमादीनि दृष्ट्वा ब्रूयान्न कस्यचित् स्नानं कुर्या दुषस्येव दद्याद्धेमतिलानियः १८ पठेस्तोत्राणि देवानां रात्रौ देवालये वसेत् कृत्वैवं त्रिदिनं मर्त्यो दुःस्वप्नात्परिमुच्यते १९ स्वप्नेषु यः सुरान्भूपाञ्जीवतः सुहृदो द्विजान् गोसमिद्धाग्नितीर्थानि पश्येत्सुखमवाप्नुयात् २० तीर्त्वा कलुषनीराणि जित्वा शत्रुगणानपि आरुह्य सौधगोशैलकरिवाहान्सुखी भवेत् २१ शुभ्रपुष्पाणि वासांसि मांसमत्स्यफलानि च दृष्ट्वा तुरः सुखी भूयात्स्वस्थो धनमवाप्नुयात् २२ अगम्यागमनं लेपो विष्टया रुदितं मृतिः आममांसाशनं स्वप्ने धनारोग्याप्तये विदुः २३ जलौका भ्रमरी सर्पो माक्षिका वापि यं दशेत् रोगी स भूयादारोग्यः स्वस्थो धनमवाप्नुयात् २४ इति नाडीपरीक्षादिस्तृतीयोऽध्यायः

स्वप्न देखे तो सुख को प्राप्त होय २० और मलिन जल में पैरते शत्रु की सैन जीते अटारी पर चढा वा पर्वत पर हाथी पर घोड़ा परदुन सवानि पर चढा देखे तो सुख होय २१ श्वेत फूल सूक्ष्म वस्त्र मांस मछरी वा फल रोगी स्वप्न में देखे तो रोग से निर्मुक्त होइ जो आरोग्य होइ देखे तो धन प्राप्त होइ २२ अगम्यागमन कहे जिन स्त्रीन से गवन अयोग्य है तिनका गवन करे मल लपटे रोता मरता कच्चा मांस खाता देखे वा बातें करे तो रोगी आरोग्य हो अच्छे को द्रव्य मिले २३ और जोंक भौंरी सर्प माषी डसें

इसे देखे तो रोगी आरोग्य होइ द्रव्य पावे २४ इति नाड़ीपरीक्षादि तृतीयोऽध्यायः ३ १७

वार्तिक तिलक अथ दीपन पाचन आंव को पचावे अग्नि ज्वलित करै तिसे दीपन कहते हैं यथा सौंफ और आंव को पचावे अग्नि न बढावे उसे पाचन कहते हैं यथा नाग केसर और चीता दीपन पाचन दोनों हैं १ जो द्रव्य कोठे को शुद्ध करै मलन बांधे और बढे दोष को समन करै उसे समन कहते हैं यथा गुरुच २ और जो ये द्रव्य मल को पचावें भेदन करैं गिरावें तिस को अनुलोमन कहते हैं यथा हर्र ३ जो वस्तु पकने योग्य अन पची होय कोठे में लपटि के रहि गई हो तिसे अधो मार्ग से गिरावें उसे स्रंसन कहते हैं यथा अमलतास ४ जो मल वातादिक दोष ते बंधा होय वा गोटे पड़ गये हों उसे कोरि के अधो

पचेन्नामं वन्हिकृच्च दीपनं तद्यथा मिशिः पचत्यामं न वन्हिं च कुर्याद्यत्तद्धि पाचनं नागकेसरवद्विंद्याच्चित्रो दीपनपाचनः १ न शो-
धयति न द्वेष्टि समान्दोषांस्तथोद्गतान् समी करोति विषमान्समनं तद्यथामृता २ कृत्वा पाकं मलानां यद्भित्वा बंधमधो नयेत्
तच्चानुलोमनं ज्ञेयं यथा प्रोक्ता हरीतकी ३ पक्तव्यं यदपक्त्वैव श्लिष्टं कोष्टे मलादिकं नयत्यधः स्रंसनात तद्यथा स्यात्कृतमाल-
कं ४ मलादिकमबद्धं च बद्धं वा पीडितं मलैः भित्वाधः पातयति तद्भेदनं कटुकी यथा ५ विपक्वं यदपक्वं वा मलादि द्रवतां
नयेत् रेचयत्यपि तज्ज्ञेयं रेचनं त्रिवृता यथा ६ अपक्व पित्त श्लेष्माणां बलादूर्द्ध नयेत्तु यत् वमनं तद्धि विज्ञेयं मदनस्य फलं
यथा ७ स्थानाद्बहिर्नयेदूर्द्धमधो वा मलसंचयं देहसंशोधनं तत्स्याद्देवदाली फलं यथा ॥ ८ ॥

मार्ग से गिरावे तिस द्रव्य को भेदन कहते हैं यथा कुटकी ५ जो मल वातादि दोष तें विशेष पक गया हो या अपक्व हो उसे पतला करि बहावे उसे रेचन कह ते हैं यथा निशोथ ६ जो द्रव्य कच्चा पित्त कच्चा कफ ऊर्द्ध मार्ग से निकाले उसे वमन कहते हैं यथा मैनफल ७ जो द्रव्य दुष्ट मल वा पित्त कफ स्थान छुटाय के ऊर्द्ध मार्ग या अधो मार्ग से गिरावे उसे शरीर शोधन कहते हैं ऐसी शरीर शोधनी कौन द्रव्य है यथा बंधाली कहैं बनतरोई ॥ ८ ॥

भा.
टी.
म.
१८

वार्तिक जो बंधे हुये कफादिक दोषन को सुषान्नि करि निकारे उसे छेदन कहते हैं यथा यवा षारादि और सोंठि मिरच पीपर शिलाजीत इति छेदन ९ रसादि धातु और शरीर के मल तिन्हें सुख के देह को दुर्बल करे उसे लेखन कहते हैं यथा सहत उष्ण जल वच यव १० जो दीपन करे और पाचन करे और गरमी करिके कफ धातु मल इन के रस को सुखावे तिसे ग्राही कहते हैं यथा सोंठि श्वेत जीरा गज पीपर ११ जो द्रव्य रूक्ष हो और ठंडा हो कषाय हो और पाचन शक्ति क्षीण हो सो बात कृत द्रव्य को स्तंभन कहते हैं यथा कुरैया और सोहन पनी १२ जो

श्लिष्टान्कफादिकान्दोषानुन्मूलयति यद्बलात् छेदनं तद्यथा क्षारमरिचानि शिलाजितुः ९ धातुन्मलान्वा देहस्य विशोष्योल्लिखयेच्च यत् लेखनं तद्यथा क्षौद्रं नीरमुष्णं वचा यवाः १० दीपनं पाचनं यत्स्यादुष्णत्वाद्द्रवशोषकं ग्राहि तच्च यथा शुंठी जीरकं गजपिप्पली ११ रौक्ष्याच्छैत्यात्कषायत्वाल्लघुपाकाच्च यद्भवेत् वातकृत्स्तंभनं तत्स्याद्यथा वत्सकटुंटको १२ रसायनं च तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशनं यथामृता रुदंती च गुग्गुलश्च हरीतकी १३ यस्माद्द्रव्याद्भवेत्स्त्रीषु हर्षो वाजीकरं च तत् यथा नागवलाद्याः स्युर्बीजं च कपिकच्छुजं १४ यस्माच्छुक्रस्य वृद्धिः स्याच्छुक्रलं च तदुच्यते ॥ यथाश्वगंधा मुशली शर्करा च शतावरी १५ दुग्धमाषाश्च भल्लातकलमज्जामलानि च प्रवर्त्तकानि कथ्यंते जनकानि च रेतसः १६

द्रव्य जरा वस्था के रोगन को दूरि करे उसे रसायन कहते हैं यथा गुर्च रुद्रवंती गुग्गुल १३ जिस द्रव्य से मैथुन में बिशेष सुख हो तिसे वाजी करण कहते हैं यथा बरियारा किमाच भींगी १४ जो धातु को चढ़ावे उसे शुक्रल कहते हैं यथा असगंध मुशली शर्करा सतावरि १५ और धातु को वृद्ध करे उसे रेतजन्य कहते हैं यथा दूध उर्द भिलौंजी आंवरा ॥ १६ ॥

१७

वार्तिक विलक्ष शुक्र को प्रगट करने वाली स्त्री की धातु को रेचन करने वाला बड़ी भटकैटिया का फल है और वीर्यस्तंभी जाफल है और वीर्य शोषक हड़ और तर्बूज है १७ जो वस्तु रोम मार्ग से शरीर में पैठे उसे सूक्ष्म कहिये यथा सैंधव सहत और नीम वा रेंड़ी तेल १८ प्रथम शरीर व्यापित हो फिर पचै उसे व्यवाई कहिये यथा भांग अफीम १९ देह के बंधन ढीले करे रसादिक धातु और शुक्र को क्षीण करे तिसे विकाशी कहते हैं यथा सुपारी और कोदव २० जो वस्तु बुद्धि को सम्भ्रम करे और मद को उत्पन्न होइ सो तमोगुणी है यथा सुरादिक मद्य २१ व्यवाई और

प्रवर्तनी स्त्री शुक्रस्य रेचनं बृहती फलं जाती फलं स्तंभनंच शोषणीच हरीतकी १७ देहस्य सूक्ष्मच्छिद्रेषु विशेद्यत् सूक्ष्म उच्यते तद्यथा सैंधवं क्षौद्रं निंबतैलंतु रुबूद्भवं १८ पूर्वं व्याप्याखिलं कायं ततः पाकंच गच्छति व्यवायि तद्यथा भंगा फेनं चाहि समुद्भवं १९ संधिबंधांस्तु शिथिलान्यत्करोति विकाशि तत् विश्लेष्यौजश्च धातुभ्यो यथा क्रमुक कोद्रवः ॥ २० बुद्धिं लुंपति यद्द्रव्यं मदकारि तदुच्यते तमोगुणप्रधानंच यथा द्रव्यं सुरादिकं २१ व्यवायिच विकाशि स्यात् सूक्ष्मं छेदि मदावहं आग्नेयं जीवितहरं योगवाहि स्मृतं विषं २२ निजवीर्येण यद्द्रव्यं स्रोतोभ्यो दोषसंचयं निरस्यति प्रमाथि स्यात्तद्यथा मरिचं वचा २३ पैच्छिल्याद्गौरवाद्द्रव्यं रुद्ध्वा रसवहाः शिराः धत्ते यद्गौरवं तत्स्यादभिष्यंदि यथा दधि २४

इति चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

विकाशी सूक्ष्म छेदन करन मदकृत अग्निवर्द्धन मृत्युकारक ये सब द्रव्य जिस औषधि का संग पावे उसी कैसा गुण करै ऐसा विष होता है २२ जो द्रव्य अपने पराक्रम से संचित दोषों को निकाल डारे उसे प्रमाथी कहते हैं यथा मारिच और वच २३ जो पदार्थ आप से स्निग्धता गुण करिकै रसवाहिनी शिरानि को निरोध करै और शरीर को जड़ करै उसे अभिष्यंदी कहते हैं यथा दही २४ इति दीपन पाचन विधिः चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

वार्तिक अब शारीरक शरीर में कला ७ स्थान ७ धातु ७ धातुमल ७ उपधातु ७ त्वचा ७। १ दोष ३ सूक्ष्म नसें ९०० जोड़ २१० हड्डी ३०० मर्मस्थान १०७ मध्यम नसें ७००। २ मूल नाड़ी २४ पुरुष के मांस ग्रंथी ५००। ३ स्त्री के मांस की गांठि ५२० पुष्ट नसें फैल नेस मिटने वाली १६ पुरुष के शरीर में फैद १० स्त्री ११ यह संक्षेप कहा आगे विस्तार से कहेंगे ४ अब शरीर की सात कला पहिले कहते हैं मांस को धारण करने वाली मांस धरा पहिली कला १ रक्त को धारण करने वाली रक्तधरी कला २ मेद को धारै वह मेद धरा तीसरी ३ कफ को धारण करने वाली चौथी य कृतप्लीहा श्लेष्मधरा

कलाः स्याशयाः स्युः धातवस्सप्त तन्मलाः सप्तोपधातवस्सप्त त्वचः सप्त प्रकीर्तिताः १ त्रयोदोषा नवशतं स्नायूनां संधयस्तथा दशाऽधिकं च हि शतमस्थ्नां च त्रिशतं मतं सप्तोत्तरं मर्मशतं शिराः सप्तशतं तथा २ चतुर्विंशति राख्याता धमन्यो रसवाहिकाः मांसपेश्यः समाख्याता नृणां पंचशतं बुधः ३ स्त्रीणां च विंशत्यधिकाः कंडराश्चैव षोडशः नृदेहे दश रंध्राणि नारी देहे त्रयोदश एतत्समासतः प्रोक्तं विस्तरेणाधुनोच्यते ४ मांसासृङ्मेदसां तिस्रोयकृत्प्लीह्नोश्चतुर्थिकाः पंचमी च तथान्त्राणां षष्ठी चाग्निधरा मता रेतोधरा सप्तमी स्यादिति सप्त कलाः स्मृताः ५ श्लेष्माशयः स्यादुरसि तस्मादामाशयस्त्वधः ऊर्ध्वमग्न्याशयो नाभेर्वामभागे व्यवस्थितः ६ तस्योपरि तिलं ज्ञेयं तदधः पवनाशयः पवनाशयस्त्वधस्तस्य वस्तिर्मूत्राशयस्ततः ७

धारणे वाली पांचवीं पुरीष धरा ५ अग्नि धारनी छठी कला पित्त धरा ६ शुक्र धारनी सातवीं कला रेत धरा ७ ये सातों कला हैं ५ छाती में कफ स्थान है तिसके कुछ नीचे आम स्थान है नाभि के ऊपर वांई ओर अग्नि स्थान है ६ तिस अग्नि स्थान के ऊपर तिल है उसे क्लोमस कहते हैं यही प्यास स्थान कहैं और अग्नि स्थान के तरे पवनाशय है उसे वायु स्थान कहैं उसी के नीचे दाम भाग में मल स्थान है जिसे पक्वाशय कहते हैं और उसी पवनाशय के नीचे दक्षिण भाग में मूत्र की थैली रहती है और रक्त जो जीव तुला है उस का स्थान हृदय में है इस प्रकार सात आशय जानना ७

पुरुष के सात आशय हैं स्त्री के तीनि विशेष हैं एक गर्भाशय है स्तन आशय ८ अथ सप्त धातु रस रक्त मांस मेद हाड मज्जा धातु ए साती पित्त के तेज में खैंचि के क्रम से एक एक से होते हैं उदाहरण रस ते रक्त रक्त ते मांस मांस ते मेद मेद से अस्थि हाड ते मज्जा मज्जा ते शुक्र ९ सात धातु के सात मल जीभ और नेत्र और कपोल इन में जो जल है सो रस धातु का मल है रंजक पित्त रक्त का मल है कान का मैल मांस का मल है जीभ दांत बगल लिंग का मैल मेद का मल है १० नख केस रोम अस्थि का मल आंख की कीच और मुख की चिकिनई मज्जा का मल है और मुख में खिलकी होती

जीव रक्ताशय सुरे ज्ञेया स्सप्ताशया स्त्वमी ७ पुरुषेभ्योऽधिकाश्चान्ये नारीणा माशया स्त्रयः धरागर्भाशयः प्रोक्तः स्तनौ स्तन्याशयौ मतौ ८ रसासृग्मांस मेदोस्थि मज्जा शुक्राणि धातवः जायंतेन्योन्यतः सर्वे पाचिताः पित्त तेजसा ९ जिह्वा नेत्र कपोलानां जलं पित्तं च रंजकं १ कर्णविड् रसना दंत कक्षा मेढ्रादिजं मलं १० नखा नेत्र मलं वक्त्रे स्निग्धत्वं पिंडिकास्तथा ॥ जायंते सप्त धातूनां मलान्येतान्य नुक्रमात् ११ कफ पित्त मलाः खेषु प्रस्वेदो नख रोम च नेत्र विट् चक्षु च स्नेहो धातूनां क्रमशो मलाः १२ स्तन्यं रजश्च नारीणां काले भवति गच्छति शुद्ध मांस भव स्नेहः सा वसा च प्रकीर्तितः १३ स्वेदो दंता स्तथा केशा स्तथैवौजश्च सप्तमं इति धातु भवा ज्ञेया एते सप्तोप धातवः १४

है जीभ दांत वगल लिंग का मैल मेद का मल है १० सो शुक्र का मल है ऐसा तो धातु के क्रम में साती मल होते हैं ११ सातों धातों के मल क्रम से जानना कफ १ पित्त २ खे स्थल कर्ण मल ३ स्वेद ४ नख रोम ५ आंखि की कीचर ६ शुक्र धातु में मल नहीं है १२ अब उपधातु रस धातु की उपधातु दूध रक्त धातु की उपधातु रज जो स्त्री के काल पा हो काल पा जाती रहती है शुद्ध मांस की उपधातु वसा मेद की उपधातु पसीना अस्थि की उपधातु दांत मज्जा की उपधातु वल पुरुषार्थ ऐसे ही सातों धातु नके सातों उपधातु होती हैं ॥ १४ ॥

वार्तिक अथ सप्त त्वग् यही अव भासिनी ऊपर की खाल जिस मे से हुवे पवन काम रहै १ दूजी लोहिता तिस में तिल कडक रोग होते हैं २५ तीजे से तीसमेंदाह होती है ३ चोथी ताम्रा तिस में हुत सेत कुष्ट होता है ४। २६ पंचमी वेदिनी सर्व कुष्ट भूमि है ५ छठी लोहिता में गंड माला गृंथि अपची है। २७ सतई स्थूलामें जहर वातना सूर भगंदरादि होते हैं ये सातों मिल के दो जब समान मुटाई पाती हैं यह चरक कहते हैं जहां मांस विशेष मोटा होता है जहां इतनी मोटी होती है २८ अथ तीनों दोष वात पित्त कफ ये प्रत्येक देह धारी के प्रसिद्ध हैं सो रसादिक धातून को म-

ज्ञेया व भासिनी पूर्वे सिध्म स्थानंच साम्मता द्वितीया लोहिता ज्ञेया तिल कालक जन्म भूः २५ श्वेता तृतीया संख्याता स्था-
नंच मदिलस्य च ताम्रा चतर्थी विज्ञेया किलासश्वित्र भूमिका २६ पंचमी वेदिनी ख्याता सर्वकुष्टोद्भवा स्थलः विख्याता-
लोहिता षष्ठी गृथी गंडा पची स्थितिः २७ स्थूला त्वक्सप्तमी ख्याता विद्रध्यादेः स्थितिश्च सा इति सप्त त्वचः प्रोक्ता स्थू-
ला व्रीहि हि मात्रया २८ वायु पित्तं कफो दोषा धातवश्च मला मताः तत्रापि पंच धा ख्यातः प्रत्येकं देह धारणात् २९ पव-
नस्तेषु वलवान्विभागकरणात्मतः रजोगुणमयसूक्ष्मः शीतोरुक्षो लघुश्चलः ३० मलाशयेचरन्कोष्ठ वन्हि स्थाने तथा
हृदि कंठ सर्वांग देशेषु वायुः पंच प्रकारतः ३१ अपानः स्यात्समानश्च प्राणोदानौ तथैवच व्यानश्चेति समीराणां नामान्यु-
क्तान्यनुक्रमात् ३२

लीन करते हैं इस्से इन का नाम मल भी है सो पांच पांच प्रकार के सुश्रुत में लिखे हैं संस्कृत
तत्र प्रस्यंदनो द्वहन पूरण विवेक धरण लक्षण वायुः २९ वायु सर्व वस्तून को निज निज स्थान में पहुंचा देती है इस कारण तीनों दोष
में वायु प्रबल है और जो गुणी सूक्ष्म ठंडी रूखी हलकी और चर है ३० पांच प्रकार की वायु है मलाशय हृदय कंठ और सब शरीर में
रहती है ३१ अपान १ समान २ प्राण ३ उदान ४ व्यान ५ ये पांचो वायु पांचो स्थान में क्रम से जानना यथा मल स्थान में अपान इस प्रकार ३२

अथ पित्त—पित्त उष्ण है और पतला पीला नीला सतोगुणी रस उस का कटु तिक्त है जलने से खट्टा हो जाता है २३ आमाशय में रहता है सो अग्नि रूपी तिल के समान है कोई आचार्य कहते हैं कि नारी शरीर में कुछ बड़ा है लघु शरीरन में तिल समान रहता है कीट पतंगादि शरीरों में रोमाग्र सम होता है व-नि और त्वचा वासी पित्त लेप उबटनादि शोषण करै है २४ यह कृति वासी रस को बेधि के रुधिर करता है और नेत्रनि में रहने वाला पित्त रूप दिखाता है हृदय निवासी पित्त बुद्धि और धारणा चैतन्य रखता है २५ ताके पांच नाम से स्थान स्थिति जानना पाचक १ भ्राजक २ रंजक ३ आलोचक ४

पित्तमुष्णं द्रवं पीतं नीलं सत्वगुणोत्तरं कटुतिक्तरसं ज्ञेयं विदग्धं चाम्लतां व्रजेत् २३ हृदयं यकृति यत्पित्तं तद्रूपं शोणि तं नयेत् यत्पित्तं नेत्रयुगले रूपदर्शनकारितं यत्पित्तं हृदये तिष्ठेन्मेधा प्रज्ञा करं च तत् २४ आमाशये भवेत्पित्तमग्निरूपं तिलोन्मितं त्वचि कांतिकरं ज्ञेयं लेपाभ्यंगादिपाचकं २५ पाचकं भ्राजकं चैव रंजकालोचके तथा सा-धकं चेति पंचैव पित्तनामान्यनुक्रमात् २६ कफः स्निग्धो गुरुः श्वेतः पिच्छलः शीतलस्तथा तमोगुणाधिकः स्वादुर्विदग्धो लवणो भवेत् २७ कफ आमाशये मूर्ध्नि कंठे हृदि च संधिषु तिष्ठन् करोति देहस्य स्थैर्यं सर्वांगपाटवं॥ २८ क्लेदनः स्नेहनश्चैव रसनश्चावलंबनं श्लेष्मनश्चेति नामानि कफस्योक्तान्यनुक्रमात् २९

साधक ५ यथा पांच अग्नि स्थान में इस प्रकार २६ अथ कफ—कफ चिकना भारी लसलसा श्वेत ठंढा तमोगुनी विशेष है और मधुर है दग्ध भये नुनखरा हो जाता है अन्य मत वाले हलका कहते हैं कि पानी पर तिरता है सो कारण यह है कि स्निग्धता करिके पानी में प्रवेश नहीं करता वास्तव गुरु ही है २७ और आम स्थान में माथे में कंठ में हृदय में संधिन में ऐसे देह में स्थित हो पुष्ट रखता है २८ तिस के नाम क्ले-दन १ स्नेहन २ रसन ३ अवलंबन ४ श्लेष्मन ५ ये नाम स्थान क्रम से जानना यथा आम स्थाने क्लेदन इस प्रकार से २९

नों से संना वाली नसें मांस हाड़ चरबी को लपटी रहती हैं और देह में अंग २ प्रति संधि कहें जो इसे कफ से लपटे हैं सो संधि दो प्रकार की हैं चर और अचर चर जो ठोढ़ी कमर सारवा कंठ की हैं और अंगनि की अचर कहते हैं जैसे तेल के संयोग से रथ के पहिया अपने ठौर में फिरते हैं तैसे कफ के संयोग से हड्डी विना श्रम फिरा करती हैं और बुध जन कहते हैं कि और अस्थिन के आधार देह ते ताते देह का सार हैं ३० और मर्म स्थान मुनि जीवाधार कहते हैं सो पंच प्रकार हैं मास मर्म ११ सिरा मर्म ४१ स्नायु मर्म २७ अस्थि मर्म ८ संधिमर्म २० सर्व मर्म १०७ हैं संधि बंधनी सिरा दोष और धातु वाह कहें सो २४ हैं तिन में दश नाभि स्थान हों नीचे जाती हैं वात मूत्र मल शुक्र अन्न पान रस नीचे पहुंचाना उन का कर्म है और दश ऊर्ध्व गत हैं सो शब्द रस गंध स्वांस जंभुवाई और क्षुधा शान्ति तृषा शक्ति डकार इन सबन को अपने २ स्थान में दीपन

स्नायवो बंधनं प्रोक्ता देहे मांसास्थिमेदसां संधयश्चांगसंधाना देहे प्रोक्ताः कफान्विताः आधारश्च तथा सारः काये सरनि बुधा विदुः ३० कर्माणि जीवाधाराणि प्रायेण मुनयो जगुः संधिबंधनकारिण्यो दोषधातुवहा शिराः ३१ धमन्योरसवाहिन्यो धमंति पवनं तनौ मांसपेश्यो बलाय स्युरवष्टंभाय देहिनां ३२ प्रसारणाकुंचनयोरंगाणां कंडरा मताः नासानयनकर्णानां हेरंध्रे प्रकीर्त्तिते ३३

करती हैं और चार जिन की तिर्छी गति है सो अगनित शारवा हो सर्वांग में जाले की नाईं रोम २ प्रति पूरित हैं उन्हीं के मुखों से स्वेद देह के वाहर रोमों में होके आता है और उसी मार्ग हो लेपन मर्दनादि पदार्थ प्रवेश करते हैं ३१ और रस वाहिनी धमनी को नाड़ी कहते हैं उन्हें वायु अपने वेग से शरीर में पहुंचाती हैं सो शिरा दो प्रकार की हैं सूक्ष्म और स्थूल तिन की जड़ नाभि में है वहां होके तले ऊपर दहिने बायें आगे पीछे सर्वत्र फैलती हैं ये चालीस हैं ४० वात वाहनी १० पित्त वाहिनी १० कफ वाहिनी १० रक्त वाहिनी १० सब ४० वात वाहिनी सिरा के समीप दूसरी वात नारी १७५ नसें हैं ऐसे दश २ चारों के पास उतनी २ हैं इस तरह सात सौ ७०० हैं और देह में थैली हैं सो पल के और रोकने के लिये हैं ३२ अंग के फैलनि समेटन को कंडरा हैं और दो छिद्र नाक में दो नेत्र में दो कान में ३३

एक मुख एक गुदा एक लिंग एक मस्तकके ऊपरये दश छिद्र हैं ३४ स्त्री के तीन छिद्र विशेष हैं दो पयोधर एक गर्भ स्थान और आदि सूक्ष्म छिद्र त्वचा में अगनित हैं ३५ हृदये के वाम भाग में फुफुस और प्लीहा है दक्षिण भाग में यकृति है फुफुस उदान वायु के आश्रित वै द्य लोग कहते हैं ३६ और रुधिर वाही शिरन की जड को प्लीहा कहते हैं और यकृति को सब वैद्य रंजक पित्त का स्थान कहैं और रक्त का आधार है ३७ शोणित की कीट से उत्पन्न हुआ दक्षिण भाग में तिल है यकृति के पास उसे क्लोम कहिये सो जल वाहि शिरा की जड़ में रहि

मेहना पान वक्त्राणा मेकैकं रंध्रमुच्यते दशमं मस्तके चोक्तं रंध्राणीति बुधा विदुः ३४ स्त्रीणां त्रीण्यधिकानि स्युः स्तनयो गर्भ वर्त्मनः सूक्ष्म छिद्राणि चान्यानि मता नि त्वचि जन्मिनी ३५ लहृामे फुफुसं प्लीह दक्षिणे गेल कृप्यते उदानवा योराधारः फुफुसं प्रोच्यते बुधैः ३६ रक्त वाहि शिरा मूल प्लीहा ख्यातो महर्षिभिः यकृद्रंजक पित्तस्य स्थानं रक्तस्य सं श्रयं ३७ जल वाहि शिरा मूल तृसा छादनकं तिलं स्थौ पुष्ट करौ प्रोक्तौ जठरस्थस्य मेदसः ३८ बीज वाहि शिरा धारौ वृषणौ पौरुषा वहौ गर्भाधान करं लिंग मयनं वीज मूत्रयोः हृदयं चेतना स्थान मोजसश्चाश्रयं मतं ३९ शिरा ध मन्यो नाभिस्थाः सर्वं व्याप्य स्थिता स्तनुं पुष्णंति चानि शं वायोः संयोगात्सर्व धातुभिः ४०

के पास बढ़ाता है और जठर में जो मेद और रक्त हैं सो वृक पुष्ट कारक गोलाकार दोनों कुक्ष हैं ३० वीज वाही शिरा के आधार पुरुषार्थ करने वा ले वृषण हैं और गर्भ धारण कराने वाला लिंग वीज और मूत्र का मार्ग है सो लिंग हृदय गले को ग्रहक चारि कंडरा का प्ररोह है और चेतना का स्थान हृदय वल का आश्रय है ३९ और नाभि में स्थित चौवीस शिरा नाम धमनी सो सब शरीर में प्राप्त होके वायु के संयोग में रसादि धातुनि को

वार्तिक तिलक नाभि वासी प्राण वायु हृदय कमल को परसि विष्णु पादामृत पीने को कंठ ते बाहिर हो शिर पै जाइ कै ब्रह्मांड से गिरता हुआ अमृत पीके फिर उसी मार्ग से आइ के सब शरीर को संतुष्ट करती हुई अग्नि को पाचन शक्ति देती है ४२ पूर्व आदित शरीर का और प्राण का संयोग रहने को आयु कहते हैं और शरीर के प्राण के वियोग होने को काल कहते हैं ४३ पृथ्वी में कोई शरीर अमर नहीं है इसी से मरणे की औषधि नहीं है रोग निवारणीय औषधि है ४४ जो मनुष्य औषधि नहीं करते सो सुख साध्य रोग को कष्ट साध्य करते हैं कष्ट साध्य ते असाध्य

नाभिस्थः प्राणपवनः स्पृष्ट्वा हृत्कमलांतरं कंठाद्बहिर्विनिर्याति पातुं विष्णुपदामृतं ४१ पीत्वा चांबरपीयूषं पुनरायाति वेगतः प्रीणयन्देहमखिलं जीवंच जठरानलं ४२ शरीरप्राणयोरेवं संयोगादायुरुच्यते कालेन तद्वियोगाच्च पंचत्वं कथ्यते बुधैः ४३ नजंतुः कश्चिदमरः पृथिव्यां जायते क्वचित् अतो मृत्युरवार्यः स्यात्किंतु रोगान्निवारयेत् ४४ याप्यत्वं याति साध्यश्च याप्योऽछ्लत्य साध्यतां जीवितं हंत्य साध्यस्तु नरस्याप्रतिकारिणः ४५ अतोरक्षस्तनुं रक्षेन्नरः कर्मविपाकवित् ४६ साधवस्तन्मला दोषा नाशयंत्यसमास्तनुं समा सुखाय विज्ञेयाः बलायोपचयायच ४७ जगद्योनिरनिच्छस्यचिदानंदैकरूपिणः पुंसोस्ति प्रकृतिर्नित्या प्रतिछायेव भास्वतः ४८

होते हैं असाध्य होके प्राण लेते हैं ४५ धर्म अर्थ काम मोक्ष इन के साधन हेतु शरीर है इस्से शुभाशुभ ज्ञाता को शरीर की रक्षा करना अवश्य है ४६ घटे बढे रसादिक धातु वा धातु मल वा वात पित्त कफ देह के हंता हैं जब ये सम रहते हैं तब सुख देते हैं और पुष्टि करते हैं ४७ जगत योनि इच्छा रहित ज्ञान धर्म का एक ही रूप है ऐसे विष्णु की नित्य प्रकृति है सूर्य की छाया की नाईं ४८

वार्तिक सो प्रकृति चेतन रहित चैतन्य इंद्रजाल की नाईं परमात्मा के योग करिके अनित्य संसार रचती भई ४९ ऐसा विश्व जननी प्रकृति नें पहिले बुद्धि को उत्पन्न किया सो इच्छा मयी महद्रूपा कहैं सूक्ष्म रूपा उसी बुद्धि से अहंकार होता है अहंकार से रजसत तमोगुण रूपी ती नि बिधि अहंकार हुये ५० इन तीनों अहंकार सहित पूर्व अहंकार से दश इंद्री और मन भया सो इंद्री दो प्रकार कहता हौं श्रवण त्वचा नेत्र ५१ जीभ नाक ५ वानी हाथ पाव लिंग गुदा ५ पहिले कही हुई ज्ञान इंद्री जानो पीछे कही पांच कर्मेंद्री हैं ५२ सत और तमसे उत्क

अचेतनादिचैतन्यं योगेन परमात्मनः अकरोद्विश्वमखिलं ननित्यं नाटकाकृतिः ४९ प्रकृतिर्विश्वजननी पूर्वं बुद्धिमजीजनत् इच्छामयीं महद्रूपामहंकारस्ततोभवत् ५० त्रिविधः सोपि संजातो रजस्सत्त्वतमोगुणैः ५० तस्मात्सत्त्वरजो युक्तादिंद्रियाणि दशाभवन् मनश्च जातं तान्याहुः श्रोत्रं त्वग्नयनं यथा ५१ जिह्वा घ्राणं वचो हस्तपादौ पस्थगुदानि च पंच बुद्धींद्रियाण्याहुः प्राक्तनानीतराणि च कर्मेंद्रियाणि पंचैव कथ्यंते सूक्ष्मबुद्धिभिः ५२ तमः सत्त्वगुणोत्कृष्टादहंकारादथाभवत् तन्मात्रापंचकं तस्य नामान्युक्तानि सूरिभिः ५३ शब्दतन्मात्रकं स्पर्शतन्मात्रं रूपमात्रकं रसतन्मात्रकं गंधतन्मात्रं चेति तद्विदुः ५४ तन्मात्रपंचकात्तस्मात्संजातं भूतपंचकं व्योमानिलानलजलक्षोणीरूपं च तन्मतं ५५ शब्दस्पर्शश्च रूपश्च रसगंधावनुक्रमात् तन्मात्राणां विशेषास्युः स्थूलभावमुपागताः ५६

ष्ट रजो गुणी अहंकार भया जिस में पंच तन्मात्रा भई उन का नाम पंडित जन कहते हैं ५३ शब्द तन्मात्रक १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गंध ५ ये पंच तन्मात्रा हैं सो पांचों ज्ञान इंद्रियन के लक्ष्य हैं लक्ष्य यह कि जिस्की जो तन्मात्रा है उसी का उस इंद्री को ज्ञान है ५४ तिन तन्मात्रा से पंच भूत भये आकाश १ वायु २ अग्नि ३ जल ४ पृथ्वी ५ । ५५ इन को क्रम से जानना सो शब्दादिक क्रम से स्थूल भाव को प्राप्त होके ये पांचों विशेष हैं

वार्तिक पंच ज्ञानेंद्रियन के शब्दादिक पांच विषय हैं सोई कर्मेंद्रिय के पांच विषय हैं वचन १ गहि लेना २ चलना ३ सुखी ४ मल त्याग ५ पंडित क- हैं हैं ५७ प्रधान १ प्रकृति २ शक्ति ३ नित्या ४ अविकृत ५ ये प्रकृति नाम हैं दूसी रीति से जानना पर ब्रह्म का आश्रय करि स्थित है ५ महान अहंकार और तन्मात्रा और प्रकृति विकृति इन सातों को पंडित प्रकृति कहते हैं ५८ और दश इन्द्री एक चित्त पंच महाभूत ये सोरह विका- र जानना है सब जगत में व्याप्त हो स्थित हैं ५९ इन चौबीस तत्वनि सहित देह में जीवात्मा स्थित है आप ही अपना कृत है ६० उसी को

बुद्धीन्द्रियाणां पंचैव शब्दाद्या विषया मताः कर्मेंद्रियाणां विषया भाषादान विहारिताः आनंदोत्सर्गकौ चैव कथिता स्तत्व द- र्शिभिः ५७ प्रधानं प्रकृतिः शक्तिर्नित्याचाविकृतिस्तथा एतानि तस्या नामानि शिव माश्रित्य पास्थिता :५८ महानहं कृतिः पंच तन्मात्राणि पृथक् पृथक् प्रकृतिर्विकृतिश्चैव सप्तैतानि बुधा जगुः ५९ दशेंद्रियाणि चित्तं च महद्भूतानि पंच चा विकाराः षोडश ज्ञे- या सर्व व्याप्य जगत्स्थिताः ६० एवं चतुर्विंशतिभि स्तत्वैः सिद्धं वपु र्गृहं जीवात्मा नियतो नित्यं वसति स्वात्म कृतवान् ६१ स दे- ही कथ्यते पाप पुण्य दुःख सुखादिभिः व्याप्तो बद्धश्च मनसा कृत्रिमैः कर्म बंधनैः ६२ काम क्रोधो लोभ मोहा वहंकारश्च पंचमः दशेंद्रियाणि बुद्धिश्च तस्य बंधाय देहिनः ६३ आप्नोति बंध मज्ञाना दात्म ज्ञाना च मुच्यते तं दुःख योग कृद्व्याधि रारो- ग्यं तत्सुखा वहं ६४ इति श्री शार्ङ्गधरे कलादिकाख्याने पंचमोऽध्यायः ५

देह कहते हैं ६१ पाप पुण्य दुःख सुख करिकै व्याप्त है सो मन के करे कर्मन संग बंधा है ६२ काम क्रोध लोभ मोह अहंकार ५ इंद्री १० बुद्धि १ ये सोरह देह के बंधन के हेतु हैं ६३ जीवात्मा ज्ञान करि इन में बंधा रहता है और ज्ञान करिके बंधन मुक्त हो जाता है अज्ञान तें दु- ख के योग में दुख पाता है और ज्ञान करिके सुख पाता है ६४ इति शार्ङ्गधरे कलादिकाख्यानं पंचमोऽध्यायः ५

वार्तिक अथाहार जो कुछ भोजन किया सो प्राणवायुका प्रेरित प्रथम आमाशय में जाता है षटरस में कोई रस हो मधुर और फेनासा हो जाता है १ अन्य ग्रंथों में लेख है कि कफाशय में हो आमाशय में जा फेन भाव हो जाता है इति सी रस भाव हो पाचक पित्त में दग्ध मय खट्टा हो जाता है तब समान वायु का प्रेरित ग्रहणी में परता है २ फिर ग्रहणी से आंति कोश में पचिके करू हो जाता है जो अग्नि आशय में अच्छी तरह पचा तो रस हुआ अरु जो अपक्क रहा तो आंव हो गया ३ तौ न रस अग्नि के बल से पचके मधुर और मधुर और चिकना हो जाता है सो सम्यक् कहैं अच्छी तरह पका रस अमृत

यात्यामाशयमाहारः पूर्वं प्राणानिलेरितः माधुर्यं फेनभावंच षड्रसोपिलभेतसः १ अथ पाचक पित्तेन विदग्धश्चाम्लतां व्रजेत ततः समान मरुता ग्रहणी मभिनीयते २ ग्रहिण्यां पच्यते कोष्ठ वन्हिना जावते कटुः रसो भवति संपक्काद पक्कादाम संभवः ३ वन्हेर्वलेन माधुर्यं स्निग्धतां याति तद्रसः पुष्णाति धातूनखिलान्सम्यक्पाको मृतोपमः ४ मंदवन्हि विदग्धश्च कटुवाम्लो भवेद्रसः विष भावं व्रजेद्वापि कुर्याद्वा रोग संकरं ५ आहारस्य रसः सारः सारहीनो मल द्रवः शिराभिस्तज्जलं नीतं वस्तो मूत्रत्व माप्नुयात् तत्कीट्टंच मलं ज्ञेयं तिष्ठेत्पक्वाशयेच तत् ६ वलि त्रितयः मार्गेण यात्यपायेन नोदितं प्रवाहिनी सर्जनी च ग्राहिके ति वलित्रयं ७ रसस्तु हृदयं याति समान मरुतेरितः रंजितः पाचितस्तत्र पित्ते नायाति रक्तताम् ८

की तुल्य अखिल धातुन को पोषता है ४ जो मंदाग्नि कर अपक्क रहा तब कडुवा खट्टा विष समान बहुत रोग उत्पन्न करता है ५ सो रस अहार का सार है जब अहार से रस भिन्न भया सो सारहीन अहार मल और जल रह गया उस जल को मूत्र वहिनी शिरा ने ले के वस्ती जो मूत्र की थैली छोड़ा सो मूत्र है तिस के नाम उसी की कीट मल हो पक्काशय में रहता है ६ सो मल अपान वायु प्रेरित त्रवली हो निकलता है त्रिवली कहैं मल मार्ग जिस में तीन वल शंख की नाईं हैं तिस के नाम प्रवाहिनी सर्जनी ग्राहिका ३।७ सो रस समान वायु प्रेरित हृदय में जाय रंजित पित्त ने

वार्तिक वह रक्त उत्तम जीवाधार सर्व शरीर में स्थित है और चिकना है गुरु है चर है स्वादु है जब दग्ध होता है तब पित्त सम कटु हो जाता है ६ पित्त की आंच से पचिके मास भर में रसादिक धातु क्रम से शुक्र होता है स्त्री के शरीर में उसी क्रम से रज होता है इस रीति से एक दिन में भोजन का रस फिर रस पचिके पांच दिन में रुधिर ऐसे प्रति धातु पांच दिन में पचि पचि के महीना भर में शुक्र होता है १० जब स्त्री पुरुष की कामना से संयोग द्वारा शुक्र रज वीर्य मिश्रित होता है तब स्त्री के गर्भ स्थित होता है जब गर्भ से बाहर आया तब बालक हुआ ११ जो रज विशेष बली हुई तो कन्या हुई शुक्र अधिक वा बली हुआ तो पुत्र भया जो रज शुक्र समान भये तो नपुंसक हुआ आगे जो ईश्वर इच्छा इस इच्छा शब्द से यह युक्त है कि

रक्तं सर्व शरीरस्थं जीवस्याधारमुत्तमं स्निग्धं गुरुचलं स्वादु विदग्धं पित्तवद्भवेत् ९ पाचिता पित्ततापेन रसाद्या धातवः क्रमा त् शुक्रत्वं यान्ति मासेन तथा स्त्रीणां रजो भवेत् १० कामान्मिथुनसंयोगे शुद्धशोणितशुक्रजः गर्भः संजायते नार्याः संजा तो बाल उच्यते ११ आधिक्याद्रजसः कन्या पुत्रः शुक्राधिके भवेत् नपुंसकं समत्वेन यथेच्छा पारमेश्वरी १२ बालस्य प्र थमे मासि देया भेषजरक्तिका अवलेही कृते वै क्षीरक्षौद्रसिताघृतैः १३ वर्द्धयेत्तावदेकैकां यावद्भवति वत्सरः माषैर्वृद्धि स्तदूर्ध्वं स्याद्यावत्षोडशवत्सराः १४ ततः स्थिरा भवेत्तावद्यावद्वर्षाणि सप्तति ततो बालकवन्मात्रा ह्रासनीया शनैः शनैः मात्रेयं कल्कचूर्णानां कषायाणां चतुर्गुणां १५

दोनों की समता से दो भी हो जाते हैं वा रज वीर्य मिश्रित होते स्वांस की पौन गर्भाशय के मध्य पर जाने से वा तुरत ही पुनःमैथुन से १२ बालक को मास पर्यंत रत्ती औषधि दूध सहत मिश्री घी के अवलेह में देना १३ फिर वर्ष पर्यंत जे महीने का हो तै रत्ती देना फिर सोलह वर्ष तांई जे बर्ष का हो तै मासे औषधि देना १४ फिर सोलह वर्ष से सत्तर वर्ष तक सोलही मासे देना फिर सत्तर से ऊपर बालक की तरह कम औषधि देना जैसे सत्तर से महीना बढ़ा तो रत्ती कम सोलह मासे देना बहत्तर हो तो चोदह मासे यह चूरन और कल्क का क्रम है और काढे का क्रम दूसी रीति से चौगुना जा

जबतें बालक उत्पन्न हो नब तें ये कर्म उचित हैं काजल लेप स्नान उबटना तेल मर्दन वमन माथे कान में तेल देना २६ कवल कहे औषधि की लुगदी में रखना पांच वर्ष के पीछे नाश विधि आठ वर्ष के बीते रेचन सोलह वर्ष उपरांत बीस में मैथुन २७ अथावस्था दश वर्ष तांई बाला बीस तांई वृद्ध तीस तांई शरीर चालीस तक धारन शक्ति पचास तक त्वचा साठ तक दृष्टि सत्तर लौं वीर्य अस्सी तक बल नब्बे लौं बुद्धि सौ तक कर्मेंद्रिय चलन शक्ति एक से दश तक चेत एक सौ वीस तक जीवत्व दश दश वर्ष प्रति वह क्रम जानना २८ वात प्रकृति लक्षण सूक्ष्म केश दुर्बल रूखा बक-

अंजनंच तथा लेपः स्नानमभ्यंग कर्म च वमनं प्रति मर्शश्च जन्मप्रभृति शस्यते २६ कवलः पंचमाद्वर्षाद्दष्ट मात्ना-
सूस कर्मच विरेकः षोडशाद्वर्षाद्विंशतेश्चैव मैथुनं २७ बाल्यं वृद्धिर्वपुर्मेधा त्वग्दृष्टिः शुक्र विक्रमौ बुद्धि कर्मेंद्रियं
चेतो जीवितं दशतो ह्रसेत् २८ अल्प केशः कृशो रूक्षो वाचालश्चलमानसः आकाश चारी स्वप्नेषु वात प्रकृ-
ति को नरः २९ अकाले पलितैर्व्याप्तो धीमान्स्वेदी च रोषणः स्वप्नेषु ज्योतिषां द्रष्टा पित्त प्रकृति को नरः ३० गं-
भीर बुद्धिः स्थूलांगः स्निग्ध केशो महाबलः स्वप्ने जलाशयालोकी श्लेष्म प्रकृति को नरः ३१ ज्ञातव्या मिश्रचि-
न्हैश्च द्वि त्रिदोषोल्बणा नराः तमः कफाभ्यां निद्रा स्यान्मूर्छा पित्ततमोभवाः रजः पित्तानिलेर्भ्रांति स्तंद्रा श्लेष्मतमोनिलैः ३२

बारी मन स्थिर नहीं आकाश चारी स्वप्न देखे ये वात प्रकृति नर के लक्षण हैं २९ पित्त प्रकृतिस्थः लघु वेश में केश पके बुद्धि तीव्र स्वेद बहुत निकरै क्रोधी अग्नि नक्षत्रादि स्वप्न में देखे ये पित्त प्रकृति मनुष्य के लक्षण हैं ३० कफ प्रकृति लक्षण गंभीर बुद्धि थूल शरीर चिकने केश अधिक बल जलादि स्वप्न देखे ये कफ प्रकृति पुरुष के लक्षण हैं ३१ अथ द्वि त्रिदोष प्रकृति लक्षण जो दो दोष के लक्षण हों तो दो दोषज प्रकृति जानो तीनों के लक्षण होंय तो त्रिदोषज प्रकृति जानिये अथावस्था चिन्ह ३२ ॥ ॥

पवे

तमोगुण और कफ मिलके नींद आती है इसे सुप्तावस्था कहते हैं पित्त में तमोगुण मिलने से अचेत होता है तिसे मूर्छा कहते हैं रजोगुण पित्त बात मिले से संभ्रम होता है तमोगुण कफ बात संयुक्त होने से तंद्रा होती है जैसा कहैं निद्रास्थित न होय २२ बल हानि से दुख से अजीर्ण से ग्लानि होती है सामर्थ्य रख के यतन करै उसे आलस्य कहते हैं २३ चैतन्य स्थान की शिथिलता से एक स्वास को खैंचिके मुख फैलाद के छोडै उसे जंभाई कहते हैं २४ उदान और प्राण वायु के ऊपर चढ़ने से शिर का कफ गिरता है उस के शब्द को छींक ५ कहते हैं

ग्लानिरोजःक्षयाद्दुःखादजीर्णाच्च श्रमाद्भवेत् यः सामर्थ्येप्यनुत्साहस्तदालस्यमुदीर्यते २३ चैतन्यशिथिलत्वाद्यस्त्वेकं श्वासमुद्वमेत् विदीर्णवदनः श्वासं जृंभा सा कथ्यते बुधैः २४ उदानप्राणयोरूर्द्ध्वयोगान्मौलिकफश्च वात् शब्दस्संजायते तेन क्षुतं तत्कथ्यते बुधैः २५ उदानको पाराहारस्वस्थितत्वाच्च यद्भवेत् पवनं सोर्ध्वगमनं तमुद्गारं प्रचक्षते २६ इति श्री शार्ङ्गधरे आहारकथनं षष्ठोऽध्यायः ६ रोगाणां गणना पूर्वं मुनिभिर्या प्रकीर्तिता मयात्र प्रोच्यते सैव तद्भेदा बहवो मताः १ पंचविंशतिरुद्दिष्टा ज्वरास्तद्भेद उच्यते पृथग्दोषैस्त्रिधा द्वंद्वभेदेन त्रिविधः स्मृतः २ एकश्च सन्निपातेन तद्भेदा बहवस्स्मृताः प्रायशः सन्निपातेन पंच स्युर्विषमज्वराः ३

२५ जब आहार अपने स्थान में गया वहां की भरी हुई उदान वायु कोप करि ऊपर निकलती है उसे डकार कहते हैं २६ इति शार्ङ्गधरे आहार कथनं नाम षष्ठोध्यायः ६ प्रथम मुनियों की कही हुई रोगों की गणना सो इस ग्रंथ में कहता हूं रोगों के बहुत भेद हैं १ पच्चीस भांति का ज्वर का भेद कहता हूं तीन प्रकार के भिन्न भिन्न हैं वात ज्वर कफ ज्वर और द्वंद्व दोष तें तीनि प्रकार के हैं वातपित्त ज्वर वातकफ ज्वर कफपित्त ज्वर ऐसे कहते हैं २ और एक सन्निपात ज्वर है तिस के बहुत भेद कहते हैं बहुधा सन्निपात से पांच प्रकार के विषम ज्वर उत्पन्न होते हैं ३

घात नहिं घर घर कंठहिं होइ उत्त गात थिरि की असित दाग कले वर जोइ गुंग कान पक पेट गुरु दोष बहुत दिन पाक दोष बढ़े पावक घटै लक्षण सन्निनिशाक कहि असाध्य लक्षण सकल कष्ट साध्य जो घाट घोरे लक्षण साध्य ये जो लघु सरिता पाट इति सन्निपात सातकि दश द्वादश दिवस घटे न संतत ताप सतत चढ़े है वार ज्वर कहत वैद्य निष्पाप इति संतत सततज्वर घंटे अनेकू वार इक दिके घटी उनचास अंतरिया दिन बीच दे तिजरी दै तजि त्रास चातुर्थिक दिन द्वै विते कहत सकल रुजहार भूत प्रेत विपरीत जब होम जनित अभिचार राक्षसादि पीड़ा जनित कहि ज्वर ग्रह आवेश वृद्ध सिद्ध द्विज गुरु शापित कहत शाप ज्वर देश ई वार्तिक अतीसार सप्त प्रकार प्रति दोष दोष त्रिकार पुनि शोक आंव डराय ग्रहणी पु पंचक होय प्रति दोष संतो आम रहि जात जो भुग स्वाम ७ वार्तिक अथातीसार रोग अतीसार सात प्रकार के हैं वातातीसार पित्तातीसार कफातीसार त्रिदोषातीसार शोकातीसार आमातीसार भयातीसार ७ लक्षण जिस के मल में आंव वा फेना मिला पतला गिरै लाल रंग रूखा वा हलका होय वार वार वेग होहो भट भरा हट से हो शूल से हो यवातातीसार लक्षण हैं पीतव नीलाव ताम्र मल गिरै मूर्छा होय गुदा में जलन और गुदा पक जाय प्यास हो

पृथक् दोषैः त्रिभिस्सर्वैः शोकाद्भामाद्भयादपि अतीसार स्सप्तधा स्याद्ग्रहणी पंचधा मता पृथग्दोषैः सन्निपातात्तथा चामेन पंचमी ७

य ये पित्तातीसार लक्षण स्वेत रंग गाढ़ा कफ सहित विसैंदी गंध मल ठंढा देह में रोम हर्ष होय इति कफातीसार सूकर मेदा तथा मांस धोवन सा मल गिरै और वा ताति दोषातीसार न के लक्षण मिलें उसे त्रिदोषातीसार जानिये बहुत कठिन साध्य है इति जो धन पुत्रादि वा प्रतिष्ठादि हानि के शोक से भोजन करै उस के शोक की उष्णता कोठी में हो अग्नि को विकल करती है उस के तेज से रुधिर उफन ताम्र रंग होय मल के साथ गिरै वा केवल रुधिर गिरै और आम गंध हो वा अति दुर्गंध हो उसे शोकातीसार कहते हैं सो भी अति ही कष्ट साध्य है अति उष्ण चीज और पित्तक चीज खाने से वा व्रत से गरमी होके निरे रुधिर का भाड़ा होता है उसे रक्तातीसार कहते हैं और मूल व्याध अर्से शोक से भी निरा रक्त गिरता है इति रक्तातीसार और अन्न रस परिपाक होने से आंव होती है सो मल के संग अनेक रंग हो गिरती है और शूल करती है उसे आमातीसार कहते हैं भय ते अतीसार होता है भय से तीनों दोष कोपकरते हैं जिस दोष के लक्षण मिलें उसी दोष का कोप जानना इति अतीसार लक्षण अथ ग्रहणी रोग पांच तरह की ग्रहणी होती है वात ग्रहणी पित्त ग्रहणी कफ ग्रहणी त्रिदोष ग्रहणी आम ग्रहणी ५ ग्रहणी लक्षण जब अग्न्याशय में वातादिक दोष स्थित होके को-

वायु करि रुंधित खुल के झाड़ा नहीं होना और पित्त करिके क्षण क्षण भर में दिशा लगती है तब कच्ची आंव वा जितनी पके उतनी गिरती है शक्ति घटती है आलस्य बढ़ता है अग्नि मंद होती है उससे अन्न का पाक अच्छी तरह नहीं होता और वही आंव शरीर को जड़ करती है यह संग्रहणी का प्रथम रूप है वायु के कुपित भये शूल पेट फूलना खांसी स्वांस होता है उसे बात संग्रहणी कहिये पित्त के कुपित भये खट्टी डकार आती है छाती कंठ जलता है रुचि न होइ उसे पित्त संग्रहणी कहिये कफ के कुपित भये उबासी मुख मीठा लिब लिबा खांसी नाक बहना आलस्य ये कफ संग्रहणी लक्षण जानिये जिस में तीनों दोष के लक्षण होइ वह सन्निपात संग्रहणी है आम बात से हो सो आम संग्रहणी और संचित होके अठये चौथे दिन गिरे तिसे आमातीसार कहिये ७ प्रवाहिका चार भांति की है सो अतीसार के भेद हैं जानो बात से पित्त से कफ से रक्त से इन चारों से होता है वायु कोप करिके ओ रुड़ी में कफ संचय करे फिर कुपथ्य कारण पाके कफ मल में मिल पतला करि बहता है उसे प्रवाहिका कहते हैं जो वायु हो तो शूल हो और मल के संग फेन

प्रवाहिका चतुर्द्धा स्यात्पृथग्दोषैस्तथा सृतः ८ अजीर्णं त्रिविधं प्रोक्तं विष्टब्धं वायुनामतं पित्ताद्विदग्धं विज्ञेयं कफेनामंत दुच्यते ९ विषजीर्णरसादेके दोषैः स्यादलसस्त्रिधा विसूची त्रिविधा प्रोक्ता दोषैः सा स्यात्पृथक् पृथक् दंडकालसकं चैव मे केकं स्याद्विलंबिका १०

गिरे यह बात प्रवाहिका है और दाह हो पीत मल गिरे सो पित्त प्रवाहिका है जो देह टूटे आलस्य हो के कफ मिश्रित पांडु रंग मल गिरे उसे कफ प्रवाहिका कहैं जो रुधिर मिल पतला मल बहै रुके नहीं उसे रक्त प्रवाहिका कहते हैं ८ अजीर्ण के तीन भेद हैं किया हुआ भोजन यथा योग्य न पचै उसे अजीर्ण कहते हैं जो वायु करिके कोष्ट बद्ध होता है तब शरीर में शूल हड़ फूटन पेट फूले उसे विष्टब्ध अजीर्ण कहते हैं जो संभ्रम मूर्छा दाह देह पीर खट्टी डकार आवे जो वायु करिके कोष्ठ बंध उसे पित्त विदग्धा जीर्ण कहैं जो उबकाई डकार देह भारी देह सूजन उसे कफ आमा जीर्ण कहते हैं ९ वो अन्न भोजन करि रस होता है उसे एक विषा जीर्ण होता है जो रस न पचै सो विष तुल्य हो के मरणा वस्था के अनेक रोग को संचय करता है सो तीन प्रकार का है विसूची दंडालस विलंबिका लक्षण झाड़ा जल्दी जल्दी आवे मूर्छा उबाकी शूल भ्रम देह में परिदाह जृंभा देह धुनना अति स्वेद इसे विसूचिका कहते हैं कोई हलका कहते हैं शरीर दंडाकार हो अकड़ जाय प्यास डकार इसे दंडालस कहें अधो ऊर्द्ध वायु रुंध के पेट स्तंभ हो फूले शूल हो इसे विलंबिका कहें रस पांत

वा अर्श कहे बवासीर छः प्रकार की है वातार्श पित्तार्श कफार्श सन्निपातार्श रक्तार्श संसर्गार्श ६ इन के दो भेद हैं एक शरीर से होता है जिसे शुष्क कहते हैं दूसरा आर्द्र विपरीताहार विहार से होता है जो शंखाकार चक्र मलमार्ग में है साढे पांच अंगुल का उस में वातादिक के कोप से मांस का अंकुर उभर आता है लक्षण माथे में शूल कटि पीड़ा मंदाग्नि ये वातार्श हैं ज्वर दाह स्वेद मूर्छा ये पित्तार्श हैं स्वास भेद अरुचि माथा भारी और अंकुर फूल के पीड़ा करै बैठने में क्लेश ये कफार्श लक्षण हैं ऐसी ही सन्निपातार्श है और अतिगरमी करके रक्त गिरै देह पीली बल क्षीण ये रक्तार्श हैं मल के वेग से अंकुर रक्त देइ कांटे से गड़ें ये संसर्गार्श लक्षण हैं ११ चर्म कील तीनि भांति होती है वातज पित्तज कफज १२ देह में इक्कीस तरह के कृमि हैं तीनि

अर्शांसि षड्विधान्याहुर्वात पित्त कफात्ततः सन्निपाताच्च संसर्गा त्तेषां भेदो द्विधामतः ११ सहजोत्तरजन्मभ्यां तथा शुष्का र्द्रभेदतः त्रिधैव चर्मकीलानि वातात्पित्तात्कफादपि १२ एकविंशति भेदेन कृमयः स्युर्द्विधोच्यते बाह्यास्तथाभ्यंतराश्च स्युः स्वेदयूका वहिश्चराः १३ लिक्षाश्चान्ये तरवराः कफाते हृदयादकाः अंत्रादा उदराविष्टाश्चरवश्च महागुदा १४ सुगंधास्स म कुसुमास्तथा रक्ताच्च मातरः सौरसा लोम विध्वंसा लोम द्वीपा उदंबराः १५ केशादाश्च तथैवान्ये स रु ज्ञाताम के रुकाः ले लीहाश्च सलूनाश्च सौसुरादाः ककेरुकाः तथान्य कफ रक्ताभ्यां संजाता स्नायुकः स्मृतः १६ ऊर्ध्ववासी जुंवा

चील्हर किलनी ये केश वस्त्र की मलिनता से होते हैं १२ और अठारह अंतरवासी में सात भेद हैं सो कफ से होते हैं हृदयादिक १ अंतरदा २ उदराविष्टा ३ चरवः ४ महागुदा ५ सुगंधा ६ दर्भकुसुमा ७ कफाशय से आमाशय पर्यंत होते हैं कुपित होके ऊर्ध्व मार्ग अधोमार्ग हो निकलते हैं स्वेत वर्ण ताम्रवर्ण मोटे सेंवे तथा धान समान लक्षण मंदाग्नि उवाकी ज्वर नाभि लाल १४ और छः रक्त से होते हैं मात्रा १ सोरसा २ लोभ विध्वंसा ३ लोमद्वीपा ४ उदंवरा ५ केशादा ६ ये रक्तवाही शिरा के स्थान में होते हैं लक्षण लाल अति सूक्ष्म जो देख परे नहीं वह कष्ट उत्पन्न करते हैं १५ पांच प्रवतर कृमि मल से होते हैं कच्चे मल में रहते हैं स्वेत पीत दीर्घ मोटे कभी मुख से कभी मल के संग गिरते हैं अग्नि मंद पीड़तादि उपद्रव होते

अथ पांडु पांडु रोग पांच भांतिका होता है वातज पित्तज कफज त्रिदोषज माटी भक्षन से ५ लक्षण मुख कांत हीन भंवर कंप सूजन पेट फुलना आ-लस्य ये पांडु स्वरूप है और कमल पांडु कुंभक पांडु हलीम पांडु इन के लक्षण पीत चमरा हलदीसा मूत्र लाल मल उसवत हीन ये कमल पांडु देह फराना पीत फरी हरित सा मर्य हानि अग्नि मंद सूषना ज्वर नपुंसकता खांसी ये कुंभक पांडु ऐसी ही लक्षण हलीम पांडु के हैं २७ रक्त पित्त के तीन भेद जानो निदान उसका यह है परिश्रम सोक मार्ग गवन मैथुन इत्यादि अति करने से रुधिर उफनाय मुख और दिशा सें गिरे उसे रक्त पित्त कहते हैं जब वह उफना रुधिर निदान उस का यह है कफ कोप पाता है तो मुख से गिरता है जो वायु का कोप होता है तो मल मार्ग से गिरता है अग्नि कोप से नाक से गिरता है और कफ वात दोनों से मुख और दिशा से गिरता है २८ कास कहें खांसी पांच प्रकार की है वात से पित्त से कफ से कलेजे के विकार से धातु छीणसे ५ पेट कोष हृदय मस्तक पीड़ा सूखी खांस खोखी ये वात कास लक्षण ज्वर मस्तक दाह घुमेर पीत कफ निकलना ये पित्त कास लक्षण

पांडु रोगाश्च पंच स्युर्वात पित्त कफास्त्रिधा त्रिदोषैर्मृत्तिकाभिश्च तथैका कामला स्मृता स्यात्कुंभ कामला चैका त-थैवांत्र हलीमकं २७ रक्त पीतं त्रिधा प्रोक्तमूर्द्धगं कफसंगतं अधोगं मारुताज्ञेयं तद्द्वयेन द्विमार्गगं २८ कासाः पंच स-मुद्दिष्टास्ते त्रयः स्युस्त्रिभिर्मलैः उरःक्षताच्चतुर्थः स्यात्क्षयाज्जातश्च पंचमः २९ क्षयाः पंचैव विज्ञेयास्त्रिभिर्दोषैस्त्र-यश्च ते: चतुर्थः सन्निपातेन पंचमः स्यादुरःक्षतात् ३० अरुचि खजरी कफ से देह जकड़ना ये कफ कास लक्षण और वात से करेजे में घा-व परना सूखी खांसी के पीछे रक्त आना पसुरी पीडा यह क्षत कास लक्षण है धातु क्षय होके देह कृश सर्व संधि पीड़ा करिके खांसी उत्पन्न होती है यह धातु क्षय का लक्षण है २९ अब पांच प्रकार क्षई कहते हैं वात क्षय पित्त क्षय कफ क्षय सन्निपात क्षय उरु क्षय इस का चरक के मत से निदान कहता हूं भुजा कोषे जलना हाथ पाउ जलना ज्वर व्यथा कंठ स्वर विपरीत हाथ पांव पिराना खांसी ये वात ज क्षय लक्षण हैं दाह होना ज्वर रहना अ-तीसार रक्त सहित मल गिरना ये पित्त क्षय के लक्षण हैं कोष्ठ में पीड़ा होव कफ गिरे ज्वर होइ खांसी यह कफ क्षय लक्षण हैं ज्वर रहे खांसी रहे अंतर दाह होइ यह सन्निपात क्षय लक्षण हैं कंठ घर घराना ज्वर होना खांसी आना अग्नि मंद दुर्गंधि सहित कफ की गांठि गिरे यह उरुक्षत

वार्तिक शुष्क रोग छः प्रकार अति मैथुन से शोच से छत से अति चलने से अति परिश्रम से अति बुढापे से जब रसादिक सात धातु शरीर को सुखाती हैं २१ स्वांस कहैं दमा पांच प्रकार का है क्षुद्र स्वांस तमक स्वांस ऊर्ध्व स्वांस छिद्र स्वांस महा स्वांस वायु कोप से ऊर्ध्व स्वांस चढती है देह में मंद पार ये छओं स्वास साध्य लक्षण हैं कंठ घर घरना पसुरी पीर अति दुख से कफ निकसे दम चढै ये तम स्वास हैं बहुत ऊंची स्वांस खिंचे उसे ऊर्द्ध स्वास कहैं घर घरा के जोर से स्वास आवै विह्वल हो स्वासने की शक्ति न रहै सो महा स्वास कहैं हृदय में जाड्य मूर्छा प्रलाप अति वक स्वांस टूटना ये ऊर्द्ध स्वास असाध्य है २२ हिक्का कहैं हिच की पांच प्रकार की है क्षुद्रा अन्नजा गंभीरा यमला महती जो वार वार वायु मद वेग से ऊर्द्ध गमन करे उसे क्षुद्र हिक्का कहैं विशेष खाने पीने से अन्नजा हिक्का होती है भारी शब्द से हिच की आवे उसे गंभीरा कहैं रहि रहि के आवे उसे यमला कहते हैं देह कांपि के निरंतर हिच

शोषाः स्युः षट् प्रकारेण स्त्री प्रसंगा च्छुतो व्रणात् अध्व श्रमाच्च व्यायामा द्वार्द्ध क्यादपि जायते २१ श्वासाश्च पंच विज्ञेया क्षुद्रः स्यात्तमकस्तथा ऊर्ध्व श्वासो महाश्वासः छिन्न श्वासश्च पंचमः २२ कथिताः पंच हिक्का स्तु नासु क्षुद्रान्नजा तथा गंभीरा यमला चैव महती पंचमी तथा २३ चत्वारोऽग्नि विकाराः स्युर्विषमो वात संभवः तीक्ष्णः पित्तात्कफान्मंदो भस्म को वात पित्तयोः २४ पंचैवारोचका ज्ञेया वात पित्त कफै स्त्रिधा सन्निपाता न्मन स्तापा च्छर्द्दयः सप्तधा मताः २५

की आवै तिस को महा हिक्का कहैं २३ जठराग्नि के चार विधि विकार हैं वात कोप से हो उसे विषम कहैं पित्त से हो उसे तीक्ष्ण कहैं कफ से हो उसे मंदाग्नि कहैं वात पित्त से हो उसे तीक्ष्ण कहैं कफ से हो उसे मंदाग्नि कहैं वात पित्त हो उसे मंदाग्नि कहते हैं अथ लक्षण जो अन्न कभी पचै कभी न पचै वह विषमाग्नि है भोजन पर भोजन करै उसे तीक्ष्णाग्नि कहते हैं थोडा भोजन करने से भी न पचै उसे मंदाग्नि कहते हैं जो वार वार भोजन करै अन्न पचै और देह में न लगे उसे भस्मकाग्नि कहते हैं २४ अरुचि के पांच भेद हैं वात से पित्त से कफ से शन्न से संताप से लक्षण दांत खट्टे मुंह फीका हृदय पीडा यह वात रोचक है मुंह कडुवा स्वाद हीन ये पित्त अरुचि मुंह फीका वा चिकटा यह कफ अरुचि है तीनो लक्षण हों तो सन्निपात अरुचि हैं मन संताप हो तिस में जो दोष अधिक हो वही लक्षण जानो छर्द कहैं वमन सो सात प्रकार का है ॥ २५ ॥

वा छर्दि कहैं वार २ उवांत वात छर्दि पित्त छर्दि सन्नि छर्दि छिन्न छः स्त्री गर्भ धारण समय अथ लक्षण हृदय मस्तक पीड़ा मुख सूखे नाभि मूल उवा- की फेन युक्त डकार देह पीत ये वात छर्दि उवकाई पीत हरित दाह युक्त ये पित्त छर्दि कफ संयुक्त उवकाई होतो कफ छर्दि जो उवकाई खट्टी नीली लाल दाह युक्त होतो सन्नि छर्दि जो निरंतर जीमिचलाई विशेष थूके तौ कृमि छर्दि जो कुछ देर उवाके कुछ थंभ रहे वो घृण छर्दि कहैं अ- न्य ग्रंथ कार का मत है कि स्त्री की जैसी पित्त प्रकृति हो उतनी छर्दि हो २६ स्वर भेद छः प्रकार है वात भेद पित्त स्वर कफ स्वर गले में विशेष भेद से धातु क्षय से २७ तृषा छः प्रकार की है वातज पित्तज कफज त्रिदोषज घाव लगे से धातु क्षय से २८ मूर्छा चार प्रकार की है वात मूर्छा पित्त मूर्छा कफ मूर्छा सन्निपात मूर्छा तस्य लक्षण संज्ञा कहैं चेष्टा की बहाने वाली जो नाड़ी सो वातादिक से रुधिर होके अकस्मात् तमो गुण को

त्रिभिर्दोषैः पृथक् तिस्रः कृमिभिः सन्निपाततः घृणया च तथा स्त्रीणां गर्भाधानाच्च जायते २६ स्वरभेदाः षडेवस्यु र्वात पित्त कफै स्त्रयः मेदसा सन्निपातेन क्षयात्षष्ठः प्रकीर्त्तितः २७ तृष्णा च षड्विधा प्रोक्ता वाता त्पित्तात्कफा दपि त्रिदोषे रुपसर्गेण क्षयाज्ञाता श्च षष्ठिका २८ मूर्छा चतुर्विधा ज्ञेया वातपित्त कफैः पृथक् चतुर्थी सन्निपातेन तथैकश्च भ्रमः स्मृतः निद्रा तंद्रा च सन्यासो ग्लानि श्चैको कशः स्मृता २९ मदा स्सप्त समा ख्याता वाता त्पित्ता त्कफा त्त्रयः ॥

४०

प्राप्त हो तमो गुण कहैं दुख सुख कारस्कार करने वाला काष्ठ वत् भूमि पर गिरा देता है उसे मूर्छा कहते हैं भ्रम एक प्रकार तिस्का लक्षण संदेह सहित घुमेर आना निद्रा एक प्रकार की है तंद्रा एक प्रकार की है लक्षण कुछ जगै कुछ सोवै संन्यास एक प्रकार का लक्षण हाथ पाद चलें नहीं मृतक समान पड़ा रहै उसे संन्यास कहते हैं संन्यास रोग में बहुत जल्दी प्रयत्न करे तो मनुष्य तुरंत मर जाइ इस्से हाथ पांव की कलाई में सूची छेद रुधिर निकाले मस्तक में फस्त दे रुधिर निकाले तो जियै ग्लानि एक प्रकार की है २९ मद रोग सात प्रकार का है वात मद पित्त मद कफ मद सन्निपात मद रक्त के कोप से लसार वनि से विष खाने से कभी सुपारी खाने से कोरव खाने से धतूरा खाने से जैसे मद होता है ऐसा ही वातादि

ते कुपित हो मन को विभ्रम करते हैं उसे मद कहते हैं ३० ल॰ मदात्यय रोग कहते हैं अति मद ते चार विधि रोग हैं वात से पित्त से कफ से त्रिदोष से एक
परम मद कहें मनुष्य की बुद्धि भंस हो अनेक भाँति चिन्है करै प्राण विकल रहैं उसे मदात्यय कहते हैं ३१ पाना जीर्ण एक प्रकार एक पान विभ्रम
एक प्रकार पाना त्यय दाह सात प्रकार का है ३२ रक्त पित्त से प्यास से पित्त से धातु क्षय से मर्म घात से मार खाने से हृदय में रुधिर संचित होने से ३३
उन्माद रोग छः प्रकार का है वातोन्माद पित्तोन्माद कफोन्माद विष से धन से शोक से तस्य लक्षण जब वातादि दोष बढि के स्व मार्ग छोड़ि
नाडी मार्ग में जावे चित्त को भ्रम करै उसे उन्माद कहें लब से रोवे नाचे काला हो जाइ अजीर्ण वस्त्र त्याग बुद्धि स्मृति नाश भोजन में अरुचि

त्रिदोषै र स्त्रजा मद्या द्विषा दपिन्च सप्तम: ३० मदात्ययश्चतुर्धा स्याद्वाता त्पित्ता त्कफा दपि त्रिदोषै रपि विज्ञेयास्त एक:
परम स्तथा ३१ पानाजीर्णं तथैवैकं तथैक: पानविभ्रम: पाना त्यय: तथा चैक: दाहा स्सप्त मता स्तथा ३२ रक्त पित्ता: त
था रक्ता: तृष्णाया: पित्तत स्तथा धातु: क्षयात्मर्म घाता द्रक्त पूर्णोदरा दपि ३३ उन्मादा: षट् समा ख्याता स्त्रिभि र्दोषै स्त्व
यश्चते सन्निपाता द्विषाज्ज्ञेय: षष्ठो दु:खेन चेतस: ३४ भूतोन्मादा विंशति: स्युस्ते देवा द्दानवा दप गंधर्व किन्नरा द्य
क्षा त्पितृभ्यो गुरु शापत: ३५ प्रेताच्च गुह्यका द्वृद्धा त्सिद्धा द्भूता त्पिशाचत: जलाधि देवताया श्च नगाच्च ब्रह्म राक्षसात् ३६
राक्षसा दपि कूष्माण्डा त्कृत्यवै तालयो रपि अपस्मार श्चतुर्द्धा स्या त्समीरा त्पित्तत स्तथा ३७

३४ भूतोन्माद रोग बीस तरह के हैं देव से दानव से गंधर्व से किन्नर से यक्ष से पितर से गुरु श्राप से ३५ प्रेत से गुह्यक से वृद्ध और सिद्ध श्राप
से भूत से पिशाच से जल देवता से सर्प से ब्रह्म राक्षस से राक्षस से कूष्मांड से कर्तव्य से ३६ लक्षण संतुष्ट पवित्रता सुगंध माला धारण सं
स्कृत भाषा ये देवोन्माद ब्राह्मण गुरु देवता की निंदा निर्भय ये गंधर्वोन्माद किन्नर गंधर्व श्राप को जाने लाल आंखि मलीन रक्त वस्त्र
प्रिय दंभ पित्र क्रिया रहित मांस तिल गुड पर विशेष इच्छा करै ये पितृ उन्माद गुरु श्राप से गुरु श्रापोन्माद ॥

हे वृद्धि सिद्ध गुरु वत् भूत प्रेत गुह्यक बुद्धि अनुमान से जानौ ऊर्द्ध वायु होय बड़ बड़ाय अमंगल भाषै दुर्गंध युक्त रहै तो पिशाचोन्मादी जानौ जलधि देवता स्मशान देववत् जो ओठ भोजन में लगाइ जीभ से चाटे तो सर्पोन्माद है देव गुरु वेद शास्त्र ब्राह्मण को निंदे तो ब्रह्म राक्षसोन्माद जानौ मद मांस विषयातुर निर्लज्जा राक्षसोन्माद है अरु अनुमान से जानना ३६ अपस्मार कहैं मृगी के चार भेद हैं वातज पित्तज कफज त्रिदोषज लक्षण तन कंप दांत कड़ कड़ाना स्वास घर घराना यह वातापस्मार है जो मुख से फेन पीला उगले तो पित्तापस्मार है हाथ पाउं थर थराना देह सपेद ओठ ढी हो तो कफापस्मार है तीनों दोष लक्षण मिलें तो सन्निपातापस्मार असाध्य जानना ३७ आम वात चार प्रकार का है वातज पित्तज कफज त्रिदोषज वातादि दोष कोप करिके जठराग्नि मंद करै तो भोजन अपक्व रहै सो आंव हो जाय तिस्से देह में पीर ज्वर आरुचि गात अकड़े सूते सामान्य लक्षण हैं जिस में देह पीड़ा विशेष हो तो वातज है दाह हो तो पित्तज से पित्त कफ से आम वात है देह अकड़ जाय खुजरी हो तो कफ आम वात है तीनों लक्षण हों तो

श्लेष्मणा पित्ततीयः स्याच्चतुर्थः सन्निपाततः ३७ चत्वारश्चामवाताः स्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा चतुर्थः सन्निपातेन शूलान्यष्टौ बुधाजगुः ३८ पृथग्दोषैस्त्रिधा द्वंद्वभेदेन त्रिविधान्यपि आमेन सप्तमं प्रोक्तं सन्निपातेन चाष्टमं ३९ परिणामभवं शूलमष्टधा परिकीर्तितं मलैर्यैः शूलसंख्या स्यात्तैरेवं परिणामजं अन्नद्रवभवं शूलं जरत्पित्तभवं तथा ४०

सन्निपाताम वात है ३८ शूल के आठ भेद हैं वात से पित्त से कफ से वात पित्त से पित्त कफ से कफ वात से आंव से सन्निपात से दूस का मुख्य कारण वायु है सो रूखी रूखी द्रव्य सेवन से कुपित्त होइ हृदय पसुरी संधिन में पैठि शूल उपजाती है शीत काल में शीत पदार्थ सेवन से अधिक होती है जो पसीना निकाले से तेल मर्दन से उष्ण भोजन से कम होतो वात शूल जानो जो ठंढी मीठी वस्तु से दबे तो पित्त शूल है जो शिशिर में और वसंत में भोजन करे पीछे पीड़ा हो तो कफ शूल है जो दाह ज्वर होय तो बात पित्त है नाभि में पीर हो तो पित्त कफ पेडू कंठ हृदय में शूल हो तो कफ बात है जो ओझरी में गुड़ गुड़ा हट हो तो आंव शूल है तीनों लक्षण से त्रिदोष शूल जानो ३९ परिणाम शूल भोजनांत में आठ प्रकार का होता है वातज पित्तज कफज द्वंद्वज ३ आम वात से त्रिदोष से और एक अन्न द्रव्य शूल है जब अन्न पचना आरंभ हो तब होता है उसे अन्न द्रव कहते हैं और जब अन्न शेष पचता तब शूल हो उसे परिनाम शूल कहते हैं और

टी॰ उदावर्त रोग तेरह प्रकार के होते हैं क्षुधा १ तृषा २। ४१ निद्रा ३ स्वांस ४ उबाकी ५ छींक ६। ४२ जंभाई ७ डकार ८ आंसू ९ वीर्य १०। ४३ मूत्र ११ मल १२ वायु १३ इन सबों के रोध होने से उदावर्त होता है इन में तीन विशेष उपद्रवी हैं मल मूत्र वायु का निरोध ये प्राणांत उपद्रव करते हैं ४४ इन के वायु कुपित हो ऊपर जाय नाना भांति के दुःख उत्पन्न करती है उसे उदावर्त कहते हैं क्षुधा से देह घट घटाना ऐंडाना अरुचि १ तृषा से कंठ सूखना कान सुनना २ निद्रा से जंभा मस्तक भारी आलस्य रक्त लोचन ३ श्वास से हृदय रोग गुल्म ४ उबाकी से कंडु पांडु अरुचि ५ छींक रोध से मस्तक शूल आधा सीसी ६ जंभा से नासिका रोग ७ डकार से आना गाय अव्यक्त भाषण ८ आंसू से मुखरोग ९ वीर्य से अस्मरी सुजाख प्रमेह येते रोग हों १० मूत्र निरोध से मूत्र कृच्छ अंड की संधि में पीड़ा खंड हृद्द ११ मल निरोध से डकार विशेष मरोर होना पेट फूलना १२ वायु निरोध से नाना प्रकार के उदर रोग हो

एकैकं गणितं सुस्रै रुदावर्तास्त्रयोदशः एकः क्षुन्निग्रहात्प्रोक्तस्तृट्‌रोधाद्द्वितीयकः ४१ निद्राघातात्तृतीयः स्याच्चतुर्थः श्वासनिग्रहात् मूत्ररोधात्पंचमः स्यात्षष्ठः क्षवथुनिग्रहात् ४२ जंभारोधात्सप्तमः स्याद्उद्गारग्रहतोऽष्टमः नवमः स्याद्बाष्परोधाद्दशमः शुक्रधारणात् ४३ मूत्ररोधान्मलस्यापि रोधाद्वातविनिग्रहात् उदावर्तास्त्रयश्चैते घोरोपद्रवकारकाः ४४ आनाहो द्विविधो ज्ञेय एकः पक्वाशयोद्भवः आमाशयोद्भवश्चान्यः प्रत्यानाहश्च कथ्यते ४५ उरोग्रहस्तथा चैको हृद्रोगाः पंच कीर्तिताः वातादिभिस्त्रयः प्रोक्ताश्चतुर्थः सन्निपाततः ४६

४४ आनाह रोग दो तरह का होता है एक जो पक्वाशय का होके पेट फुलाता है उसे आनाह कहते हैं एक आमाशय से होता है उसे प्रत्यानाह कहते हैं तस्य लक्षण कटि में पीड़ा मल स्तंभ आलस्य पेट फूटना ये आनाह लक्षण हैं आमाशय में शूल मुख से गार डकार यह प्रत्यानाह हैं ४५ उरोग्रह एक प्रकार का है रक्त मांस प्लीहा और यकृत इन सबों के बढने से उरोग्रह होता है हृद्रोग पांच प्रकार के हैं वातज पित्तज कफज सन्निजज कृमिज ५ हृदय में सुई सी चुभनी दंड से कुचना कुल्हाड़ी से फारना आरी से चीरना ऐसा दरद हो तो वातज है हृदय में ग्लानि मूर्छा भ्रम सी डकार ये पित्तज हैं देह भारी खांसी अरुचि ये कफज हैं जो तीनों दोष के लक्षण होंतो हृदय में विशेष पीड़ा होतो त्रिदोषज

उदर रोग आठ भांति के हैं वातोदर पित्तोदर कफोदर त्रिदोषोदर जलोदर प्लीहोदर क्षतोदर बद्धगुदोदर आस्य लक्षणं हाथ पांव नाभि कोख सोथ संधि पीड़ा पेट भूल पेट गुड़ गुड़ाना ये वातोदर हैं ज्वर मूर्छा दाह खजुरी अति सार शरीर पीत वा ताम्र ये पित्तोदर हैं शरीर ग्लानि निद्रा देह गुन खांसी अरुचि श्वास यह कफोदर हैं विवेक शून्य दुर्बुद्धि नख केश मूत्र मल स्त्री लोम बश्य हेतु पुरुष को खिला दे तो तिस्से तीनो दोष कुपित्त होता है मूर्छा मोह पांडु वर्ण शरीर दुर्बल तृषातुर यह त्रिदोष हैं पेट चिकना फूला नसें दीखें प्यास अधिक देह कृश यह जलोदर है पेट बड़ा कोषैं कृश मंद ज्वर पेट पत्थर सदृश पांडु वर्ण ये प्लीहोदर है पेट और नाभि के मध्य में पीड़ा अति देह कृश मल पीवसा पानीसा मिला गिरे वा खार विश जाय यह क्षतो-

पंचमः कृमि संजात स्तथाष्टावुदराणिच वातात्पित्ता त्कफाश्चैव त्रिदोषेभ्यो जलादपि प्लीहः क्षता द्बद्ध गुदा दष्टमं परिकीर्तितं ४७ गुल्मा स्त्वष्टौ समाख्याता वात पित्त कफै स्त्रयः द्वंद्व भेदै स्त्रयः प्रोक्ताः सप्तमः सन्निपाततः ४८ रक्तादष्टमकः ख्यातो मूत्र घाता स्त्रयो दश वात कुंडलिका पूर्वं वात ष्ठीला ततः परा: ४९ वात बस्ति स्तृतीयः स्या न्मूत्रातीत श्चतुर्थकः पंचमं मूत्र जठरं षष्ठो मूत्र क्षयः स्मृतः ५० मूत्रोत्संगः सप्तमस्या न्मूत्र ग्रंथि स्तथाष्टमः मूत्र शुक्रंच नवमं विट् घातो दशमः स्मृतः ५१ मूत्रा सादश्चो ष्णवातो बस्ति कुंडलिका तथा त्रयोपि ते मूत्र घाताः पृथक् घोराः प्रकीर्तिताः ५२

दर है जो मल सूखा हुआ अति कष्ट से थोरा २ कांख के गिरे यह बद्ध गुदोदर लक्षण हैं ४७ गुल्म आठ प्रकार का है वात गुल्म पित्त गुल्म कफ गुल्म वात पित्त गुल्म पित्त कफ गुल्म कफ वात गुल्म त्रिदोष गुल्म रक्त गुल्म वातादि कोप करि पेट में गांठि सा गुल्म पांच तरह के उत्पन्न करता है सो दोनो पार्श्व में एक नाभि में एक हृदय में एक पेडू में होता है कभी चलकै और ठौर पीड़ा करै कभी कहीं अड़ कै पीड़ा करै मूत्र घात तेरह प्रकार का होता है वात कुंडलिका वात ष्ठीला ४८।४९ वात वस्ती मूत्रातीत मूत्र जठर मूत्र क्षय ५० मूत्रोत्संग मूत्र ग्रंथि मूत्र शुक्र विठ घात ५१ मूत्रा साद उष्ण वात बस्ति वात कुंडलिका दूसरे से तीन मूत्र साद उष्ण वात बस्ति कुंडलिका ये प्राण संकट उपद्रव करते हैं ५२ ५२

वा॰ शुक्र मेह उदक मेह लाला मेह सिकता मेह शनि मेह ये दश मेह कफ संभव हैं ५७ मंजिष्ठा मेह हरिद्रा॰ नील॰ रक्त कृष्ण क्षारमेह ये छः पित्त संभव हैं हस्ति मेह वसा मे॰ मज्जा मे॰ मधुमे ये चार वात संभव हैं सब मिलके बीस प्रकार के हैं ५८ अस्य लक्षणं जो मूत्र मार्ग से ऊखरस सा शुक्र गिरै तो इक्षु मेह जानो जिस में मद का गंध आवे वह सुरा मेह जानो पीठी सा गिरै तो पिष्ट मेह जो शुक्र जानो गिरने पर जम जाय तो सांद्र मेह है जल सी धातु गिरै तो उदक मेह लार सी धातु गिरै तो लाला मेह जानो जो धातु अधिक गिरै और ठंडी हो तो शीत मेह जानो जो धातु बालू सी गिरै तो सिक्त मेह है जो धातु धीरे २ गिरै तो शनै मेह जानो १० मंजीठ रंग धातु होय तो मंजिष्ठ मेह है पीत रंग होय तो हरिद्रा मेह जानो गज मद की तरह सदा सर्वदा बहै तो गज मेह है नील धातु हो तो नील मेह रक्त शुक्र गिरै तो रक्त मेह काली धातु गिरै तो कृष्ण मेह खार पानी सी गिरै तो क्षार मेह जानो मज्जा-

शुक्र मेहो दकाख्यो च लाल मेहश्च शीतकः सिकताह्वः शनै मेहो दशैते कफ संभवाः ५७ मंजिष्ठाख्यो हरिद्राख्यो नील मेहश्च रक्तकः कृष्णमेहः क्षार मेहः षडेते पित्त संभवाः हस्तिमेहो वसा मेहो मज्जा मेहो मधुप्रभः चत्वारो वातजा मेहा इति मेहाश्च विंशतिः ५८ सोम रोग स्तथा चैकः प्रमेह पिटिका दश शराविका कच्छपिका पुत्रिणी विनताल-जी मसूरिका सर्षपिका जालिनी च विदारिका विद्रधिश्च दशैताः स्युः पिटिका मेह संभवाः ५९ ॥

सी धातु गिरै तो मज्जा मेह सहत सी धातु गिरै या सहत गंध हो तो मधु मेह है ५८ सोम रोग एक प्रकार का है सब देह का जल मूत्र हो बहता है उसे सोम कहते हैं प्रमेह संबंधी फोड़ा दश प्रकार के हैं शराविका कच्छपिका पुत्रणी विनता अलजी मसूरिका सर्षपिका जालिनी बिदारिका विद्रधी ५९ अथ लक्षणं जो फोरा दिये उलटे तुल्य हो तो शराविका है जो कुछ एक की तरह हो दाह करै तो कच्छपिका जानो जिस फोड़े पर नन्ही २ फुन-सी निकरैं तो पुत्रिणी है जो फोड़ा काले पसे पर या अंड कोश पर हो और जाय के टूंडी की जड़ के पास दीसे तो बिनता है जो फोड़ा पत्थर सा हो उस के आस पास काली या लाल फुनसियां हों और ज्वर दाह अधिक हो तो अलजी कहिये जो मसूर सा हो तो मसूरिका है जो सरसों से फोड़े हों तो सर्षपिका जानो जो बड़ा फोड़ा दाह सहित हो और ऊंची नीची सूजन हो तो जालिनी जानो कद्दा सा हो तो विदारी जानो जो विद्र-

लक्षणं चिनग होके थोरा २ मूत्र स्राव हो तो वात कुंडलिका है अति पीड़ा हो मल मूत्र बंद रहे तो वात ष्ठीला जानो पेड़ कोष्ट में अधिक पीर हो और मल मूत्र बंद रहे तो वात वस्ती है जो मूत्र थोका बनी रहे उतरे नहीं तो मूत्रातीत है पेड़ फूले पीड़ा करे मूत्र न द्रवे तो मूत्र जठर है मूल दाह हो मूत्र न गिरे तो मूत्रक्षय है चिनग हो कांखने से रक्त सम थोरा २ मूत्र स्राव हो तो मूत्रोत्संग है मूत्राशय के मुह पर गांठि परि पीड़ा करे तो मूत्र ग्रंथि है जो मूत्र त्याग के आदि वा अंत मूत्र राख धोवन सा गिरे तो मूत्र शुक्र जानो मूत्र में मल की गंध हो तो विट घात जानो जो दाह युक्त गो रोचन शंख चूर्ण के रंग मूत्र हो के सूखने पर जिस दोष की रंगत हो जाय तो उसी दोष का मूत्र साद जानो जो मूत्र पीला या शुद्ध या रक्त वा खार कष्ट से थोड़ा गिरे तो उष्णवात जानो जो मूत्र की थैली के मुख पर सूजन हो धीरे २ पीला या लाल मूत्र गिरे ये वास्ति कुंडलिका लक्षण है ५२ मूत्र कृच्छ्र के आठ भेद हैं वात मूत्र कृच्छ्र पित्त कृ॰ कफ कृ॰ ५३ सन्नि॰ कृ॰ शुक्र॰ कृ॰ विट कृ॰ अश्मरी कृ॰ ये आठ हैं ५४ अस्य लक्षणं पेड़ू नाभि पीर अधिक कांख २ थोरा २ मूत्र हो तो वात कृच्छ्र है सद

मूत्रकृच्छ्राणि अष्टौ स्युर्वातात्पित्तात्कफात्त्रिधा ५३ सन्निपाताच्चतुर्थः स्यान्मूत्रकृच्छ्रं च पंचमं विट्कृच्छ्रं षष्ठमाख्यातं घातकृच्छ्रं च सप्तमं ५४ अष्टमं चाश्मरीकृच्छ्रं चतुर्धा चाश्मरी मता वातात्पित्तात्कफाच्छुक्राच्चत्वारश्च विंशतिः ५५ इक्षुमेहः सुरामेहः पिष्टमेहश्च सान्द्रकः ५६

चिनग हो लाल मूत्र द्रवे तो पित्त कृच्छ्र है पेड़ भारी मूत्र श्वेत चिकना हो तो कफ कृच्छ्र है तीनों लक्षण हों तो सन्निपात कृच्छ्र है सो असाध्य जानो मूत्र धातु मिश्रित क्लेश से उतरे तो शुक्र कृच्छ्र है जो कांखने से मूत्र द्रवे तो विट कृच्छ्र है घाव की तरह अंत निश्चै हो और दुर्लक्षणय के मूत्र स्राव के मूत्र स्राव होय तो घात कृच्छ्र है पेड़ू या डंडी में पीड़ा और शूल हो तो अश्मरी कहिये ५४ अश्मरी कहें पथरी के चार भेद हैं वात अश्मरी पित्त॰ कफ॰ शु॰ अश्मरी ५५ अस्य लक्षणं वात पित्त कोप करि मूत्र की थैली के मुह पर रस को सुखाय पथरी सी स्थिर करते हैं वही पथरी है पेड़ू और डंडी को फाड़ने लगती है मूत्र नहीं उतरता जब कांखने से पथरी कुछ हटती है तब दश बीस बूंद मूत्र गिरता है तो वात पथरी है जो उष्ण मल सा वा गले हाड़ के कन के से वा काली पथरी हो तो पित्त अश्मरी है पेड़ भारी मूत्र श्वेत ठंडा कष्ट से हो तो कफ अश्मरी जानो जब धातु सूख के पथरी परती है तब पेड़ू में पीर अंड कोष में सूजन ये शुक्र अश्मरी लक्षणं हैं ५६ प्रमेह बीस प्रकार का है इक्षु मेह सुरा मेह पिष्ट मेह

मेद रोग एक प्रकार का है लक्षण कफ उत्पत्ति कारक अहार मधुराम्ल मधुर रस घृत तैल मैदा चावल चून इन से केवल मेद बढ़ती है परंतु और सब धातुओं को क्षीण करि अनेक उपद्रव उपजाता है अनायास वातादि कुपित्त होके मेद के योग देह मोटी करते हैं स्तन नितंब पेट भारी हो जाता है भगंदर ज्वर अतिसार पील पांव अर्श इत्यादिक रोग उत्पन्न होते हैं सोथ नव प्रकार का है वात शोथ पित्त शोथ कफ शोथ वात पित्त शोथ पित्त कफ शोथ कफ वात शोथ त्रिदोष शोथ अभिघात शोथ विष शोथ ये नव भेद हैं ६० अस्य लक्षणं जो अनायास सूज आवै फिर अच्छा हो पिराय रूखा रूखा य ये वात शोथ है सूजन नरम जरदी या श्यामता लिये नेत्र लाल दाह सूजन में हो पकिजाय ये पित्त शोथ है जो सूजन भारी और पीला हो अरुचि अग्नि मंद राति में पिराय ये कफ शोथ है वात पित्त लक्षण होय तो वात पित्त· पित्तकफ ल· हो तो पित्त कफ है जो कफ वात ल· हो तो कफ वात शो· जो त्रिदोष लक्षण हो तो सन्निपात शो· किसी भांति क्षत लगे सूजन हो तो अभिघात शो· जानो विषधर जीव के दांत डंक पूंछ पंजा नख दंष्ट्र से

मेदोदोषस्तथा चैकः शोथरोगा नवस्मृताः दोषैः पृथक् द्वयेस्सर्वैरभिघाताद्विषादपि ६० वृद्धयस्सप्त
द्विता वातात्पित्तात्कफेन च रक्तेन मेदसा मूत्रा द्न्त्र वृद्धिश्च सप्तमः ६१

क्षत हो सूजे तो विष शोथ जानो ६० अंड वृद्धि वृषण फूलना उसे वृद्ध कहते हैं तिस के सात भेद हैं वात वृद्ध पित्त वृद्ध कफ वृद्ध रक्त वृद्ध मूत्र वृद्ध आंत वृद्ध ये सात प्रकार हैं अस्य लक्षणं जब वायु अंड कोश में भरि के पीड़ा उत्पन्न करती है और रुखाई छाय लेती है तो वात वृद्ध है जो पके गूलर के रंग दाह युक्त पके फोड़े की नाईं उष्ण हो तो पित्त वृद्धि जानो ठंडा भारी चिकना कठोर खुजलाय कुछ पीड़ा हो तो कफ अंड वृद्धि जानो जो काले रंग की फुड़िया सहित पित्त लक्षण हो तो रक्तांड वृद्ध जानो जो ताल फल से नील गोल हो तो मेद वृद्ध है और एक अन्योक्त अंड वृद्ध को मांस वृद्ध हैं उस का निदान यह है कि मूत्र वेग के रोके से दोनों ओर की गोली फूल जाती है जब मूत्र रुक जाता है तब धीरे२ दोनों कोहीन में हलाद २ पचता है फिर वायु कोप से उतरि के पीड़ा करता है फूलता है उसे मूत्र वृद्ध कहते हैं जो वायु के कोप से नस अंड को समे लटक आती है जब वह नस फिर वायु कोप पाइ के फूलती है इस में आंत उतरि आती है उसे अन्त्र वृद्ध कहते हैं वह दबाने से फिर ऊपर चढ़ि जाती है ॥ ६१

अंड वृद्धि कहैं गलांड गले की संधिन में अंडे सी गांठे फूल के कड़ी हो रहैं पीड़ से अंड वृद्ध एक प्रकार का है गंड माला एक ही प्रकार की है गले में माला की नाईं फोड़े होके पके फूटे उसे गंड माला कहते हैं गल गंड एक प्रकार का है जिसे घेघा कहते हैं अपची एक प्रकार की है गंड माला की नाईं गांठे पकें फूटें वहें एक अच्छा होने न पावे दूसरा और हो उसे अपची कहते हैं और चरक में गले के छत्तीस तरह के रोग और कहे हैं ६२ ग्रंथि कहैं गांठि की तरह नौ भांति होती है जिसे बतौरी कहते हैं बात ग्रंथि पित्त ग्रंथि रक्त ग्रंथि शिरा ग्रंथि व्रण ग्रंथि अस्थि ग्रंथि मांस ग्रंथि ए नव प्रकार के ग्रंथि रोग हैं ६३ अस्य लक्षण जो गांठि जूता के आकार हो चिलकि चिलक उठै छूने से कठोर पिराय और नरम हो खरल के आकार हो रक्त बहे तो बात ग्रंथि जानौ जो ग्रंथि दाह करै फफोले की नाईं गुह्याय और पके नहीं काला लहू बहै तौ पित्त ग्रंथि जानौ जो गांठि ठंडी हो कुछ पीड़ा करै खुजरी होय कठोर बहुत होय दिन में बढ़े पके से पीव देइ तौ कफ ग्रंथि जानौ जिस में पित्त ग्रंथि के लक्षण हों रक्त वर्ण विशेष होवै तौ रक्त ग्रंथि जानौ बटियासी होवै तौ शिरा ग्रंथि जानौ दबाने से इधर उधर दौरे ऊंची हो और मर्म स्थान में हो तौ असाध्य मेद ग्रंथि जानौ जो हाड़ टूट के हाड़ में सट जाय और ग्रंथि नि-

अंड वृद्धिस्तथा चैका तथैका गंडमालिका गंडापचीति चैका स्याद् ग्रंथयो नवधा मताः ६२ त्रिभिर्दोषैस्त्रयो रक्ताच्छिरानि-
मेंदसो व्रणात् अस्थि मांसेन नवमः वृद्धिर्धस्यात्तथार्बुदं ६३ वातात्पित्तात्कफाद्रक्तात्मांसान्मेदसः ६४ श्लीपदस्थाने धा प्रोक्तो वातात्पित्तात्कफादपि ६५

कसरि आवे पत्थर सी पीड़ा होवै तौ हाड़ ग्रंथि जानौ सो भी असाध्य है जो हाड़ काढ़े तौ अच्छी हो जो मांस से होती है उसे मांस ग्रंथि कहते हैं जो घाव पूरि के ऊपर मांस बढ़ि के गांठ उभरै उसे व्रण ग्रंथि कहते हैं कोई मांस वृद्ध कहते हैं ६३ अर्बुद रोग छः प्रकार का है वातार्बुद पित्तार्बुद कफार्बुद मांसार्बुद मेदार्बुद अस्य लक्षण जो प्रथम ग्रंथि के लक्षण लिख आये हैं वे सेई हैं रक्तार्बुद और मांसार्बुद ये कठिन हैं इन के लक्षण भिन्न २ कहता हूं जो मांस पिंड सा हो लाल रंग पक फूट के अति दुख देता है उसे रक्तार्बुद कहते हैं मांस दुष्ट होके मांस घी कुआर ये दुकी नाईं हो चिकना लाल अति कठिनता से पके फूटै के हमेशा बहा करै जल्दी अच्छा न हो जो मर्म स्थान में हो तौ असाध्य है और जगह साध्य है यह मांसार्बुद है ६४ श्लीपद कहैं फील पाउं सो तीनि भांति के हैं बात से पित्त से कफ से ६५ अस्य लक्षण जांघ के जोड़ की संधि में प्रथम छोटी गिलटी उभर के पीड़ा करती है फिर कुछ दिनों में सब जोड़ की नसें तन जाती हैं चलने में समुझ पड़ता है फिर धीरे २ रुधिर सहित पीड़ा उतर के पैर से गांठि तक फूलता है उसे फील पाउं कहते हैं और हाथ में और अंग में भी होता है तराई की भूमि में अधिक होता है बातज में पीर पित्तज में दाह

का॰ विद्रधी छः प्रकार का है वातज पित्तज कफज रक्तज क्षतज त्रिदोषज ये छः विद्रधी हैं ६६ अस्य लक्षण जो लाल वा पीतनु कीली भांति
पीड़ि का युक्त तो वात विद्रधी है जो दाह युक्त लाल होतो पित्तविद्रधी जो दीपक सी पांडु वरण पक के काली पर जाय तो कफ विद्रधी रक्त विद्रधी के
पित्त सम लक्षण हैं जो किसी भांति घाव संबंधी हो तो पित्त विद्रधी है जिस में दाह ज्वर खुजली और विविधि उपद्रव होंतो त्रिदोष विद्रधी जानो ६६ व्रण
कहैं पिट की फोड़ा सो पंद्रह प्रकार के हैं तिस में भी चार भेद हैं आगंतुक देहज शुद्ध दुष्ट तिस्की संख्या वातज पित्तज कफज रक्तज ६७ वातज पित्तज
वात कफज पित्त कफज सन्निपातज वात रक्तज रक्त पित्तज ६८ कफ रक्तज वात पित्त रक्तज वात कफ रक्तज पित्तकफ रक्तज सन्निपात रक्तज ६९ अस्य

विद्रधिः षड्विधाख्यातो वातो पित्तः कफै स्त्रयः रक्तात्क्षतात्रिदोषश्च व्रणाः पंच दशोदिताः ६६ तेषां चतुर्द्धा भेदाः स्युरा
गंतुर्देहजस्तथा शुद्धो दुष्टश्च विज्ञेयस्तत्संख्या कथ्यते पृथक् वात व्रणः पित्तजश्च कफजो रक्तपित्ततः ६७ वातपित्त भव
श्चान्यो वात श्लेष्म भवस्तथा तथा पित्त कफाभ्यांच सन्निपातेन चाष्टमः नवमो वात रक्तेन दशमो रक्त पित्ततः ६८
श्लेष्म रक्त भव श्चान्यो वात पित्तासृगुद्भवः वात श्लेष्मासृगुत्पन्नः पित्त श्लेष्मास्र संभवः सन्निपातासृगुद्भूत
इति पंच दश व्रणाः ६९ सद्यो व्रणास्त्वष्टधास्या दवक्लिप्त विलंबिनो छिन्न भिन्न प्रचलिता घृष्ट विद्ध निपातिताः ७०

/५१

लक्षण जो चोट चपेट लगने से पके फूटै उसे आगंतुक व्रण कहते हैं वामादिक के कोप से हो उसे देहज कहते हैं जो जीभ के रंग हो छोटा या बड़ा चि-
कना पीड़ा न करै न पके फूटै न कड़ा हो वह शुद्ध व्रण है जो दुर्गंध युक्त हमेशह ही व दर्द ऊपर कठोर भीतर पुल पुला उसे दुष्ट व्रण कहते हैं ६९
सद्यो व्रण कहैं आगंतुक व्रण सो आठ प्रकार का है अब लिप्त विलंबिन छिन्न प्रचलित घृष्ट विद्धनि पातित ७० सामान्य लक्षण नाना प्रका-
र के जो अस्त्र हैं तिन की धार से कटे या मुद गरादि की चोट से घाव हो या चुट हल रक्त जम के पके फूटे उसे आगंतुक व्रण कहते हैं ॥ ७०॥

कोष्ट भेद कहैं उदर क्षत लगना दो भांति है एक छिन्नांत्रक: दूसरा निः सृतांत्रक: पेट में क्षत लगनि से आंत कटि वो वाहर ज निकरै सो छिन्नांत्रक हैं और जो वाहर निकर परै वा विना टूटे वाहर निकरै तिसे निस्रतांत्रक कहैं अस्थि भंग कहैं हाड़ टूटना सो आठ भांति है विदारित भग्नपिष्ट वि वर्तित विश्लिष्ट तिर्यक अधो भात ऊर्द्ध भात संधि भंग अस्य लक्षणं जो हाड़ से हाड़ रगड खाय संधि पर सूजन हो पीड़ा करै तो भग्न पिष्ट है जो संधि चर्म फटि के हाड़ निकरै तो विदारित है जो हाड़ बैठने में यथा स्थान न बैठे ऊपर नीचे हो जाय उसे विवर्तित कहते हैं जो हाड़ हटने से संधि ढीली पै सू जन परि के पीड़ा करै तो विश्लिष्ट जानौ हाड़ सलकना कहैं हाड की ठौर पलटजाना उसे तिर्यक कहते हैं जो हाड़ अपनी ठौर से नीचे को सलक जा य तो अधोगत कहिये जो ऊपर को सिलकै तो ऊर्द्ध गत कहैं जो हाड़ टूट जाय उसे संधि भंग कहैं ७१ वन्हि दग्ध चार प्रकार है लुष्ट अति

कोष्ट भेदो द्विधा प्रोक्तः छिन्नांत्रोनि सृतांत्रकः अस्थि भंगोष्टधा प्रोक्तो भग्नपिष्ट विदारिताः विवर्तिश्च विश्लिष्टश्च तिर्यक् क्षिप्त स्त्वधोगतः ऊर्ध्वग स्संधि भग्नश्च वन्हि दग्धश्चतुर्विधः ७१ लुष्टोति दग्धो दुर्दग्धः सम्यग्दग्धः प्रकीर्तितः ७२ ना- डय भंगाः समाख्याता वात पित्त कफै स्त्रिधा त्रिदोषै रपि शल्येन तस्मा ष्टा स्यु र्भगंदराः शतपोनस्तु पवना दुष्ट ग्रीवश्च पित्ततः परि स्रावी कफा ज्ञेय स्त्वृजु र्वात कफोद्भवः ७४ परिक्षे पी मरु त्पित्ता दर्शोजः कफ पित्ततः आगंतु जातचोन्मार्गी शंखावर्त्त स्त्रि- दोषजः ७५ ॥

दग्ध दुर्दग्ध सम्यग्दग्ध ४ अस्य लक्षणं जो अग्नि स्पर्श से त्वचा का रंग पलट जाय उसे लुष्ट कहते हैं जो चर्म जरि के मांस नस हाड़ देखि परै तो अति दग्ध है जो देह जरि खाल उलट जाय दाह युक्त पीड़ा करै तो दुर्दग्ध है जो सब देह जरि- लु आठ समान हो जाय उसे सम्यग्दग्ध कहैं ७२ नाड़ी व्रण पंच प्रकार है वात नाड़ी पित्त नाड़ी कफ नाड़ी त्रिदोष नाड़ी शल्य नाड़ी ७३ अस्य लक्षणं क्षत संबंधी सूजन पक्की वा कच्ची को धोवै और शुद्ध न होइ वा क्षत के अंत तक वा तीन जाय तो बहुत पीड़ा करै और विल समान चमडे पर दीखे और भीतर नाड़ी कहैं पुंगलीसा सीधा या टेढा या लंबा हो और पीड़ा देता रहै उसे नाड़ी व्रण ना सूर कहते हैं शल्य एक प्रकार है शल्य कहैं शाल जो कील कांटा कांच चुभि के रहि जाय तो मास पकाता सड़ाता है उसे शल्य नाड़ी व्रण कहैं ७३ भगंदर आठ प्रकार का है वायु से स्वेत पीत पित्त से

उष्ट्र ग्रीव कफ से परिस्रावी वात कफ से ऋजु ७४ वात पित्त से परिक्षेपी कफ पित्त से अर्शोज त्रि० आगंतु से

उन्मार्गी त्रिदोष से शंखावर्त ७५ अस्य लक्षणं गुदा के चारों ओर दो अंगुल तक जो फोड़ा बड़ा या छोटा हो पकि फूटि कै भीतर नाईं छिद्र पर जावै उ से भगंदर कहते हैं एक तरह का नासूर है उस राह भी मल आता है भगंदर एक भांति हो अनेक भांति पकि फूटि के बहा करता है ७५वां इंद्री में पंच प्र कार उपदंश होता है जिसे गरमी कहैं बात से पित्त से कफ से त्रिदोष से रक्त से ७६ अस्य लक्षणं डंडी में क्षत लगै या कड़े हाथ से या रोम टूटने से वा रजस्वला प्रसंग से होता है यह निदान का मत है बुद्धि से यह समझ परता है कि ऐसे घाव के बिचार दिन में दूर होता है यह रोग दुष्ट योनि के संयोग से प्रथ म डंडी में घाव परि के धीरे २ सब शरीर में घाव पड़जाते हैं ७६ इंद्री में शूकज रोग चौबीस भांति का भी होता है यह अति विषया को स्त्री पुरुष स्थूल क रने को विषादि तीव्र औषधि लगाते हैं तो बाल समान सूक्ष्म समान सपेद किरौना सा होता है उसे शूक कहते हैं इसी के चौबीस भेद हैं लिंगार्श १

मेढ्रे पंचोपदंशास्तु वात पित्त कफै स्त्रिधा सन्निपातेन रक्ताश्च मेढ्रे शूकामयस्तथा ७६ चतुर्विंशति संख्याता लिं गार्शो गृथितं तथा निवृत मवमंथश्च मृदितं शतयोनकः ७७ अष्ठीलिका सर्षपिका त्वक्पाकश्चावपाटिकः मांस पाकः स्पर्शहानि विरुद्ध मणिरुन्नतः ७८ मांसार्बुदं पुष्करिका संमूढ पिडिकालजी रक्तार्बुदं विद्रधिश्च कुंभिका तिल कालकः विरुद्धः प्रसकः प्रोक्तस्तथैव परिवर्तिकः ७९ ॥

ग्रथित २ निवृत ३ अव मंथ ४ मृदित ५ शतयोनकः ६। ७। अष्ठीलिका ७ सषपाक ८ त्वक्पाक ९ अवपाटिका १० मांस पाक ११ स्पर्श हानि १२ विरुद्ध मणि १३ । ७८ मांसार्बुद १४ पुष्करिका १५ संमूढ पिडिका १६ अलजी १७ रक्तार्बुद १८ विद्रधि १९ कुंभिका २० तिलकाल २१ विरुद्धा २२ प्रशक्त २३ परिवर्तिक २४ । ७९ अस्य लक्षणं ये सब रोग इंद्री पर होते हैं सो क्षुद्र रोग गिने जाते हैं और २ निदान में कहते हैं कि ये रोग इंद्री के मुख पर होते हैं मांस बढि के कुंदरू की तरह हो जाता है उस से फुंसी भी होती हैं और २ भी अनेक प्रकार के उपद्रव संयुक्त होते हैं ७९ वार्तिक कुष्ट रोग अठारह प्रकार का है प्रथम वातजन्य कापालिक लक्षणं कृष्ण रंग वा रक्त रंग माटी के खपरे की नाईं रूखा खरखरा चमड़ा पतला पतला हो तो कापालिक कहिये दूसरा उदंबरा गूलर तुल्य दाह पीड़ा

वह तीसरा कफ जन्य मंगल कुष्ठ है जो पांड में काली काली सी पीट की होके फट फट के वह खजुरी करै वह चौथी विचर्चिका है ८० जो लाल हो वीच में काला पीड़ा युक्त रीछ की सी जीभ सो वातपित्त जन्य ऋष्य जिव्हा कुष्ठ पांचमा है जो गोड के चंद्र में पकि के घाव परै या हाथ की हथेली में हो वह विपादिका छठवां कुष्ठ है जो सपेद ललाई लिये हो चमडा पतला हो और उस में कूटसा परै वह सातवां सिध्म कुष्ठ है वह छाती में होता है उसे सिहुवा भी कहते हैं कफ पित्त से उत्पन्न है जो घाव होके काला पड जाय वह कफ वात्त जन्य है आठवां किटभ कुष्ठ है जो लाल लाल पिड की होके खुजलाय वह अलस कुष्ठ नवमा है ८१ जो श्याम चमड़ा होके चिकना और नन्हीं पिडकी संयुक्त हो और खुजलाय वह दशमा कुष्ठ है उसे दाद भी कहते हैं जो देह में छोटी वडी पिडिकी परिकै फूटै खजुआय एक अच्छी न हो और निकलै वह ग्यारवां पामा कुष्ठ है और खुजरी भी कहैं टंट में हो तो टेंढो कहैं क-

कुष्ठानष्टादशोक्तानि वाता त्कापालिकं भवेत् पित्तेनो दुवरं प्रोक्तं कफान्मंडल चर्चिकं ८० मरुत्पित्ता दृष्य जिव्हं श्लेष्म वाताद्विपादिका तथा सिध्मैक कुष्ठंच किटिभं चालसं तथा ८१ कफपित्तात्पुनर्दद्रु पामा विस्फोटक तथा महा कुष्ठं चर्मदलं पुंडरीकं शातारुकं ८२ त्रिदोषे काकणं ज्ञेयं तथान्यच्छ्वित्र संज्ञकं तच्च वातेन पित्तेन श्लेष्मणाच त्रिधा भवेत् ८३ क्षुद्ररोगा षष्ठि संख्या स्तेष्वादो शर्करा र्बुदं दंद्रवृद्धा पनसिका विवृता घोलजी तथा ८४ ॥

फपित्त के जोर से सब देह लाल होके छोटी २ पिड की सब देह फोरि के छाले की नाई निकलै उसे विस्फोटिक वारमा कुष्ठ कहैं उसी को शीतला भी कहते हैं जो कुष्ठ शरीर की त्वचा को हाथी की खाल समान करदे और पसीना न निकरै वह तेरवां महा कुष्ठ है उसे चर्म कुष्ठ और गज चर्म भी कहैं जो कुष्ठ लाल होके पिराय खजुवाय के पिडिकीसा हो जाइ वह चौदवां कुष्ठ चर्मदल कहते हैं जो कुष्ठ कमल पत्र सम ऊंचा शरीर पर देखि परै वह पुंडरीक पंद्रवां कुष्ठ है जो कुछ छोटा फोड़ा होके बहुत छेद परजांय वह शातारुक सोल्हवां कुष्ठ है ८२ जो पकि के घाव काला होजाय अति पीड़ा करै उसे काकण कुष्ठ कहते हैं यह सत्रहवां त्रिदोषज नित असाध्य है अठारवां श्वित्र कुष्ठ सो कुष्ठ पके न फूटे सो त्रिदोष से तीन प्रकार का श्वित्र कुष्ठ होता है जिस के हो उसे कोढ़ी कहते हैं वायु से रूखा और लाल चकतासा होता है पित्त से ताम्र वर्ण दाह सहित चिकना होता है कफ से सपेद चक-

बा॰ क्षुद्र रोग साठि प्रकार के हैं शर्करार्बुद १ इंद्र वृद्धा २ पनसिका ३ विवृता ४ अंधालजी ५।८४। बराह दंष्ट्रा ६ वल्मीक ७ कछपी ८ तिलकालक ९ गर्दभी १० रकसा ११ यव प्रख्या १२ विदारिका १३।८५ कंदर १४ मसक १५ नीलका १६ जाल गर्दभ १७ रिवेल्ली १८ जंतु मणि १९ गुद भ्रंश २० अग्नि रोहिणी २१।८६ सन्निरुद्ध गुद २२ कोढ २३ कुनख २४ अनुसय २५ पद्मिनी कंटक २६ चिप्य २७ अलस २८ मुख दूषिका २९।८७ कक्षा ३० वृषण कच्छ ३१ गंध ३२ पाषाण गर्दभ ३३ राजिका ३४ व्यंग कहे वाग के चार भेद हैं ३५ वातज ३६ पित्तज ३७ कफज रक्तज ३८ विस्फोटक आठ प्रकार का है परन्तु क्षुद्र रेखा की गनती में हैं बात विस्फोटक पित्त वि॰ कफ॰ वि॰ वातपित्त वि॰ कफपित्त वि॰ बात कफ वि॰ रक्त विस्फोटक सन्निपात वि॰ मसूरिका रोग भी क्षुद्र

वाराह दंष्ट्रो वल्मीकं कच्छपी तिल कालकः गर्दभी रकसा चैव यव प्रख्या विदारिका ८५ कंदरो मसकश्चैव नीलिका जालगर्दभः इरिवेल्ली जंतु मणि गुद भ्रंशोग्नि रोहिणी ८६ सन्निरुद्धः गुदः कोढः कुनखोनुशयी तथा पद्मिनी कंटकश्चिप्यमलसो मुखदूषिका ८७ कक्षा वृषण कच्छूश्च गंध पाषाण गर्दभः राजिका च तथा व्यंगश्चतुर्धा परिकीर्त्तिताः वाता त्पित्तात्कफा द्रक्तादित्युक्तं व्यंग लक्षणं विस्फोटाः क्षुद्र रोगेषु तेष्टधा परिकीर्त्तिताः पृथग्दोषैस्त्रया द्वंद्वैस्त्रिविधा सप्तमो सृजः ८९ अष्टमः सन्निपातेन क्षुद्र रुक्षु मसूरिका ९० चतुर्दश प्रकारेण स्त्रिभिर्दोषैस्त्रिधा च सा द्वंद्वजा त्रिविधा प्रोक्ताः सन्निपातेन सप्तमी अष्टमी त्वग्गता ज्ञेया रक्तजा नवमी मता दशमी मांसजा ख्याता च तस्रोन्याश्च दुस्तराः मेदोस्थि मज्जा शुक्रस्था क्षुद्र रोगा इतीरिता ९२

संज्ञक है जिसके चौदह भेद हैं ९० वात मसूरिका पित्त मसूरिका कफ म॰ वातपित्त मसूरिका कफपित्त मसूरिका वातकफ म॰ त्रिदोष मसूरिका ९१ त्वचा म॰ मांस म॰ इसमे परे चार अति कठिन हैं मेद मसूरिका मज्जा म॰ अस्थि म॰ धातु म॰ ९२ अस्य लक्षणं जो पिडि की पकि के गाढा या पतला पानीसा वहै फिरि सूखि के त्वचा कठोर हो फटि के रुधिर बहै उसे शर्करा र्बुद कहते हैं जो एक फुंसी उठे उस के नीचे और छोटी २ बहुत फुंसी हों वह इंद्र वृद्ध है जो पिडि की कान के भीतर हो उसे पनसिका कहते हैं जो गूलर सदृश हो घेरा अधिक बढावे दाह विशेष करे उसे निवृत्ता कहते हैं जिस फोडे का मुंह न देख परे अति ऊंचा अधिक घेर बांधे वह अघालजी है जो शरीर में गांठि सी कठिन उभरे बूढे दांत के रंग पीर हो

खजुआय वह वराह दंष्ट्रा है जो पिडिकी बुल्लासी होके बीच में खाली हो किनारे मुंह करिके वहे वल्मीक है जो पिडिकी बहुत कड़ी कटोरी की पेंदी समान हो उस पिडिकी को कच्छापिका कहें जो देह में तिल समान हो देह से ऊंची नहो पीडा न करै उसे तिलकालक कहें जो वटिया सम ऊंची हो लाल रंग उस में और पिडिकी निकले पीडा करै वह गर्दभिका है जो फूल के पके फूटे नहीं खुजरी हो वह हरकसा है जो यव समान हो तो यव प्रख्या है जो कांख या छाती या आंड संधि में पताल में कोठासी हो वह विदारिका है जो हाथ पांय में कांटा लगि के उसी ठौर गांठि परि रहि जाय उसे कंदर कहें गुखरू है जो देह में उरद सदृश निकलि कै रहि जाय पीड़ा न करै उसे मसक कहिये मस्सा है जो देह में अनयास खाल्ल काली परजाइ उभरै नहीं और कोई विकार न करै उसे नालिका कहते हैं लहसुन है जो देह में सूजन होइ के टेढी बेढी लंबी सर्पाकार फूलि के नसजाल परि जाइ और वारज हो अस्लाय उसे जालगर्दभ कहते हैं जो वटियासी होत ही अति पीड़ा उत्पन्न करै उसे वल्मिका कहें जो देह में देह के रंग ऊंचा हो पीडा न करै और जन्मतें हो उसे जंतु मणि कहते हैं और आचार्य चिन्ह कहते हैं जिस के मलत्याग समय कांच निकल आवे उसे गुद भ्रंश कहते हैं कारव कहें बगल में मास में जाला समान हो के फोड़ा होता है अंतर दाह होके ज्वर आता है सो दश पांच दिन में मनुष्य को मार डालता है वह अग्निरोहिणी है जिस रोग में मल मार्ग की वाई नस रक्त को कोप करिके मोटी परिके मल मार्ग को संकीर्ण करै तौ मल गाढा और मोटा बहुत क्लेश में गिरै वह सन्निरुद्ध गुद है कफ पित्त और रक्त के कोप करिके लाल २ चकता शरीर में परते हैं बहुत खजुरी करते हैं क्षण में होइ क्षण में मिटै इसे रक्तपित्ती कहते हैं नख लागि के देह में नकोरो जाइ उसे कुनख कहें जो पाय में छोटी पिडिकी होके पके फूटे सूजन हो सो अनुशायी है जो पीली वटिया हो खजुआइ उसमें कांटा कांटा समान हो वह पद्मिनी कंटक है जो आगि दाय के रुलका परै अथवा न क्षत पके फूटे उस के लेप लगे से उत्पन्न हो या आम्रादिक की चेप लगे पक जाय उसे चिप्प कहते हैं जो पैर या हाथ के गावातें पानी या खराब कीचड़ या कोई विष या कोई विष मिश्रित माटी या विष धर कीट जंतु के स्थान की माटी या भल्लातादि वृक्ष तरे की माटी सड़ि के स्पर्श से सड़ि जाय और बहुत खजुरी करै उसे अलस कहें खरवा है और जो जवानी में मुख पर कांटे कांटे से बहुत होजाते हैं दोवने से खराते हैं और गड़ते हैं वह मुख दूष का है लोग उसे मुहासा कहते हैं जो बाल में छोटी २ फुन्सियां परि जाती हैं उसे कच्छा कहते हैं जो गंड कोश की जड़ पर छोटी २ पिडिकी हो वह गर्दभ है जो शरीर से राई के समान फुन्सियां परिजांय उसे राजिका कहते हैं कुदैया कहते हैं वायु पित्त कुपित्त हो मुह पर जाइ चमड़ा काला करै और पतला करै इसे व्यंग कहें झाइं हैं और आठ विस्फोटक शीतला के भेद में हैं सो क्षुद्र रोग की गिनती में हैं और चौदह मसूरिका ये भी शीतला के भेद

णा० विसर्पि रोग के नव भेद हैं वातविसर्पि पित्त वि० कफ वि० वातपित्तवि० कफ बात वि० कफपित्त वि० सन्निपात वि० अग्निदग्धवि० ताडना वि० ॥ ३ ॥ अ स्य लक्ष रण जिस में वातज्वर के लक्षण कंप विषम वेगादिक होंवे सूजन हो और चमक शूल को च न हो फूटे सो वातविसर्पि है जिसमें पित्तज्वर के लक्षण हों औ र सूजन दाह युक्त लाल रंग हो वह पित्त विसर्पि है जिस में कफज्वर के लक्षण हों और चिकनी हो खजु आय सो कफ विसर्पि है और द्वंद्वज में जिन दुद दोषों के लक्षण मिलें सो द्वंद्वज विसर्पि जानो जिसमें तीनों दोष के लक्षण हों यह सन्निपात विसर्पि है जो विसर्पि आगि ले जलने से हो उसके पित्तविस र्पि के लक्षण होते हैं वह वन्हि दाह विसर्पि है जो घाव लगे से हो वह अभिघात विसर्पि है ॥ ३ ॥ श्लेष्म वायु करिके उदर्द रोग होता है और वात पित्त करिके शी त पित्त रोग होता है कफ वायु के कोप करिके शरीर में लाल २ छोटे बड़े चकते परते हैं और बहुत खजुआते हैं उसे उदर्द कहते हैं जो वात पित्त के कोप करिके

विसर्पि रोगा नवधा वात पित्त कफैस्त्रिधा त्रिधा द्वंद्वस्य भेदेन सन्निपातेन सप्तमः अष्टमो वन्हि दाहेन नवमश्चाभिघात जः ॥ ३ ॥ तथैकः श्लेष्म पित्ताभ्यामुदर्दः परिकीर्तितः वातपित्तेन चैकस्तु शीतःपित्तामयः स्मृतः ॥ ४ ॥ अम्लपित्तं त्रिधा प्रोक्तं वातेन श्लेष्मणा तथा तृतीयं श्लेष्मवाताभ्यां वातरक्तं तथाष्टधा ॥ ५ ॥ वाताधिक्येन पित्ताच्च कफाद्दोषत्रयेण च रक्ताधिक्येन दोषाणां द्वंद्वे

होता तो पीड़ा अधिक खाज करता है उसे शीत पित्त कहते हैं और ज्वर उबकाई और दाह लक्षण आदि युक्त होते हैं यह दोनों एक ही भेद में हैं ॥ ४ ॥ अम्लपित्त रो ग के तीन भेद हैं वात अम्लपित्त कफ अम्लपित्त कफ वात अम्लपित्त ये विरुद्ध भोजन और दुष्टान्न भोजन करने से होते हैं या बासी और जले अन्न के भोजन करने से पित्त कुपित होके खट्टी डकार लाता है और आहार का परिपाक अच्छी तरह नहीं होता उसे अम्लपित्त कहते हैं ॥ ५ ॥ और वातपित्त आठ प्रकार का है जिस वातरक्त में वायु विशेष है वह वातज वातरक्त है जिसमें पित्त अधिक है वह पित्तवातरक्त है और जिसमें कफ अधिक है वह कफज वातरक्त है जो तीनों दोष के लक्षण हों तो त्रिदोषज वा त रक्त है जिसमें रक्त अधिक हो वह रक्तज वातरक्त है और तीनि द्वंद्व में जो दोष मिश्रित हो सो जानिये वातपित्तज वातकफज कफपित्तज ये आठ प्रकार के वातरक्त

वात रोग अस्सी प्रकारके ऋषि लोग कहि गये हैं आक्षेपक हनुस्तंभ शिरोग्रह ९७ वाह्यायाम अंतरायाम पार्श्वशूल कटिग्रह दंडापतानक खल्ली जिव्हास्तंभ आर्दित ९८ पक्षाघात कोष्ठ शिरस मन्यास्तंभ पंगुता कलाय खंजता तूनी प्रति तूनी खंजता ९९ पाद हर्ष गृध्रसी विश्वाची अपवाहुक अपतान व्रणायाम वात कंठ अपतंत्र १०० अंग भेद अंग शोष मिन्मिन रूक्षता प्रत्यष्ठीला अष्ठीलिका वामनत्व कूवड १

अशीति र्वातजा रोगा कथ्यंते मुनि भाषिताः आक्षेपको हनुस्तंभ उरुस्तंभः शिरोग्रहः ९७ वाह्यायामोंतरायामः पार्श्वशूलं कटीग्रहः दंडापातनकः खल्ली जिव्हास्तंभ स्तथार्दितः ९८ पक्षाघातः कोष्ठशर्ष मन्यास्तंभश्च पंगुता कला खंजता तूनी प्रति तूनी च खंजता ९९ पादहर्षो गृध्रसीच विश्वासी चापवाहुकः अपतानो व्रणयामो वात कंठो पतंत्रकः १०० अंगभेदोंगशोषश्च मिन्मिन त्वंच रूक्षता प्रत्यष्ठीलाष्ठीलिकाच वामनत्वंच कुब्जता १ अंगपीडांगशूलंच संकोच स्तंभ रूक्षता अंगभंगोंग विभ्रंशो विड्ग्रहो बद्धविट्कता २ मूकत्व मति जंभः स्यादत्युद्गारोंत्रकूजनं वात प्रवृत्तिः स्फुरणं शिरापूरणं तथा ३ कंपः कार्श्यं शून्यता च प्रलापः क्षिप्रमूत्रता निद्रानाशः स्वेदनाशो दुर्वलत्वं वलक्षयः ४ अति प्रवृत्तिः शुक्रस्य कार्श्यं नाशश्च रेतसः अनवस्थित चित्तत्वं काठिन्यं विरसास्यता कषाय वक्त्रता ध्मानं प्रत्याध्मानंच शीतता १०५

अंगपीड़ा अंगशूल संकोच स्तंभ रूक्षता अंगभंग अंग विभ्रंश विट्ग्रह बद्ध विटकता २ मूकत्व अति जंभा अत्युद्गार अंत्रकूजन वात प्रवृत्त स्फुरण शिरा पूरण ३ कंप कार्श्य शून्यता प्रलाप क्षिप्रमूत्र निद्रानाश स्वेद नाश दुर्वलत्व वलक्षय शुक्राति प्रवृत्ति शुक्र कार्श्य शुक नाश अनवस्थित चित्त काठिन्य विरसास्यता कषाय वक्त्रता आध्मान प्रत्याध्मान शीतता ॥ १०५ ॥

वा॰ रोमहर्ष भीरुत्व तोद कंडु रसाज्ञता शब्दाज्ञता प्रसुप्ति गंधाज्ञत्व दृशक्षय १०६ अस्य लक्षणं जिस वायु में हाथी के सवार की नाईं वारवार कूमे वह आक्षेपक है १ जिस में ठोढी अकड़ के मुख खुला रहे वह हनु स्तंभ है २ जिस में कूले की नसें जकड़ के निर्बल हो चल न सके वह उरुस्तंभ है ३ जो माथे की शिरा कहें नसें नि-स्तेज होके मस्तक में पीड़ा रहे वह शिरोग्रह है असाध्य है ४ पीठ उभर के जो मनुष्य धन्वाकार होजाय वह बाह्या याम है ५ जो छाती ऊंची होके धन्वाकार होजा-य वह अंतरायाम है ६ जो पसुरी में पीड़ा करे वह पार्श्व शूल है ७ जो कमर जकड़ जाय वह कटिग्रह है ८ जो देह दंडाकार हो जाय वह दंड पतानक है ९ जिस वायु में पांउं या जांघ घुटना नितंब से और कमर में अधिक पीड़ा हो वह खल्ली है १० जो वायु जीभ की नस तान ले भोजन मुंह में कठिनता से लिया जाय वह जिह्वा स्तंभ है ११ जो वायु आधा मुंह को फेर दे माथा कंपे जीभ से बोला न जाय दृष्टि तिरछी हो जाय वह अर्दित है १२ जो आधा अंग निर्बल होजाय वह पक्षाघात कहें अर्धांग १३ जो गोड़ की टिहुनी सूज जाय स्यार के सा मूड़ हो वह क्रोष्टु शीर्ष कहें सिवाय सुंड है १४ जिस में खींच तन जाय मस्तक इत उत न डुले वह मन्य स्तंभ है १५ जो वायु कूले की मोटी नसों को मा-

रोमहर्षश्च भीरुत्वं तोदकंडू रसाज्ञता शब्दाज्ञता प्रसुप्तश्च गंधज्ञत्वं दृशःक्षयः १०६

निले पाउं को फैलने सिकुडने न दे वह पंगु है जो वायु मनुष्य के शरीर की चाल खंजरीट की नाईं करदे चलने में कांपे पांउं इधर उधर परे वह कलाय खंज है १७ जो वायु गुद और टूंड़ी में चिलक उत्पन्न करे वह तूणी है १८ जो गुद लिंग में चिलक उत्पन्न करिके मूत्र मलाशय ताईं चुभे सो प्रत्यूणी है १९ जिस में पंगु वायु के लक्षण हों पर एकै पाउं लंगड़ा करे वह खंज है २० जो पैर में झुनझुनी करे वह पाद हर्ष है २१ जिस में पीठ कमर कूला चूतर जांघ पैर इनमें उठने बैठने में क्लेश होतो गृध्रसी है २२ जो वायु हाथ और कानन की नसें तानि के हाथ ऊपर न उठने दे वह विश्वाची है २३ जिस में वह बाह न जाय वह बाहुक है २४ जिस वायु हृदय में प्रवेश करि ज्ञान को नष्ट करे दृष्टि रोके कंठ शब्द विलक्षण करे कभी सावधान कभी अचेत रहे अस्थिर चित्त न र-है वह अपतानक है जो वायु चोट लगिके घाव और पीड़ा करे वह व्रणायाम है २६ जिस में चलने के श्रम से या ऊंचे नीचे पैर परे या टेढ़ा परने से वायु घुटनों में उतरि के सूजन और पीड़ा उत्पन्न करे वह वात कंटक है २७ जो वायु ऊर्ध्व गति होके हृदय मस्तक कंधा वा देह में पीड़ा करे और धनुषाकार

करिकै दृष्टि को रोकै कबूतर की नांई बोलै मोह में पड़े वह श्रपतंत्र है २८ जो सब शरीर में पीड़ा करैतो अंग भेद है २९ सब शरीर को शोषै सो अंग शोष है जो मिन मि·
नाय के बोलै वह मिन्मिनत्व है ३१ जिसमें कंठ से स्पष्ट शब्द न कहै वह कल्लता है ३३ जो नाभि के नीचे ऊंचा पत्थर सा करै और मल मूत्र निरोध करि पेट में गांठि २ सा परिकै
मंद २ पीड़ा करै वह अष्ठीलिका है ३३ जो अष्ठीलिका की नांई गांठि देदो सूधी लंबी हो अधिक पीड़ा दे वह प्रत्यष्ठीलिका जानो जो पेट में गांठि २ सी परिकै मंद २ पीड़ा करै वह अष्ठी·
लिका है ३४ जो वायु गर्भाशय में प्रवेश करि गर्भ को संकुचित करै तो बालक छोटा उत्पन्न हो वह वामन है ३५ जो वायु दुष्ट हो छाती पीठ को संकुचित करै वह कुब्ज है जिसमें स
ब अंग में पीड़ा हो वह अंग पीड़ा है ३७ जिसमें शरीर विषे सूजा सा गड़े वह अंग शूल है ३८ जो सर्वांग को संकुचित करै वह संकोच है जो देह को क्षीण करै वह लच्य है ४० जो देह में
खरवाई करै वह रूक्ष है ४१ जिसे कभी कोई अंग शिथिल हो कभी कोई वह अंग भंग है जो देह को काष्ठवत अचेत करै वह अंग विभ्रमस है ४३ जो मल निरोध करि अच्छी तरह न गिर·
ने दे वह विट्‌ग्रह है ४४ जो पक्वाशय में जो मल खिड़े और भिन्न २ पिंडि से करै वह बद्धविट्‌कता है ४५ जो वायु शब्द निरोध करै वह मूक कहैं गुंग है ४६ जो अति जंभुआई लावै वह अ·
ति जृंभ है ४७ जिसमें अधिक डकारें आवैं वह अत्युद्गार है जो वायु आंत में प्रवेश करि बोलै वह आंत्रकूजन है ४९ जो अति उत्संग करै अर्थात गुदा से अधिक निकरै वह वात प्रवृ·
त है ५० जो शरीर जहां २ फरकै वह फुरणा है ५१ जो जहां तहां नसों को फुलावै वह शिरापूर ५२ जो सब देह कंपावै वह कंप वायु है ५३ शरीर को जो दुर्बल करै वह कार्श्य है ५४ जो
शरीर कृश करै वह श्यावता है ५५ जिसे मानुष असंभव बोलैं वह प्रलाप है ५६ जो मूत्र वार वार आतुरता से होतो क्षिप्र मूत्र है ५७ जिसमें नींद न आवै वह निद्रानाश है
५८ जो पसीना निकरै वह स्वेदनाश ५९ जो शरीर को दुबला करै वह दुर्बलत्व है ६० जो वायु शुक्र में प्रवेश करि फारिकै बहावै वह शुक्रातिप्रवृत्ति है ६१ जो बल को
घटावै वह बलक्षय है ६२ जो धातु को किंचित् क्षीण करै वह शुक्रकार्श्य है जो चित्त को स्वस्थ न रक्खे वह अनवस्थितचित्तत्व है ६३ जो धातु को अति तीक्ष्ण करै सो शु·
क्रनाश है ६४ जो देह को कठोर करै वह काठिन्य ६५ जिसमें जीभ का स्वाद न मिलै वह विरसास्य है ६६ जो जीभ ऐंठ जाय वचन न कहि सकै वह वायु कषायवक्त्रता
है ६७ जो वायु पक्वाशय में जाय पेट फुलाय गुड़ गुड़ करै वह आध्मान है ६८ जो वायु आमाशय में जाय कफ से मिलि पेट फुलाइ पीड़ा करै वह प्रत्याध्मान है
जो शरीर को ठंढा राखै वह शीतता है ७० जिसमें वार वार रोमांच हो वह रोमहर्षण है ७१ जो भय उत्पत्ति करै वह भीरुत्व है ७२ जो देह में सुई
सी चुभै वह भेद है ७३ जो खाज उत्पन्न करै वह कंडू है ७४ जिस्से मधुरादिक रस का स्वाद न मिलै वह रसाज्ञात है ७५ जिस्से कान से सुन न परै वह श·
ब्दाज्ञात है ७६ जिस्से त्वचा पर हाथ धरे मालूम न होय सो प्रसुप्ति है ७७ जिस्से गंध ज्ञान न हो वह गंधाज्ञात है ७९ जिस्से दृष्टि से सूझै नहीं वह दृष्टिक्षय है ८०

वा॰ पित्त जनित चालीस रोग हैं धूमोद्गार १ विदाह उष्णांग मति भ्रम ७ कांति हानि कंठ शोष अल्प शुक्रत्व ८ तिक्तास्य अम्ल वक्त्र स्वेद स्राव अंग पाकत्व क्लम हरित वर्णत्व अतृप्ति पीत काय ९ रक्त इव अंग दरण लोह गंधा स्वदौर्गंध्य पीत मूत्रता अरति पीत विवि हुता १० पीतावलोक पीत नेत्रता पीत दंता शीतेच्छा पीत नख जाते जो हेय अल्प निद्रता ११ कोप मात्र साद भिन्न विट्कता अंधता उष्णोच्छासता उष्ण मूत्रता उष्ण मलता १२ तमो दर्शन पीत मंडल दर्श न निसरत्वेति ये चालीस रोग पित्त संभव हैं १३ अस्य लक्षणं जिसे पित्त कोप से धुआंसी डकार आवै वह धूमोद्गार है १ जो अति दाह करै वह विदाह रोग देह

अथ पित्त गदा रोगाश्च त्वारिंशदिहो दिताः धूम्रो द्गारो विदाहः स्यादुष्णांगत्वं मति भ्रमं १०७ कांति हानिः कंठ शोषो मु

ख शोषोल्प शुक्रता ८ तिक्तास्यताम्ल वक्त्रत्वं स्वेद स्रावो ंग पाकता १ क्लमो हरित वर्णत्व मतृप्तिः पीत गात्रता ९ रक्त स्रावोंग दर

णं लोह गंधास्य ता तथा दौर्गंध्यं पीत मूत्रत्व मरतिः पीत विड्कता १० पीता वलोकनं पीत नेत्रता दंत पातता शीतेच्छा पी

त नख ता तेजो द्वेषोल्प निद्रता ११ कोपश्च गात्र सादश्च भिन्न विट्त्व गंधता उष्णोच्छासत्व मुष्णत्व मूत्रस्य च मलस्य च १२

तमसो दर्शनं पीत मंडलानां च दर्शनं निःसरत्वं च पित्तस्य चत्वारिंशद्रुजः स्मृताः ११३

गरम रहै वह उष्णांग है ३ जो बुद्धि थिर न रहै कभी कुछ समझै कभी कुछ न समझै वह मति भ्रम है ४ जो चेष्टा मलिन करै वह कांति हानि है ५ जो कंठ सुखावै वह कंठ शोष है ६ जो शुक्र क्षीण करै स्त्री प्रसंग में विना शुक्र पात शिथिल होजाय वह अल्प शुक्र है ७ जो मुख कडुवा रहै वह तिक्तास्य है ८ जो मुख खट्टा रहै तो अम्ल वक्त्र है ९ जो पसीना अधिक आवै वह स्वेद स्राव है १० पाचक पित्त दुष्ट हो अंग पकाता है वह अंग पाक है ११ जो ग्लानि से अनेक पदार्थ ग्रहण करते भ्रमै वह क्लम है १२ जिस में देह हरित हो वह हरित वर्णत्व है १३ देह पीली पड़जाय वह पीत कायता है १४ जिस पित्त के कोप से भोजन करने से तृप्त न होद वह अतृप्ति है १५ जिसे

मुखादि मार्ग से रक्त गिरे वह रक्त स्राव है २६ जो शरीर में त्वचा चटक जाय वह अंग दरण है २७ जो लोहा घिसने से वा लोह सड़ाय कसीस बने निक कैसी वास आवे वह लोह गंधास्य है जो देह में दुर्गंध आवे वह दुर्गंधी है १९ जिसमें मूत्र पीला आवे सो मूत्र है २० जिसे सर्व पदार्थ में चित्त न चले वह अरति है २१ जिसके मल पीला आवे वह पीत विट्कत्व है २२ जिसमें सर्व पदार्थ पीले देख परें वह पीतावलोक है २३ जिसकी आंख पीली पर जाय वह पीत नेत्र है २४ जो दांत पीले हो जांय वह पीत दंत है २५ जो ठंढी चीज पर इच्छा चले वह शीतेच्छा है २६ जो पीले नख हो जांय तो पीत नख २७ जो तेजमय चीज देखि अच्छी न लगे वह तेजो द्वेष है २८ जो निद्रा कम आवे वह अल्पनिद्रा है २९ जो क्रोध अधिक हो वह कोप है ३० जो देह पीड़ित करे वह गात्र साद है जो मल फटके फुटकी सा हो वह भिन्न विट्क है ३२ जो दृष्टि नाश करे वह अंधता है ३३ जो उष्ण स्वासा आवे वह उष्णोच्छ्वास है ३४ जो मूत्र अत्युष्ण हो वह उष्ण मूत्रत्व है ३५ जो मल अत्युष्ण गिरे तो उष्ण मलत्व है ३६ जो उजेरे में अंधेरा जान परे वह तमोदर्शन है जो देह में पीले रंग ठौर ठौर देख परे वह पीत मंडल है ३९ जो देखने में पृथ्वी पर कहीं

कफस्य विंशतिः प्रोक्ता रोगा स्तंद्रातिनिद्रता। गौरवं मुख माधुर्यं मुख लेपः प्रसेकता। ११४ श्वेतावलोकन श्वेतविट्कत्वं श्वेतमूत्रता श्वेतांगवर्णता शैत्य मुष्णेच्छा तिक्त कामिता ११५ मलाधिक्यं च शुक्रस्य बाहुल्यं बहु मूत्रता। आलस्य मंद बुद्धित्वं तृप्ति घर्घर वाक्यता अचैतन्यं च गदिता विंशतिः श्लेष्मजा गदाः ११६ ॥

कहीं पीले धब्बे से देख परें वह पीत मंडल दर्शन है ३९ जो पित्त मुख से वा मल मार्ग से गिरे वह निस्सरत्व है ४० वार्तिक वीस रोग कफ संभव हैं २० तंद्रा कफ अति निद्रा गौरव मुख माधुर्य मुख लेप प्रसेक ११४ श्वेतावलोकन श्वेत विट्कत्व श्वेतांग वर्णता उष्णेच्छा तिक्त कामिता ११५ मलाधिक्य शुक्र बाहुल्य बहु मूत्रता आलस्य मंद बुद्धित्व तृप्ति घर्घर वाक्यता अचैतन्य ये वीस प्रकार के कफ रोग हैं ११६ अस्य लक्षणं जिसमें आंख दे झपी रहें निद्रा न परे वह तंद्रा है जो निद्रा विशेष हो तो अति निद्रा है जो शरीर भारी रहै वह गौरव है जो मुख में गुड़ का स्वाद बना रहै वह मुख माधुर्य जो मुख में लसलसा हट हो तो मुख लेप जो लार गिरा करे तो प्रसेक है जो सर्वत्र श्वेत देख परे तो श्वेतावलोकन है जो श्वेत मल गिरे तो श्वेत विट्कत्व है जो मूत्र श्वेत हो तो श्वेत मूत्र है जो शरीर श्वेत हो तो श्वेतांग वर्णत्व है जो देह ठंढी बनी रहै तो शैत्यता है जो उष्ण पदार्थ पर इच्छा रहै तो उष्णेच्छा है जो कटु पदार्थ पर चित्त चले तो आलस्य है मंद बुद्धि हो जाय तो मंद बुद्धि है स्वल्पाहार से तृप्ति हो तो तृप्ति है जो बोलने में गला घर्घराय तो घर्घर वाक्य है मंद चेतना हो तो अचैतन्य है ११६ ॥

रक्त विकार से दश भांति रोग हैं गौरव रक्त मंगल रक्त नेत्रत्व रक्त मूत्रता १२७ रक्तष्ठीवन रक्त पिटिका दर्शन उपजते हैं पूति गंधित्व पीड़ा पाक ये दश रोग रक्त जन्य हैं १८ इन के नाम ही सदृश लक्षण हैं १८ अब मुख के जो चौहत्तर रोग हैं सो कहता हूं तिस्में ग्यारह ओष्ठ रोग पंडित कहते हैं वात से पित्त से कफ से त्रिदोष रक्त से १९ क्षत से मांसार्बुद खंडोष्ठ जलार्बुद मेदार्बुद अर्बुद ये ग्यारह ओष्ठ रोग हैं १० जो ओष्ठ कठोर हो काला पर जाय गांठि परै पीड़ा करै तै ने फूटैं फटै वा खाल उखड़ै तो वातज है जो छोटी फुन्सियां परैं पीड़ा दाह हो पीली परै पक जाय तो पित्तज है जो ओष्ठ सेत कुछक पीड़ा युक्त पिटिकी हो ठंढे रहैं तो कफज है जो आठ पिटि की पीड़ा सहित हों कभी सेत कभी काला पीला हो सो त्रिदोषज है जो ओठ खजूर फल के रंग हो फुन्सी युक्त रक्त

रक्तस्य च दश प्रोक्ता व्याधयस्तेषु गौरवं रक्त मंडलता रक्त नेत्रत्वं रक्त मूत्रता १७ रक्त निष्ठीवनं रक्त पिटिका नां च दर्शनं ओष्ठ्यं च पूति गंधित्वं पीड़ा पाकश्च जायते १८ चतुस्सप्तति संख्याता मुख रोगास्तथोदिताः तेष्वष्ठ रोगा गणिता एकादश मिता बुधैः वातपित्तकफैः स्त्रेधा त्रिदोषै रजसा स्तथा १९ क्षतं मांसार्बुदं चैव खंडोष्ठश्च गलार्बुदं मेदोर्बुदं वार्बुदं च रोगा एकादशः स्मृताः २० दंत रोगा दश ख्याता दालनः कृमिदंतका दंत हर्ष करालश्च दंत चालश्च शर्करा २१ अधिदंतः स्याव दंतो दंत भेदः कपालिका तथा त्रयोद

वहै मांस की गुत्थी निकसै ओठ में कृमि उत्पन्न हों यह रक्तज ओष्ठ है जब ओठ में क्षत लगे से खजु आय पके घाव परै वह क्षत है मांस दुष्ट होके ओठ मोटा हो मांस पिंड सा हो सो मांसार्बुद है जिस्में ओठ फट के वहै वह खंडोष्ठ है जो मांस पिंड सा मोटा हो पानी सा वहै सो जलार्बुद है जो ओष्ठ सेत रहै सेत पानी वहै सो मेदार्बुद है ओठ में फकत गांठि परि जाय वह अर्बुद है ३० दश दंत रोग कहते हैं दालन कृमि दंत दंत हर्ष कराल दंत चाल शर्करा ३१ अधि दंत स्याव दंत दंत भेद कपालिका ये दश दंत रोग हैं अस्यल्लक्षणं जो दंत टीसैं सो दालन है जो दांत कृमि परने से काले हो जांय पीड़ा करैं सो कृमिदंत है जो ठंढा पानी दांत में लगै सो दंत हर्ष है जो दांत टेढे वकुर हो जांय तो कराल है जो दांत हलैं तो दंत चालन है जो दांत में मैल जम के खरखरा हट हो तो शर्करा है जो दांत के

शा॰
टी॰
प्र॰
६२

तरे दूसरा दांत जमकै पीड़ा करै वह अधिदंत है पित्त कोप से दांत काला नीला हो जाय वह श्याव दंत है जो दांत हल के पीड़ा करै और बहुत दट के बाहर च टिया सी पड़ जाय वह दंत भेद है जो दांत से परत उखड़े वह कपालिका है दंतमूल रोग दांत की जड़ में तेरह तरह होता है १२२ वातिक तिन तेरह के नाम शीता द उपकुश दंत विद्रधि पुप्पुट अधिमांस विदर्भ महा सुषिर सौषिर १२३ दूसरे वातादि दोष से दंतनाड़ी रोग पांच प्रकार है वातनाड़ी पित्तनाड़ी कफना ड़ी सन्निपात नाड़ी रक्तनाड़ी ये तेरह दंत मूल रोग हैं १२४ अस्य लक्षणं जो मसूड़ा फट जाय रक्त देती शीताद है जो मसूड़ा में दाह होय पकै दांत हि ले पीर कष्ट हो रक्त वहै फूले मुखमें दुर्गंधि आवै वह उपकुश है जो मसूड़ा बाहर वा भीतर सूजे पिराय रुधिर पीव देइ सो दंत विद्रधि है जो दो ती न दांत का मसूड़ा विशेष फूले वह पुप्पुट है जो चौहड़ के मसूढ़ा में पीड़ा अधिक हो वह अधिमांस है जो मसूढ़ा दांत गिराने के लिये दांत रगड़ा करै वा व्रण उत्पन्न करै वा सूजन विशेष उत्पन्न करै दांत हिलावै वह विदर्भ है जिस मसूढ़ा में दांत हिले और तालू फटि जाय और मसूढ़ा

शीतदोषकरो होतु दंतविद्रधि पुप्पुटो अधिमांसो विदर्भश्च महासुषिर सौषिरौ १२३ तेष्वेव गतयः पंच वातात्पित्तात्कफात्सन्निपातगतिश्चापि रक्तनाड़ी च पंचमी १२४ तथा जिह्वा गदाः षट् स्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा अलसस्य चतुर्थः स्यादधिजिह्वा च पंचमी षष्ठी दैवोपजिह्वा स्यात् तथा सोलासुजागदाः १२५

गलि जाय वह महा सौषिर रहै जो मसूढ़ा पिराय के सूजे लार ब हावै वह सौषिर रहै जो मसूढ़ा में पीड़ा होके पकै फूटै और पोला पर दुर्गंध आवै लांबी नाड़ी सी दावने से सत्रु अपैर वह नाड़ी है यह नाड़ी में जिस दोष का अधिकार जानि पड़े वह वही नाड़ी जानिये १२४ जिह्वा रोग जीभ में छः प्रकार रोग हैं वातजन्य पित्तज कफज अलस अधि जिह्वा उप जिह्वा ये छः नाम हैं १२५ अस्य लक्षणं जो जीभ फटि के मधुरादि षट् रस के स्वाद परिज्ञान न होय ऐसे भार वाड देश में जिह्वा रूक्ष खर खराय तो वातज है जो जीभ लाल वा पीली पर जाय दाह करै कांटे परें सो पित्त है जो जीभ में कारे २ कांटे से उठें और मोटे हों और श्वेत जीभ हो तो कफज है जो जीभ अपनी जड़ की ओर खुजलाइ और सूजन अधिक हो और जड़ पकि जाय तो अलस हैं जो जीभ की नोक सम सूजन जीभ होइ पकि के वहै तो अधि जिह्वा है असाध्य है जो जीभ की नोक सी सूजन तरे हो और लाल हो खजुआय वह उप जिह्वा जानो १२५॥

वार्तिक-अथाष्ट प्रकार तालु रोग अर्बुद तालुपिडिका कच्छपी तालु संहति गल तुंडी तालु शोथ तालु पाक पुप्पुट १२६ अस्य लक्षणं तालु के मध्य में कमलांकुर समान उत्पन्न होओर रक्तार्बुद के लक्षण मिले सो तालु अर्बुद है जो तालु के सूजे रक्त विकार सम पीड़ा दाह हो सो पिडिका है जो कुछुवा की सी पीठ सूज आवे धीरे धीरे हो सो कच्छपिका है जो तालू के बीच में लंबी सूजन हो पीड़ा करे सो तालु संहति है जो तालू की जड़ लंबी मोटी सूज जाय वह गल तुंडी है जो तालू फूले फटे सो तालु सोथ है जो पकि जाइ सो तालु पाक है जो कर बेरी के समान गांठि पर जाइ और मेदाश्रित हो सो पुप्पुट है १२६ अथाष्ट प्रकार कंठ रोग वात रोहिणी पित्त रोहिणी १२७ कफ रोहिणी त्रिदोष रोहिणी रुंद गलौघ गल विद्रधी स्वरघ्ना तुंडकेरी शतघ्नी तालुक अर्बुद १२८ गिलायु वलय वात गंड कफ गंड मेदा गंड ये अठारह प्रकार कंठज रोग हैं १२९ अस्य लक्षणं जीभ की

अर्बुदं तालु पिडिका कच्छपी तालु संहतिः गल तुंडी तालु शोथ स्तालु पाकश्च पुप्पुटः १२६ गलरोगा स्तथा ख्याता अष्टादश प्रमिता बुधैः वात रोहिणिका पूर्वं द्वितीया पित्त रोहिणी १२७ कफ रोहिणिका प्रोक्ता त्रिदोषैरपि रोहिणी मेदो रोहिणिका रुंदो गलौघो गलविद्रधिः स्वरघ्ना तुंडिकेरीच शतघ्नी तालुकार्बुदं १२८ गिलायुर्वलयश्चापि वात गंडः कफस्तथा मेदो गंड स्तथैवस्यादित्यष्टादश कंठजाः १२९ मुखांतः संभवो रोगा अष्टौ ख्याता महर्षिभिः मुख पाको भवेद्वातात्पित्तात्रक्तात्कफादपि १३० ॥

जड़ के पास चने के सम छोटी हो गले के मार्ग को रोध करे इस में त्रिदोष का भेद जिस का विशेष लक्षण मिले वही रोहिणी जानो पांच रोहिणी तेरह और हैं सो बहुत भांति गले के भीतर क्षत गांठि सूजन होके कंठ रोध करें पीड़ा करते हैं और तीनि गंड ऊपर होते हैं जिसे घेघा कहते हैं सो तीनों दोष से होते हैं जिस का लक्षण मिले वही प्रधान जानो ग्रंथ गौरव कारण होने इस ग्रंथ में नहीं लिखा १२९ मुख के अंत में आठ प्रकार रोग हैं ये सब मिलि के मुख के भीतर चौहत्तर भांति रोग हैं वात मुख पाक कफ मुख पाक १३० सन्नि मुख पाक रक्त मुख पाक दुर्गंध ऊर्ध्व गुद अर्बुद ये आठ मुख के रोग हैं १३१ अस्य लक्षणं मुख के भीतर चारों ओर फुंसी होंय पीड़ा करें उन में जिस दोष के लक्षण पाये जांय वही मुख पाक जानो मुख में फोड़ा होके दुर्गंध आवे सो दुर्गंधास्य है मुख के भीतर फोड़ा होके बिथर जाय ऊर्ध्व ॥ ॥

॥ के भीतर खुटया सा पारजाय ता अर्बुद है जो अपानस से आधिक ... ॥

गुद है मांस की गांठि उत्पन्न होके पीड़ा करै वह अर्बुद है ३१ वा॰ कर्ण रोग अठारह प्रकार है वातज पित्तज कफज रक्तज विद्रधि ३२ कर्ण शोथ अर्बुद पूति कर्ण कर्णार्श कर्ण हल्लिका बाधिर्य तंत्रिका कंडू शष्कुलि कृमि कर्णक कर्ण नाद प्रति नाह ये अठारह नाम कान रोग के हैं ३३ अस्य लक्षणं कान में शब्द उठै और पीड़ा हो और मल सूखि पानी बहै तो वातज है जो लाल सूजन होके फटै दुर्गंध आवे तो बहै वह पित्तज कर्ण रोग है जो सूजन हो खुजाई और सफेद चिकना सा बहै कम सुनै पीड़ा करै सो कफज कर्ण रोग है जिस्में कुछ पित्त को लक्षण मिले वह रक्तज कर्ण है जो तीनों दोष के लक्षण पाये जांय वह सन्निपात कर्ण है कान में घाव या विद्रधि होके वा फोड़ा होके पीप वा रक्त बहै सो कर्ण विद्रधि है जो कान में सूजन हो तो कर्ण शोथ है जो कान में रक्ताच्च सन्निपाताच्च पूतास्रो ऽर्श गुदावपि अर्बुदं चेति मुख जाश्च तु सम तिरा सया: ३१ कर्ण रोगाः समाख्याता अष्टादश मिता बुधैः वाता त्पित्ता त्कफा द्रक्ता त्सन्निपाताच्च विद्रधेः शोथो र्बुदः पूति कर्णः कर्णार्शः कर्ण हल्लिका बाधिर्यतं त्रिका कंडुः शष्कुली कृमि कर्णकः कर्ण नादः प्रतीनाह इत्यष्टा दश कर्णजाः ३३ कर्ण पाली समुद्भूता रोगाः सप्त इहो दिताः उत्पात पालि शोषश्च विदारी दुःख वर्द्धनः परि स्फोटश्च लेही च पिप्पली चेति संस्मृता: ३४ गिलटीसी हो के पिराय तो कर्णार्बुद है जो दुर्गंधित पीव बहे तो पूति कर्ण है जो चने की बेंटीसी हो खजु आइ दाह पीड़ा करै तो कर्णार्श है जो कान में कोई जंतु प्रवेश करै उस्के चलने से विकल होती है थिर रहने से स्वास्थि रहती है उसे हल्लिका कहते हैं जो सुनि न पा रे तो बाधिर्य है जो कान में वीन शब्द समान भन्ना हट हो तो जो कान खजु आय और कर्ण मल सूख जाइ सो गुत्थी है पिटिकी हो बहै सो शष्कुली है ग्रंथान्तर में कर्ण स्राव कहते हैं जो कान में कीड़ा पर जाइ सो कृमि कर्ण है जो भेरि मृदंगादि कैसा शब्द पूरित रहै तो कर्ण नाद है जो कर्ण मल गलिके बहै तो प्रति नाह है उस्से आधा सीसी भी होती है ३३ कर्ण पाली रोग सात प्रकार का है उत्पात पाली शोष पाली विदारी दुःख वर्द्धन परिपोट लेही पिप्पली ३४ अस्य लक्षणं कर्ण रंध्र के ऊपर जो सूर्या कार पर दा है उसे पाली कहते हैं उसे भारी आभूषण पहिरने से वा खजुआने से वा रक्जाने से काल पर

पीड़ा करै फिर सूज के लाल हो जाइ सो उत्पात है जो पाली सूखि के छोटी परि जाइ तो सोरव पाली है जो पाली फटि के खजु आइ सो विदारी है जो कान की नस छिद जाइ वा विपरीत छेद हो तो छिद्र बढ़ने में सूजे जलन हो पके सो दुख वर्द्धन है जो गहना पहिरने उतारने से सूजे काला परे पके सो परिपोट है जो पाली में नन्ही २ फुंसी हो खजु आय जलन हो सो लेही है जो पाली में वेदना रहित सूजन हो स्तब्ध हो सो पिप्पली है ग्रंथांतर में उन्मथ नाम है ३४ ला॰ कर्णमूल पंच प्रकार के हैं बातज पित्तज कफज त्रिदोषज रक्तज ३५ अस्य लक्षणं कान की जड़ के नीचे सूजन को कर्णमूल कहते हैं बात से पीड़ा पित्त से दाह कफ से खाज त्रिदोष से तीनों लक्षण रक्त से लाल दाह संयुक्त ३५ नाक में अठारह प्रकार रोग हैं तिनमें पांच प्रति श्याय हैं बात प्रति श्याय पित्त प्र॰ रक्त प्र॰ सन्नि प्र॰ अपीनस पूतिनासा नासापाक नासा स्राव नासा नाह पूति रक्त अर्बुद दुष्ट पीनस नासा शोष घ्राण पाक पुट स्राव दीप्तक ये अठारह प्रकार हैं ३६

कर्णमूलामयाः पंच वातात्पित्तात्कफादपि सन्निपाताच्च रक्ताच्च तथा नासाभवा गदाः ३५ अष्टादशैव संख्याताः प्रतिश्याय स्तु तेष्वपि वातात्पित्तात्कफाद्रक्तात्सन्निपातेन पंचमः अपीनसः पूतिनासो नासाशोषो भ्रंशथु क्षवः नासा नाह पूति रक्त मर्बुदं दुष्ट

पीनस नासा शोषो घ्राणपाक पुटकस्राव दीप्तकाः ३६ तथा दशाशिरोरोगा वातेनार्द्धावभेदकः शिरस्तापश्च वातेन पित्तात्सौ ड्डत्तः

अस्य लक्षणं प्रति श्याय कहे नाक बहना नाक बंद होके फिर कुछ पानी बहे कंठ तालू ओठ सूखि जाइ कनपटी में पीर हो सो बात प्रति श्याय है जो काला पीला पानी बहे सो पित्त प्र॰ है जो कफ सा सेत पानी बहै माथा जकडा रहे सो कफ प्र॰ है जो रक्त बहे नेत्र लाल हो तो वायु पड़ती रक्त प्र॰ है जो तीनों दोष मिलें तो सन्नि प्र॰ है जो नाक सूखि कै चैली उखड़े सुगंध दुर्गंध जान परे स्वास धूरसी आवे तो अपीनस है जो नाक वा मुख से दुर्गंध आवे तो पूति नासा है जो मांस की फुट की उठि आवें तो नासार्श है नाकड़ा भी कहते हैं जो प्रथम कफ सूर्यास्त से अनायास गिरे तो भ्रंशथु है जो छींक अधिक आवे तो क्षव है जो स्वासावरोध हो तो प्रति नाह है जो अभिघात से रक्त वा पीव बहे तो पूति रक्त है जो नाक के भीतर खुंटियासी परि जाय तो अर्बुद है जो अपीनस से अधिक कष्ट देइ तो दुष्ट पीनस है इसे पीनस भी कहते हैं जो कष्ट करि खींचने

से स्वासा आवै जाय तौ नासा स्वास है जो नाक फूटि कै ऊपर से पीव बहै तौ घ्राण पाक है जो नाक से पीव वा फेन कफ सा बहै सो पुट स्राव है जो नाक में दाह होकै देह संतप्त करै तो दीप्त क है ३६ माथे के दश प्रकार रोग हैं अर्द्धाव भेद वातज शिरोभिताप पित्तज शिरोभिताप २३७ कफज शिरो॰ रक्तज शि॰ सन्निज शि॰ सूर्यावर्त्त शिपाक कृमिज शिर शंखक ये दश रोग हैं २३८ वार्तिक जो वायु निज कोप वा कफ की सहाय से अर्ध मस्तक में निरोध करै तौ चिलक कुदार के प्रहार सम उत्पन्न होती है उसी कनपटी में कान नेत्र ललाट में अधिक पीड़ा करती है तो वही आंख भी लाल होती है सो अर्द्धाव भेद कहैं उसे आधा सीसी भी कहते हैं जो राति को व्यथा बढै वह वातज शिरोभिताप है जो मस्तक आरा सा चिरै नाक स्वास धुआंसी कढै राति को ठंढक रहै सो पित्तज है जो माथा भारी होरुंध जाय मुंह पर भर भरा हट हो सो कफज है जो पित्त लक्षण युक्त माथा अति उष्ण रहै हाथ से छुआ न जाय सो रक्तज शिरोभिताप है जो तीनों दोष पाये जांय सो सन्नि शिरोभिताप है जो सूर्योदय में भौंह और आंखि में पीर बढ़ती जाय और दुपहर से दिन उतरते उतरती जाय सो सूर्यावर्त है जो माथे को रुधिर वा चरबी क्षय हो जाय

चतुर्थी कफ जा पीड़ा रक्तजा सन्निपातजा सूर्यावर्तान्छिरः पाका त्कृमिभिः शंखकेनच १३८ तथाकपालरोगाः स्युर्नवते

पूयशीर्षकं अरूंषिकाविद्रधिश्च दारुणा पीड़का र्बुदं इंद्रलुप्तंच खलितिः पलितंचेतनेनवा १३९

तो छींक बहुत आवै पीड़ा करै सो शिरपाक है जो मस्तक में कृमि परै तो भाला सा कोचै माथे की मज्जा चर लेती है जो कनपटी में अति पीड़ा हो सूजन हो तौ पित्त वायु रक्त दोष से शंखक होता है सो विष सदृश माथा गला निरोध करि तीन दिन में प्राण हर लेता है इस में वैद्य तीन दिन बीत जाने पर चिकित्सा करते हैं १३८ अथ॰ वा पाल रोग नव प्रकार है उपशीर्षक अरूंसिका विद्रधि दारुणा पिडिका अर्बुद इंद्र लुप्त खालित्य पलित ये नव रोग हैं १३९ अस्य लक्षणं वातादि दोष कोप करि कपाल में सूजन उत्पन्न करै जो दोष अधिक हो उसी का उपशी है जो कृमि करिकै बहुत छिद्र हों वहे सो अरुंषि का है जो मस्तक में ग्रंथि परिके पिराय सो विद्रधि है जो माथा रूखा हो भूसी जमै और खजुआय सो दारुणा है इसे रूसी भी कहते हैं जो माथ में बटिया सदृश ऊंची होय वह पीटिका है पीड़ा संयुक्त हो जो मस्तक में गांठि सी होके पीड़ा करै तो अर्बुद है कफ रक्त कोप करि रोके छेदों को रुधि कै गिराय देते हैं सो इंद्रलुप्त है और वो भी होता है उसे वाद खोरा भी कहते हैं जो माथे के बार गिर कै चिकना हो जाइ सो खलित्य कहैं चंदुवा है जो काल वा अकाल में केश श्वेत हो जांइ सो पलित है १३९

कोप करि दुष्ट रुधिर लक्षण कफ कुपित रक्त का स्पर्श ठंढा चिकना गेरू का रंग मांस कुछ की भिल्लित गाढ़ा अस्थिर होता है २० दुइ वा तीन दोष कुपित्त रुधिर लक्षण दुइ दोष करि दूषित लोहू में दो दोष के लक्षण पाये जाते हैं त्रिदोष दूषित में पीप के गंध होती है और सब लक्षण त्रिदोष के पाये जाते हैं और कांजी सदृश रूप होता है २१ अति दुष्ट रक्त लक्षण काले रंग रक्त ऊपर चढ़ि के नाक की राह पीला है आम कीसी बास होती है कांजी सदृश सब धातु न को बहुत दुष्ट करता है २२ शुद्ध रक्त लक्षण शुद्ध रक्त वीर बहूटी के रंग और पतला होता है स्पर्श में उस शीघ्र वा-

शीतं च बहुलं स्निग्धं गैरिकोदकसन्निभं मांसपेशीप्रभं स्कंदि मंदगं कफदूषितं २० द्विदोषदुष्टं संसृष्टं त्रिदुष्टं पूतिगंधकं सर्वलक्षणसंयुक्तं कांजिकाभं च जायते २१ विषदुष्टं भवेच्छ्यावं नासिकोमार्गगं तथा विस्रं कांजिकसंकाशं सर्वदुष्टकरं बहु २२ इंद्रगोपप्रभं ज्ञेयं प्रकृतिस्थमसंहतं २३ शोथे दाहेंऽगपाके च रक्तवर्णे रुजः स्रुतौ वातरक्ते तथा कुष्ठे सपीडे दुर्जयेऽनिले पाणिरोगे श्लीपदे च विषदुष्टे च शोणिते ग्रंथ्यर्बुदापची क्षुद्ररोगरक्ताधिमंथिषु विदारीस्तनरोगेषु गात्राणां सादगौरवे रक्ताभिष्यंदितंद्रायां पूतिघ्राणास्यदेहके यकृत्प्लीहविसर्पेषु विद्रधी पिडिकोद्गमे कर्णौष्ठघ्राणवक्त्राणां पाके दाहे शिरोरुजि उपदंशे रक्तपित्ते रक्तस्रावः प्रशस्यते २४ एषु रोगेषु शृंगेण जलौकालाबुकैरपि अथवापि सिरामोक्षैः कुर्यादस्रस्रुतिं नरः २५॥

री २३ रक्त मोक्षण योग्य शोथ में दाह में अंग पाक में रक्त वर्ण अंग में नाक से बहने में बात रक्त कुष्ठ कष्ट साध्य पीड़ा बात संयुक्त में हाथ रोग में पीला पाउं वा विष करि गिर रक्त में ग्रंथि अर्बुद गंड माला क्षुद्र रोग अपची रक्ताधि मंथ विदारी कुच रोग देह जकड़ रक्ताभिष्यंद तंद्रा दुर्गंध यकृत प्लीह विसर्प विद्रधी पिडिकी गात्र ओठ नाक मुख कान पकने में माथे पीड़ा उपदंश रक्त पित्त इन रोगन में रुधिर निकराना उचित है २४ रक्त मोक्षण प्रकार सींगी जोंक तोंबी फस्त इन चार करिके रक्त निकरावे॥ २५ ॥

शिरा छेदन अयोग्य दुर्बल विषयी नपुंसक भीत गर्भिणी गोद बालक वाली पांडु मनादि पंच कर्म कृती स्नेहादि कर्म कृती अर्श रोगी सर्वांग उदर श्वास कास उवाती अतीसार अति स्वेदी सोरह के भीतर सत्तर के ऊपर अवस्था वाले को अकस्मात नाक से रक्त गिरे को ऐसे मनुष्य अयोग्य कदाचित् फोड़ा फुन्सी हो तो जोंक लगावे ऐसे रोगियों का विषाद संयोग्य से रक्त दुष्ट हो तो शिरा मोक्षण करे १६ दोषादिक में रक्त निकासन विधान वायु दूषित रक्त सिंगी से लेद पित्त दूषित जोंक से लेद कफ दूषित तोंबी से लेद है वा तीन दोष दूषित दुष्ट रुधिर शिरा छेदन करि लेद १०

न कुर्वीत शिरा मोक्षं कृशस्याति व्ययायिनः क्लीवस्य भीरोर्गर्भिण्याः सूतिका पांडु रोगिणां पंच कर्म विशुद्धस्य पीतस्नेहस्य पार्शसां सर्वांग शोथ युक्तानां मुदरिश्वासकासिनां छर्द्यतीसार युक्तानामति श्विन्न तनोरपि ऊन षोडश वर्षस्य गत सप्तति कस्य च अघात स्रुत रक्तस्य शिरा मोक्षो न शस्यते स्यांचात्ययिके योगे जलौकाभिस्तु निर्हरेत् तथापि विषयुक्तानां शिरा मोक्षोपि शस्यते १६ गोशृंगेण जलौकाभिरलाबुभिरपि त्रिधा वातपित्त कफैर्दुष्टं शोणितं स्रावयेद्बुधः द्विदोषाभ्यांतु संसृष्टं त्रिदोषैरपि भूषितं शोणितं स्रावये द्युक्त्या शिरा मोक्षैः प्रदेस्तथा १७ गृह्णाति शोणितं शृंगं दशांगुल मितं वरात् जलौका हस्त मात्रं च तुंबी च द्वादशांगुलं पदमंगुल मात्रेण शिरा सर्वांग शोधिनी १८ शीतं निरन्ने मूर्च्छा च तंद्रा भीति मद श्रमैः

सिंगी आदि से रुधिर खिचने का प्रमाण सिंगी जिस ठौर लगे तिस के चारों ओर दश अंगुल तांई का रक्त खैंचती है जोंक हस्त भर तांई तोंबी बारह अंगुल तांई सरस्र शिरा अंगुल भरका और मोटी शिरा जो सब नसों को रक्त देद वह सब शरीर के रुधिर को शुद्ध करती है १८ रुधिर मोक्षण अयोग्य शीत काल में उपास में तंद्रा में मद में भय मान को परिश्रम में मल मूत्र निरोध में ऐसे मनुष्य के शरीर से रुधिर नहीं निकलता १९ ॥

शिरा रक्त न देने का यत्न जो नस छिद्र के रुधिर भली भांति न द्रवै तौ कुट चीता सैंधव सम पीसि उस छेद पर रगड़ने से अच्छे प्रकार रक्त देइगी काल-
न जाड़ा हो न गरमी हो न स्वेद किये कौन भांति उस शरीरी को जो रक्त निकारै तो प्रथम जवा गूड़े तृप्ति कर लोहू निकरावै २१ अति रुधिर स्रा-
व तिसे स्वेद किये वा उष्मा से स्थूल नस से रक्त अधिक आवे बंद न हो तिस के हित यत्न आने वाले श्लोक में कहते हैं २२ रुधिर न थंभे भने पर
जो सिरा मोक्ष से रक्त न बंद हो तो लोद राल रसौत तीनों का चूर्ण वा यव गेहूं का चून बांध व जवासा गेरू का चूर्ण वा सर्प की केचुवा रेसमी

पुतानां नस्रवे द्रक्तं तथा विरा मूत्र संगिनां १९ अप्रवर्तति निरक्ते च कुष्ट चित्रक सैंधवैः मर्दये द्व्रणवक्रं च तेन सम्यक् प्रवर्त्तते
२० तस्मान्नसी तेना त्सुखेन स्विन्ने नाति तापिते पीवाय वागूं लभस्य शोणितं स्रावयेद्बुधः २१ अति स्विन्न सो स्न काले तथै
वाति शिरा व्यधात् अति प्रवर्त्तिते रक्ते तत्र कुर्यात्प्रति क्रियां २२ अति प्रवृत्त रक्ते च लोध्र सर्जरसां जनैः यव गोधूम चूर्णो वा धव ध-
न्वन गैरिकैः सर्पनिर्मोक चूर्णो वा भस्म ना क्षौ भवस्त्रयोः मुखं व्रणस्य वध्नाच शीते श्चोप चरे व्रणं विध्ये दूर्ध्वे शिरां तां
वा दहे त्क्षारेण वाग्निना व्रणं कषाय संधत्ते रक्तं स्कंदयते हिमं व्रणास्य पाचयेत्क्षारो दाहः संकोच येच्छिरां २३ वामां-
ड शोथे दक्ष स्य करस्यां गुष्ट मूलजां दहेच्छिरां व्यत्य येन तु वामांगुष्ट शिरो दहेत् २४

लत्ता की भस्म इन में कोई फस्त के मुख पर बल करि दाबदे उस पर चंदनादि शीतोप चार करै शीतल लेप करै जो इस से न बंद होय तो उस
के कुछ ऊपर बढि कै फस्त दे वा अग्नि सम खार उस के मुंह पर लगावे वा अग्नि से दाग दे तो बंद होगा इस से क्यों बंद हो सो कहते हैं लोधादि से
खारै मुख अमलाता है शीतल लेप से रक्त थंभता है क्षारादि से क्षत पचता है जलाने से नस का मुख सिकुरता है २३ दग्ध हुते रोग शांति
जिस का दहिना अंड कोश फूले उस के वामे हाथ के अंगूठे की जड़ दागै ॥

जो वाम अंड कोश फूलै तौ दहिनें हाथ के अंगूठा की मूल दागै जो यूव आरंभ में करै तौ अवश्य अच्छा होय और जिसे सीत रस हो उस के गोड के तलवे अत्यंत संकै तौ रस वाहिनी और कफ वाहिनी के मुख सिकुर जाते हैं अग्नि दीप्त होती है २४ दुष्टरक्त अशेष न होने पर दुष्ट रुधिर काढने में कुछ वाकी रहि जाय तौ रोग भी कोप न करैगा और अशेष होने वा ज्यादा निकसने में उपद्रव उत्पत्ति होते हैं अंधता आक्षेपक वाय तृसा तिमिर माथे में पीर पक्षाघात वाय श्वास कास कुच की जरन पांडु ये रोग होते हैं और सब रुधिर निकस जाने से मरने का भी आश्चर्य नहीं २५

शिरा दाह प्रभावेण शुष्क शोधः प्रशाम्यति विषूच्यां पाद दाहेन जायते ग्नि प्रदीपनं संकुचतियतस्तेन रसश्लेष्म वहाशिराः २५ यदा वृद्धिय कृत्स्नौ होः शिश्नोः संजायते स्रजः तदातत्स्थान दाहेन संकुचत्यस्रजः शिराः २६ रक्ते दुष्टे वशिष्टेपि व्याधिर्नैव प्रकुप्यति अतः स्राव्यं सावि शेषं रक्ते नातिक्रमो हितः आध्मा क्षेपकं तृष्णां तिमिरं शिरसो रुजं २७ पक्षघातं श्वास कासौ हिका दाहं च पांडुतां कुरुते विस्रुतं रक्तं मरणं वा करोति च २७ देहस्योत्पत्ति रसृजा देह स्तेनैव धार्यते विना तेन व्रजे ज्जीवो रक्षेद्रक्त मतो बुधः २८ शीतोप चारैः कुपिते वात रक्तस्य मारुते कोष्णेन सर्पिषा शोथं सर्वतः परिषे चयेत् ३० क्षीण सोण प्रणो रस्न हरिण छाग मांसजः रसः समुचितः पाने क्षीरं वाषष्टि का हिता ३१ ॥

और रक्त से शरीर की उत्पत्ति है और देह को आधार है रक्त रहने से जीवत्व है इसी कारण बुद्धिमान वैद्य रक्त रक्षा रुधिर की करते हैं २६ रुधिर मोक्षण पर दोष कोप रुधिर निकरै पर घाव पर पित्त कोप दीसै तो शीतल चंदनादि लेप करै वायु कोप दीसै तौ वा घाव पर सूजन हो दू पीड़ा करै तो सुखोस्न घी लगावै २७ रुधिर मोक्षण पर पथ्य जो रक्त निकासने पर निर्बल भया हो तौ हरिण खर गोश भेड़ कुस मृग छाग इन का मांस खिलावै वा सट्ठी के चावर गो दूध में खीर करि खिलावै वा गऊ का दूध भात खिलावै यह पथ्य हित कारक हैं २८ ॥

सम्यक् रक्त मोक्षण लक्षण पीड़ा विगत शरीर हल का उभय रोग दवै प्रसन्न मन ऐसे लक्षण होंतो रक्त मोक्षण अच्छा भया ३१ रक्त मोक्षण पर निषेध परिश्रम मैथुन क्रोध ठंढे पानी से न्हाना वाहर जाना दो वार भोजन निद्रा दिन में यह चारवाणादि गार खटाई कडुक त्यागै शोक वकना अजीर्ण और जिस में जोर पर ना देखे सो न करै ३२ इति शार्ङ्गधर द्वादशोऽध्यायः १२ अथ नेत्रोप चार प्रकार नेत्र रोग पर सात प्रकार औषधि कहते हैं सेक आश्च्योतन पिंडी विडाल तर्पण पुट पाक अंजन इति १ सेक विधान दूध घृत रस आदिक रोगी की आंखें मुंद वाइ चार अंगु

पीडा शांतिर्लघुत्वं च व्याधेरुद्रेकसंक्षयः मनःस्वास्थ्यं भवेच्चिन्हं सम्यग्विस्राविते ऽसृजि ३१ व्यायाम मैथुनक्रोध शीतस्नान प्रवातकान् एकाशनं दिवानिद्रा क्षाराम्ल कटु भोजनं शोकं वादम जीर्णं च तजेदा वल दर्शनात् ३२ इतिश्री शार्ङ्गधर उत्तर खंडे रक्त मोक्षण विधिर्नाम द्वादशोऽध्यायः १२ सेक आश्च्योतनं पिंडी विडालस्तर्पणं तथा पुट पाकांजनं चेभिः कल्कै र्नेत्र मुपाचरत् १ सेकस्तु सूक्ष्मधाराभिः सर्वस्मिन्नयने हितः मीलिताक्षस्य मर्त्यस्य प्रदेयश्चतुरंगुलात् २ सतापि स्नेहनो नाते रक्ते पित्ते च रोपणः लेखनश्च कफे कार्य स्तस्य मात्राऽधुनोच्यते ३ षड् वाक् शतैः स्नेहनेषु चतुर्भिश्चैव रोपणे वाक् शतैश्च त्रिभिः कार्यः से कोलेखण कर्मभिः ४ कार्यस्तु दिवसे सेको रात्रौचात्ययिके गदे ॥

ल ऊपर ऊपर से धार महीन दे औषधि गिरावे इसे सेंक कहते हैं २ सेंक भेद वात दूखित नेत्र रोग से स्नेह न सेंक देइ रक्त पित्त पर रोपण सेंक कफ पर लेख न सेंक दूध घृतादि स्नेह न द्रव्य है लोध मुरेठी त्रिफलादि रोपण द्रव्य हैं इन्हें दूध में पीस ले सोंठि मिरच पीपरि लेखन द्रव्य हैं आगे इन की मात्रा कहते हैं ३ स्नेहन सेंक की मात्रा छः से रोपण सेंक की चारिसे लेखन तीन से मात्रा ताईं रखै ४ सेकादि काल सेकन दिन में करै रात्रि को तेज गद में

वाताभिष्यंद पर सेक रंड के पत्र छाल मूल काथ बकरी का दूध सुखोस्न करि सेंके तौ वात अभिष्यंद नेत्र से दूर हो ६ पुनः छगरी का दूध सैंधव डारि सुखोस्न करि सेंके वा हरदी देवदारु सैंधव डारि छगरी पयते सेंके तौ अभिष्यंद वात विपर्य्य शुकाक्षिपाक रोग दूर होइ ७ पित्त रक्त पर और अभिघात पर सेंक लोध मुरेठी दोनों समान घृत में भूजि दूध में मिलाइ तप्त करि सेंक करै तौ पित्त रक्त विकार अभिघात जनित दोष दूर होइ ८ रक्ताभिष्यंद पर सेंक त्रिफला लोध मुरेठी शक्कर मोथा ये सब समान पीसि ठंढे पानी में सेंक किये रक्त अभिष्यंद दूर होइ ९ रक्ताभिष्यंद पर पुनः लाख

एरंडत्वक्पत्रमूलैः स्त्रजमाजं पयो हितं सुखोष्णं सेचनं नेत्रे वाताभिष्यंदनाशनं ६ परिषेको हितं नेत्रे पयः कोष्णं ससैंधवं रज-
नीदारुसिद्धं वा सैंधवेन समन्वितं वाताभिष्यंदशमनं हितं मारुतपर्यये शुष्काक्षिपाके च हितामेरं सेचनकं तथा ७ सावरं
मधुकं तुल्यं घृतभ्रष्टं सचूर्णितं छागक्षीरे घृतं सेकात्पित्तरक्ताभिघातजित् ८ त्रिफलालोध्रयष्टीभिः शर्कराभद्रमुस्तकैः
पिष्टैः शीताम्बुना सेको रक्ताभिष्यंदनाशनः ९ लाक्षामधुकमंजिष्ठालोध्रकालानुसारिवा पुंडरीकयुतः सेको रक्ताभिष्यंद
नाशनः १० श्वेतलोध्रघृते भ्रष्टं चूर्णितं पटविस्तृतं उष्णाम्बुना विमृदितं सेकाच्छूलघ्नमंविके ११ अथ आश्च्योतनं का-
र्यं निशायां न कथंचन उन्मीलिते ह्यिणा दृग्मध्ये विंदुभिर्द्व्यंगुलाद्धितं १२ मुरेठी मजीठ लोध कमल सामा सेत

कमल ये सब पीसि पानी में सेंक करै तौ नेत्रन से रक्ताभिष्यंद दूर हो १० नेत्र शूल पर सपेद लोध घृत में भूजि चूर्ण करि पोटरी में बांधि उष्ण जल में बोरि २ आंखि की पलकन पर फेरे नेत्र शूल दूर होइ ११ आश्च्योत विधान आश्च्योतन कहैं विंदु चुवाउना आंखि खोलि दूध काथ स्वरसादि द्रव पदार्थ दुइ अंगुली से बोरि आंखि से चुवाय देइ इस को आश्च्योत कहते हैं सो निशा समय कभी न करै १२ ॥

वा· स्त्रियों के रोगों में प्रथम आनर्तव दोष वर्णन करते हैं सो रजस्वला धर्म में आठ प्रकार होता है वातार्तव पित्तार्तव कफार्तव धूम्याम कुणप ग्रंथि क्षीण मल सम ये आठ हैं ६० जो स्त्री के मास प्रति रजस्वला धर्म होता है उस में दोष प्राप्ति हो गर्भ नहीं धारण होने देते इस कारण इन्हे भी शुद्ध करना उचित है जो लक्षण पुरुष के शुक्र दोष में हैं वैसे ही स्त्री के आनार्तव में भी हैं ६० अथ प्रदर रक्त प्रदर कहैं पयरा इस में स्त्री के रुधिर स्राव होता है सो चारि भांति है वात प्रदर पित्त प्र· कफ प्र· सन्नि प्र· ६१ अस्य लक्षणं मदिरा सेवन से अजीर्ण से गर्भपात से अति मैथुन से अति चलने से बोझ उठाने से दिन के सोने से इत्यादि कर्म से स्त्री का रज दुष्ट हो तरः बतरः का रुधिर गिरता है तिस्का पूर्व रूप लक्षण पीड़ा शरीर में दुर बलता ग्लानि मूर्छा तृषा दाह पांडु रोग इति जो रूखा लाल फेन युक्त थोरा थोरा योनि से बहा करै अथवा मांस धोवन सा बहै सो वात जन्य है जो नीला दाह युक्त रुधिर गिरै सो पित्त जन्य है आंव सदृश गिरै सो कफ जन्य है जो हरिलासा वा मज्जासा गिरै और मृत्तुक की तरह गंधाइ सो सन्नि पात प्रदर है इसे असाध्य जानना ६१ अथ योनि रोग बीस प्रकार हैं वातज पित्त

तथान्व रक्त प्रदरं चतुर्विधि मुदीरितं वातपित्त कफै स्त्रेधा चतुर्थ सन्निपाततः १६१ विंशति योनिरोगाः स्यु र्वाता त्पित्ता त्कफादपि सन्नि- पाताच्च रक्ता च्च लोहित क्षय तस्तथाः १६२ शुष्काच्च वामनो चैव षंठितां तु मुखी तथा सूची मुखी विप्लु ताच्च जातघ्नीच परिप्लुता १६३ उप प्लुता प्राक्चरणे महा योनि स्तु कर्णिका स्या न्नंद्रां चाति चरणा योनि रोगाः इतीरिताः १६४ चतुर्विधं योनि कदं वातपित्त कफै स्त्रिधा ॥

ज कफज त्रिदोषज रक्तज लोहिता क्षय ६२ शुष्क वामिनी षंठिता अंतर्मुखी सूचीमुखी विप्लुता पुत्र घ्नी परिप्लुता ६३ उपप्लुता प्राक् चरणा महायोनि कर्णिका नंद अति चरणा इस तरह बीस योनि रोग हैं ६४ अस्य लक्षणं उपाय के व्यति क्रम से वा दैवी गति से रजस्वला दुष्ट होके वीर्य प्राप्त गर्भस्थान में प्रवेश हो बीस प्रकार रोग होते हैं जो योनि कर्कसवा तब्ध वा शूलादिक वात बेदना करिके पीडित हो सो वातज है जो योनि में दाह पाक वा ज्वरादिक पित्त के लक्षण हो सो पित्तज है जो योनि कर्कस शीतल और श्याम खाज युक्त चिकनी हो सो कफज है जो तीनों दोष के लक्षण हों सो सन्निपातज जो योनि निज स्थान से इधर उधर टल जाय तो रति समय कष्ट हो सो रक्तज है जो योनि के पास दाह हो और रुधिर जाने से क्षीण समुझि परै सो हताक्ष है जो रजोधर्म न हो सो शुष्क है ग्रंथांतर में योनि बंध्या कहते हैं जो योनि पुरुष के वीर्य को धातु संयुक्त न होने दे सो वामनी है जो रजस्वला रहित वास्त न रहित हो और छूने से खर ख-

निकस आवे सो अंतर्मुखी है जिसका सुई के नाके समान मुख वह सूजी मुखी है जो सदा पीड़ा करै विप्लुता है जो योनि रजो धर्म के अंत मूल छिद्र गर्भाशय का मुख तिस में पुरुष का वीर्य धारण करि बढ़ने न देइ सो पुत्रघ्नी है जिस योनि में सुरति समय पीड़ा होइ सो परिप्लुत है जिस योनि से रजो धर्म में रुधिर फेन मिला ऊर्ध्व गति हो गिरै सो उपप्लुता है जो योनि मैथुन समय पुरुष से प्रथम सुख जन्य हो के फिरि विरस हो प्राक् चरणा है जो सर्व विशेष फैली रहै सो महा योनि है इसे विवृता भी कहते हैं और जो कफ रक्त के विकार से योनि में कमलां कुर सी मांस की गांठि १ सो हो और जिसे मैथुन समय संतोष न हो सो अत्यानंदा है जो योनि सदा मैथुन की कांक्षित रहै तृप्त न हो देर में तृप्त हो सो अति चरणा है ऐसी योनि वीर्य नहीं धारण करती १६४ अथ चारि प्रकार योनि कंद रोग वातज पित्तज कफज त्रिदोषज १६५ निदान दिन के सोने से क्रोध से अति भोग से वा नखक्षत से वात कुपित से होके नारंगी के फल सदृश गोल अरुण उत्पन्न हो उसे योनि कंद कहते हैं इस में जो दोष अधिक हो वात पित्त कफ सन्नि ऐसे चारों जानना ६५ वार्तिक अथाष्ट प्रकार गर्भ संबंधी रोग विष्टक गर्भ नागोदर मक्कल्ल मूढ गर्भ विष्टंभ गूढ गर्भ जरायु दोष गर्भपात ये आठ प्रकार हैं १६६ अस्य लक्षण निदान

चतुर्थं सन्निपातेन तथाष्टौ गर्भजा गदाः १६५ उपविष्टक गर्भास्या तथा नागोदरः स्मृतः मक्कल्लो मूढ गर्भश्च विष्कंभो गूढ गर्भिका जरायु दोषो गर्भस्य पात श्चाष्टमकः स्मृतः १६६ ॥

स्त्री के गर्भ स्थिति भये पर उष्ण और खट्टा पदार्थ खाने के योग में पित्त को पित रक्त गिराता है तब गर्भ हल का परि कै जल्दी नहीं बढ़ता तब नव मास से अधिक दिन खींचता है और गर्भ अचल नहीं रहता चला करता है वह उपविष्ट है जो धातु वा रुधिर के विकार से वायु प्रवेश करै तो सर्प सदृश पेडू को घेर के फुलाता है तिसके पीछे अपनी इच्छा से स्तक हो गिर पड़ता है वा निस्संधि हो रह जाता है उसे नागोदर कहते हैं मक्कल्ल दो प्रकार का है गर्भ मक्कल्ल प्रसूती मक्कल्ल गनरां नाप से वायु कुपित होके पेडू में जाइ शूल उपजाइ गर्भ को पीडित करि मारता है सो गर्भ मक्कल्ल है जो वालक भये पीछे वायु कुपित हो गर्भ संबंधी रुधिर रोक के ऊपर ज्वर वस्ती में चढ़ाइ हृदय मस्तक में शूल उत्पन्न करै योनि को मोटी और संकुचित करै और प्रसूती को मार डालै वह प्रसूती मक्कल्ल है इसे योनि संवरण भी कहते हैं जो वायु गर्भ को रोकि के वाहर की ओर खूंटा सा अड़ावे योनि पेडू में शूल उत्पन्न करै और मूत्र रोकै यह मूढ गर्भ है इसके आठ प्रकार के भेद शुश्रुतादि ग्रंथ में कहे हैं तिसके लक्षण कोई वालक के होने ही मस्तक अवरोध करती है कोई पेडू के द्वार पर अवरोध क-

करती है कोई बालक के एक हाथ निकलेपर अवरोध करै कोई दोनों हाथ निकले पर अवरोध करै कोई धरनि सिरपर अवरोध करै ऐसे आठ भेद हैं और समय रहित भोजन वा रूक्ष भोजन से वायु कोप करि गर्भ सुखावे पुष्ट नहोइ इसी से पिंड न भुटाइ हल का परजाइ डोला करै और मंद मंद पीड़ा करता है जो गर्भ रहि के पुष्ट होवे बढ़े नहीं एक दिन वाकी रहे तक गर्भ जीर्ण हो जाता है गर्भ शय्या में बालक जरायु कहैं झिल्ली में वैठि रहता है सो जरायु दोष है भय से घात से तीक्ष्ण उष्ण भोजन पान से गर्भ फल से की नाईं गलि के गिर परता है वह गर्भ स्राव है जो चारि मास के भीतर गिरै वह गर्भ पात है १६६ वार्त्तिक अथ पंच प्रकार स्तन रोग वातज पित्तज कफज सान्निज क्षतज जैसे ये पांच स्तन रोग हैं ऐसे ही वातादि पांच रोग दूध उतरने मे स्तन रोग वाल रोग में कहे हैं १६७ दूध वाली वा विना दूध वाली स्त्री के स्तन में वातादि दोष कोप करि मांस जो रक्त दूषित करै तो पांच विधि रोग होइ सो रक्त ज विद्रधि के सब लक्षण युक्त होते हैं वातज में वायु के ऐसे दोष प्रति जानना १६७ स्त्री के दोष उत्पन्न करने वाले तीन दोष हैं अदक्ष पुरुष कहैं जो स्त्री के व्यवहार

पंचैव स्तन रोगाः स्युर्वाता त्पित्तात्कफादपि सन्निपातात्क्षताच्चैव तथा स्तन्योद्भवा गदाः १६७ वाल रोगेषु कथिता स्त्री दोषाश्च त्रयः स्मृताः अदक्ष पुरुषोत्पन्नः सपत्नीविहितस्तथा १६८ दैवाज्ज्ञात स्तृतीयस्तु नश्यं सूतिकागदाः ज्वरादयश्चिकित्स्यास्ते यथा दोषं यथा

में चतुर न होइ उसके संताप करिके जो रोग उत्पन्न होय वह अदक्ष पुरुषोत्पन्न कहिये जो सवत की ईर्षा संताप कारण करके रोग होय वह पत्नी विहित है जो निज स्त्री से पुरुष प्रसन्नता से मन न देइ और ही स्त्री से स्नेह रखता होइ इस चिंता से कृश होवे शरीर में जो रोग उत्पन्न होता है वह दैवि कहै १६८ अथ वालांत रोग जो वालक होने से अंत में रोग उत्पन्न होय वह वालांत है उसी को प्रसूत भी कहते हैं इस में ज्वरादिक दोष देखि के और रोगी का वला वल विचारि के चिकित्सा करना जिस में देह मोड़े ज्वर श्वास सूजन शूल अतीसार हो सो असाध्य है जो केवल खाने पीने से हुआ है ज्वरादिक वह विशेष भयंकर है जो मकल्ल रोग करिके शूल उत्पन्न करै और रक्त स्राव रोधन करि सब देह में शूल उत्पन्न करै वह बहुत दुखदाई है वह शूला नाम मकल है ॥ १६९ ॥

वा· अथवा दश प्रकार बाल रोग हैं तिसमें तीन रोग माता के स्तन संबंधी हैं वातज पित्तज कफज ये दूध संबंधी हैं चारि रोग दांतन के हैं दंतोद्भेद दंत घात दंत शब्द अकाल दंत ये ४ दंत रोग हैं एक पूतना २७० मुखपाक मुखस्राव गुदपाक उपशीर्ष कपार्श्व उरुण तालु कंठवि छिन्न पारिगर्भिक २७१ दौर्बल्य गात्र शोष शय्या मूत्रक कूणडक रोदन अजगल्ली इस भांति दो इस बाल रोग हैं २७२ अस्य निदान लक्षणं वात करि दूषित दूध पीने से बालक को वातजन्य रोग पैदा होते हैं स्वरक्षीन दुर्बलत्व मल मूत्र बंधच ये वातज पित्त दूषित दुग्ध पान से सदैव पसीना छितरा विथरा मल नेत्र पीत है देह सब तानी बनी रहै ये पित्तज कफ संबंधी दुष्ट दूध पीने से लार विशेष बहै निद्राधिक मुंद आंखि फिरि जाय उद कादि आवे ये कफज है बालक के पहिले दांत आने में ज्वर झाड़ा खांसी माथे में पीर उवाकी दौर्बलत्व यह दंतोद्भेद है सातयें वा आठयें वर्ष बालक के दूध संबंधी दंत उखड़ने से ज्वरादि उपद्रव होतेहैं वह दंत घात हैं इसे दंत पात भी कहते हैं जब बालक के दंत निकसते हैं वह दंत शब्द है जो दंत अकाल में गिर कै जमते हैं तब ज्वरादिक पीड़ा होती है वह अकाल दंत है

द्वा विंशति बाल रोगा स्तेषु क्षीरालस स्त्रयः वातात्पित्तात्कफाच्चैव दंतोद्भेदश्चतुर्थकः दंतघातो दंतशब्दो काल दंतो हि पूतनं २७० मुख पाको मुखस्रावो गुदपाको हि शीर्षको पार्श्वारुणस्तालुकंठो विछिन्नं परिगर्भिकः २७१ दौर्बल्यं गात्र शोषश्च शय्या मूत्रं ककूणकः रोदनं चाजगल्ली स्यादिति द्वाविंशतिः स्मृतः २७२ तथा बाल ग्रहाख्याता द्वादशैव मुनीश्वरैः स्कंदग्रहो विशाखास्यात्त्वग्रहश्च पि-

जो बालक बार बार झाड़ा फिरै और आलस्य करि माता धोवे नहीं तो गुदा में खुजली पैदा होके फुंसियां उत्पन्न होती हैं सो पक फूट के घाव परजाइ वह अहि पूतना है रुधिर कोप से होती है और ग्रंथ कर्त्ता इसे क्षुद्र रोग में लिखते हैं परंतु यह रोग केवल बालक के होता है इससे इस ग्रंथ कर्त्ता ने बाल रोग में लिखा है जो बालक के मुख में सपेद मलाई सी जली फटी फटी सी देख परे वह मुख स्राव है सपेद मूहां प्रसिद्ध है जो मुख में वह लाल छाले से हों वह मुख पाक है यह लाल मुहां प्रसिद्ध है बालकी गुदा पक के घाव पर जाइ वह गुद पाक है जो बालक के मूंड पर मैल जमके पिरकी परती है अथवा रुधिर कोप से फल के घाव पर जाइ वह उपशीर्ष है बालक रोग के मध्य में स्त्री जन्य दोष महा पद्म नाम विसर्प रोग दो प्रकार होता है एक बस्तिज दूजा शीर्षज झाड़ा के चक्र से हृदय पर्यंत देख देह तो बस्तिज है जो मुख वा तालु बाहिर तक लाल ताम्र सम होकै हृदय से गुदा पर्यंत दुख

गृहीत्वा है ग्रंथांतर में इसे तालु विसर्प कहते हैं बालक के तालू में कफ कोप से कांटा पर आता हैं उसे तालु कंटक और तार दंत कहते हैं जिस बालक का तालू खाली पर आवे तो स्तन पान न करि सके बड़े कष्ट से दूध पिये मल पतला गिरे नेत्र या कंठ में विकार जावे कै मन से नहीं पीवे ज्यों का त्यों दूध डाल देवे ऐसे उपद्रव युक्त हो तो विच्छल है इसे तालु पात भी कहते हैं जो गर्भिणी का कुस्तन पान करे तो ये उपद्रव पैदा होते हैं खांसी अग्निमंद उबाकी तं-द्रा अरुचि भ्रम इत्यादि रोग उत्पन्न होते हैं उसे पारिगर्भिक कहते हैं गर्भिणी का स्तन पान करने से बालक बहु क्लेश पाते हैं वह दुर्बल होके पेट तोंबी सा निकल आता है ये पारिगर्भिक के लक्षण हैं जो शरीर बहुत कृश हो जाय सो गात्र शोष है और सुखंडी भी कहते इस में उबकाई और अतीसार भी होता है जो बालक अस्नान होके राति वा दिन को बिछोना में मूते सो शय्या मूत्र है दुग्ध दोष से बालक के आंखि की पलक पर खाज होके आंखि से पानी बहता है और बालक आंखि नाक मलक घसता है उजारे में आंखि नहीं खोलता उसे कुकूण कहते हैं जो बालक विशेष रोवै उस्का कम बढ रोवना दे-

भेदामेष ग्रह स्तद्वच्छकुनिः शीत पूतना मुखमंडिलिका तद्वत्पूतना चांधपूतना रेवती चैव संख्याता तथा स्याच्छुष्करेवती १७४ ॥

ख के अनुमान करिके रोग जानना वह रोदन है कफ कोप से बालक के शरीर में मूंगासी पिरकी हो शरीर के रंग में मिल रहती है पीड़ा नहीं करती एकरे-षक मिल के रहती है वह अज गल्ली है सो बालक के विशेष के होता है जवान के कम होता है ७२ अथ बारह प्रकार बाल ग्रह रोग हैं स्कंद ग्रह विशा-खा ग्रह श्व ग्रह पितृ ग्रह ७३ वा-नैगमेष शकुनि शीत पूतना मुख मंडिलिका पूतना अंध पूतना रेवती शुष्क रेवती ये बारह प्रकार हैं १७४ अस्य सामान्य लक्षणं स्कंदादि द्वादश ग्रह ग्रस्त बालक बारम्बार चौंकता है उठि उठि बैठता है ओंठ दांत चबाता है मुख से फेन गिरता है सोता नहीं हाथ पांव सूज आते हैं मल पतला अच्छी तरह बोलता नहीं देह में मछली के रक्त कीसी गंध आती है दूध नहीं पीता सब ग्रहों के सामान्य लक्षण जो बाल-क कुछ कांपे आंखि देह से पानी बहै वा एकै अंग कांपे ऊपर को देखै दांत चबाय मुंह टेढ़ा बनावे दूध न पिये कुछ रोवै यह स्कंद ग्रह है जिस ग्रह में बा-लक को ज्वर और उर्द्ध दृष्टि हो वह विशाखा ग्रह है इसके विशेष लक्षण बाल तंत्र में हैं जिस ग्रह में बालक बे होश हो जावे मुंह से फेन गिरे ज्वरादिक उप-द्रव हो रोवे अधिक देह में रक्त पीब की गंध आवे उसे श्व ग्रह कहते हैं ग्रंथांतर में स्कंदापस्मार कहते हैं अग्नि घातादि पित्त रक्त करि पीडित बालक को ज्वरादि

दांत चवाना वह नैगमेय है जो बालक अंग गलित होता भर्य कर कर अभुरा अवचाना हो देह में पक्षी कीसी गंध आवे आंख फिराय उबकाई अतीसार देहमें दुर्गंधि यह शीत पूतना है जिस बालक का मुख प्रसन्न हो शरीर की नसें दीख पैं अधिक खाय देह में और मूत्र में दुर्गंध आवे वह मुख मंडिका है जिस बालक को ज्वर अतीसार पियास उर्द्ध दृष्टि रोना निद्राहीन दिन रात्रि वह पूतना है जो बालक खांसे ज्वर पियास देहमें मेदगंध रुदन विशेष दूध न पिये मल अधिक गिरे वह अंध पूतना है जो बालक की देह में फिर जो घाव घाव से रुधिर बहे देह में दुरगंध मल पतला ज्वर वह रेवती है जो बालक को ज्वर शूल अजीर्ण माथे में पीड़ा मुख शोष सो भुजंग रेवती है २७४ आर्तिक आदि करिके पांचके रोग क्षुधि पाद स्तंभ पाद कुंडल इत्यादिक पांच रोग मुनिलोग बयालीस कहि गये हैं सो ये रोग स्त्री प्रदरादिक रोगनि में प्रथम कहि गये हैं सो जानना २७५ सन्निपातादिक दोष करिके बासठ ६२ प्रकार के रोग हैं सो वातादिक दोषमें भिन्न२ रोग कहि चुके हैं परंतु इन्हें भिन्न करि कोई नहीं कहता ऐसा समझना २७६ पंच कर्म वमन विरेचन निरूहण वस्ती

तथा चरणक भेदास्तु वातरक्तादि का स्मृये द्विचत्वारिंशत्प्रमुखास्ते रोगो क्षेत्र मुनी श्वरैः २७४ द्विषष्ठि दोष भेदास्तु सन्निपातादि काश्च ये तेपि रोगेषु गणिताः पृथक्कोलेते कीर्तित २७६ हीनमिथ्यातियोगानां भेदैः पंच दशोदिता: पंचकर्म भवा रोगा स्तेषु रोगेषु संस्थिता: २७७ स्नेह स्वेदो तथा धूमो गंडूषो जन तर्पणो अष्टादशैव ता पोह्य स्ताश्च रोगेषु लक्षिता २७८

अनुवासन वस्ती नस्य पांचो कर्म उत्तर खंड में कहेंगे और हीन योग मिथ्या योग अति योग इन तीनों प्रकार के भेद हैं सो भी उत्तर में कहेंगे वमन कहें औषधि देके उबकावना विरेचन कहें औषधि करके मल गिराना निरूहण वस्ती अनुवासन वस्ती औषधि की पिचकारी गुदमार्ग से देनी नस्य कहें नाक में औषधि देने का यत्न इस भांति पांचो कर्म जानना हीन योग मिथ्या योग अति योग इन से नाना भांति के दुख उत्पन्न होते हैं ॥ २७७ स्नेहादि संग्रह भी उत्तर खंड में है स्नेह पान स्वेदन धूमपान गंडूष अंजन तर्पण इन छहों में हीन योग मिथ्या योग अति योग ये तीनों भेद करिके अठारह भेद हैं उनसे उत्पन्न जो रोग सो उक्त रोग में संग्रह करि आये हैं ऐसे जानना स्नेह पान स्वेद धूम्र पान गंडूषता अंजन यह प्रथम परिभाषा में लिख गये हैं औषधादिक करिके धातु को दृढ़ करने का प्रयोग उसे तर्पण कहते हैं अथवा नेत्र तृप्त करने के प्रयोग उसे भी तर्पण कहते हैं ॥

शीतादि चार उपद्रव बहुत ठंढा योग करे से मनुष्य को ठंढा उपद्रव उत्पन्न होता है बहुत उष्ण से उष्ण उपद्रव उत्पन्न होता है शल्य कहें नख केश कांटा हाड सींग खांडा इन के लगने से वा इन में से कोई वस्तु पेट में जाय उससे जो रोग होइ वह शल्योपद्रव है मूढ वैद्य जो संभल खार बनाते परन्तु कच्चा रहि जाता है वह खिलाने से जो रोग उत्पन्न हो तो विष अग्नि शस्त्र व वज्र इन्हीं की तरह से मरता है ऐसे चार भेद हैं १७९ अथ विष रोग स्थावर जंगम कृत्रिम ये तीन प्रकार के विष हैं तिसमें स्थावर विष के नव भेद हैं और जंगम विष बहुत प्रकार का है तिस में लूता सांप ८० विच्छू मूषा कीट इस में वात पित्त कफ सन्निपात करिके एक एक के चार चार भेद होते हैं किसी के दांत में विष है किसी के नख में किसी के वार में किसी के सींग में

शीतोपद्रव एकः स्यादेकश्चोष्णोपतापकः शल्योपद्रव एकश्च क्षारश्चैकः स्मृतस्तथा १७९ स्थावरं जंगमं चैव कृत्रिमं च त्रिधा विषं तेषां च कालकूटाद्यैर्नवधा स्थावरं विषं जंगमं बहुधा प्रोक्तं तत्र लूता भुजंगमाः १८० वृश्चिकं मूषकं कीटं प्रत्येकं ते चतुर्विधाः दंष्ट्राविषं नखविषं वालशृंगास्थिभिस्तथा १८१ मूत्रत्पुरीषं चक्षुकाञ्च दृष्टे निश्वासतस्तथा। लाला याः स्पर्शतश्चैव तथा शंकाविषं गतं १८२ कृत्रिमं द्विविधं प्रोक्तं गरदूषीविभेदतः सप्तधातुविषं ज्ञेयं तथा सप्तोपधातुजं तथैवोपविषेभ्यश्च जातं सप्तविधं विषं दुष्टनीरं विषं चैकं तथैकं दिग्धजं विषं १८३

८१

हाड में १८१ मूत्र में मल में धातु में दृष्टि में श्वास में लार में स्पर्श में ऐसे भिन्न भिन्न जाति प्रति विष हैं मन में विष की शंका आने से वायु कुपित्त हो ज्वरादि उपद्रव शरीर में प्रकट करे सो शंका विष है ८२ कृत्रिम विष के दो भेद हैं एक वच्छनागादि एक दूषी संतत संपति के निमित्त शत्रुता करिके वा स्त्री लोग नाना प्रकार की चीज पसीना रज दिनाई मल मूत्र इत्यादि अन्न के संग खिला देती हैं तो पांडु त्व ज्वरादि उपद्रव होता है वा मधु घृत युक्त भये विष हो नींबू कपूर मिश्रित भये विष होय कृत्रिम विष है और वच्छनागादि कृत्रिम विष एक ही वार देह को जीर्ण करि प्राण लेता है जिसमें कम पराक्रम है

सो प्राण नहीं नाश कर सक्ता परंतु ज्वरादि उपद्रव करिके देश काल अन्न पानादि बादि निद्रा करिकै पीड़ित करता है और सप्त रसादि धातु नको दूषित करता है इस कारण दूषित विष कहते हैं ये दो प्रकार के कृत्रिम विष हैं विष के भेद सुवर्णादिक अशोध सप्त धातु की भस्म खाने से वा हर तालादि सप्त उपधातु की भस्म खाने से सप्त मदादिक अशुद्ध उपविष खाने से विष समान पीड़ा होती है उस की विष संज्ञा है अथ दुष्ट नीर जिस पानी में कीचड़ सेवाल पत्रादिक जंतु के वा मेंड़कादि के मल मूत्र से पानी बिगड़ जाता है उसे दुष्ट नीर कहते हैं उस्के नहाने से पीने से विष समान पीड़ित होता है शस्त्रादिक में विष के पानी को चढ़ाते हैं उस शस्त्र के घात का घाव नहीं अच्छा होता और विष सदृश उपद्रव होता है सो दिग्ध विष है १८३ वार्तिक तिल-

काथे कच्छुभवा दंद्रु दुष्ट नीर भवा तथा तथा भूरण कंडूश्च शोथो भल्लातजस्तथा मदश्च तुर्विधश्चान्यः पूग भंगाक्ष कोद्रवैः १८४ इति प्रसिद्ध गणिता ये किलोपद्रवा भुवि असंख्याश्चापरे धातु मूल जीवादि संभवाः १८५ इति श्री शार्ङ्गधर संहितायां रोग गणनायां सप्तमोऽध्यायः ७॥ इति प्रथम कांड समाप्तः

क अथ चारि प्रकार आगंतुक उपद्रव वन किमाच दुष्ट पानी सूरन अंग के छूने से देह खजु अथ भिलावां से देह सूज आवे इस प्रकार से चारि भेद हैं और भी चारि प्रकार हैं सुपारी भांग बहेड़ा की मिंगी कोदव धान्य इन चारों के खाने से चारि प्रकार के मद होवें हैं और भी जानना ॥ १८४ औषधि वनस्पती फूल डार पात मूल इन के खाने से चारि विधि मद होते हैं इस प्रकार जो पृथ्वी में प्रसिद्ध रोगोपद्रव तिन की संख्या निश्चय करि गये हैं इस से वा सुवर्णादि धातु हरितालादि उपधातु नाना प्रकार की वनस्पति वा औषधि वा जीवादिक करिकै अनेक उपद्रव उत्पन्न होते हैं सो उपद्रव असंख्य हैं अनुमान से जानना १८५ इति श्री शार्ङ्गधर व्याख्यायां निर्मित शार्ङ्गधर सुधाकर नाम सप्तमोऽध्यायः ७

श्रीशार्ङ्गधरस्यमध्यखण्डारम्भः

॥ श्रीगणेशायनमः अथ मध्य खंड प्रारम्भः वार्तिक अथ क्वाथ पंच प्रकार जिसे काढा कहैं स्वरस कहैं अंगरस १ कल्क २ क्वाथ ३ हेम ४ फांट ५ एक से एक गुण में न्यून हैं यथा अंगरस से लघु कल्क १ उत्तम भूमि से तुरत की उखारी औषधि जल विना कूटिके वस्त्र में डारिनि चोरि लेद उस रस को स्वरस कहते हैं २ सोई द्रव्य कुडव कहैं सोलह तोले कूटिके दुगुने पानी में दिन राति भिजोद राखे उस के रस को भी स्वरस कहते हैं ३ जो द्रव्य हरी न मिले तो सूखी द्रव्य आठ गुण पानी में औटे जब चौथाई रहै तब लै लेद ४ औदी द्रव्य का रस गरुआ है इस कारण कार्य में आधा

श्रीगणेशाय नमः अथातः स्वरसः १ कल्कः २ क्वाथश्च ३ हिम ४ फांट ५ को ज्ञेयाः कषायाः पंचैते लघवः स्युर्यथोत्तरं १ आहतात्तत्क्षणात्कृष्टाद्द्रव्यात्क्षुण्णात्समुद्भवः वस्त्रनिष्पीडितोयः स्यात्स्वरसो रस उच्यते २ कुडवं चूर्णितं द्रव्यं क्षिप्तं च द्विगुणे जले अहोरात्रात्स्थितं तस्माद्भवेद्वारस उत्तमं ३ आदाय शुष्क द्रव्यं च स्वरसानांच संभवे जलेष्ट गुणिते साध्यं पादशेषं च गृह्यते ४ स्वरसस्य गुरुत्वाच्च पलमर्द्ध प्रयोजयेत् निशोषितं चाग्निसिद्धं पलमात्रं रसं पिबेत् ५ मधुश्वेता गुड क्षार जीरकं लवणं तथा घृत तैलं च चूर्णादीन्कोल मात्रं रसं क्षिपेत् ६ अमृतायाः रसः क्षौद्र युक्तः सर्व प्रमेह जित् हरिद्रा चूर्ण युक्तो वा रसो धात्र्या समाक्षिकः ७

पल लेना और सूखी द्रव्य रात की भीजी का रस हल का है इस्से पल भर लेना ५ स्वरस्व वा काढा वा यंत्र का निकाला रस इन में सहत शक्कर गुड खार जीरा लोन घृत तेल और चूरण ये सब आठ मासे युक्त करना ६ गुरच का रस सहत युक्त खाने से सब प्रमेह नाश होय आंवरे का रस हरदी का चूरण सहित मिश्रित करि खिलाने से भी प्रमेह नाश होय ॥ ७ ॥ ॥ ॥

वा॰ अथ वासा स्वरस रक्तपित्तादि पर रूसे का स्वरस सहित मिलाय के पियेसे रक्तपित्त नाश होइ और ज्वर खांसी सर्द कमल कफ और पित्त ये रोग भी नाश करै ८ अथ त्रिफलादि स्वरस कमल पर त्रिफले का रस सहित वा बड़ी हरदी का रस सहत वा नीव का रस वा गुर्च का रस सहत युक्त पिये तो कमल रोग को नाश करै ९ अथ तुलसी आदि रस विषम ज्वर पर तुलसी का रस मरिच का चूर्ण वा गूमा का रस मरिच साथ पिये तो विषम ज्वर नाश होइ १० अथ जंब्वादि रस रक्तातीसार पर जामुन आंव आंवरा इन तीनों की पत्ती का रस सहित घृत दूध सहित पिये तो दिनी

वासकः स्वरसः पेयो मधुना रक्तपित्तजे ज्वरकासक्षयहरः कामलाश्लेष्मपित्तहा ८ त्रिफलायारसः क्षौद्रयुक्तो दार्वी रसोथवा निंबस्य वा गडूच्या वा पीतो जयति कामलां ९ पीतो मरिचचूर्णेन तुलसीपत्रजो रसः द्रोणपुष्पीरसो प्येवं निहंति विषमज्वरान् १० जंब्वाम्रामलकीनांच पल्लवोत्थो रसो जयेत् मध्वाज्यक्षीरसंयुक्तो रक्तातीसारमुल्बणं ११ स्थूलवब्बूलिकापत्ररसः पानाद्व्यपोहति सर्वातिसारस्योनाककुटजस्त्वग्रसोथवा १२ आर्द्रकःस्वरसःक्षौद्रयुक्तो हरणवात-नुत् श्वासकासारुचिंहंति शतिश्यायंव्यपोहति १३ वीजपूररसःपानान्मधुक्षारयुतो जयेत् पार्श्वहृद्वस्तिशूलानि कोष्ठवायुंचदा

रक्तातीसार दूरि करै ११ अथ बबूरादि स्वरस अतीसार पर बबूर की छाल का रस सहत युक्त पिलावै तो सात भांति का अतीसार जाइ वा कुरै का रस वा करील का रस सहत संग पिये तौ अतीसार जाइ १२ अदरक का रस खंड कोश और श्वास पर अदरक का रस सहत पिये तो वातादि खुइ पचै श्वास खांसी अरुचि नाक बहना सब रोग मुक्त होय १३ अथ वीजपूर रस पार्श्वादि शूल पर विजौरा नींबू का रस सहत और यवाखार सहित पिये तो पशुरी की शूल हृदय की शूल पेडू पीर कोष्ठ वृद्ध ये सब रोग न से निर्मुक्त हो १४ ॥ ॥

टा॰ अथ सतावरि रस पित्त शूल पर सतावरि रस सहित पिये तो पित्त शूल हरै अथ घीकुवार रस प्लीहा पर घीक्वार रस हरदी चूर्ण पिये तो पित्त अपची पेट की गांठि दूर होइ १५ अथ मुंडी रस गंड माला अपची पर मुंडी रस आठ तोले पिये तो गंड माला अपची कांवर रोग मिटै १६ अथ मुंडी रस सूर्या वर्तादि पर मुंडी स्वरस उस मर्चि चूर्ण युत सात दिन पिये तो सूर्यावर्त आधा सीसी अच्छी होय १७ अथ ब्रह्म्यादि स्वरस उन्माद पर ब्रह्मी श्वेत कुह्मडा कचूर वा वच कोडियाला इन का स्वरस भिन्न भिन्न सहत और कूट के संग पिये तो सब उन्माद जाइ

शता वर्याश्च मधुना पित्त शूल हरो रसः निशा चूर्ण युतः कन्या रसः प्लीहाऽपची हरः १५ अलंबुषायाः स्वरसः पीतो हि पल मात्रया अपची गंड मालायाः कामलाया श्च नाशनः १६ रसो मुंड्याः स कोलो वा मरिचै रव धूलितः जये त्सप्त दिनाभ्यासात्सूर्या वर्ताई भेदको १७ ब्राह्मी कूष्मांड षड्ग्रंथा शंखिनी स्वरसः पृथक् मधु कुष्ठ युतः पीतः सर्वोन्माद पहारकः १८ कूष्मांडकस्य स्वरसो गुडेन सह योजितः दुष्ट कोद्रव संजातं मद पाना द्यपोहति १९ खड्गादि छिन्न गात्रस्य तत्कालं पूरितो व्रणः गांगेरु-की मूल रसै र्जायते गत वेदनः २० पुट पाकस्य कल्कस्य स्वरसो गृह्यते यतः अत स्तु पुट पाकानां युक्ति रत्रोच्यते मया २१ पुट पाकस्य मात्रेयं लेपस्यां गार वर्णता लेपं च द्व्यंगुलं स्थूलं कुर्या द्वांगुष्ट मात्रकं काश्मरी वट जंब्वादि पत्रै र्वेष्टन मुत्तमं

१८ श्वेत कोहडा का रस उन्माद पर लपेट कुह्मडे का रस पुराने गुड संयुत पिये तो दुष्ट कोदव का उन्माद नाश होइ १९ अथ वरियारा रस घाव पर शस्त्र के लगे का घाव में तुरंत वरियारे का रस लगावै तो घाव अच्छा होइ २० पुट पाक के रस की विधि पुट पाक का रस लेते हैं इस से उस का यत्न कहते हैं २१ कोई औषधी द्रव्य हो उसे पीसि कै गोली बांधै तिस पर रंड वा बरगद वा जामुन का पत्ता लपेटै फिर कपरौटी करि दो अंगुल मोटी माटी लेसै तब अग्नि में धरै जब लाल हो तब निकारि कै उसका रस निचोरि ले उसे पुट पाक रस कहते हैं तब

संयुत पिये और जो कल्क चूर्ण पलली द्रव्य मिश्रित करनी दोनौ पुट रस के यथा योग्य देना २२ अथ कुरैया पुट पाक सर्वातीसार पर चार तोले कुरैया की छाल ताजी चावल के धोवन में पीसि कै गोला बांधि जामुन के पत्ते लपेटै २३ फिर सूत से बांधि गेहूं के आटा सों लेप करि माटी लगावै तब गोरा के गोइठा में फूंकि कै जब अंगारा हो जाय तब आगि से निकार निचोरि ठंडा करि सहत डारि पिये तौ बहुत दिन का कठिन अतीसार जाय २५ चावर धोवन की क्रिया चार रुपया भरि शुद्ध चावर अठगुने पानी में धोइ वही धोवन सर्वत्र देय २६ पुनः अरलूजो

पलमात्रं रसो ग्राह्यः कर्षमात्रं मधु क्षिपेत् कल्कचूर्णद्रवाद्यास्तु देयाः स्वरसवद्बुधैः २२ तत्कालोत्कृष्टकुटजत्वचं तंदुलवारिणा पिष्टां चतुःपलमितां जंबूपल्लववेष्टितां २३ सूत्रबद्धां च गोधूमपिष्टेन परिवेष्टितां लिप्तां च घनपंकेन गोशकृद्वन्हिना दहेत् २४ अंगारवर्णं च मृदं दृष्ट्वा वन्हेः समुद्धरेत् ततो रसं गृहीत्वा च शीतं क्षौद्रयुतं पिबेत् २५ जयेत्सर्वानतीसारान्दुस्तरान्सुचिरोत्थितान् २५ कुट्टितं तंदुलपलं जलेष्टगुणिते क्षिपेत् भावयित्वा जलं ग्राह्यं देयं सर्वत्र कर्मसु २६ अरलूत्वक्तथैव पुटपाकोऽग्निदीपनः मधुमोचरसाभ्यां च युक्तः सर्वातिसारजित् २७ न्यग्रोधादेश्च कल्केन पूरयेद्गोरतित्तिरेः निरंत्रमुदरं सम्यक्पुटपाकेन तत्पचेत् तत्कल्कस्य रसः क्षौद्रयुक्तः सर्वातिसारनुत् २८ पुटपाकेन विपचेत्सुपक्वं दाडिमीफलं तद्रसो मधुसंयुक्तः सर्वातीसारनाशनः २९

करील वा सोंहन बाता का पुट पाक अग्नि को दीपन करता है जब सहत और मोचरस मिलाइ कै देइ तब अतीसार जाय २७ पुनः वर पीपल गूलर पाकर जगन्नाथी पीपरि वृन की छाल पानी में पीसि गोला बांधि स्वेत तीतर का पेट साफ अंतरी निकार डारै उस में गोला धरि पुट पाक करै पकै पर गोला निकारि रस निचोरि ले सो रस सहत संयुक्त देइ तौ सब अतीसार जाय २८ पुनः ४ पक्के अनार का पुट पाक बनाइ तिस का रस स

का॰ बिजोरा पुट पाक छर्दी पर बिजौरा नींबू जामुन की पाती वा जड़ के पुट पाक का रस सहत युत देइ तौ सब दोष की छर्दि जाइ ३० वासा पुट पाक रक्त पित्त कास ज्वर पर रूसे के पुट पाक का रस सहत पियेसे रक्त पित्त कास छर्दि ज्वर जाइ ३१ भटकैः कास श्वास पर भटकटैया के पंचांग का पुट पाक रस पीपरि का चूरण डारि कै देतो कास श्वास कफ जाइ ३२ विभीत पुट पाक कास श्वास पर बहेरे परे घी लगाइ पिसान से लेप अंगार पर पुट पाक करै

बीज पूरप्रजं बूजां पल्लवा निजटाः पृथक् विपचेत्पुट पाकेन क्षौद्रं युक्तस्य तद्रसः छर्दिं निवारयेत् घोरां सर्व दोषसमुद्भवां ३० पिष्टानां वृष पत्राणां पुट पाक रसो हिमः मधुयुक्तो जयेद्रक्त पित्त कास ज्वर क्षयान् ३१ पचेत्सुद्रांस पंचांगं पुटकेन च तद्रसः पिप्पली चूर्ण संयुक्तः कास श्वास कफापहः ३२ विभीतकं फलं किंचित् घृतेनापि विलेपयेत् गोधूम पिष्टै रंगारे विपचेत्पुट पाकवत् ३३ ततः पक्वं समुद्धृत्य त्वचं तस्य मुखे क्षिपेत् कास श्वास प्रतिश्याय स्वरभंगान्जयेत्ततः ३४ चूर्णं किंचित् घृताभ्यक्तं सुंठ्या स्रंड जैर्दलैः वेष्ठितं पुट पाकेन विपचेन्मंद वन्हिना ३५ तत उद्धृत्य तच्चूर्णं ग्राह्यं प्रातः सितान्वितं तेनयांति शमं पीडा आमातीसार संभवा ३६ सुंठी कल्कं विनिक्षिप्य रसैरेरंड मूलजैः विपचेत्पुट पाकेन तद्रसः क्षौद्र संयुतः आमवात समुद्भूतां पीडां जयति दुस्तरां ३७ सोरणं कंद मादाय पुट पाकेन पाचयेत् सतैल लवणस्तस्य रसश्चार्शो विकारनुत् ३८ ॥

उस का छिलका मुख में राखै कास श्वास न काहला गुला पर जाना ये रोग जांइ ३४ सोंठि पु॰ आमातीसार पर सोंठि चूर्ण किंचित् घृत से बटी बनाय रंडपत्र में लपेट मंदाग्नि में पुट पाक करै ३५ उस चूरण को सबेरे शक्कर संग खाय तो आमातीसार की पीड़ा मिटै ३६ पुनः सोंठि चूरण रंड की

जड़ के रस में सानि पुट पाक करि रस निकारि सहत संग खाय तौ आम बात की पीड़ा जाय ३७ सूरन पु॰ बवासीर पर पुट पाक करि पका जमीकंद लोन तेल साथ खाय तौ अर्श नाश होद् ३८ वार्तिक हरिण शृंग पु॰ हृदै शूल पर हिरण सींग शराव संपुट में जराद् गो के घी में डारि पिये तो हृदै की शूल जाद् ३९ इति शार्ङ्गधर सुधा करे प्रथमो ऽध्यायः १ अथ क्वाथ चारि रुपया भर द्रव्य चौंसठि रुपये भर पानी माटी के पात्र में भरि मंदाग्नि में औटे जब आठ रुपये भरि रहै तब उतारि लेद् १ कुछ उस रहै तब पिये क्वाथ के चारि नाम हैं सृत क्वाथ कषाय निर्यूह २ आहार का रस पके पर

शराव संपुटे दग्धं शृंगं हरिणजं पिबेत् गव्येन सर्पिषा पिष्टं हृच्छूलं नश्यति ध्रुवं ३९ इति श्री शार्ङ्गधरे द्वितीय खंडे चिकित्सा स्थाने स्व रसादि कल्पना ऽध्यायः १ पानीयं षोडश गुणं क्षुण्णे द्रव्यपले क्षिपेत् मृत्पात्रे क्वाथयेद्ग्राह्य मष्टमांशाव शेषितं १ तज्जलं पाययेद्धीमा न्कोष्णं मृद्वग्नि साधितं शृतः क्वाथः कषाय श्च निर्यूहः स निगद्यते २ आहार रस पाके च संजाते द्विपलोन्मितं वृद्ध वैद्यो पदेशेन पिबे त्क्वाथं सुपाचितं ३ क्वाथे क्षिपेत्सिता मंदे श्च तु र्थाष्टम षोडशैः वात पित्त कफातंके विपरीतं मधु स्मृतं ४ जीरकं गुग्गुलं क्षारं लवणं च शिलाजितुं हिंगु त्रिकुटकं चैव क्वाथे शाणोन्मितं क्षिपेत् ५ क्षीरं घृत गुडं तैलं मूत्रं चान्य द्रवं तथा कल्कं चूर्णादिकं क्वाथे विक्षिपे त्कर्ष संमितं ६

वृद्ध वैद्य के उपदेश से दै पल काढ़ा पिये ३ काथ में मधु मिश्री डारने का प्रमान जो वायु प्रधान होतो मिश्री थोरी देना पित्त में अष्टमांश कफ में षोडशांश सहत वायु में षोडशांश पित्त में अष्टमांश कफ में चौथा अंश देना ४ जीर कादि अनेक वस्तु डारलने का प्रमाण जीरा गूगल क्षार सैंधव शिलाजित हींग त्रिकुट काढ़े में चारि मासे दे वा बल समय देखि कै ५ दूध घी गुड तेल गो मूत्र और स्वासादि लुगदी चूर्णादि ये सब दश मासे देना

गुरुच्यादि काढ़ा सब ज्वर पर गुरुच धनिया नींबकी छाल पद्माष रक्त चंदन इस गुर्चादि क्वाथ से सब ज्वर नाश करै दीपन है दाह तृषा लार उबका-ई के रोग दूर होंय ७ गुर्चादि पाचन बात ज्वर गुर्च पीपरामूल सोंठि यह काढ़ा बातज्वर में सतरों दिन देइ यह पाचन है ८ बातज्वर पर शाल प-र्णी कहें बनउरी वरियारा रासन गुर्च सरिवन इन का काढ़ा पिये से तीव्र बात ज्वर जाइ ९ दूसरा काढ़ा बातज्वर पर खंभारी सरिवा दाष त्राय माण गुर्च इन का काढ़ा पिये गुड डारि कै तौ बात ज्वर जाय १० कटु फलादि पाचन पित्तज्वर पर कायफर इंद्रजव पाढ़ा कुटकी नागरमोथा

गुडूचीधान्यकारिष्टपद्मकं रक्तचंदनं गुडूच्यादिगणक्वाथः सर्वज्वरहरः परः दीपनो दाहहृल्लासतृष्णाछर्द्यरुचिंजयेत ७
गुडूची पिप्पली मूलं नागरैः पाचनं स्मृतं दद्याद्वातज्वरे पूर्णेलिंगे सप्तमवासरे ८ शालपर्णीबलारास्नागुडूचीसारिवातथा
आसां क्वाथं पिबेत्कोष्णं तीव्र वात ज्वरच्छिदं ९ काश्मीरीसारिवाद्राक्षात्रायमाणामृताभवः कषायः सगुडः पीतो वात
ज्वरविनाशनः १० कटुफलेंद्रयवापाठातिक्तामुस्तैः शृतंजलं पाचनं दशमेन्हि स्यात्तीव्रपित्तज्वरे नृणां ११ पर्पटोवारका
स्नेहा कैरातो धन्वयासकः प्रियंगुश्च कृतः क्वाथएषां शर्करया सह पिपासा दाह पित्तास्रयुक्तं पित्तज्वरंजयेत् १२ द्राक्षाहृ
रीतकीमुस्तकटुकी कृतमालकं पर्पटश्च कृतक्वाथ एषां पित्तज्वरापहः तृषा मूर्छा दाह पित्तास्रक् शमनो भेदनः स्मृतः १३
बीजपूरशिफा पथ्या नागरं ग्रंथिकैः शृतं सक्षारं पाचनं श्लेष्मज्वरे द्वादशवासरे १४

पित्तज्वर में दशवें दिन देइ ११ पित्त पापरादि क्वाथ पित्तज्वर पर पित्त पापरा रूसा कुटकी चिरायता जवासा प्रियंगू इसका पीत सरसोंसा होता है यह काढ़ा चीनी के संग पिये तौ तृषा दाह रक्त पित्त ज्वर मुक्त होइ १२ दूसरा दाख हड़ कुटकी अमलतास पित्तपापरा इन का क्वाथ पित्तज्वर नाश करै तृषा मूर्छा दाह रक्त पित्त इन्हें शमन और भेदन करै १४

वा॰ बिजौरा पाचक कफ ज्वर पर बिजौरा की जड़ हड़ सोंठि पीपरा मूल यवाखार डारिकै कफ ज्वर के बारहें दिन काढ़ा पिये तौ जलदी पाच-
न करै २४ पुनः क्वाथः चिरायता नीम पीपरि कचूर शतावरि गुरुच भट कटैया यह काढ़ा कफ ज्वर नाश करता है २५ पुनः क्वाथ पटोल त्रि-
फला कटुकी कचूर रूसा गुरुच मधु युक्त इन का काढ़ा पीने से कफ ज्वर नाश होइ २६ पित्त पापरा क्वाथ वात ज्वर पर पित्त पापरा मोथा गुरुच
सोंठि चिरायता इस पंच भद्र काढ़े से वात पित्त ज्वर जाइ २७ छोटी भटकटैया क्वाथ कफ वात ज्वर पर भट कटैया सोंठि पोष्कर मूल यह का-

भूनिंब निंब पिप्पल्यः शठी शुंठी शतावरी गुडूची बृहती चेति क्वाथो हन्यात्कफज्वरान् २५ पटोल त्रिफला तिक्ता शठी वा-
सा मृता भवः क्वाथो मधुयुतः पीतो हन्यात्कफकृतं ज्वरं २६ पर्पटाब्दामृता विश्वकिरातैः साधितं जलं पंचभद्रमिदं ज्ञेयं
वातपित्तज्वरापहं २७ क्षुद्रा शुंठी गुडूचीनां कषायः पौष्करस्य च कफवाताधिके पेयो ज्वरे वापि त्रिदोषजे कासश्वासारुचि
करे पार्श्वमूल विधायिनि २८ आरग्वध कणा मूलं मुस्त तिक्ता भया कृतः क्वाथः समयति क्षिप्रं ज्वरं वातकफोत्तरं आम
शूल प्रशमनो भेदी दीपन पाचनः २९ अमृता रिष्ट कटुका मुस्तेंद्रयव नागरैः पटोल चंदनाभ्यां च पिप्पली चूर्णयुक्तजं
अमृताष्टकमेतच्च पित्तश्लेष्मज्वरापहं छर्द्यरोचक हृल्लास दाह तृष्णा निवारणं ३० कंठकारी द्वयं शुंठी धान्यकं सुरदारु च एभिः

ढ़ा कफ वात ज्वर नाश करै और सन्निपात ज्वर में पिये तौ कास श्वास अरुचि हरै और पसुरी की पीड़ा हरै २८ अमलतासादि क्वाथ वात क-
फ ज्वर पर अमलतास पीपरा मूल मोथा कटुकी हरै वात कफ ज्वर वेग ही नाश करै आम शूल समन करै और गोटा गिरावै अग्नि दीपन
पाचन करै २९ अथ अमृताष्टक क्वाथ गुरुच नीम कटुकी मोथा इंद्रयव सोंठि पटोल ॥ ॥ ॥

रक्त चंदन इनका क्वाथ पीपरि का चूर्ण डारिके पीने से पित्त कफ ज्वर नाश होइ उबकाई अरुचि हुल्लास दाह तृषा इन को निवारै २० भटकटैयादि क्वाथ सन्निज्वर न पर दोनें भटकटैया सोंठि धनियां देवदारु यह पाचन क्वाथ सब ज्वर हरै २१ वा· दश मूल क्वाथ वात कफ पर बन उर्दी बन मूंग दोनें भटकटैया गुरखरू बेल की जड़ अग्नि मंथ सोहन पत्ता खंभारी पाढ़ा २२ इन दशों की जड़ का काढ़ा पीपर के चूर्ण के संग पिवे तौ वात कफ ज्वर नाश होइ २३ सन्निपात ज्वर सूति का दोष मुख सूखना सीतल अंग भ्रम पसीना कास श्वास नाश करै हृदय शूल पार्श्व पीर तंद्रा मस्तक शूल पार्श्व पीर तंद्रा

शालि पर्णी पृश्नपर्णी वृहती धव गो क्षुरैः बिल्वोग्निमंथरपोनाक का श्मरी पाटला युतैः २२ दश मूलमिति ख्यातं क्वथितं तज्जलं पिबेत् पिप्पली चूर्ण संयुक्तं वात श्लेष्म परं हरं २३ सन्निपात ज्वर हरं सूति का दोष नाशनं शोष शैत्य भ्रम स्वेद कास श्वास विकार नुत् हृत्कंठ ग्राह पार्श्वार्ति तंद्रा मस्तक शूल नुत् २४ अभया मुस्त धान्याकं रक्त चंदन पद्मकैः वासकेंद्र यवोशीर गुडूची कृत मालकैः २५ पाढा नागर तिक्ता भिः पिप्पली चूर्ण युक्त तं पित्त दोष ज्वर जित् पिपासा दाह कासनुत् २६ प्रलाप श्वास तंद्रा घ्नं दीपनं पाचनं परं विण्मूत्रा निल विष्टंभ वमी शोषान्निजयेत् २७ कैरात कटुका मुस्तं धान्येंद्र यव नागरैः दश मूल महा दारु गज पिप्पलि का युतैः कृतः कषायः शाम्यति सन्निपात ज्वरं जयेत् कास श्वास वमी हिक्का तंद्रा हृद्ग्राह नाशनः २८

सब सुख होइ २४ हरीत की क्वाथ सन्नि ज्वर पर हड़ मोथा धनियां रक्त चंदन पद्माख रूसा इंद्र जौ खस गुर्च अमलतास २५ पाढ़े की जड़ कुटकी पीपर का चूर्ण समेत काढ़ा पीवे तौ सन्नि ज्वर तृषा दाह कास हरै २६ भ्रम श्वास तंद्रा हरै दीपन पाचन करै वायु से मल मूत्र रोध वमन कंठ शोष अरुचि ये उपद्रव नाश करै २७ पुनः दशांग दश मूल क्वाथ चिरायता कटुकी मोथा धनियां इंद्रजौ सोंठि दश मूल देव गज पीपरि समेत क्वाथ

वा॰ कैफर॰ कास ज्वर पर काथकर मोथा भारंगी धनियां रयस पित्त पापरा वच हड़ काकड़ा शृंगी देव दारु सोंठि इन काढ़े से कास ज्वर नाश होय श्वास कफ कंठ रोग मिटे गुर्चे का काढ़ा पीपरि युक्त पिये से जीर्ण ज्वर छूटै पित्त पापरे का क्वाथ पीपरि युक्त पीने से पित्त ज्वर जाय २९ पुनः भटकटै या में पीपरि डारि पिये तो कास श्वास पीनस अरुचि गला बैठव शूल जीर्ण ज्वर ये रोग दूर होंय ३० सर्व शीत ज्वर पर भट कटैया काथ भटकटैय

कल्यू भार्वुद भांगी भिर्धान्या रोहिष पर्पटैः वचा हरीतकी शृंगी देव दारु महौषधैः क्वाथः कास ज्वरं हंति श्वास श्लेष्म गलग्रह

न् क्वाथो जीर्ण ज्वर हरं गुडूच्या पिप्पली युतः तथा पर्पटजक्वाथः पित्त ज्वर हरो परः २९ निदिग्धिका मूला शुंठी कषायं पाययेद्भि

षक् पिप्पली चूर्ण संयुक्तं श्वास कासा दिनापहं पानसारुचि वैश्वर्य शूल जीर्ण ज्वरापहं ३० क्षुद्रा धान्यक शुंठी भि गुडूची मुस्त प-

द्मकैः रक्त चंदन भूनिंब पटोल वृषलो ध्रकैः कटुकेंद्र यवा रिष्ठ भार्गी पर्पटकैः समैः क्वाथं प्रात निषेवेत सर्व शीत ज्वरछिदं ३१

मुस्ता क्षुद्रा मृता शुंठी धात्री क्वाथः समाक्षिकः पिप्पली चूर्ण संयुक्तो विषम ज्वर नाशनः ३२ पटोल त्रिफला निंब द्राक्षा संपाक

वासकैः क्वाथः सिता मधुयुतो जयेदैकाहिकं ज्वरं ३३ गुडूची धान्य मुस्ता भि श्चंदनो शीर नागरैः कृतं काथं पिवेत्क्षौद्रं सिता युक्तं

धनियां सोंठि गुर्चे मोथा पदमाक रक्त चंदन चिरायता पटोल रूसा मोचरस कटुकी इंद्रजौ नींब भारंगी पित्त पापरा इन का क्वाथ प्रात पिये तो सब शीत ज्वर नाश होय ३१ विषम पर मोथा क्वाथ मोथा भट कटैया गुर्चे सोंठि आमला सहत पीपर युक्त पिये तो विषम ज्वर मुक्त होय ३२ नित्य आते ज्वर पर पटोल क्वाथ पटोल त्रिफला नीम दाख अमलतास रूसा सहत खांड युक्त पिये तो एकाहिक ज्वर छूटै ३३ तृतीयक ज्वर पर गुडूच्यादि क्वाथ गुर्चे धनि

खस सोंठि इन का काढ़ा शक्कर सहत युक्त पिये तो तृतीयक ज्वर प्यास दाह ये उपद्रव निर्मूल होंय ३४ चातुर्थिक ज्वर पर देव दारु क्काथ देवदारु ह- ड़ रूसा साल पर्णी सोंठि आंवरा इन का काढ़ा मधु मिश्री युक्त पिये तो चातुर्थिक ज्वर जाइ श्वास कास मंदाग्नि सब दूर होइ ३५ ज्वरातीसार पर गु- रूच्यादि क्काथ गुर्च धनियां खस सोंठि सुगंध वाला पित्त पापरा वेल अतीस पाढ़ा रक्त चंदन कुरैया चिरायता मोथा इंद्रजो यह काढ़ा ठंढा करि स- हत मिश्रित कर पिये तो ज्वरातीसार रक्त पित्त नाश होइ ३६ पुनः सोंठि कुरैया मोथा गुर्च अतीस इस काढ़े से ज्वरातीसार जाइ ३७ आम शूल पर

तृतीयज्वरनाशाय तृष्णा दाह निवारणं ३४ देवदारुशिवा वासा शालि पर्णी महौषधैः धात्री युक्तैः सृतं शीतं दद्यान्मधु सिता युतं चातुर्थके ज्वरे श्वासे कासे मंदानले तथा ३५ गुडूची धान्यको शीर शुंठी वालक पर्पटैः विल्व प्रति विषा पाढा रक्त चंदन वत्सकैः किरात मुस्तेंद्र यवैः क्वथितं शिशिरं पिवेत् सक्षौद्रं रक्तपित्तघ्नं ज्वरातीसार नाशनं ३६ नागरं कूटजो मुस्तम मृता प्रति विषान्विता एभिः कृतं पिबेत्काथं ज्वरातीसार नाशनं ३७ धान्या नागर विल्वाब्द वालकैः साधितं जलं आम शूल हरं ग्राहि दीपनं पाचनं परं ३८ सधान्य नागरः क्काथः पाचनो दीपनस्तथा एरंड मूल युक्तश्च जयेदामानिल व्यथां ३९ वत्सकाति विषा विल्व मुस्त वालकजः सृतः आतीसारं जयेत्सामं विरजं रक्त शूल जित् ४० कुटजाति विषा पाढा धातकी लोध्र मुस्तकैः ह्रीवेर दाडिम युतैः सृतः क्वाथः समाक्षिकः पेयो मोचरसे नैव कुटजाष्टक संज्ञकः धान्य पंचक क्काथ धनियां सोंठि वेल मोथा खस इन के क्वाथ से आम शूल जाइ ग्राही दीपन पाचन है ३८ सहित धनियां सोंठि का क्वाथ दीपन पाचन है जो रंड की जड़ युक्त करै तो आंवसूल दूर करै ३९ आमातीसार पर कुरैया क्काथ सहित रक्तातीसार पर कुरैया मूल अतीस वेल मोथा खस इन का काढ़ा आमातीसार दूर करै ४० कुट- जाष्टक कुरैया मूल अतीस पाढा मूल धव फूल लोध मोथा हाऊ वेर अनार इन का काढ़ा मधु ॥ ॥

१५

शा॰ टी॰ हि॰ ८३

मोचरस युक्त पिये तौ सब अतीसार जाय इस को कुटजाष्टक कहते हैं दाह रक्त कठिन शूल दूरि करै ४१ वातिका अतीसार पर हाऊ बेर क्वाथ हाऊबेर धौ फूल लोध लजालू कुरैया धनियां अतीस मोथा गुर्च बेल सोंठि इन के काढ़ा से चिरकाल का अतीसार दूर होइ अरोचक आम शूल ज्वर हरै पाचन है ४२ बालकन के सब अतीसार पर क्वाथ धव फूल बेल लोध सुगंध बाला गज पीपरि इनका काढ़ा मधु युक्त देइ वा अव लेह बनाके देसव अतीसार जाइ ४३ संग्रहणी पर बन उर्दी क्वाथ बन उर्दी बरिआर बेल धनियां सोंठि का काढ़े से पेट शूल नाभिशूल सहित वात ग्रहणी दूर होइ

अतीसारा न्जये द्दाह रक्त शूला मदुस्तरान् ४१ ह्रीबेर धातकी लोध्र पाठलज्जालु वत्सकैः धान्या कातिविषामुस्ता गुडूची विल्व नागरैः कृतः कषायः शमयेदतीसारं चिरोत्थितं अरोचकाम शूलघ्नः ज्वरघ्नः पाचनः स्मृतः ४२ धातकी विल्व लोध्राणि वालकं गज पिप्पली एभिः कृतं स्मृतं शीतं शिशुभ्यो क्षौद्र संयुतः प्रदद्यादवलेहं वा सर्वातीसार शांतये ४३ शा- लपर्णी बला विल्व धान्यं शुंठी कृतः स्मृतः आध्मान शूल सहितां वातजां ग्रहणीं जयेत् ४४ गुडूच्यतिविषा शुंठी मुस्तैः क्वा- थः कृतो जयेत् आमानुसक्तां ग्रहणीं ग्राही पाचन दीपनः ४५ यवधान्य पटोलानां क्वाथः सक्षौद्र शर्करः योज्यं छर्द्यति- सारेषु विल्वाम्रास्थि भवस्तथा ४६ त्रिफला देवदारुश्च मुस्ता मूषक कर्णिका शिग्रु रेतस्कृतः क्वाथः पिप्पली चूर्ण सं- युतः विडंग चूर्ण युक्तश्च कृमिघ्नः कृमि रोग हा ४७ ॥

४४ चतुर्भद्र क्वाथ गुर्च अतीस सोंठि मोथा यह आमा शक्ति ग्रह- णी दूरि करै दीपन पाचन करै ४५ सर्वातीसार पर इंद्रजौ धनियां पटोल इन का काढा खांड सहत संग खाइ तो छर्द अतीसार जाय आ- म की गुठली बेल का काढा सहत मिश्री युक्त पिये से सब अतीसार जाय ४६ कृमि पर त्रिफला क्वाथ त्रिफला देवदारु मोथा मूसा करणी संहिजन क्वाथ पीपरि विडंग युक्त पिये से कृमी और कृमिज उपद्रव सब जाय ४७॥

कामल पर त्रिफलादि क्वाथ त्रिफला गुर्च कटुकी नीम चिरायता रूसा इस क्वाथ को सहत समेत पिये तो कामल पांडु नाश होइ ४८ पांडु पर गदापुरैनादि क्वा
थ वा शोथादिक काम पर गदा पुरैना हड़ नीम दारु हर्दी कटुकी पटोल गुर्च सोंठि इन का काढ़ा पिये तो पांडु कास उदर रोग श्वास उदर शूल सर्वांग सू
जन अच्छी हो ४९ रक्त पित्त पर रूसा क्वाथ रूसा दाष हड़ इसका काढ़ा सहत वा मिश्री युक्त पिये रक्त पित्त पीड़ा दारुण कास श्वास जाइ ५० पुनः
रूसे का काढ़ा सहत संग पिये से रक्त पित्त क्षयी कास कफ पित्त ज्वर नाश हो ५१ कास ज्वर पर वासा क्वाथ रूसा भटकटैया गुर्च मधु युक्त खाने से ज्व

फल त्रिका मृता तिक्ता निंब कैरात वासकैः जयेन्मधुयुतः क्वाथः कामलां पीततां तथा ४८ पुनर्नवा भया निंब दार्वी तिक्त पटोल
कैः गुडूची नागर युतः क्वाथो गोमूत्र संयुतः पांडु कासोदर श्वास शूल सर्वांग शोथ हा ४९ वासा द्राक्षा भया क्वाथः पीतः सक्षौद्र
शर्करः निहंति रक्त पित्तार्तिं श्वास कासं च दारुणं ५० रक्त पित्त क्षयं कास श्लेष्म पित्त ज्वरं तथा केवलो वासकः क्वाथः पीतं क्षौद्रेण
नाशयेत् ५१ वासा क्षुद्रा मृता क्वाथः क्षौद्रेण ज्वरहा सह कासघ्नं पिप्पली चूर्ण युक्तः क्षुद्रा सुतस्तथा ५२ क्षुद्र कुलत्थ वासाभि
र्नागरेणाच साधितः क्वाथ पौष्कर चूर्णाढ्यः श्वास कासौ निवारयेत् ५३ रेणुका पिप्पली क्वाथो हिंगु कल्केन संयुतः जयेत्त्रिदोष
जां छर्दि पर्पटः पित्तजां तथा ५४ बिल्व त्वचो गुडूच्या वा क्वाथः क्षौद्रेण संयुतः जयेत्त्रिदोषजां छर्दिं पर्पटः पित्तजां तथा ५५ ॥

र कास मिटै जो भटकटैया का काढ़ा पीपल चूर्ण संयुत दे तो खांसी मिटै ५२ कास श्वास पर क्षुद्रादि क्वाथ भटकटैया कुरथी रूसा सोंठि पोहकर मूल
का चूर्ण युक्त पिये से कास श्वास जाइ ५३ हिक्का पर मेवड़ी क्वाथ मेवड़ी का बीज पीपरि हींग भूनी युक्त पिये से पांचो प्रकार हिच की जाइ ५४ उब
काई पर बिल्वादि क्वाथ बेल की छाल वा गुर्च का काढ़ा मधु युक्त पिये से त्रिदोष जन्य छर्दि मिटै जो पित्त पापरा सहत युक्त पिये से पित्त छर्दि जाइ ५५

वा· गृद्धसी वायु पर दश मूल काथ हींग पोष्कर मूल का चूर्ण प्रथम कहे दश मूल काथ में युक्त करि पिये तो गृद्ध सी वायु जाइ जो मे वडी काथ मे हींग वा रंड मूल चूर्ण युक्त पिये से तुरंत गृद्धसी वायु मिटै ५६ वायु पर रासन पंचक काथ रासना गुर्च देव दारु सोंठि रंड मूल ये काढा पिये से सप्त धातु गत वात सब अंग वायु दूर हो ५७ वायु पर रासना सप्त रासन गुखरू रंड देवदारु गदा पुरैना गुर्च अमलतास यह काढा सोंठि चूर्ण डारिके पिये से जांघ कटि

हिंगु पौष्कर चूर्णादि दश मूल स्तो जयेत् गृद्धसी केवलः काथ सिफाली पत्र ज स्तथा ५६ रास्ना मृता महा दारु नागरैरंड जं स्तं सप्त धातु गते वाते साये सर्वांग गे पिवेत् ५७ रास्नो गो क्षुर कै रंड देव दारु पुनर्नवा गुडूच्या रग्वधश्चैव काथ मेषां विपाचये त् शुंठी चूर्णेन संयुक्तं पिवे ज्जंघा कटी ग्रहे शर्म्भ पृष्टो रु पीडा आम वाते सुदुस्तरे ५८ रास्नाद्वि गुण भागस्या दिक भागा स्त तो परः धन्वया सवलै रंड देव दारु शठी व चा वासको नागरं पथ्या दव्या मुस्त पुनर्नवा गुडूची वृद्ध दारुश्च शत पुष्पा श्च गोक्षुरः अश्वगंधा प्रति विषा कृत माल शतावरी कृष्णा सह चरश्चैव धान्यकं वृहती द्वयं एभिः कृतं पिवेत्काथं शुंठी चूर्णेन संयुत कृष्णा चूर्णेन वा योग राज गुग्गुल के नवा अजमोदादि ना वापि तैलेनै रंड जे नवा सर्वांग कंपे कुब्जत्व पक्षा घाते थ वाहुके ॥

पसुरी पीड छाती और भारी आम वात मिटै ५८ संपूर्ण वायु पर महा रासनादि काथ दो भाग रासन और सब एक भाग मे जवासा वरियारा रंड देव दारु कचूर वच रूसा सोंठि हड़ चाव मोथा गदा पुरैना गर्द दिचारा सोंप गुखरू असगंध अतीस अमलतास शतावरि पीपरि इंद्र जो धनियां दोनों भटकटैया इस का काढा सोंठि चूरण डारि पाक वा पीपरि का चूर्ण वा योग राज गुग्गुल साथ वा अजमोदादि चूर्ण के संग वा रेंडी के तेल के संग पिये तो सर्वांग कंप कूवड़ पक्षा घात वाहुक गृद्धसी आरा पील पाद अप

प तंत्र अंत्र वृद्धि पेट फूलना जंघा पीर धातु रोग वंध्या की योनि दुष्टतादि महारास्नादि काथ ब्रह्मा नें कहा है इस में बहुत मनुष्य एक औषधि का हू
ला रासन लेते हैं सो अनुचित है ५९ वा· छाती की वायु पर अरंड का सत्व करंड विजोरा की जड़ गुखरू उभे भटकटैया पाषान भेद लकरी वेल इन सब
जड़न का काढ़ा रेंडी का तेल हींग यवार सैंधव युक्त पिये तो स्तन पीड़ा कंठ नेंढ़ हृदय सब पीड़ा मिटे ६० बात शूल पर सुंठी काथ सोंठि रंड मूल वा
इंद्रजव का काढ़ा भूनी हींग काला लोन युक्त पिये से बात शूल जाय ६१ पित्त शूल पर त्रिफला काथ त्रिफला अमलतास इस काढ़ा में शक्कर

गृध्रस्या माम बाते च प्लीपदे चापतंत्रके अंड वृद्धौ तथा ध्माने जंघा जानुगदेर्दिते शुक्रमाये मेद रोगे वंध्यायोन्यामये षुच
महारास्नादि राख्यातो ब्रह्मणा गर्भकारणं ५९ एरंडो बीजपूरश्च गोक्षुरं वृहती द्वयं अश्म भेदस्तथा विल्व एतन्मूलैः कृतः
स्रुतः एरंड तैल हिंग्वाढ्यो यव क्षारः स सैन्धवः स्तनकंधकटी मेढ्र हृदयोस्थ व्यथां जयेत् ६० नागरैरंडयोः क्वाथा क्वाथ सिंद्र
यव स्यवा हिंगु सौवर्च लोपितो वात शूल निवारणः ६१ त्रिफलारग्वधः क्वाथः शर्करा क्षौद्र संयुतः रक्तपित्त हरो दाह पित्त
शूल निवारणः ६२ एरंड मूल द्विपलं जलेष्ठ गुणितं पचेत् तत्काथो याव शूकाद्यः पार्श्व हृत्कफ शूलहा ६३ दश मूल कृतः का
थो यव क्षारः स सैंधवः हृद्रोग गुल्म शूलानि कासं श्वासं च नाशयेत् ६४ हरीत की दुरालंभा कृत मालक गोक्षुरैः ॥

सहत युक्त करि पिये से रक्त पित्त दाह पित्त शूल जाय ६२ कफ शूल पर रंड मूल काथ रंड की जड़ दो पल सोरह पल पानी में काढ़ा करि यवाखार
डारि पिये पार्श्व पीर हृदय पीर कफ जन्य नाश होय ६३ हृदय रोग पर दश मूल काथ दश मूल का काढ़ा यवाखार सैंधव युक्त पिये से हृदि रोग वायु
गोला कास श्वास नाश होय ६४ मूत्र कृच्छ्र पर हरीत की काथ दश मूल का काढ़ा यवाखार सैंधव युक्त पिये से हृदिरोग वागोला कास श्वास ना·
श होय ६४ हड यवासा अमलतास पाषाण भेद गुखरू इन का काढ़ा सहत संयुक्त पिये से मल मूत्र रोध दाह सहित सब रोग अच्छा होय ६५

वा· मूत्र क्काथ पर अर्जुन क्काथ आकाश ववरि काश मूल तीनों कट सरैया मल दोनों कुश नर कट मूल गोंदी शिव लिंगी अरनी चूरण हार्लकरी
पाषान भेद वा करेल गुरवरू चिर्चिरा कमल पत्र सह घीर तरु श्रेष्ठ गरण है इस क्काथ के पिये से शर्करापथरी मूत्र कृच्छ्र मूत्रा घात संपूर्ण वायु रोग
नाश होय ६६ प्रमरी शर्करादि पर एला क्काथ इलायची मुरेठी गुरवरू मेवड़ी बीज रेंड रूसा पीपरि पाषाण भेद इन का काढ़ा शिलाजीत संयुक्त
पिये से शर्करा प्रमेह मूत्र कृच्छ्र ये रोग नाश होंय ६८ मूत्र कृच्छ्र पर गोरवरू क्काथ गुरवरू के पंचांग का काढ़ा मिश्री सहत संयुक्त पिलावे तो

पाषाण भेद सहितैः क्काथो माक्षिक संयुतः ववंधे मूत्र कृच्छ्रे च सदा हे सरुजे हितः ६५ धीरतरु वीरवंदा कास स्सह्य चरत्रयं कु
शात्रयं नलो गुंद्राव क पुष्पो ग्नि मंथकः मूर्वा पाषाण भेदश्च स्योना को गोक्षुरस्तथा अपामार्गश्च कमलं ब्राह्मी चेति गणो वरः
वीरतर्वादिरित्युक्तं शर्करा श्मरि कृच्छ्रहा मूत्र घातं वायु रोगान्नाशये न्निखिलानपि ६६ एला मधूक गोकंट रेणु कैरंड वासकाः
कृच्छ्राश्म भेद सहिताः क्काथ एषां सुसाधितः शिलाजतु युतः पेयः शर्करा श्मरि कृच्छ्रहा ६७ समूल गोक्षुरः क्काथः शिता
माक्षिक संयुतः नाशयेन्मूत्र कृच्छ्राणि तथा चोष्ण समीरणं ६८ वरा दार्व्यब्द दारूणां क्काथः क्षौद्रेण मेह हा वत्स कस्त्रि फला
दार्वी मुस्त को बीजक स्तथा ६९ फल त्रिकाब्द दार्वीणां विशालायाः स्स्रतं पिबेत् निशा कल्क युतः सर्व प्रमेहं विनिवर्त्तयेत् ७०

मूत्र कृच्छ्र उष्ण वायु अच्छी होइ ६८ मूत्र कृच्छ्र पर त्रिफला क्काथ त्रिफला दारु हल्दी मोथा देव दारु इन का काढ़ा सहत संयुक्त पिये तो प्र·
मेह नाश होय पुनः तैसे ही कुरैया त्रिफला दारु हरदी मोथा ककही इन का काढ़ा सहत सहित पिये तो प्रमेह नाश होइ ६४ प्रमेह पर त्रिफला
क्काथ त्रिफला मोथा दारु हरदी इंद्रायण की जड़ इन का काढ़ा हरदी चूर्ण युक्त पिये तो सकल प्रमेह नाश होय ७० ॥ ॥

वा॰ प्रदर पर दारु हलदी क्वाथ दारु हलदी रसवत मोथा भिलावा तेल रूसा चिरायता इन का काढ़ा ठंढा करि मधु संयुक्त पिये तो पीत श्वेत कृष्ण
लाल सहित शूल स्त्री का प्रदर रोग अच्छा होवे ७१ क्षत व्रणादि पर वरादि क्वाथ बर पाकर आंब समेत सवर लुनि मधु जेठी चिरोंजी लोध मूसली
पीपरि मधुक जगन्नाथी पीपरि पलास विंदुक दोनों जामुन आम हर्र कदंब अर्जुन तरु भिलावे का फल जो द्रव्य इस में न मिलै सो त्यागि देइ यह
न्यग्रोधादि गण क्वाथ बहुत ग्राही है जो घाव खराब हो गया तो अच्छा हो योनि दोष दाह मेद प्रमेह विष ये सब नाश होंय वे तस को कहीं जगन्ना

दार्वी रसांजनं मुस्तं भल्लातः श्रीफलं वृषः किरातश्च पिबेदेषां क्वाथं शीतं समाक्षिकं जयेत्सशूल प्रदरं पीतश्वेता सितारुणं ७१
न्यग्रोधप्लक्षको साम्रवेतसो बदरीतुनिः मधुयष्टी प्रियालश्च लोध्रद्वय मुदुंबरः पिप्पलश्च मधूकश्च तथा पालाश पिप्पलः
सल्लकी तिंदुकी जंबूद्वयमाम्रतरुः शिवा कदंबककुभैः चैव भल्लात कफलानिच न्यग्रोधादि गणक्वाथं यथा लाभं च कारयेत्
अयं क्वाथो महाग्राही व्रण भग्नं च साधयेत् योनिदोष हरो दाह मेदो मेह विषापहं ७२ बिल्वोग्निमंथ श्योनाकः कश्मरी पाटला
तथा क्वाथ मेषां जयेन्मेदो दोषं क्षौद्रेण संयुतः ७३ क्षौद्रेण त्रिफला क्वाथः पीतो मेदो हरः स्मृतः शीतो मूत्रं तथोष्णातु मे-
दो हृत्क्षौद्र संयुतं ७४ चव्य चित्रक विश्वानां साधितो देव दारुणा क्वाथस्त्रिवृच्चूर्ण युतो गो मूत्रेणोदराञ्जयेत् ७५ ॥

थी पीपरि कहते हैं ७२ मेद रोग पर बेल क्वाथ बेल अरणी सोहन पात खंभारी सिरस इस का काढ़ा सहित संग पिये तो मेद दोष मिटै ७३ पुनः
त्रिफलादि क्वाथ त्रिफले का काढ़ा सहत संग पिये तो मेद दोष जाय उष्ण जल ठंढा करि सहत संयुक्त पिये तो मेद दोष जाय ७४ उदर रोग पर
चाव क्वाथ चाब चीता सोंठि देवदारु इन का काढ़ा निशोत चूर्ण गो मूत्र के साथ पिये तो उदर रोग दूर होय ७५ ॥

वा· पेट फूलने पर गदा पुरैना क्वाथ गदा पुरैना गुर्च देव दारु सोंठि यह काढ़ा गोमूत्र गूगल युक्त पिये से पेट सूजन मिटै ७६ पिलही पर हरीत की क्वाथ हड़ अंगिया खार यह काढ़ा यवा खार पीपरि युक्त पिये से लीहा वायु गोला यकृत अच्छी हो रोहित आम करिके खैर लेना ७७ शोथ पर गदा पूर्न क्वाथ गदा पुरैना दारु हलदी सोंठ हड़ गुर्च चीता भारंगी देवदारु इन के क्वाथ से हाथ पांव उदर आदि मुख की सूजन जाय ७८ अंड वृद्धि स्र· जन पर त्रिफला क्वाथ त्रिफला के काढ़े में गो मूत्र संयुक्त करि पिये से वात कफ जन्य अंड वृद्धि जाय ७९ आंत हड़ पर रासन क्वाथ रासन

पुनर्नवा मूला दारुपथ्या नाग रसाधितः गोमूत्र गुग्गुल युतः क्वाथः शोथो दरापहः ७६ पथ्या रोहित के क्वाथं यवक्षार करा युतं पिबेत्प्रातर्यकृत्प्लीह गुल्मोदर निवृत्तये ७७ पुनर्नवा दारु निशा निशा शुंठी हरीतकी गुडूची चित्रको भार्गी देवदारु कृतः सृतः ७८ पाणि पादोदर मुखश्रयं शोफं निवारयेत् फलत्रिकोद्भवं क्वाथं गोमूत्रेणैव पाययेत् वात श्लेष्म कृतं हंति शोथं वृषण संभवं ७९ रास्नामृता वला यष्टी गोकंटै रंडजः सृजः एरंड तैल संयुक्तो वृद्धि मंत्र भवां जयेत ८० कांचना रत्वचः क्वाथः शुंठी चूर्णानिवापयेत् गंड मालां तथा क्वाथः क्षौद्रेण वरुण त्वचः ८१ सारवोट वल्कल क्वाथं गोमूत्रेण युतं पिबेत् श्लीपदीनां विना शाय मेदो दोष निवृत्तये ८२ पुनर्नवा वरुणयोः क्वाथोंत विद्रधिं जयेत् ८३

गुर्च बरियारा मुरैठी गुखरू रंड इस काढ़ा में रेंडी का ते· ल युक्त पिये से अंत्र वृद्धि मिटै ८० गंड माला पर कचनार क्वाथ कचनार की छाल का काढ़ा सोंठ चूर्ण युक्त पिये से गंड माला जाय ८१ पील पाय पर सहोड़ा क्वाथ सहोरे का काढ़ा गोमूत्र पिये तो युक्त पील पाय मेद दोष मिटै ८२ अंतर विद्रधि पर गदा पुर्न क्वाथ गदा पु· रैना बरुणा इन का क्वाथ पिये तो भीतर का फोड़ा वा पिड़ की अच्छा होय ८३ ॥ ॥

४६

वा·इसी भांति सहजन क्वाथ हींग सेंधव डारि पिये तो बरुणादिक काढ़ा में उस कादि चूरण पिलावे समन हेत कच्ची मध्य विद्रधी अच्छी होय ८४ अरुणादि गण क्वाथ वरुण पत्र मोलसिरी वा बिजुगुरि आवेल चिंचिरा चीता दोनों अरणी दोनों सहजन दोनों भटकटैया तीनों काटसरि आमुर्ले मेष शृंगी चिरायता वन कुंदरू मूल वा पालव करंज शतावरि इस वरुणादि गण क्वाथ से मेदा दोष शुद्ध होय गुल्म शिरो शूल अंतर वि· द्रधी पीनस सब दूर होंय मेढ़ा सिंही प्रसिद्ध है ८५ भगंदर पर खदिरादि क्वाथ खैर त्रिफला का काढ़ा भैंस घृत वायविडंग का चूर्ण संयुक्त पिये तो

तथा शिग्रु भुवः क्वाथो हिंगुसैंधव संयुतः वरुणादि गण क्वाथ स पक्वे मध्य विद्रधौ उष कादि रजो युक्तं पिबेच्छमन हेतवे ८४ वरुणो बक पुष्पश्च बिल्वापामार्ग चित्रकं अग्नि मंथ द्वयं शिग्रु द्वयं च बृहती द्वयं सेरे क त्रयं मूर्वा मेष शृंगी किरातकः अ· जा शृंगी च विंबी च करंजश्च शतावरी वरुणादि गण क्वाथः कफ मेदो हरः स्मृतः हंति गुल्मं शिरः शूलं तथा विद्रधि पीन सान् ८५ खदिर त्रिफला क्वाथो महिषी घृत संयुतः विडंग चूर्ण युक्तश्च भगंदर विनाशनः ८६ पटोल त्रिफलारिष्ट किरात ख· दिर शानैः क्वाथः पीतो जयेत्सर्वानुपदंशान्स गुग्गुलः ८७ अमृतैरंड वासानां क्वाथ स्यंडुतैल युक् पीता सर्वांग संचा· रि वात रक्तं जयेद्ध्रुवं ८८ पटोल त्रिफलातिक्ता गुडूची च शतावरी एतत्क्वाथो जयेत्पीतो वातास्रं दाह संयुतं ८९

भगंदर अच्छा होय ८६ उपदंश कहें गरमी पर पटोलादि क्वाथ खैर त्रिफला का काढ़ा पटोल त्रिफला नीव चिरायता खैर का हीर आसन गुग्गुल के साथ इन औषधिन का क्वाथ पिये तो सब उपदंश दूर होय ८७ वात रक्त पर गुडूच्यादि के क्वाथ गुरच रंड की मूल रूसा इन का क्वाथ रेंड के तेल के सं· ग पिये तो सर्वांग भवती वात रक्त निश्चय करिकै दूर होय ८८ दूसरा पटोल त्रिफला कटुकी गुर्च शतावरि इन का काढ़ा पिये तो वात रक्त दाह युक्त आराम होय

शा॰ | या॰ अवरा खैरसार दोनों का काढ़ा व कुची चूर्ण युक्त थोरे दिनों के भये कुष्ट पर अभ्यास करि पिये और पथ्य यथा यत् करै तो श्वेत दाग मिट
तो॰ | जाद ८० वात रक्त कुष्ट पर लघु मंजिष्टादि क्काथ मजीठ त्रिफला कटुकी वच दारु हरदी गुर्च निंब इन का क्काथ पिये से वात रक्त कंडु गलित कुष्ट र
टि॰ | क्त मंडल दूर होय ८१ सर्व कुष्ट वृद्धि मंजिष्टादि क्काथ मजीठ मोथा कुरैया गुर्च कूट सोंठि भारंगी भटकटैया वच नीव दोनों हरदी त्रिफला परोल कटुकी

१०२ | क्काथो वल्गुज चूर्णाढ्यो धात्रीखदिरसारयोः जयेत्सुगणलितो नित्यं श्वित्रं पथ्यासिनां नृणां ८० मंजिष्टाद्दिफला तिक्ता वचा दारु
निशामृता निंबश्चैषां कृतः क्काथो वात रक्त विनाशनः पामा कपालिका कुष्ट रक्त मंडल जन्मनः ८१ मंजिष्टा मुस्त कटुजो गुडू
ची कुष्ट नागरैः भार्गी रुद्रा वचा निंब निशा द्वय फलत्रिकैः ८२ पटोल कटुका मूर्वी विडंगासन चित्रकैः शतावरी त्राय माणा
कृष्णेंद्र यव वासकैः ८३ भृंग राज महा दारु पाठा खदिर चंदनैः त्रवृद्वरुण के रात वा कुची कृतमालकैः साखोटक महा
निंब करंजाति विषा जलैः इंद्र वारुण कानंता सारिवा पर्पटैः समैः एभिः कृतं पिबेत्क्काथं करण गुग्गुल संयुतं अष्टादश सु
कुष्टेषु वात रक्तार्दि तेतथा उपदंशेश्लीपदे च प्रसुप्ते पक्ष घातके मेदो दोषे नेत्र रोगे मंजिष्टादिः प्रशस्यते ८५

मुर्वा वायविडंग आसन चीता शतावरि त्रायमाण पीपरि इंद्रजव रूसा भंगरा देवदारु पाढ़ा खदिरसार रक्त चंदन निशोथ वरुण चिरायता वकुची अमल
तास होरा वकायन करंज अतीस खस इंद्रारु जवासा साव पित्त पापड़ा ये सब द्रव्य समान ले के काढ़ा करि पीपलि गग्गुल मिश्रित करि पिये से अठारहो
कोढ़ और वात रक्त पीड़ा उपदंश पीलपांव प्रसुप्त कहैं शून्य वायु पक्षाघात मेदा दोष नेत्र रोग यह वृद्धि मंजिष्टादि क्काथ इन रोगनि के दूर करने को हित है | १०१

ना- शिरो भूल नेत्र पर हरीत की क्वाथ हड़ बहेड़ा आंवरा भूनिंब कहे चिरायता निशा निंब आता हरदी गुरच इन पदंग काढे में गुड़ मिश्रित करि पिये ते शिरो भूल भौंह कान आधासीसी सूर्यावर्त्त ले बाड़ी दंत पात रोग दंत रतौंधा पटल फूली नेत्र रोग नेत्र पीड़ा ये सब दूर होंय ८३ नेत्र रोग पर अडूसादि क्वाथ अडूसा सोंठ गुरच हरदी रक्त चंदन चीता चिरायता नीम कटुकी पर्वल त्रिफला मोथा जव इंद्र जव कुरैया इन क्वाथ से सब नेत्र रोग नाश होंय स्वर भंग से कंठ खुलजाय पीनस श्वास कलेजे का घाव जाता रहै ८४ दूसरा क्वाथ पूर्व अथा गुर्च त्रिफले का काढा सहत पीपरि

पथ्याक्ष धात्री भूनिंबै निंशा निंबा मृता युतैः क्वाथः कृतः षडं गोय सगुडः शीर्ष भूल हा भ्रू शंखा कर्ण भूलानि तथा चार्द्ध शिरो रुजं सूर्यावर्त्त शंखकं च दंत पातं च तद्रुजं नक्तांध्यं पटलं शुक्रं चक्षुः पीडां व्यपोहति ८३ वासा विश्वा मृता दार्वी रक्त चंदन चित्रकैः भूनिंब निंब कटुकी पटोल त्रिफलां बुदैः यव कालिंग कुटजैः क्वाथः सर्वाक्षि रोग हा वैस्वर्य्य पीनस श्वासं नाशये दुरसः क्षयं ८४ अमृता त्रिफला क्वाथः पिप्पली चूर्ण संयुतः सक्षौद्रः शीतलो नित्यं सर्व नेत्र व्यथां जयेत् ८५ अश्वत्थो दुंबर प्लक्ष वट वेतस जः स्तः व्रण शोथोपदंशानां नाशनः क्षालनात्स्मृतः ८६ अमथ्या प्रोच्यते द्रव्य पलात्कल्की कृतात्स्तृतो तोयेष्ट गुणिते तस्याः पान मात्रः पलद्वयं ८७

संयुत ठंढा करि पीने से सर्व नेत्र रोग विनाश होंय ८५ क्षत पर पिप्पलादि क्वाथ पीपरि गूलर पकरिया बेड़ बेत इन वृक्षन का काढ़ा करि घाउ धोवै तौ उपदंश कहें गरमी और घाव सूजन सब अच्छा होय ८६ क्वाथ की दूसरी विधि औषधी पास के गोली बनावै तब आठ गुना पानी में डारि काढा करै जब चौथाई पानी रहै तब उतारि ले उसे अमथ्या कहते हैं इसको पानी की मात्रा दो पल्ला हैं ८७ ॥

रक्तातीसार पर मोथादि प्रमथ्या मोथा इंद्रजौ का प्रमथ्या दो पल ठंढा करि मधु मिश्री युक्त पिये से रक्तातीसार नाश होय ९८ यवागू विधान चो-
डश तोले द्रव्य में उसका सोलह गुना पानी २५६ तोले भर देय आधा जरिजाय तब द्रव्य छानि के फेंक देइ जो पानी रह जाय उसे यवागू कह-
ने हैं इस पानी में रोगी को पथ्य देते हैं इस प्रकार जो शेष रहा पानी तिस्में पथ्य चुखे जब रस को शोष लेइ तब देते हैं १०० यूश विधान सों-
ठ का कल्क औषधि एक पल तिस्में पीपरि पांच मासे प्रस्थ भर पानी में पचाइ तिस्में अन्न खूब गलाइ के देइ उसे यूश कहते हैं १ सन्नि-

मुस्तकेंद्रयवैः सिद्धा प्रमथ्या द्विपलोन्मिता सुशीता मधुसंयुक्ता रक्तातीसारनाशिनी ९८ साध्यं चतुःपलं द्रव्यं च-
तुःषष्टिपलेंवुनि तत्क्वाथेनार्द्धशिष्टेन यवागूं साधयेद्बुधः ९९ आम्राम्रातक जंबूत्वक् कषाये विपचेद्बुधः यवागूं शा-
लिभिर्युक्तां तां भुक्त्वा ग्रहणीं जयेत् १०० कल्कद्रव्यं पलं शुंठी पिप्पली चार्द्ध कार्षिकी वारिप्रस्थेन विपचेत्सद्भ्यो यू-
ष उच्यते १ कुलत्थयवकोलैश्च मुद्गैर्मूलकशुष्ककैः शुंठीधान्याकयुक्तैश्च यूषः श्लेष्मानिलापहः सप्तमुष्टिक इत्ये-
षः सन्निपातज्वरान्जयेत् आमवातहरं कंठहृदवक्त्रविशोधनः २ सुलं द्रव्यं पलं साध्यं चतुःषष्टिपले जले॥
अर्द्धशिष्टं तद्द्रव्यं पाने भक्तादि संविधौ ३

पात पर सप्त मुष्टि यूश कुरथी यव वेर मूंग मूरी की पेंदी जो पत्ता के पास होती है ये सब सूखी द्रव्य इन सब का यूश सोंठ धनियां युक्त प्या-
वे तो कफ वात नाश होइ ये सप्त मुष्टिक यूश से सन्निपात ज्वर जाय आम वात जाय कंठ हृदय मुख शुद्ध रहै २ पानादि कल्पना कुटी द्र-
व्य पल भर चौसठि पल पानी में औटै जब आधा रहि जाय उस पानी को भक्त कहते हैं इसे भोजन समय देना थोड़ा थोड़ा करि देइ १०३

ज्वर तृषा पर उसीरादि पान खस पित्त पापड़ा सुगंध बाला मोथा सोंठि रक्तचंदन इन्हें पकोइ पानी ठंढा करदेय तो पियास ज्वर नाश होइ ४ उस्तोदक त्रिक-
अठवां अंश वा चौथा अंश आई शेष अथवा आति तप्त करै उसे उस्तोदक कहते हैं अथ श्रुतोक्त श्लोक साई हयांतत्पादहीनं वातघ्नं मई दीनंत पित्त
जित् कफघ्नं पाद शेषंच पानीयं दीपनं स्मृतं शारदं चाई पादोघ्नं पाद हीनंतु हेमनं शिशिरेच वसंतेच ग्रीष्मे पादाव शेषितं विपरीत स्मृतं दृस्दा वार्षिकं
मार्गि केमिति ५ कफ आंव बात मेदा वस्ती शोधन दीपन श्वास कास ज्वर ये रोग रानि को उस्तोदक पीने से जाते हैं ६ क्षीर पाक विधि द्रव्य का आठ

उसीरं पर्पटो दीच्य मुस्त नागर चंदनैः जलं स्मृतं हिमं देयं पिपासा ज्वर नाशनं ४ अष्टमेनांश शेषेण चतुर्थे नार्द्धकेनवा-
अथवाक्काथंतेनैव सिद्ध मुष्णोदकं वदेत् ५ श्लेष्मा मवात मेदोघ्नं वस्ति शोधन दीपनं कास श्वास ज्वरं हंति पीत मुस्तो दकंनि-
शि ६ क्षीर मष्टगुणं द्रव्यात्क्षीरान्नीरं चतुर्गुणं क्षीराव शेषंतत्पीतं शूलमामोद्भवंजयेत् ७ अथान्न प्रक्रियाचैव प्रोच्यतेनाति विस्त
रात् यवागूःषड्गुणजले सिद्धास्यात्कृशरायला ८ तंडुलैर्मुद्गमाषैश्च तिलैर्वा साधिताधिता यवागू ग्राहणी बल्या तर्पणी वातनाशि
नी ९ विलेपी घनसिक्थाचा सिद्धा नीरे चतुर्गुणे पूलोबलक रः कंठ्यो लघु पाक कफापहः १२

गुणा दूध दूध का चौथा
गुणा पानी एकत्र कर औटे जब पानी जर जाइ तब दूध पिये तो आंव शूल दूर होय ७ अन्न प्रकार अब संक्षेप अन्न विधि कहते हैं अन्न यवागू से छः
गुना जल देके पकावे उसे कृशरा और धना कहते हैं ८ चावर मूंग माष तिल इन का जवागू करै यह ग्रहणी को बल देता है तृप्त करै वायुनाश करै ९ विले
पी घमर अन्न में चौगुना जल दे पकावे सो विलेपी है सो तृप्त करै मन प्रसन्न करै प्रिय है मधुर है पित्तनाशक हैं १० अथ पेय अन्न को चौदह गुने पानी में सि
द्ध करै पतला माठा न हो जो पिया जाइ उसे पय कहते हैं उससे कुछ ही गाढ़े को यूषा कहते हैं ११ यूषा हलका है ग्रहणी शुद्ध करता है धातु पुष्टी करै बलकरै

कंठ शुद्ध करै लघु पाक है कफ हरता है ॥ १२

शा·
टी·
द्वि·
१०५

वा· भात विधि चावर से चौदह गुणा पानी लेकै चुरवै उस का मांड निचौरे सो मीठा है हल्का है उसे भक्त मंड कहते हैं शुद्ध मंड उसी मांड में सोंठ सैंधव डारि कै पिये तो दीपन पाचन करै २४ अष्ट गुण मांड धनियां त्रिकुटा सैंधव मठा हींग तेल की भुनी यव युक्त मांड का अष्टगुण मांड नाम है प्राण दाता है वस्ति शोधनं रक्त बर्द्धन ज्वरघ्न सब दोष हरन है २५ यव मंड पित्तादि पर जो कूटि भूनि कै चुरवै सो वाध्य मंड है कफ पित्त हरै कंठ शुद्ध करै रक्त पित्त हरै २६ लाज मंड धान काला वा कुटी द्रव्य वा भुजा धान का बनावै सो लाज मंड है कफ पित्त हरै ग्राही है तृषा ज्वर

जले चतुर्दश गुणेतं दुलानां चतुःपलं विपचेच्छ्रावयेन्मंडं स भक्तो मधुरो लघुः २३ नीरे चतुर्दश गुणे सिद्धो मंडस्त्व सिक्थकः शुंठी सैंधव संयुक्तः पाचनो दीपनः स्मृतः २४ धान्य त्रिकटु सिंधूत्थ युक्त स्तक्रेण योजितः भृष्टश्च हिंगु तैला भ्यां स मंडोष्ट गुणः स्मृतः दीपनः प्राणदो वस्ति शोधनो रक्त वर्धनः ज्वरघ्नः सर्व दोषघ्नो मंडोष्ट गुण उच्यते २५ लाजै वतिं दुले भ्रष्टे लाजा मंड शुकंठिते स्तथा भ्रष्टे र्वाय मंडो यवै र्भवेत् कफ पित्त हरः कंठ्यो रक्त पित्त प्रसादनः २६ श्लेष्म पित्त हरो ग्राही पिपासा ज्वर जिन्मतः ११७ इति मध्य खंडे क्वाथ कल्पनाध्यायः द्वितीयः २ क्षुण्णे प्रकीर्तितः द्रव्य पले सम्यक् जल मुष्णं विनिक्षिपेत् मृत्पात्रे कुडवोन्मानं ततस्तु श्रावये त्पटात् तस्य चूर्ण द्रवः फांट स्तन्मानं हि पलोन्मितं सिता मधु गुणादी स्तु क्वाथवत्तत्र निक्षिपेत् ॥ १॥

नाश करै ११७ इति शार्ङ्गधर सुधाकर मध्य खंडे द्वितीयोऽध्यायः फांट कल्क वा कुटी द्रव्य पल भर एक कुडव पानी मांटी के पात्र में अच्छी भांति तप्त करि उतारि ले उस कुटी हुई द्रव्य वत उष्णोदक में डारि ढकदे जब ठंढा हो तब छानि लेइ इसे फांट कहते हैं आठ रुपये भर फांट की मात्रा है मिश्री सहत पुराना गुड जिस भांति काढे में डारना कहा है उसी भांति फांट में पड़ता है १॥

वा॰ पित्त ज्वर पै मधूक फांट महुवा मुरेठी फालसा चंदन कमल नील लोध नाग केसर त्रिफला सारिवन दाख लावा तप्त वारि में डारि मिश्री सहत संयुक्त पिलावे इस फांट वा हेम से बातज्वर दाह प्यास मूर्छा मति भ्रम रक्त पित्त मद ये सब दूर होंय इस कार्य में कुछ विचार नहीं २ पियास पर आम्रादि फांट आम जामुन की कोपल बट सिंगसा और जटा खस इन का फांट करि पिये से ज्वर प्यास छर्दि अतीसार मूर्छा सब दूर हों ३ पित्त तृखा पर

मधूक पुष्पं मधुकं चंदनं सपरूषकं मृडालं कमलं लोध्रं खंभारी नाग केसरं त्रिफला सारिवा द्राक्षा लाजां कोस्ने जले क्षिपेत सिता मधु युतः पेयः फांटो वा सो हि मोथ वा बात पित्त ज्वरं दाहं तृष्णा मूर्छा रति भ्रमात रक्त पित्तं मदं हन्यान्नात्र कार्या विचारणा २ आम्र जंबू किशलयै र्वट सुंग प्ररोह कैः उशीरेण कृतः फांटः स सौद्रो ज्वर नाशनः पिपासा छर्दतीसार मूर्छा जयति दुर्जयान् ३ मधूक पुष्पकं भारी चंदनो शीर धान्यकैः द्राक्षा या श्च कृतः फांटः शीतः शर्करया युतः तृष्णा पित्त हरः प्रोक्तो दाह मूर्छा भ्रमा ञ्जयेत् ४ मंथोपि फांट भेदः स्यात्तेन वा त्रैव कथ्यते जले चतुः पले शीते क्षुणः द्रव्य पलं क्षिपेत मृत्पात्रे मंथ येत्सम्यक् तस्माच्च द्विपलं पिबेत् ५ खर्जूर दाडि म द्राक्षा तिंतिडी का म्लि का मलैः सपरूषैः कृतो मंथः सर्व मद्य विकार नुत् ॥ ६

मधूक फांट महुआ चंदन खंभारी खस धनियां बाला वा दाख इन का फांट शक्कर युक्त पिये तो तृखा दाह मूर्छा भ्रम ये सब जांय ४ अब मंथ जो फांट भेद में है सो कहते हैं द्रव्य का चौगुना जल माटी पात्र में डारि कै मथै उस पानी को छान दो पल पिये ५ खजूर अनार दाख तिंतिडी अमली आंवरा फालसा इस का मंथ सकल मद नाशक है ॥ ६॥

वा॰ उबकाई पर मसूरादि मंथ मसूरिका सत्तू सहत दाडिम रस इन का मंथ पिलावै तौ सन्निज नित छर्दि जाइ ७ तृषा पर यव मंथ यव का सत्तू ठंढे पानी में मथै बहुत गाढा न हो तृषा दाह रक्त पित्त ये नाश करै ८ इति श्री शार्ङ्गधर सुधा करे मध्य खंडे फांट कल्पना तृतीयोऽध्यायः ३ कुटी द्रव्य पल भर छः पल जल में सांझ को भिजोइ राखे प्रात निचोर के छानि लेइ इसे हेम कहते हैं शीत कषाय भी कहते हैं इस का मात्रा फांट वत् दो पल है यह सर्वत्र निश्चय जानो १ रक्त पित्त पर आम्रादि हिम आम जंबू अर्जुन कूटि पानी में भिजोवे उस का हेम प्रात सहत संयुक्त पिये तौ रक्त पित्त जाइ २ तृषा पर

क्षौद्रयुक्ता मसूराणां शक्तवो दाडिमांभसा मथिता वार्यंत्याशु छर्दिं दोषत्रयोद्भवान् ७ प्लावितैः शीत नीरेण सघृतैर्यवसक्तुभिः नातिसांद्रद्रवैर्मंथस्तृष्णा दाहास्त्रपित्तहा ८ इति॰ फांट कल्कना तृतीयोऽध्यायः ३ क्षुण्णं द्रव्यं पलं सम्यक् षड्भिर्नीरपलैःप्लुतं निशोषितं हिमः स स्यात्तथा शीत कषायकः तन्मानं फांटवज्ज्ञेयं सर्वत्रैवैष निश्चयः १ आम्रजंबूच ककुभं चूर्णीकृत्य जले क्षिपेत् हिमं तस्य पिबेत्प्रातः सक्षौद्रं रक्त पित्त जित् २ मरिचं मधुयष्टीच कांकोदुंबर पल्लवाः नीलोत्पलं हिमं स्तज्ज्ञ स्तृषा छर्दि निवारणः ३ नीलोत्पलं बला द्राक्षा मधूकं मधुकं तथा उशीरं पद्मकं चैव काश्मरीच परूषकं एतच्छीत कषायश्च वात पित्तं ज्वरं जयेत् सप्रलाप भ्रमं छर्दिमोहतंद्रा निवारणा ४ अमृताया हिमःपेयो जीर्ण ज्वर हरः स्मृतः वासायाश्च हिमःकास रक्त पित्त ज्वरं जयेत् ५ प्रातःसशर्करः पेयो हिमो धान्याक संभवः अंतर्दाहं तथा तृष्णां जयेच्छ्रोतो विशोधनः ६ ॥ मरीच्यादि हिम मरिच मुरेठी कठ गूलर की कोमल नील कमल के हेम से तृषा छर्दि नाश होइ ३ पित्तज्वर पर नील कमलादि हिम नील कमल वरियारा दाख महुवा मुरेठी खस पद्माक खंभारी फल फालसा यह शीत कषाय वात पित्तज्वर प्रलाप भ्रम छर्दि मोह तंद्रा ये सब हर्ता है ४ जीर्ण ज्वर पर गुडूच्यादि हिम गुरच को हिम से जीर्ण ज्वर जाता है वासा कहे रूसा के हिमसे कास रक्त पित्त ज्वर जाता है ५ धनियां का हिम शक्कर डार प्रात पिये से अंतर्दाह तृषा मूत्रा रोध ये सब रोग नाश

वा. रक्त पित्त पर धनियां हींग धनियां आंवरा रूसा दाख पित्त पापड़ा इस हिम से रक्त पित्त ज्वर दाह तृषा कंठ शोष सब दूर होंइ ७ इति श्री शार्ङ्गधरे हि
म कल्पना ध्याय: चतुर्थः ४ अथ कल्क विधिः सूखी द्रव्य जल में पीसे थोरी निर्जल तिसे कल्क और प्रक्षेप कहते हैं मात्रा दश मासे १ कल्क में
मधु घृत तेल मात्रा से दूना देना मिश्री गुड समान मात्रा के अति थोरी पतली चौगुनी २ पांडु पर वर्द्ध मान पीपरि पीपरि तीन वा पांच वा सात
बढ़ावे और जे पीपरि से आरम्भ करै तै प्रति दिन बढ़ावे दश दिन ताईं फिर उतनी प्रति दिन घटाइ बीसवें दिन प्रथम दिन की मात्रा पूरी करै यों

धान्याक धात्रि वासानां द्राक्षा पर्पट योर्हिमः रक्तपित्तं ज्वरं दाहं तृष्णा शोषं च नाशयेत् ७ इति श्रीशार्ङ्गधरे मध्यमखं-
डे हिम कल्पना चतुर्थोऽध्यायः ४ द्रव्य मार्द्रं शिला पिष्टं शुष्कं वास जलं भवेत् प्रक्षेपा एव कल्कास्ते तन्मानं कर्ष संमितं १
कल्के मधु घृतं तैलं देयं द्विगुण मात्रया सिता गुडौ समं दद्याद्द्रवा देयाश्चतुर्गुणाः २ त्रिवृध्या पंच वृध्याथा सप्त वृ-
द्ध्याथवा कणाः पिबेत्पिष्ट्वा दश दिनं नात्ल्यैवापकर्षयेत् ३ एवं विंशदिनं सिद्धं पिप्पली वर्द्धमानकं अनेन पांडु
वाताश्च कास श्वासा रुचि ज्वराः उदरार्शःक्षय श्लेष्मा वाता नश्यंत्युरोग्रहाः ४ लेपान्निंबदलैः कल्को व्रण शोधन
रोपणः भक्षणाच्छर्दि कुष्ठानि पित्त श्लेष्म कृमीञ्जयेत् ५॥

वर्द्धमान पीपरि सिद्ध करने से पांडु बात कास श्वास
अरुचि उदर विकार क्षयी कफ बात छाती जकडुना सब दूर हों और जो पानी वा दूध संग पिया चाहै तो तीन दिन तक दो वा तीन तोले दूध ले
फिर कल्क से चौगुना खे ४ घाव पर निंब कल्क नींब पत्र की लुगदी घाव पर लगावे उस्से घाव साफ हो पूरता है जहां लुगदी लग सकै जहां
न लग सकै उसे घाव नहीं कहते वह नासूर है उस की विधि दूसरी है और खाने से छर्दि सब कुष्ट पित्त कम कम कमि अच्छा हो ५

वा॰ गृद्धसी पर बकाइन कल्क बकाइन की जड़ की छाल का कल्क गृद्धसी वायु को दूर करता है एक लहसुन की पीठी करि तिल का तेल मिश्रित करि खाय तो तीव्र बात विषम ज्वर नाश होंइ ६ बात रोग पर दूसरा पके लहसुन के जवा छील कै भीतर के अंकुर निकार मट्ठे में डारि रात भरि रक्खै तो उस की सुगंध जाय ७ मट्ठे से निकास पीसि कै पंच मांस इस चूरण को जो आगें कहते हैं सो डारे ८ काला लोन अजवाइन भुनी हींग सेंधव त्रिकुटा जीरा ये सब बराबर कूट लेइ ९ यह चूर्ण और लहसुन की लुगदी मिलाइ के दश मासे खाय अग्नि प्रबल हो रोगी की शक्ति विचारि ऋतु अनुसार

महानिंबजटाकल्को गृद्धसीनाशनः स्मृतः शुद्धकल्को रसोनस्य तिलतैलेन मिश्रितः वातरोगाञ्जयेतीव्रान्विषमज्वरनाशनः ६ पक्वकंदरसोनस्य गलिका निस्तुषीकृताः पाटयित्वा च तन्मध्यं दूरीकृत्य तदंकुरं ७ तद्गुग्गंधनाशाय रात्रौ तक्रे विनिक्षिपेत् अपनीय च तन्मध्याच्छिलायां पेषयेत्ततः तन्मध्ये पंचमासेन चूर्णमेनं विनिक्षिपेत् ८ सौवर्चलं यवानी च भर्जितं हिंगु सैंधवं त्रिकुटं जीरकं चैव समभागानि चूर्णयेत् ९ एकीकृत्य ततः सर्वं कल्कं कर्षप्रमाणतः खादेदग्निबलापेक्षी ऋतुदोषव्यपेक्षया अनुपानं ततः कुर्यादेरंडस्रतमन्वहं सर्वांगैकांगजं वातमर्दितं चापतंत्रकं अपस्मारं तथोन्मादमूरुस्तंभं च गृद्धसीं उरःपृष्टकटीपार्श्वकुक्षिपीडां कृमीञ्जयेत् अजीर्णमातपं रोषमतिनीरपयो गुडं रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतन्निरंतरं मद्यं मांसं तथाम्लं च रसं सेवेत नित्यशः ११ पिप्पली पिप्पलीमूलं भल्लातकफलानि च एतत्कल्कश्च सक्षौद्र ऊरुस्तंभनिवारणः १२

मात्रा दे अनोपान रंड की जड़ की छाल का काढ़ा सर्वांग वा एकांग बात अपतंत्र मृगी उन्माद गठिया गृद्धसी छाती पीड़ा पीठ कर हाड़ पसुरी कोष पीड़ा और कृमि दोष नाश हो १० संयम रोगी करै लघु भोजन घाम त्याग अक्रोध जल थोरा पिये दूध गुड़ त्याग इस औषधि भोगी पथ्य सराब मांस खटाई खाइ ११ उरूस्तंभ पर पीपरादि कल्क पीपरि पीपरा मूल भिलावा की लुगदी सहत संयुक्त देय तो गठिया दूर हो ॥ १२

विसु कांता पर नाम मूल पर विसु कांता की जड़ का कल्क मिश्री सहत घी युक्त सात दिन पिये परिणाम शूल जाइ और पत्वन स्यान शूल जाय १३ पुनः सोंठि गुड़ तिल दूध में पीसै इस कल्क से परिणाम व शूल मिटै आम बात जाय १४ अथ रक्तार्श पर चिर्चिरादि कल्क चिर्चिरा का चावल चावल के धोवन में पीस के पिये से रक्तार्श जाय १५ रक्तातीसार पर बेर कल्क बेर मूल की छाल तिल का कल्क सहत दूध में पिये से रक्तातीसार जाइ १६ रक्त छायी पर लाही कल्क एक कर्ष लाही पेठा के रस में पीसि कै पिये से रक्त छर्दि छाती क्षत क्षय जाइ १७ रक्त प्रदर पर चौराई कल्क चौराई

विसुक्रांता जटा कल्कः सिता क्षौद्र घृतै र्युतः परिणाम भवं शूलं नाशये त्सप्त भि र्दिनैः १३ शुंठी गुड तिलैः कल्कं दुग्धेन सह योजयेत् परिणाम भवं शूल माम वातं नाशयेत् १४ अपा मार्गस्य वीजानां कल्कस्तं दुल वारिणा पीतो रक्तार्श सां नाशं कुरुते नात्र संशयः १५ वदरी मूल कल्केन तिल कल्कै श्च योजितः मधुक्षीर युतः कुर्याद्रक्ता तीसार नाशनं १६ कूष्मांड रसेपिष्टां लाक्षां कर्षमितां पिवेत् रक्तक्षय मुरो घातं क्षय रोगं च नाशयेत् १७ तंदुलीयजटा कल्कः स क्षौद्रः सर सां जलः तंदुलोदक संपीतोर क्त प्रदर नाशनः १८ अंकोल मूल कल्कश्च स क्षौद्र स्तंदुलांवुना अतीसार हरः प्रोक्त स्तथा विष हरः स्मृतः १९ वंध्याकर कोट की मूलं पाटलायाः जटाथवा घृतेन विल्व मूलं वा द्वि विधं नाशये द्विषं २० अभया सैंधव कणा शुंठी कल्क स्त्रि दोष हा पथ्या सैंधव शुंठीभिः कल्को दीपन पाचनः २१ त्वक्तुत्य लाशा वीजानि पारसीकजवानिका कंपिल्लकं विडंगं च गुडश्च सम भागिकः २२

मूल चावर का धोवन में पीस कै सहत रसौत संग पिये से रक्त प्रदर जाय १८ अतीसार पर अंकोल कल्क अंकोल मूल की छाल चावर के धोवन में पीसि सहत डार पिये से अतीसार और विष दूर हो १९ विष पर खिरखसा कल्क खिरखसा वा सिरस मूल वा वेर मूल का कल्क घी संग खाने से विष नास होइ २० दीपन पाचन हरीत की कल्क हड़ सोंठि सैंधव पीपरि का कल्क तीनों दोषहर्त्ता है पुनः

हड़ सोंठि सैंधव का कल्क दीपन पाचन है २१ कृमि परनि शोथ कल्क निशोथ पलाश बांस खुरशाल अजवाइन कबीला बाय बिडंग गुड़ ये सब समान मट्ठा के साथ खाने से कृमि रोग जाय २२ वा पुनः नैनू मिश्री नागकेसर के कल्क से रक्तार्श नाश होय मसूरिका कसा कुआ मूख सोंठि चेल फल का कल्क उस पूष के संग पीने से गृहणी नाश होय भट कटैया फल का कल्क मट्ठा से गृहणी नाश हो २३ इति शार्ङ्गधर सुधा करे पंचमोऽध्यायः ५ अथ चूर्ण विधिः अथ सूखी द्रव्य कूटिके कपड़े में छानि ले चूर्ण रज और क्षोद कहते हैं इसके खाने की मात्रा कर्ष भर है १ चूर्ण में गुड़ समान लेना

नवनीत सिताः कल्को जेता रक्तार्शसां स्मृतः नवनीत सिता नागकेसर श्चापित्त द्विषः पीतो मसूर यूषेण कल्कः शुंठी शलाटुजः जयेत्संगृहणीं तक्रेण चूहली भवः २४ इति श्री शार्ङ्गधर मध्य खंडे पंचमोऽध्यायः ५ अत्यंत शुष्कं यद्द्रव्यं सुपिष्टं वस्त्र गालितं तत्स्या च्चूर्णं रजः क्षोद स्तन्मात्रा कर्ष संमिता १ चूर्णे गुड समो देयः शर्करा द्विगुणा भवेत् चूर्णेषु भर्जितं हिंगु देयं नोत्क्लेद कृद्भवेत् २ लिहे च्चूर्णं द्रवैः सर्वै घृताद्यै द्विगुणोन्मितैः पिवे च्चतुर्गुणै रेव चूर्णमालोडितं द्रवैः ३ चूर्णावलेह गुटिका कल्का नाम नुपानकं वात पित्त कफा तंके त्रिद्वोकपल मा हरेत् ४ यथा तैलं जले प्राप्य क्षणे नैव प्रसर्पति अनुपान बलादंगे तथा सर्पति भेषजं ५ द्रवेण यावता सम्यक्चूर्णं सर्वं प्लुतं भवेत् भावनायाः प्रमाणंतु चूर्णे प्रोक्तं भिषग्वरैः ६ ॥

खावु भूनी हींग भूजी हुई देना २ घृत सहतादि तथा द्रव्य वस्तु दूनी दे चाटै और पीने की द्रव्य चूर्ण के साथ चौगुनी देना ३ चूर्ण अवलेह गुटिका अथ कल्क चूर्ण अवलेह गुटिका इन का अनोपान बात में तीन पल पित्त में दो पल कफ में एक पल दीजिये ४ अनोपान देने का कारण यह है कि जैसे तेल पानी में डारने से फैल जाता है तैसे अनोपान के बल से औषधि प्रवेश करती है ५ औषधि में किसी की पुट देना होतो जितने में चूर्ण पुट की माफिक हो तितना देना भावना देना होतो चूर्ण स्थान में भाव प्रकार में देख लेना ॥ ६

बा॰ सर्व ज्वर पर आमल कादि चूर्ण आंवरा चीता हड पीपरि सैंधव यह पंच गुण चूर्ण सर्व ज्वर नाश करै रेचक रोचक कफ हर्त्ता दीपन पाचन है ७ ज्वर पर पीपरि चूर्ण पीपरि सहत युक्त चाटै तो ज्वर कास हिच की श्वास कंठ रुज पिल ही सकल रोग नाश करै ८ प्रमेह पै त्रिफला चूर्ण हड एक भाग बहेड़ा दो भाग आंवरा चार भाग इस प्रकार त्रिफला है ९ सो त्रिफला प्रमेह शोथ विषम ज्वर नाश करता है दीपन है कफ पित्त नाशन है कुष्ठ हरण रसायण है वही त्रिफला सहत घृत युक्त खाने से नेत्र रोग जाय १० पीपरि मरिच सोंठि इसे ऊषण और त्रिकुटा कहते हैं दीपन हैं कफ

आमलं चित्रकं पथ्या पिप्पली सैंधवस्तथा चूर्णितोयं गणो ज्ञेयः सर्वज्वर विनाशनः भेदी रुचिकर श्लेष्म जेता दीपन पाचनः ७ मधुना पिप्पली चूर्णंलिहे त्कास ज्वरापहं हिक्का श्वास हरं कंठ्यं प्लीह घ्नं बाल को चितं ८ एका हरीत की योज्या द्वौ तु योज्यौ विभीत कौ चत्वार्यामल्कान्येव त्रिफलैषा प्रकीर्तिता ९ त्रिफला मेह शोथघ्नी नाशये द्विषमज्वरान् दीपनी श्लेष्म पित्तघ्नी कुष्ठ हंत्री रसायनी सर्पिर्मधुभ्यां संयुक्ताः सैव नेत्रा मयां जयेत् १० पिप्पली मरिचं शुंठी त्रिभिस्त्र्यूषण मुच्यते दीपनं श्लेष्म शोथ घ्नं कुष्ठ पीनस नाशनं जयेद रोचकं सामं मेह गुल्म गला मयान् ११ पिप्पली चविका विश्वा पिप्पली मूल चित्रकैः पंचकोल मिति ख्यातं रुच्यं पाचन दीपनं आनाह प्लीह गुल्माघ्नं मूल श्लेष्मो दरापहं १२ त्रिगंध मेला त्वक्पत्रैः चातुर्जातं सकेशरं त्रिगंधं च चतुर्जातं रूक्षोष्णं लघुपित्तकृत् वर्ण्यं रुचिकरं तीक्ष्णं विष श्लेष्मा मयाञ्जयेत् १३

कुष्ठ पीनस नाश करता है आंव अरुचि मेह गुल्म कंठ रोग सब दूर होंय ११ कफादि पर पंच कोल चूर्ण पीपरि चाव सोंठि पीपरा मूल चीता इसे पंच कोल कहते हैं रोचन न कहें पाचन दीपन है अनाह पिप्पली गुल्म मूल कफ उदर रोग सब नाश हो १२ त्रिगंध चूर्ण पत्रज तज इलाइची यात्रि गंध है चातुर्जात तज पत्रज इलायची ये चातुर्जात है ये दोनों रूखे हैं उष्ण हैं कुछ पित्त कारक हैं कांति रुचि करता तीक्ष्ण हैं और विष और कफ की नाश करता हैं १३

वा ० जीवनी गण काकोली क्षीर काकोली जीवक ऋषभक मेदा महा मेदा जीवंति दुधिया लता की छीमी की छीमी कीसी तरकारी होती है मुरेठी मूंग फली
उर्दफली इन की जीवनी गण संज्ञा है सो स्वादिक है गर्भस्थिति कारक है भारी दुग्ध बढ़ती है धातु पोषक है धातु शोधक है स्निग्ध ठंढी तथा रक्त पित्त
क्षयी शोष ज्वर दाह वायु ये सब हरे २४ हे मेदा है काकोली जीवक ऋषभक ऋद्धि वृद्धि ये अष्टवर्ग हैं परंतु आठ में कोई मिलती है अष्ट वर्ग को वैद्य
जीवनी गण तुल्य कहते हैं २५ विरस मूत्र पर लवण पंचक चूर्ण सेंधा काला विड नोन खारी गुड नील सांभर ये पांच लोन क्रम से जानो २६ इन में सें-

काकोली क्षीर काकोली जीभ कर्षभकौ तथा मेदा चान्या मद्दा मेदा जीवंती मधुकं तथा मुग्धपर्णी माषपर्णी जीवनी यो गण
स्त्वयं जीवनीयो गणस्वादु गर्भसंधानकृद्गुरुः स्तन्यकृद्दृहणो वृष्यः स्निग्ध शीत स्तथापहः रक्तपित्तं क्षयं शोषं ज्वरदाह
निलाञ्जयेत् २४ हे मेदे द्वे च काकोल्यौ जीवकर्षभकौ तथा ऋद्धी वृद्धी चैतैः सर्वैरिष्ट वर्ग उदाहृतः अष्टवर्गो बुधैः प्रोक्तो जी
वनीय समो गुणैः २५ सिंधु सौवर्चलं चैव विडं सामुद्रकं गुडं एक द्वि त्रि चतुः पंच लवणानि क्रमाद्विदुः २६ तेषु मुख्यं सैंधवं स्य
त्लुले स्त्वप्रयोजयेत् सैंधवाद्य रोमकांतं ज्ञेयं लवण पंचकं २७ मधुरं सृष्ट विरामूत्रं स्निग्धं सूक्ष्मं वलापहं वीर्योष्णं दीपनं ती-
क्ष्णं कफ पित्त विवर्धनं २८ स्वर्जिका यवशूकश्च क्षार युग्म मुदाहृतं ज्ञेयो वन्हि समौ क्षारौ स्वर्जिका यावशूकजौ २९ क्षा-
राः क्षारान्ते पि गुल्मार्शो ग्रहणी रुक्छिदः सराः पाचना कृमि पुंस्त्वघ्नाः शर्करा श्मरि नाशनाः ॥ ३० ॥

था मुख्य है जहां नाम न लिखें तहां सेंधा लेना सेंधे से सांभर तक पांच लोन जानो २७ पाक मधुर है मल मूत्र पकाइ के गिराता है चिकना प्रवेश
करता वल हरता धातु को गर्भ करता दीपन तीक्ष्ण कफ पित्त बढ़ाता है २८ गुल्मादि पर खार सज्जी खार यवाखार ये दो हैं सो दोनों अग्नि समा-
न हैं दीप्यमान हैं २९ और खार संद्दिजन खार गदापूर्न खार सांगुला आदि ॥

गृहणी इन रोगों को नाश कर्ता है पाचन कृमि नाशक पुंस्त्वघ्न शर्करा मेह हर्ता है २० सर्व ज्वर पर सुदर्शन चूर्ण त्रिफला दोनों हरदी दुवो भट कटैया क-
चूर त्रिकुटा पीपरा मूल मुर्रा गुर्च जवासा २१ कटुकी पित्तपापड़ा मोथा त्रायमान नेत्रवाला नीव की छाल पोहकर मूल मुरेठी कुरैया २२ जवाइन इंद्र
जो भांगी सहजन विया भुजी फटकरी बच तज पद्माष खस श्वेत चंदन अतीस वरियारा २३ वन उर्दी बन मूंग बाय बिडंग तगर चीता देवदारु चाव
परोल २४ जीव करिषभक इन दोनों के अभाव में विलाई कंद लेना लौंग बंश लोचन कमल पत्र काकोली के अभाव में मुरेठी लेना दुद में दूना

त्रिफला रजनी युग्मं कंटकारी युगं शटी त्रिकटुं ग्रंथिकं मूर्वा गुडूची धन्वयासकाः २१ कटुका पर्पटो मुस्तं त्रायमाणा च
बालकं निंबः पुष्कर मूलं च मधुयष्टी च वत्सकः २२ यवानींद्र यवो भार्गी शिग्रुवीजं सुराष्ट्रजा वचा त्वक् पद्मकोशीरं चं-
दनाति विषा वला २३ शालपर्णी पृष्ठपर्णी विडंगं तगरं तथा चित्रको देवकाष्ठं च चव्यं पत्रं पटोलजं २४ जीवकर्षभ
कौ चैव लवंगं वंशलोचना पुंडरीकं च काकोली पत्रजं जाति पत्रकं २५ तालीस पत्रं च तथा सम भागानि चूर्णयेत् सर्व
चूर्णस्य सार्द्धांशं केरातं प्रक्षिपेत्सुधीः २६ एतत्सुदर्शनं नाम चूर्णं दोषत्रयापहं ज्वरांश्च निखिलान् हन्यान्नात्र का-
र्या विचारणा २७ पृथग्द्वंद्व गतं ज्ञांश्च धातुस्थान्विषम ज्वरान् सन्निपातोद्भवांश्चापि मानसानपि नाशयेत् २८
शीतज्वरै काहिकादीन्मोह तंद्रा भ्रमं तृषां श्वासं कासं च पांडुत्वं हृद्रोगं हंति कामलां २९

तेज पात जाविची २५ तालीस पत्र ये सब समान ले चूर्ण करै सब चूर्ण का आधा चिरायता डारै २६ यह सुदर्शन चूर्ण त्रिदोष नाश कर्ता है
सब ज्वर हर्ता निश्चय है २७ एकाहिक द्वंद्वज सन्निज मानस ये ऐसे सब ज्वर नाशक है २८ शीत ज्वर जूड़ी अंतरिया तृतीयक चातुर्थिक
मोह तंद्रा भ्रम तृषा श्वास कास पांडु हृदि रोग को हरै ॥ २९ ॥

था॰ रीढ़ पीठ कटि पांउ जांघ पसुरी इन अंगनि की पीड़ा नाश होइ जो शीत जल संग पिये तो सबज्वर हरै ३० यथा सुदर्शन चक्र सब दानवों को नाश कर्ता है तथा सुदर्शन चूर्ण सब ज्वरों को नाश कर्ता है ३१ कास श्वास ज्वर हरे त्रिफलादि चूर्ण कास श्वास ज्वर पर त्रिफला पीपरि चूर्ण सहत संग चाटे तो भेदी है अग्नि प्रबल कर्ता है ३२ कफज्वर पर काय फलादि चूर्ण काय फल मोथा कटुकी कचूर काकरा सिंही पुष्कर मूल इन त्र्यन का चूर्ण सहत अदरक रस संग चाटे ज्वर है कंठ शुद्ध होइ कास श्वास अरुचि बात शूल छर्दि क्षयी सब जाइ ३३ बालक की खांसी ज्वर पर काकरा सिंही आ-

त्रिकपृष्ठकटीजानुपार्श्वशूलनिवारणं शीतांबुना पिबेद्धीमान्सर्वज्वरनिवृत्तये ३० सुदर्शनं यथा चक्रं दानवानांच नाशनं तद्वज्ज्वराणां सर्वेषां मे तच्चूर्णं निवारणं ३१ कासश्वासज्वरहरा त्रिफला पिप्पलीयुता चूर्णिता मधुना लीढा भेदी चाग्निप्रबोधिनी ३२ कट्फलं मस्तकं तिक्ता शटी शृंगी च पौष्करं चूर्णमेषांच मधुना शृंगवेररसेन च लेह्यं ज्वरहरं कंठ्यं कासश्वासारुचीजयेत् वात शूलं तथा छर्दिक्षयं चैव व्यपोहति ३३ शृंगी प्रतिविषा कृष्णा चूर्णिता मधुना लिहेत् शिशोः काशज्वरछर्दि शांत्यै वा केवलं विषा ३४ शुंठी प्रतिविषा हिंगु मुस्ता कुटज चित्रकैः चूर्णमुष्णांबुना पीत बाताती सार नाशनं ३५ हरीतकी प्रति विषा सिंधु सौवर्चलं वचा हिंगु चेति कृतं चूर्णं पिबेदुष्णेन वारिणा आमातीसार शमनं ग्राही चाग्नि प्रबोधनं ३६ मुस्त मिंद्रयवं विल्वलोध्रं मोचरसं तथा ३७

दि चूर्ण काकरा सिंही अतीस पीपरि मधु युक्त चटावै तो बालक की खांसी ज्वर छर्दि दूर होय तैसे ही केवल अतीसार से ३४ आमातीसार पर शुंठ्यादि चूर्ण सोंठि अतीस हींग मोथा कुरैया चीता इन का चूर्ण उष्ण पानी साथ पिये से आंव अतीसार दूर होय ३५ आम बात पर हरीतक्यादि चूर्ण अतीसार सेंधा लोन काला लोन बच हींग इन का चूर्ण उष्णोदक सों पिये तो आम [illegible] तातीसार जाइ ग्राही है अग्नि प्रबल करै ३६ सर्वातीसार पर लघु गंगाधर चूर्ण मोथा इंद्रजौ बेल लोध्र मोचरस धौ फूल इन का चूर्ण मट्ठा गुड़ डारिकै प्यावै तौ सब अतीसार [illegible]

ला अतीसारपर वृद्ध गंगाधर चूर्ण मोथा सोंठि कैथा धौ फूल लोध सुगंध बाला बेल मोचरस पाढ़ा इंद्रजौ मधु कुरैया आम की गिजुरी अतीस लजालू इन का चूरण सहत चावर का धोवन संयुक्त पियेसे प्रवाहिक सब अतीसार ग्रहणी जल्दी आराम होय यह वृद्ध गंगाधर चूर्ण सरित प्रवाह रोकनेको समर्थ है ३८ मट्ठा मिरच चूर्ण चीता काला लोन संग पिये से ग्रहणी नाश होय उदर रोग प्लीहा मंद अग्नि गुल्म अर्श ये सब अच्छे होंइ ३९।

धातकी चूर्णये तक्र गुडाभ्यां पाययेत्सुधीः सर्वातीसार शमनं निरुणद्धि प्रवाहिकां लघु गंगाधरंनाम चूर्णं संग्राहकं परं ३७ मुस्तार लुक शुंठी भि धातकी लोध्र बालकैः बिल्व मोचरसाभ्यांच पाठेंद्र यव वत्सकैः आम्र बीजं प्रतिविषा लज्जालु रिति चूर्णितं क्षौद्र तंदुल पानीय पीतं बाति प्रवाहिका सर्वातीसार ग्रहणी प्रशमं याति वेगतः वृद्ध गंगाधरंनाम सरिद्वेगोपि बंधकं ३८ तक्रेणाथः पिबेन्नित्यं चूर्णं मरिच संभवं चित्रसौवर्चलोपेतं ग्रहणी तस्य नश्यति उदर प्लीह मंदाग्नि गुल्मार्शो नाशनं भवेत् ३९ अष्टौ भागाः कपित्थस्य षड्भागाः शर्करा मता दाडिमं तिंतिडीकंच श्रीफलं धातकी तथा अजमोदा पिप्पलीच प्रत्येकं स्युस्त्रि भागिकाः मरिचं जीरकं धान्यं ग्रंथिकं बालकं तथा सौवर्चलं यवानीच चातुर्जातंच चित्रकं नागरं चैक भागाः स्युः प्रत्येकं सूक्ष्म चूर्णितं कपित्थाष्टक संज्ञं स्याच्चूर्णमेतद्धलामयान् अतीसार क्षयं गुल्मं ग्रहणींच व्यपोहति ४०

संग्रहणी पर कपित्थाष्टक चूर्ण आठ भाग पक्का कैथा छः भाग खांड अनार अमली बेल धौ फूल अज मोद पीपरि ये सब तीन तीन भाग मरिच जीरा श्वेत धनियां पीपरा मूल सुगंध बाला अजवाइन तज पत्रज इलायची नाग केसर चीता सोंठि ये सब एक एक भाग इन सब का महीन चूर्ण करै यह कपित्थाष्टक चूर्ण गले के रोग अतीसार क्षयी गुल्म ग्रहणी ये सब अच्छे होंइ ॥ ४०॥

ग्रहणी पर दाडिमाष्टक अनार आठ रुपया भर शक्कर बत्तीस भर तज पत्रज इलायची तीनों मिलाके चार भर त्रिकुटा बारह भर इन्हें एक करि चूर्ण करै यह दाडिमाष्टक नाम चूर्ण रोचक दीपन ग्राही है कंठ शुद्ध करै कासज्वर नाश करै ४१ अतीसार पर वृद्ध दाडिमाष्टक अनार आठ पल पीपर पीपरा मूल अजवाइन धनियां जीरा श्वेत सोंठि सब पल पल भर वंशलोचन दश मासे तज पत्रज इला नागकेसर ये पांच पांच मासे यह दूसरा अनाराष्टक क्षयी अतीसार गुल्म ग्रहणी जल ग्रह मंदाग्नि पीनस कास ये रोग नाश करै ४२ क्षयी पर लवंगादि चूर्ण लवंग शुद्ध कपूर इलायची नाग केसर जाय फल

दाडिमाष्टपलो ग्राह्यो खंडादश पलानि च त्रिगंधस्य पलं चैकं त्रिकटुश्च पलत्रयं एतदेकीकृतं सर्वं चूर्णं स्याद्दाडिमाष्टकं रुचिकृद्दीपनं कंठ्यं ग्राहि कासज्वरापहं ४१ दाडिमस्य पलान्यष्टौ शर्करायाः पलाष्टकं पिप्पली पिप्पलीमूलं यवानी मरिचं तथा धान्यकं जीरकं शुंठी प्रत्येकं पलसम्मितं कर्षमात्रा त्वगाक्षीरी त्वक्पत्रैलाश्च केशरं प्रत्येकं कोलमात्रास्युस्तच्चूर्णं दाडिमाष्टकं अतीसारं क्षयं गुल्मं ग्रहणीं च गलग्रहं मंदाग्निं पीनसं कासं चूर्णमेतद्व्यपोहति ४२ लवंगं शुद्धकर्पूरमेला त्वङ्नागकेशरं जातीफलमुशीरं च नागरं कृष्णजीरकं कृष्णागुरुत्वगाक्षीरी मांसी नीलोत्पलं कणा चंदनं नागरं बालकं कोलं चेति चूर्णयेत् एतान् भागानि सर्वाणि सर्वार्द्धं च सिता भवेत् लवंगादिमिदं चूर्णं राजार्हं वन्हिदीपनं रोचनं तर्प्पणं वृष्यं त्रिदोषघ्नं बलप्रदं हृद्रोगं कंठरोगं च कासं हिक्कां च पीनसं यक्ष्माणं तमकं श्वासमतीसारमुरःक्षतं प्रमेहारुचिगुल्मादीन् ग्रहणीमपि नाशयेत् ४३ जातीफलं लवंगैला पत्रैस्त्वक्नागकेशरैः

खस सोंठि कृष्ण जीरा कृष्ण अगर वंशलोचन जटामासी नील कमल पीपरि चंदन नगर सुगंध बाला कंकोल इन का चूर्ण करि चूर्ण की आधी मिश्री मिलावै यह लवंगादि चूर्ण राज दीपन रोचक तृप्ति कारक धातु पुष्ट करै त्रिदोष हरै बल प्रद कंठ हृदि रोग कास हिचकी पीनस क्षयी तमक श्वास अतीसार उरक्षत प्रमेह अरुचि गुल्म ग्रहणी ये सब दूरि करै ४३ जाती फलादि चूर्ण जाय फल लौंग इला-

भा· टी· द्वि·

कपूर चंदन तज खसखस नगर आंवरा तालीस पत्र पीपरि हड़ चीता काला जीरा सोंठि विडंग मरिच सब कोस मान भाग लेना तिस्को चूरण करि चूर्ण के बराबर खांडु दे कर्ष भर सहत मिलाइ के खाय इस के प्रभाव से ग्रहणी कास श्वास अरुचि क्षयी वात कफ नाक टपकना ये रोग वेग ही दूर होंइ ४४ अरुचि पर महाखांडुव चूर्ण मरिच नाग केसर तालीस पत्र पांचों लोन ये सब समान भाग लेना ग्रंथि चित्रक तज पीपरि अमली जीरा ये सब दूंदूं भाग लेना धनियां अमल वेतस

११८

कर्पूरचंदनतिलैस्त्वक्क्षीरीनगरामलैः तालीसपिप्पलीपथ्याचित्रकःस्थूलजीरकैः शुंठीविडंगमरिचैःसमभागानिचूर्णितैः यावन्त्येतानि सर्वाणि कुर्याद्भागाश्च तावती सर्वचूर्णसमा देया शर्करा चभिषग्वरैः कर्षमात्रं तथा खादेन्मधुनाप्लावितं सुधीः अस्य प्रभावाद्ग्रहणी कासश्वासारुचिक्षयात् वातश्लेष्मप्रतिश्यायः प्रशमं याति वेगतः ४४ मरिचं नागपुष्पाणि तालीसंलवणानि च प्रत्येकमेकभागाः स्युः पिप्पलीमूलचित्रकैः त्वक्तिन्तिडीकं च जीरकं च द्विभागिकाः धान्याम्लवेतसौ विश्वं भद्रैलावदराणि च अजमोदा जलधरः प्रत्येकं स्युस्त्रिभागिकाः सर्वौषधचतुर्थांशं दाडिमस्य फलं भवेत् द्रव्येभ्यो निखिलेभ्यश्च सितादेयार्द्धमात्रया महाखांडवसंज्ञस्याच्चूर्णमेतत्सरोचनं अग्निदीप्तिकरं हृद्यं कासातीसारनाशनं हृद्रोगकंठजगरं मुखरोगप्रणाशनं विसूचिकां तथाध्मानमर्शोगुल्मकृमीनपि छर्दिं पंचविधंश्वासं चूर्णमेतद्व्यपोहति ४५

सोंठि बड़ी इलायची बेर अजमोद मोथा ये तीन तीन भाग सब द्रव्य की चौथाई अनार सब की आधी मिश्री देइ यह महा खांडव संज्ञक चूर्ण रोचक दीपन है हृदय को बल प्रद है अतीसार हृदि रोग कंठ जलना मुख रोग शीत रस पेट फूलना अर्श गुल्म कृमि छर्दि पंच विधि सब श्वास नाश करै ४५

वार्तिक. उदर रोग पर नारायण चूर्ण चीता त्रिफला सोंठि पीपरि मरिच जीरा हाऊबेर वच अजवाइन गंठ्य सोंफ असगंधी अजमोद कचूर धनियां विडं-
ग काली जीरी चोक पुष्कर मूल दोनों खार पांचो लोन कूट ये सब समान ले इंद्रायन द्वै भाग निशोथ तीन भाग जमाल गोटा तीन भाग पीत पुष्पी से-
हुंड मूल चारि भाग ये सब एकत्र करि चूर्ण करै कठिन कोठ रोगी को प्रथम पाचन स्वेद निकारि यह चूर्ण रेचनार्थ देइ तो सब रोग हृद रोग पांडु कास
श्वास भगंदर मंदाग्नि ज्वर कुष्ट ग्रहणी कंठ रुज ये रोग नाश करै अनोपान कहता हूं पेट फूले में मद्य संग गुल्म में बेर क्वाथ संग मल फोरने में

चित्रकं त्रिफला व्योषं जीरकं हवुषा वचा यवानी पिप्पली मूलं शत पुष्पाजगंधिकाः अजमोदा शठी धान्यं विडंगं स्थूलजीरकं
हेमाव्हा पौष्करं मूलं क्षारौ लवण पंचकं कुष्टंचेति समांशानि विशाला या द्विभागिका त्रवृत्त्रि भागा विज्ञेया दंती भागत्रयं भवे-
त् चतुर्भागा शातलास्यात् सर्वाण्येकत्र चूर्णयेत् पाचन स्नेहना द्यैश्च स्निग्ध कोष्ठ स्य देहिनां दद्याच्चूर्ण विरेकाय सर्व रोग प्रणाशनं
हृद्रोगे पांडु रोगे च कासे श्वासे भगंदरे मंदाग्नौ च ज्वरे कुष्टे ग्रहण्यां च गले ग्रहे दद्याद्युक्तानुपानेन तथाध्माने सुरादिभिः गुल्मे बदरनी-
रेण विड्भेदे दधि मस्तुना उष्णांबुभिश्चाजीर्णे च वृक्षाम्लैः परिकर्त्तिषु उष्ट्री दुग्धेनोदरेषु तथा तक्रेण वा गवां प्रसन्नया वात रोगे दाडि-
मैरर्शसां तथा द्विविधे च विषे स्यात् घृतेन विधिना ध्रुवं चूर्णं नारायणं नाम दुष्ट रोग गणापहं ४६ हवुषा त्रिफला चैव त्रायमाणा
च पिप्पली हेम क्षीरी स्त्रवृच्चैव शातला कटुका वचा ४७ नीलिनी सैंधवं कृष्णं लवणं चेति चूर्णयेत् उष्णोदकेन मूत्रेण दाडिम त्रिफला

रस वा जल अजीरण में उष्णोदक पेट रोग में अमला कठोदरादि में उष्ट्री दूध वा गो तक्र में बात रोग में सुरा मंड में दे अर्श में अनार रस संग दे दो-
नों विष में घी के संग देना यह नारायण चूर्ण है दुष्ट रोगों के गण कहें समूह नाशक है ४६ अजीर्ण पर हवुषादि चूर्ण हाऊ बेर त्रिफला त्रा-
यमाण पीपरि चोक निशोथ पीत पुष्प में हड़ की जड़ कुटकी वच ४७ नील की पत्ती सेंध व काला लोन इन का चूर्ण उष्णोदक वा गोमूत्र अनार का

वा॰ वा मांस रस संग जिस रोगी को जो उचित हो तिस के साथ पिवे अजीर्ण प्लीहा गुल्म शोथ अर्श विष माग्नि ४९ हलीमक कमल पांडु कुष्ट पेट फू-
लना उदर रोग ये सब दूर होंय शूलादि पर पंच सम चूर्ण सोंठि हड़ पीपल निशोथ काला लोन सब सम चूर्ण भाग ले सूक्ष्म चूर्ण करै ५० यह पंच सम
चूर्ण बड़ी शूल पेट फूलना जठर संबंधी आर्श आम बात सब हरै ५१ नाराच चूर्ण पीपरि दश मासे निशोथ चारि रुपये भर खांड पल भर ये सब ए-

तथा मांस रसेनापि यथा योग्यं पिबेन्नरः अजीर्णे प्लीह गुल्मेषु शोथार्शो विषमाग्निषु ४९ हलीम कामला पांडु कुष्ठाध्मानो दरे
ष्व पि शुंठी हरीतकी कृष्णा त्रिवृत्सौवर्चलं तथा सम भागानि सर्वाणि सूक्ष्म चूर्णानि कारयेत् ५० प्रोक्तं पंचसमं चूर्णमेतच्छू-
लहरं परं आध्मान जठरार्शोघ्न मामवात हरं स्मृतं ५१ कर्षमात्रा भवेत्कृष्णा त्रिवृत्स्यात्पलोन्मिता खंडात्पलं च विज्ञेयं चूर्णमेक-
त्र कारयेत् कर्षोन्मितं लिह्वेदेतत्क्षौद्रेणाध्मान नाशनं गाढ विड्वोदर कफान्पित्तं शूलानि नाशयेत् ५२ लवण त्रितयं क्षारौ श-
त पुष्पा द्वयं वचा अजमोदाजगंधा च हवुषा जीरके द्वयं ५३ मरिचं पिप्पली मूलं पिप्पली गज पिप्पली हिंगुश्च हिंगुपत्री च श-
ठी पाठोपकुंचिका ५४ शुंठी चित्रक चव्यानि विडंगं चाम्लवेतसं दाडिमं तिंतिडीकं च त्रिवृद्दंती शतावरी इंद्रवारुणिका भार्गी
देवदारु जवानिका ५५ कुस्तुंबुरु स्तुंबुरुणि पुष्करं वदराणि च शिवा श्वेति समांसानि चूर्णमेकत्र कारयेत् ५६

कत्र करि चूर्ण करै कर्ष भर सहत संग खाय पेट फूलना जाय गोठे उदर कफ पित्त शूल नाश होइ ५२ प्लीहादि पर लवण त्रितयादि चूर्ण तीनों लोन दोनों
खार सौंफ सोवा बीज अजमोद अजवाइन हाऊ बेर दोनों जीरे ५३ मरिच पीपरामूल पीपरि हुर हुर कचूर पीठी मगरेला ५४ सोंठि चीता चाव विडंग अम-
लवेतस अनार अमली की छाल निशोथ जमाल गोटा शतावरि इंद्रायन भारंगी देवदारु अजवाइन ५५ धनियां तुंबरु पुष्कर मूल बेर हड़ै सब

वा. अदरकरस बिजौरा रसमें भावना देव घीव वा पुरानी मद्य के संग पिये वा उष्णोदक संग ५७ वेरके क्वाथ में वा मद्दे में वा ऊंट पय में वा दही के तोड़ में पिये से यकृत प्लीहा कटि शूल गुद कोख हृद्रोग ५८ अर्श मंदाग्नि मल स्तंभ गुल्म प्लीहा उदर रोग हिचकी पेट फूलना श्वास कास ये सब दूर होंय वा इन द्रव्यन का घीव बनाइ के वैद्य देय तो भी ये रोग दूर करै ५९ शूल पर तंबुरादि चूर्ण तुंबर तीनों लोन अजवाइन पोष्कर मूल यवाखार हड़ हींग विडंग ये द्रव्य समान ले ६० निशोथ तीन भाग सब का सूक्ष्म चूर्ण करि उष्णोदक वा यव क्वाथ में पिये तो सर्व शूल गुल्म पेट फूलना सब अच्छे होंइ ६१ मंदाग्नि पर चित्रकादि

भावयेदार्द्रकरसैर्बीजपूररसैस्तथा लसिवेच्छर्करा जीर्णमद्ये तोष्णेन वारिणा ५७ कोलांभसा वातक्रेण दुग्धेनोष्ट्रेन मस्तुना यकृत्पृष्ठकटीशूल गुद कुक्षि हृदामयान् ५८ अर्शो मंदाग्नि विष्टंभ गुल्मप्लीहोदराणि च हिक्काध्मान श्वास कासाञ्जयत्येतन्न संशयः ५९ एतैरवौषधैः सम्यग्घृत वा साधयेत्सुधीः ५९ तुंबुरूणि त्रिलवणं जवानी पुष्कराह्वयं यवक्षाराभया हिंगु विडंगानि समानि च ६० त्रिवृत्त्रिभागिका ज्ञेया सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् पिवेदुष्णेन तोयेन यवक्वाथेन वा पिवेत् जयेत्सर्वाणि शूलानि गुल्माध्मानोदराणि च ६१ चित्रको नागरं हिंगु पिप्पली पिप्पलीजया चव्याजमोद मरिचं प्रत्येकं कर्षसंमितं ६२ स्वर्जिका च यवक्षारः सिंधु सौवर्चलं विडं सामुद्रिकं रोमकं च कोलमात्राणि कारयेत् ६३ एकीकृत्वाखिलं चूर्णं भावयेन्मातुलंगजैः रसैर्वा दाडिमैर्वापि शोषयेदातपेन वा ६४ तच्चूर्णं नाशयेद्गुल्मं ग्रहणीमामजं रुजं अग्निं च कुरुते दीप्तिं रुचिं कृत्स्नकफनाशनं ६५

चूर्ण चीता सोंठ हींग पीपरि पीपरामूल चाव अजमोद मरिच सब कर्षभर लेना ६२ दूनों खार सैंधा काला पांगा कचीला सांभर ये कोल कोल ले ६३ चूर्ण करि बिजोरा रस में बांटि घाम में सुखाइ ले ६४ यह चूरण गुल्म गृहणी आम रोग हरै अग्नि दीप्त रुचि करै कफ नाश करै ६५ ॥

वा॰ मंदाग्नि पर वडवानल चूर्ण सेंधा पीपरामूल पीपरि चाव चीता सोंठि हड क्रम से बढाइ चूर्ण करे जैसे सेंध १ मासा तौ पीपरामूल २ पीपरि ३ ऐसे लेना ३ यह वडवानल नाम अग्नि दीपन है ६६ वातादि पर अजमोदादि चूर्ण अजमोद विडंग सेंधो देव दारु चीता पीपरामूल सौंफ पीपरि ६७ मरिच ये द्रव्य कर्ष कर्ष भर हड पंच कर्ष विधारा दश कर्ष ६८ सोंठि दश कर्ष ये सब चूर्ण करै गुड मिश्रित कर उष्णोदक से पिये ६९ अच्छी तरह खाय तौ सूजन दूर होइ आ-

सैंधवं पिप्पली मूलं पिप्पली चव्य चित्रकं शुंठी हरीतकी चेति क्रम वृद्ध्या विचूर्णयेत् वडवानल नामैतच्चूर्णं स्यादग्निदीपनं ६६ अजमोदा विडंगानि सैंधवं देव दारु च चित्रकं पिप्पली मूलं शत पुष्पा च पिप्पली ६७ मरिचं चेति कर्षांशं प्रत्येकं कारयेद्बुधः कर्षास्तु पंच पथ्यायाः दश स्युर्वृद्धदारकात् ६८ नागराच्च दशैवं स्युः सर्वाण्येकत्र चूर्णयेत् पिबेत्कोल जलेनैव चूर्णं च गुडसंमितं ६९ भक्षयेद्दश वा सम्यग्यत्र स्व पथ्यु नाशनं आम वात रुजं हंति संधि पीडां च गृध्रसीं ७० कटि पृष्ठ गुदस्थां च जंघयोश्च रुजो जयेत् तूनीं प्रतूनीं विश्वाचीं कफ वातामयाञ्जयेत् हिंगु पाठा मया धान्यं दाडिमं चित्रकं शठी अजमोदा त्रिकटुकं हवुषा चाम्ल वेतसः ७२ अजगंधा तिंतिडीकं जीरकं पुष्करं वचा चव्यं क्षार द्वयं पंच लवणानि विचूर्णयेत् ७३ प्राग्भोजनस्य मध्ये वा चूर्णमेतत्प्रयोजयेत् पिबेद्वा जीर्ण मद्येन नरो कोष्णोदकेन वा ७४ गुल्मे वात कफोद्भूते विड्ग्रहे ष्ठीलिका सु च हृद्वस्ति पार्श्व शूले स शूले च गुदयोनिजे ७५

म बात गांठि पीर गृध्रसी वायु ७० कटि पीडा पीठ गुदा जांघ पीर तूनी वायु प्रतूनी वायु विश्वाची कफ रोग वायु के रोग ये सब नाश होइं ७१ शूलादि पर हिंग्वादि चूर्ण हींग पाढा हड धनियां अनार चीता कचूर अजमो[illegible] त्रिकुटा हाऊ बेर अमल बेतस ७२ ममरी इमली की छाल जीरा पुष्कर मूल वच चाव दोनों खार पांचो लोन सब चूर्ण करै ७३ भोजनादि वा संग पुरानी म[illegible] खाइ ७४ बात कफ का गुल्म कोष्ठ बंध ष्ठीलिका हृदय पेडू पसुरी गुदा योनि ये सब शूल ७५

वा॰ मूत्र कृच्छ्र पेट फूलन पांडु अरुचि हिच की यकृति प्लीह श्वास कास गल रोग ७६ गृहणी अर्श शूल पर यह चूर्ण है बिजौरा के रस में सात भावना दे गोली बां॰
धले इस्से वात कफ रोग नाश होय ७७ अरुचि पर जवानी खांडव चूर्ण अजवायन अनार सोंठि इमली छाल अमलवेतस गुर बेर ये सब चार चार
शाण ७८ मरिच ढाई शाण पीपरि १० शाण तज काला लोन धनियां जीरा येदो शाण ७९ शर्करा ६४ शाण, शाण चारि मासे का होता है इनका

मूत्र कृच्छ्रे तथा नाहे पांडु रोगे ऽरुचौ तथा हिकायां यकृति प्लीहि श्वासे कासे गलग्रहे ७६ गृहण्य र्शोविकारेषु चूर्ण मेतत्प्रशस्य
ते भावितं मातुलिंगस्य वृहुशः स्वरसे नवा कुर्याच्च वटिको वन्हो वातश्लेष्मा मयापहः ७७ जवानी दाडिमं शुंठी तित्तिडी का
म्लवेत सौ दशा म्लंच कुर्वीत चतुः शाण मितानिच ७८ सार्द्ध द्वि शाण मरिचं पिप्पली दश शाणिका त्वक्सौ वर्चल धान्याकं जीर
कं द्विद्वि शाणिकं ७९ चतुःषष्ठि मितैः शाणैः शर्करा चात्र योजयेत् चूर्णितं सर्व मेकत्र यवानी खांडवाभिधं ८० नाशयेत्पांडु रो
गं च हृद्रोगं गृहणी ज्वरं छर्दि शोषाति सारांश्च प्लीहानाह विबंधता अरुचिं शूल मंदाग्नि मर्शो जिह्वा गलामयान् ८१ तालीसं म
रिचं शुंठी पिप्पली वंश लोचना एक द्वि त्रि चतुः पंच कर्षैर्भागं प्रकल्पयेत् ८२ एला तजौ च कर्षार्धं प्रत्येकं भाग मावदेत् द्वात्रिंश
कर्ष तुलिता प्रदेया शर्करा बुधैः ८३ ताली साद्य मिदं चूर्णं पाचनं रोचनं स्मृतं कास श्वास ज्वर हरं छर्द्य तीसार नाशनं ८४

सब का चूरण करे इसे जवानी खांडव कहते हैं ८० यह पांडु हृदि रोग गृहणी छर्दि शोष अतीसार प्लीहा पेट फूलना कोष्ठ बद्ध अरुचि शूल मंदाग्नि
अर्श जीभ रोग गला रोग ये सब नाश होय ८१ अरुचि पर ताली सादि चूर्ण तालीस मिरच सोंठि पीपरि बंश लोचन द्रव्य प्रति कर्ष बढाइ लेइ
८२ इलाइची तज आधा आधा कर्ष खांड ३२ कर्ष लेइ ८३ यह ताली सादि चूर्ण पाचन रोचन है कास श्वास ज्वर छर्दि अतीसार ८४

वा॰ शोथ पेट फूलना प्लीह ग्रहणी पांडु इन सब को नाश करै वा खांड परि गोली बांध ले तो भी वही गुण है ८५ कास क्षय पित्तादि पर सितोपलादि चूर्ण मिश्री १६ कर्ष वंशलोचन ८ पीपरि ४ छोटी इलायची २।८६ तज १ कर्ष यह सितोपलादि चूर्ण सहत घी मिलाय के चाटै ८७ श्वास कास क्षयी हाथ पाव का तपना मंदाग्नि जीभ सूखना पसुरी पीड़ा अरुचि ज्वर रक्त पित्त रोग नाश करै ८८ ग्रहणी भला पर लवण भास्कर चूर्ण पांगा लोन ८ रुपया भर

शोथाध्मान हरं प्लीह ग्रहणी पांडु रोगजित् पक्वान्ना शर्करा चूर्णं क्षिपे द्वा गुटिका ततः ८५ सितोपला षोडश: स्या दष्टौस्या द्वंशलोचना पिप्पली स्याच्च तुष्कर्षाक्षुद्रैला स्याद्वि कर्षकी ८६ एव कर्ष त्वचः कार्यश्चूर्णयेत्सर्व मेकतः सितोपलादिकं चूर्णं मधुसर्पि युतं लिहेत् ८७ श्वास कास क्षयहरं हस्त पादांग दाहजित् मंदाग्नि सप्त जिह्वा च पार्श्व शूलमरोचकं ज्वर मूर्ध्वगतं रक्तं पित्तमा शुव्यपोहति ८८ सामुद्र लवणं कार्यमष्ट कर्ष मितं बुधैः पंचसौवर्चलं ग्राह्यं विड सैंधव धान्यकं ८९ पिप्पली पिप्पली मूलं कृष्ण जीरक पत्रकं नाग केसर तालीस मम्ल वेतस कत्तया ९० द्विकर्ष मात्रा एयेतानि प्रत्येकं कारयेद्बुधः मरिच जीरकं विश्व मेकैकं कर्ष मात्रकं ९१ दाडिमं स्याच्चतुष्कर्षं त्व गेला चार्ध कार्षिके वीज पूर रसे नैव भावितं सप्त वारकं एतच्चूर्णी कृतं सर्वं लवणं भास्कराभिधं ९२ शाण प्रमाणं देयं तुस खु तक्र सुरा सवैः वातश्लेष्म भवं गुल्मं प्लीहा न मुदरक्षयं ९३

काला ५ भर विड़ सैंधा धनियां ८९ पीपरि पीपरामूल काला जीरा पत्रज नाग केसर तालीस अमल वेतस ९० ये सब दोदो कर्ष मरिच जीरा सोंठि कर्ष कर्ष भर ९१ अनार ४ भर इलाइची तज पांच ५ मासे ये सब एकत्र करि चूर्ण करै यह लवण भास्कर है ९२ एक शाण दही के तोर संग देय वा महा वा मद्य संग देइ तो वात कफ जन्य गुल्म प्लीह पेट रोग छई ९३ अर्श ग्रहणी कुष्ट कोष्ठ बद्ध भगंदर सूजन शूल श्वास कास आम दोष हृदय रोग ९४

द० मंदाग्नि ये सब रोग नाश करै दीपन पाचन है संपूर्ण लोगन के हित प्रथम श्री भास्कर ने कहा है ९५ वातपित्तकफ छर्दि पर एलादि चूर्ण इलायची प्रि-
यंगु मोथा वेर की मिंगी पीपरि सेत चंदन लावा लवंग नाग केसर सब चूर्ण करि सहत मिश्री मिलाय चाटै तौ वात पित्त कफ जन्य छर्दि नाश करै ९६ कुष्ट
पर पंच निंब चूर्ण नीव के पंचांग का चूर्ण सूक्ष्म पीसि कै २५ पल लोह भस्म हड़ चकवड़ खैर चीता भिलावा विडंग खांड आंवरा हरदी पीपरि मरिच

अर्शांसि ग्रहणी कुष्टं विड्विबंधं भगंदरं शोफं शूलं श्वास कासं वाम दोषं च हृद्रुजं ९४ मंदाग्निं नाशयेदेतद्दीपनं पाचनं परं सर्व
लोकहितार्थाय भास्करेणोदितं पुरा ९५ एलाप्रियंगुमुस्तानि कोलमज्जा च पिप्पली श्रीचंदनं तथा लाजा लवंगं नागकेश
रं एतच्चूर्णीकृतं सर्वं सिताक्षौद्रयुतं लिहेत् वातपित्तकफोद्भूतां छर्दिं हंत्यतिवेगतः ९६ मूलं पत्रं फलं पुष्पं त्वचं निंबात्समाहृ-
रेत् सूक्ष्मचूर्णमिदं कृत्वा पलैः पंचदशोन्मितं लोहभस्म हरीतक्यौ चक्रमर्दकखादिरौ भल्लातकविडंगानि शर्करामलकं निशा

पिप्पली मरिचं शुंठी वाकुची कृतमालकः गोक्षुरश्च पलोन्मानमेकैकं कारयेद्बुधः सर्वमेकीकृतं चूर्णं भृंगराजेन भावयेत् अष्ट
भागावशेषेण खदिरासनवारिणा भावयित्वा च संशुष्कं कर्षमात्रं ततः पिबेत् खदिरासनतोयेन सर्पिषा पयसाथवा मासे-
न सर्वकुष्टानि विनिहंति रसायनं पंचनिंबमिदं चूर्णं सर्वरोगप्रणाशनं ९७ शतावरी गोक्षुरकं बीजं च कपिकच्छुजं गांगेरुकी
चातिबलाबीज भिक्षुर कोद्रवं ९८

सोंठि बकुची अमलतास गुखरू ये सब पल पल भर ले सब चूर्ण भंगरे के रस में भावना दे खैर औ-
र आसन सेर भर पानी में काढ़ा करै अष्ट मांश रहे तिस्में फिर भावना देइ फिर सुखाइ चूर्ण करि एक कर्ष खाय खैर आसन के क्वाथ के संग वा दूध वा घी-
के साथ मास भर सेवन करै तौ सब कोढ़ नाश करै यह रसायन है इसे पंच निंब चूर्ण कहते हैं सब रोग नाश करता है ९७ सतावरि चूर्ण पुष्टपर शतावरि गुखरू

किमाच के बीज गुल सकरी बरियारा ताल मखाना ९८ वा इन का चूर्ण राति को गो दुग्ध में पिये इस के प्रभाव से स्त्री से तृप्ति न होय और जो स्त्री प्रसंग न करै तौ वली होय बार न सेत होंय ९९ पुष्टि पर अश्वगंधादि चूर्ण ना गोरी असगंध ४० तोलेभर विधारा ४० भर इनौ काम हीन चूर्ण घृत के भाजन में धरै १०१ मासे १० मासे १० दूध में पिये तौ स्त्री से तृप्ति न होइ धातु वृद्ध पर नवांयसादि चूर्ण चीता त्रिफला मोथा विडंग त्रिकुटा ये सब समान तमया अ-

चूर्णितं सर्वमेकत्र गोदुग्धेन पिबेन्निशि न तृप्तिं याति नारीभिरेतच्चूर्णप्रभावतः ९९ अश्वगंधादिशपलातन्मात्रो वृद्धदार-
कः चूर्णीकृत्यो भयं विद्यात् घृतभांडे निधापयेत् १०० कर्षैकं पयसा पीत्वा नारीभिर्नैव तृप्यति अगत्वा प्रमदां भूयो वली पलि
त वर्जितः २ चित्रकं त्रिफला मुस्ता विडंगं त्र्यूषणानि च सम भागानि कार्याणि नव भागा हता यशः २ एतदेकीकृतं चूर्णं मधुस-
र्पि युतं लिहेत् गोमूत्रमथवा तक्र मनु पानं प्रशस्यते ३ पांडुरोगं जयत्युग्रं हृद्रोगं च भगंदरं शोथकुष्ठोदरार्शांसि मंदाग्नि मरु
चिं कृमीन् ४ अकारकरभः शुंठी कंकोलं कुंकुमं कणा जाती फलं लवंगं च चंदनं चेति कार्षिकान् ५ चूर्णनी मांस्ततः कुर्या-
द्दहि फेनं पलोन्मितं सर्वमेकी कृतं चूर्णं सूक्ष्मं मद्दस्त्रगालितं ६ सिता सर्व समा देया माषैकं मधुना लिहेत् शुक्रस्तंभकरं
चूर्णं पुंसामानंद कारकं नारीणां प्रीति जननं सेवेत निशि कामुकः १०७

१ पोलाद भस्म १२ इन का चूर्ण सहत घृत संग चाटे गोमूत्र वा मट्ठा के साथ ३ तौ पांडु हृदि रोग भगंदर सूजन कोढ़ उदररोग अर्श मंदाग्नि अरुचि कृमि नाश होय ४ स्तंभन पर अकरकरादि चूर्ण अकरकरा सोंठि कं-
कोल केंसर पीपरि जायफल लौंग स्वेत चंदन ये कर्ष कर्ष भर चूर्ण करि पल भर अफीम दे पीसि कपड़ छान लेइ ६ सब समान खांड दे मासा भर सहत में चाटे यह चूर्ण वीर्य स्तंभन करै पुरुष स्त्री को सुख देता है कामी पुरुष इसे राति को सेवन करै १०७

वा॰ इति श्री शार्ङ्गधर विरचिते चूर्ण कल्पना षष्ठोऽध्यायः ६ अथ बटी कल्पना बटिका गुटिका बटी मोदक पिंडी गुंडी ये गोली नाम हैं १ गुड़ और खांड़ दे आगि में पकावे जैसे अवलेह तब गुग्गुल वा चूर्ण उसी पत्ते में डारि गोली बांधे २ विना आगि के योग गूगल से भी गोली बंधती हैं और गोली वस्तु तथा सहत से भी बंधती हैं ३ मिश्री चौगुनी गुड़ दूना चूर्ण लिखे प्रमाण देना गुग्गुल सहत बराबर देना द्रव्य बस्तु दूनी देना सद्वैद्य यही रीति

इति श्री शार्ङ्गधरे म॰खंडे चूर्ण कल्पनाषष्ठोऽध्यायः ६ बटिकाश्चाथ कथ्यंते तन्नाम गुटिका बटी मोदको बटिका पिंडी गुंडीव
र्तिस्तथोच्यते १ लेहवत्साध्यते वन्हौ गुडोवा शर्करा यथा गुग्गुलं वा क्षिपे तत्र चूर्णं तन्निर्मिता वटी २ कुर्यादवन्हि सिद्धेन क्वचि
द्गुग्गुलनावटी द्रव्येण मधुना वापि गुटिकां कारयेत्सुधीः ३ सिता चतुर्गुणा देया बटीषु द्विगुणो गुडः चूर्णाचूर्णसमा कार्या गु
ग्गुलं मधुतत्समं ४ द्रवं च द्विगुणं देयं मोदकेषु भिषग्वरैः कर्षप्रमाणं तन्मानं बलं दृष्ट्वा प्रयुज्यते ५ दंद्रवारुणिका मुस्ता
शुंठी दंती हरीतकी त्वंविछटी विडंगानि गोक्षुरश्चित्रकं तथा ६ तेजोव्हाच द्विकर्षाणि पृथग्द्रव्याणि कारयेत् शूरणस्याप
लान्यष्टौ वृद्धदारु चतुःपलं ७ चतुःपलानि भल्लातं क्वाथयेत्सर्वमेकतः जलद्रोणे चतुर्थांशं गृह्णीयात्क्वाथमुत्तमं ८
क्वाथद्रव्यात्त्रिगुणितं गुडं क्षिप्त्वा पुनः क्षिपेत् सम्यक्पक्वं च ज्ञात्वा वै चूर्णमेतत्प्रदापयेत् ९

करै कर्ष भर गोली खाने का प्रमाण है वा देह बल दोष देखि खिलावै ५ दूंदारु की गुटिका कर्षपर दूंदारु मोथा सोंठ जमाल गोटा के जड़ की छाल हड़ निशोथ कचूर बिडंग गुरखरू चीता ६ वच ये सब दो दो कर्ष जमीकंद ८ पल विधारा चारि पल ७ भिलावा ४ पल द्रोण भर पानी में औटै जब चौथाई रहै तब उतार लेइ ८ छान के उस का तिगुना गुड़ दे पकावै जब पक नितार उठै तब यह चूर्ण डारै ९

१२८

बा चीता निशोथ जमाल गोटा जड़ वच ये पल पल भर त्रिकुटा इलायची आंवरा तज तीन तीन पल इन को पीस छान कै प्रस्थ भर सहत में पूर्वोक्त
यह चूर्ण युक्त बंधने माफिक हो तब मिलावै तब बाहुशाल गुड सिद्ध होय ११ सब अर्श गुल्म बातोदर आढ्य वायु नाक टपकना छर्द पीनस हलीमक पांडु प्रमेह ये सब नाश होंय १२ कास पर मरिचादि गुटिका मरिच पीपरि कर्षकर्ष भर यवाखार ५ मासे अनार २ कर्ष २३ गुड़ ८ कर्ष में चारि चारि मा-

चित्रकं त्रिवृता दंती तेजो ह्वा पालिका पृथक् पृथक् त्रिफलिका भागा व्योषैलामलकत्वचं १० निक्षेपेन्मधुशीते च तस्मिन्प्रस्थ प्रमाणकं एवं सिद्धो भवेच्छ्री मान्बाहुशाल गुडाभिधः ११ जयेदर्शांसि सर्वाणि गुल्मो वातोदरं तथा आढ्यवातं प्रतिश्यायमुग्रं तं क्षय पीनसं हलीमकं पांडुरोगं प्रमेहं च विनाशयेत् १२ मरिचं कर्षमात्रं स्यात्पिप्पली कर्ष संमिता अर्द्धकर्षो यवक्षारः कर्ष युग्मं च दाडिमं १३ एतच्चूर्णीकृतं युज्यादष्टकर्ष गुडेन हि शाण प्रमाणां वटिकां कृत्वा वक्त्रे विधारयेत् अस्याः प्रभावात्सर्वेपि कासा यांत्येव संक्षयं १४ गुडशुंठी शिवा मुस्तैर्धारयेद्गुटिका मुखे श्वास कासेषु सर्वेषु केवलं वा विभीतकं १५ आमलं कमलं कुष्टं लाजाश्च वटरोहकं एतच्चूर्णं समधुना गुटिका धारणं मुखे १६ तृष्णां वृद्धां हरत्याशु मुखशोषं च दारुणं विडंगं नागरं कृष्णा पथ्यामलविभीतकं वचागुडूची भल्लातं सद्विषं चात्र यो जयेत् १७

से की गोली बांधे सो मुख में धरे राखे इस के प्र-
भाव से सब खांसी जाइ १४ श्वास पर गुडादि गुटिका गुड़ सोंठि हड़ मोथा की गोली जितने गुड से बंधे मासे भर की मुह में राखे तो सब श्वास कास
हरे तैसे केवल बहेरा रखने से १५ प्यास पर आंवरादि बटी आंवरा कमल कूट लावा बट जटा इन्हें पीसि सहत में गोली बांधि मुख में राखे तो म-
हा तृषा मुख सूखना दूर हो १६ सन्नि पर संजीवनी गुटिका विडंग सोंठि पीपरि हड़ आंवरा बहेरा बच गुरुच भिलावा शुद्ध सिंहिया १७

वा॰ये सब समान ले गोमूत्र में खरल करै घुंघची समान गोली बांधे अदरख के रस में खिलावै १८ अजीर्ण में गोली १ विसूचिका में २ सांप के डसे को ३ सन्निपात में ४ दूस का संजीवनी बटी नाम है मनुष्य को जिलाती १९ पीनसादि पर त्रिकुटादि बटी त्रिकुटा अमलबेतस बच तालीस दल चीता जीरा दूमली छाल ये सब कर्ष कर्ष भर २० तज पत्रज इलायची चारि चारि मासे गुड़ २० कर्ष यह व्योषादि नाम गुटिका पीनस श्वास कास को नाश करै रुचि करै कंठस्वर शुद्ध करै नाक टपकना बंद करै २१ आंव रोग में गुड़ सोंठि की गोली देना अजीर्ण में गुड़ पीपरि कृच्छ्र में गुड़ हड़ की गो-

एतानि सम भागानि गोमूत्रेण पेषयेत् गुंजा भा गुटिका कार्या दद्यादार्द्रकजैः रसैः १८ एकामजीर्णे गुल्मस्य द्वे विसूच्यां प्रदापयेत् तिस्रस्तु सर्पदंष्ट्रेतु चत्वारस्सन्निपातके वटी संजीवनी नाम्ना संजीवयति मानवं १९ व्योषाम्लवेतसं चव्यं तालीसं चित्रकं तथा जीरकं तिंतिडीकं च प्रत्येकं कर्षभागिकं २० त्रिसुगंधंत्रिशाणंस्याद्गुडःस्यात्कर्षविंशति व्योषादिगुटिका सेयं पीनसश्वासकासजित् २१ रुचिस्वरकरा ख्याता प्रतिश्याय प्रणाशिनी २२ आमेषु सगुडां शुंठीमजीर्णे गुडपिप्पली कृच्छ्रे जीरगुडं दद्यात् दर्शःसु सगुडाभयां २२ वृद्धदारुक भल्लात शुंठी चूर्णेन योजितः मोदकः सगुडो हन्यात् षड्विधार्शकृतां रुजं २३ शुष्कसूरणचूर्णस्य भागा द्वात्रिंशदाहरेत् भागान्षोडश चित्रस्य शुंठ्या भागचतुष्टयं २४ द्वे भागौ मरिचस्यापि सर्वमेकत्र चूर्णयेत् गुडेन पिंडिकां कुर्यादर्शसां नाशनं परं २५ सूरणो वृद्धदारुश्च भागैः षोडशभिः पृथक् मुशली चित्रको ज्ञेयावष्ट भागान्वितौ पृथक् २६

ली देना २२ अर्श पर वृद्धदारु मोदक विधारा भिलावा सोंठि पीसि गुड़ में गोली बांधि देइ तौ छहों भांति अर्श दूर करै २३ अर्श पर सूरन वटिका सूखे सूरन का चूरण ३२ भाग चीता १६ भाग सोंठि ४ भाग २४ मरिच २ भाग सब चूर्ण करि गुड़ में गोली बांधि खिलावै तौ सब अर्श नाश होय २५ पुनः सूरन बिधारा सोलह सोलह भाग लेइ मुशली ८ भाग लेइ चीता भी ८ भाग लेइ २६

वा॰ इति श्री शार्ङ्गधर विरचिते चूर्ण कल्पना षष्ठोऽध्यायः ६ अथ वटी कल्पना वटिका गुटिका बटी मोदक पिंडी गुंडी ये गोली नाम हैं १ गुड़ और खांड दे आगि में पकावे जैसे अवलेह तब गुग्गुल वा चूर्ण उसी पत्ते में डारि गोली बांधे २ विना आगि के योग गूगल से भी गोली बंधती हैं और गोली वस्तु तथा सहत से भी बंधती हैं ३ मिश्री चौगुनी गुड़ दूना चूर्ण लिखे प्रमाण देना गुग्गुल सहत बराबर देना द्रव्य वस्तु दूनी देना सद्वैद्य यही रीति

इति श्री शार्ङ्गधरे म॰ खंडे चूर्ण कल्पना षष्ठोऽध्यायः ६ वटिकाश्चाथ कथ्यंते तन्नाम गुटिका बटी मोदको वटिका पिंडी गुंडीव र्तिस्तथोच्यते १ लेहवत्साध्यते वन्हौ गुडोवा शर्करा यथा गुग्गुलं वा क्षिपे तत्र चूर्णं तन्निर्मिता वटी २ कुर्यादवन्हि सिद्धेन क्वचि द्गुग्गुलुना वटी द्रव्येण मधुना वापि गुटिकां कारये त्सुधीः ३ सिता चतुर्गुणा देया वटीषु द्विगुणो गुडः चूर्णा चूर्ण समा कार्या गु ग्गुलं मधु तत्समं ४ द्रवं च द्विगुणं देयं मोदकेषु भिषग्वरैः कर्ष प्रमाणं तन्मानं वलं दृष्ट्वा प्रयुज्यते ५ इंद्रवारुणिका मुस्ता शुंठी दंती हरीतकी त्रिवृत्कटी विडंगानि गोक्षुरश्चित्रकं तथा ६ तेजोव्हा च द्विकर्षाणि पृथग्द्रव्याणि कारयेत् सूरणस्य प लान्यष्टौ वृद्धदारु चतुःपलं ७ चतुःपलानि भल्लातं क्वाथयेत्सर्व मेकतः जल द्रोण चतुर्थांशं गृहीया त्क्वाथ मुत्तमं ८ क्वाथ द्रव्याद्द्वि गुणितं गुडं क्षिप्त्वा पुनः क्षिपेत् सम्यक्पक्वं च ज्ञात्वा वै चूर्णमेतत्प्रदापयेत् ९

करे कर्ष भर गोली खाने का प्रमाण है वा देह वल दोष देखि खिलावे ५ इंद्रारु की गुटिका खर्परपर इंद्रारु मोथा सोंठ जमाल गोटा के जड़ की छाल हड़ निशोथ कचूर विडंग गुखरू चीता ६ वच ये सब दो दो कर्ष जमीकंद ८ पल विधारा चारि पल ७ भिलावा ४ पल द्रोण भर पानी में औटै जब चौथाई रहै तब उतार लेव ८ क्वाथ के उस का तिगुना गुड़ दे पककरे जब पक नितार उठै तब यह चूर्ण डारे ९

शा॰ त्रिफला विडंग सोंठि पीपरि भिलावा पीपरा मूल तालीस भिन्न भिन्न २७ चार चार भाग तज इलायची मरिच द्वै द्वै भाग इन सब का चूर्ण करि २८ दूने गुड़ में गोली बांधि खिलावै तो अग्नि प्रबल होय अर्श २९ वात कफ जन्य ग्रहणी श्वास कास क्षय प्लीहा पील पद शोथ प्रमेह भगंदर वार सेत होना सब मिटै धातु बुद्धि प्रबल करै यह रसायन है ३० कामलादि पर मंडूर बट के त्रिफला त्रिकुटा चाव पीपरा मूल चीता देव दारु सोना माखी हरदी मोथा म॰

शिवा विभीतगो धात्री विडंगं नागरं कणा भल्लातः पिप्पली मूलं तालीसं च पृथक् पृथक् २७ चतुर्भाग प्रमाणानि त्वगेलाम रिचं तथा द्विभाग मात्राणि पृथक्सर्वस्त्वेकत्र चूर्णयेत् २८ द्विगुणेन गुडेनाथ वटिकां कारयेद्बुधः प्रबलाग्निं च कुरुते तथार्शोनाशनः परः २९ ग्रहणीं वात कफजां श्वासं कासं क्षया मयं प्लीहानं श्लीपदं शोथं प्रमेहं च भगंदरं निहन्युः पलितं वृष्या स्तथा मेध्या रसायनाः ३० त्रिफला त्र्यूषणं चव्यं पिप्पलीमूल चित्रकं दारु माक्षिक धातुश्च दार्वी मुस्तं वरागकं ३१ प्रत्येकं कर्ष मात्राणि सर्वं द्विगुणितं तथा मंडूरं चूर्णये च्छुद्धं गोमूत्रेष्टगुणे क्षिपेत् ३२ पक्त्वा च वटकं कृत्वा दद्यात्तक्रानुपानतः कामला पांडु मेहार्शः शोथ कुष्ठ कफामयान् गुरुस्तंभ मजीर्णं च प्लीहानं नाशयेदपि ३३ चंद्र प्रभा वचा मुस्तं भूनिंबा मरदारु च हरिद्रातिविषा दार्वी पिप्पली मूल चित्रकान् ३४ धान्यकं त्रिफलां चव्यं विडंगं गजपिप्पली व्योषं माक्षिक धातुश्च द्वौ क्षारौ लवणं त्रयं ३५

जीठ ३१ ये कर्ष कर्ष भर मंडूर शोध के सब से दूना ले अष्ट गुने गोमूत्र में ३२ पकाय गोली बांधि मट्ठे के साथ खाय तौ कामल पांडु अर्श शोथ प्रमेह कुष्ठ कफ रोग गठिया अजीर्ण प्लीहा इन को नाश करै ३३ कपूर बच मोथा चिरायता गुर्च देव दारु हरदी अतीस दारु हरदी पिपली मूल चीता ३४ ५॰ निया त्रिफला चव चाय विडंग गज पीपरि त्रिकुटा सोना माखी की भस्म सज्जीखार जवाखार तीनों लोन सैंधा काला पांगा ३५

दहनि कचूर पुष्कर [illegible] बिडंग अनार हड चीता अम्ल वेतस सोंठि ये सब सोरह सोरह मासा ले चूर्ण करे ४६ बिजौरा के रस में बटी बांधै घृत दूध मद्य नींव रस उलोदक ४७ दून [illegible] का क्वाथ बनायकै वैद्य पिलावै गुल्म को नाश करै बात गुल्म को मद्य में पित्त गुल्म को गोक्षीर संग ४८ कफ गुल्म को गोमूत्र संग त्रिदोषज गुल्म को दश मूल के क्वाथ साथ स्त्री के रक्त गुल्म को उष्टी दुग्ध संग देइ ४९ वातादि रोग पर योग राज गुग्गुल सोंठि पीपरि चावगंथि

दंती शठी पौष्करं च विडंगं दाडिमं शिवा चित्रो म्लवेतसः शुंठी मासैः षोडशभिः पृथक् ४६ बीजपूर रसे नैव गुटिकां कारये द्बुधः घृतेन पयसा मद्ये रसे ह्युलोदकेन वा ४७ पिबेत्का क्वाथन योज्यं गुटिकां गुल्मनाशिनीं मद्येन वात के गुल्मे गोक्षीरेण च पैत्तिके ४८ मूत्रेण कफ गुल्मं च दश मूलै स्त्रिदोषजं उष्ट्रीदुग्धेन नारीणां रक्त गुल्मं विनाशयेत् हृद्रोगं ग्रहणी शूलं कृमीनर्शांसि नाशयेत् नागरं पिप्पली चव्यं पिप्पली मूल चित्रकौ भृष्ट हिंग्व जमोदा च सर्षपा जीरक द्वयं ५० रेणुकेंद्रयवा पाठा विडंगं गज पिप्पली कटुका ति विषा भार्गी वचा मूर्वा विकंटकं ५१ प्रत्येकं शाणिका निस्युर्द्रव्यानी मानि विंशतिः द्रव्येभ्यः सकलेभ्यश्च त्रिफला द्विगुणा भवेत् एभिश्चूर्णी कृतैः सर्वैः समो देयश्च गुग्गुलुः ५२ वंग रौप्यं च नागं च लोहं सारं तथा भ्रकं मंडूरं रस सिंदूरं प्रत्येकं पल संमितं गुड पाक समं कृत्वा द्रुमं दद्याद्यथोचितं एक पिंडं ततः कृत्वा धारयेत् घृत भाजने ॥ ५३ ॥

चीता मुली हींग [illegible] सरसों दोनो जीरे ५० मे बड़ी बीज इंद्रजौ पाढा विडंग गज पीपरि कुटकी अतीस भारंगी बच मुरी गुखरू ५१ ये सब शाण शाण भर सब [illegible] त्रिफले का चूरन ५२ सब चूर्ण के समान शुद्ध गुग्गुल बंग रूप रस लोह अभ्रक नागेश्वर मंडूर रस सिंदूर सार रस पल पल [illegible] और सब चूर्ण गुड [illegible] में सानि एक पिंड करि घृत भांड में धरै ५३

भा॰ टी॰ हि॰ १३३

बा॰ गोली ४ मासे की यह योग राज गुग्गुल त्रिदोष नाशक रसायन है ५४ मैथुन विहार पाना हार वर्जित नहीं सब बात रोग सर्वार्श ग्रहणी ५५ प्रमेह बात रक्त नाभि पीर भगंदर उदावर्त क्षय गुल्म मिर्गी छाती रोग ५६ मंदाग्नि श्वास कास नाश करै पुरुष के धातु स्त्री के रजोदोष ५७ नपुंसक को पुंसत्व प्रद वांझ गर्भ धारै रास्नादि काथ साथ बात रोग हरै ५८ कंकोल्यादि काथ संग पित्त हरै आरग्वधादि संग कफज हरै हरदी काथ संग प्रमेह हरै गोमूत्र

मृदिका द्राणासाद्या स्युः कृत्वा गुग्गुल्वयोचिता गुग्गलुर्योग राजोयं त्रिदोषघ्नं रसायनं ५४ मैथुना हार पाना भ्यां त्यागो नैवात्र विद्यते सर्वान्वाता मयान्कुष्ठानर्शांसि ग्रहणी गदं ५५ प्रमेहं बात रक्तंच नाभि शूलं भगंदरं उदावर्तं क्षयं गुल्म मपस्मार मुरो ग्रहं ५६ मंदाग्निंश्वास कासंच नाशयेदरुचिंतथा रेतो दोष हरं पुंसां रजो दोष हरं स्त्रियां ५७ पुंसा मपत्यजनको बंध्यानां गर्भद स्त-था रास्नादि काथ संयुक्तो विविधं हंति मारुतं ५८ काकोल्यादियुतः पित्तं कफ मारग्वधादिना दार्वी सृतेन मेहांश्च गोमूत्रे णैव पांडुतां ५९ मेदोवृद्धिंच मधुना कुष्ठं निंब सृतेनच छिन्ना काथेन वातास्रं शोथं शूलं कणा सृतात् ६० पाढ़ला काथ सहितो विष मूषकजं जयेत् त्रिफला काथ सहितो नेत्रार्ति हंति दारुणं ६१ पुनर्नवादि काथेन हन्यात्सर्वोदराण्यपि ६२ त्रिफ-लाया स्त्रयः प्रस्थाः प्रस्थैक ममृता भवेत् संकुट्य लोह पात्रेण सार्द्ध द्रोणांबुना पचेत् ६३ ॥

संग पांडु सहत संग मेद वृद्धि नीम काथ संग कुष्ठ नाशै गुर्च काथ संग बात रक्त नाशै पीपरि काथ संग शोथ शूल नाशै ६० सिर्स काथ संग मूषक दंश विष हरै त्रिफला काथ संग नेत्र रोग हरै ६१ पुनर्नवा काथ संग सब उदर रोग हरै ६२ बात रक्त पर कै शोर गुग्गुल त्रिफला ती-न प्रस्थ गुर्च १ प्रस्थ ये कूट के डेढ़ द्रोण पानी में औटावै ॥ ६३॥

बाजब अर्द्ध जल रहै तब छानि कै शुद्ध गुग्गुल प्रस्थ भर डारै ६४ फिरि लोह पात्र में लोहे की करछी से घोटि गुड़ पाक सम गाढ़ा करै ६५ औषधि डारै जो आगे कहेंगे आंवरा बहेड़ा हर्ड़ अर्ध अर्ध पल गुर्च १ पल ६६ त्रिकुटा दं कर्ष विडंग अर्ध पल दन्ति १ कर्ष निशोथ १ कर्ष ६७ सब गुड़ पाक में सानि पिंड बांधि घी पात्र धरै शाण भर गोली वा दोष बिचारि के देइ ६८ वैद्य अनोपान तप्तवारि वा दूध वा मजीठ क्वाथ में देना वा यथोचित देना ६९ सब कुष्ठ जाइ त्रिदोष जन्य बात रक्त जाइ सब व्रण गुल्म प्रमेह पिदिका ७० प्रमेह उदर रोग मंदाग्नि कास सूजन पांडु आंव रोग ये सब नाश होंय यह रसायन है ७१ कैशोरक ऋषि ने कहा है किशोर गुगुल नाम है कांति प्रद है रुस्नादि क्वाथ संग नेत्र रोग दूर करै वरुणादि क्वाथ संग गुल्म दूर करै ७२ खदिरादि क्वाथ संग व्रण दूर करै कुष्ठ दूर करै खट्टी तीक्ष्ण मैथुन श्रम घाम मद्य क्रोध ये सब त्याग कर जो गुण चाहै तो संयम से रहै ७३ ॥

जलं अर्धस्तं ज्ञात्वा गृह्णीयाद्वस्त्र गालितं ततः क्वाथे क्षिपेच्छुद्धं गुग्गुलं प्रस्थ संमितं ६४ पुनर्दंद्यमयो पात्रे दर्व्या संघट्टयेन्मुहुः सांद्री भूतं ततो ज्ञात्वा गुड़ पाक समाकृति ६५ चूर्णी कृत्य ततस्तत्र द्रव्याणीमानि प्रक्षिपेत् त्रिफला द्विपला ज्ञेया गुडूची पालिका मता ६६ षडक्षं त्र्यूषणं प्रोक्तं विडंगानां पलार्द्धकं दंती कर्ष मिता कार्या त्रिवृत्कर्षमितं तथा ६७ ततः पिंडी कृतं सर्वं घृतपात्रे विनिक्षिपेत् गुटिका शाणमात्रेण युंज्याद्दोषद्य प्रेक्षया ६८ अनुपाने भिषग्दद्यात्कोष्णं नीरं पयो थवा मंजिष्ठादिस्तं वापि युक्ति युक्तं ततः परं ६९ जयेत्सर्वाणि कुष्ठानि वातरक्तं त्रिदोषजं सर्व व्रणानि गुल्मांश्च प्रमेह पिडिकां तथा ७० प्रमेहोदर मंदाग्निं कासं श्वयथु पांडुतां निहंति चामयान्सर्वानुपयुक्तो रसायनः ७१ कैशोरक विधानोयं गुग्गुलः कांति कारकः वासादिना नेत्र गदान्गुल्मादीन्वरुणादिना ७२ क्वाथेन खदिरस्यापि व्रणान्कुष्ठादि नाशयेत् अम्लं तीक्ष्णमजीर्णं च व्यवायं श्रम मातपं मद्यं रोषं त्यजेत्सम्यग्गुणार्थी पुरसेवकः ७३

शा· भगंदर पर त्रिफला गुग्गुल त्रिफला चूर्ण ३ पल पिप्पली चूर्ण पल भर शुद्ध गुग्गुल ५ पल पीसि कै एकत्र करि ७४ गोली बांधि रोगी की अग्नि विचारि
टी· कै दे भगंदर गुल्म शोथ छहों अर्श दूर होंय ७५ प्रमेह गोक्षुरादि गुग्गुल गोखरू २८ पल छः गुणे पानी में काढ़ा करि अर्ध शेष ले ७६ सात पल गूगल
द्वि· दे फिरि पकावै जब गुड़ पाक सा हो तब जो द्रव्य कहता हूं सो पीसि कै डारै ७७ त्रिफला त्रिकुटा मोथा ए सातों पल पल भर मिलाइ पिंडी करि गोली बां-

त्रिफलं त्रिफला चूर्णं कृष्णा चूर्णं पलोन्मितं गुग्गुलं पंचपलिकं क्षोदयेत्सर्वमेकतः ७४ ततस्तु वटिकां कृत्वा प्रयुंज्याद्वह्निपे-
क्षया भगंदरं गुल्मं शोथार्शांसि च विनाशयेत् ७५ अष्टाविंशति संख्यानि पलान्यानीय गोक्षुरैः विपचेत्षड्गुणे नीरे का-
थो ग्राह्यो विशेषतः ७६ ततः पुनः पचेत्तत्र पुरं सप्तपलं क्षिपेत् गुडपाकसमाकारं ज्ञात्वा तत्र विनिःक्षिपेत् ७७ त्रिकटु त्रि-
फला मुस्तं चूर्णितं पलसप्तकं ततः पिंडीकृतस्यास्य गुटिका मुपयोजितः ७८ हन्यात्प्रमेहं कृच्छ्रं च प्रदरं मूत्रघातकं वातास्रं
वातरोगांश्च शुक्रदोषं तथाश्मरीं ७९ त्रिफलाष्टकलं कार्यं भल्लातं च चतुःपलं वाकुची पंचपलिका विडंगानां चतुःपलं ८० हत
लोहं तद्वच्चैव गुग्गुलश्च शिलाजतु एकैकं पलमात्रं स्यात्पलार्द्धं पौष्करं भवेत् ८१ चित्रकस्य पलार्द्धं स्याद्द्विशाणं मरिचं भवेत्
नागरं पिप्पली मुस्तं त्वगेलापत्रकुंकुमं ८२ शाणोन्मितं स्यादेकैकं चूर्णयेत्सर्वमेकतः ततस्तत्र क्षिपेच्चूर्णं पक्वखंडे च तत्समे ८३

धै ७८ प्रमेह मूत्र कृच्छ्र प्रदर मूत्रा घात बात रक्त बात रोग शुक्र रोग पथरी सब नाश हो ७९ कुष्ठ पर त्रिफला मोदक त्रिफला ८ पल भिलावा ४ बकु-
ची ५ विडंग ४ । ८० लोह भस्म निसोथ गुग्गुल शिलाजीत सब एक एक पल पुष्कर मूल अर्द्ध पल ८१ चीता अर्द्ध पल मरिच २ शाण सोंठि पीपरि मोथा
तज इलायची पत्रज केसर ८२ सब शाण शाण भर ले चूर्ण करि सर्व चूर्ण समान खांड ले पाक करि चूर्ण डारि गोली बनावै ॥ ८३॥

वार्तिक पल पल मित मोदक बनाइ रोग बल देखि रोगी को खिलावै तौ सब कुष्ठ नाश होइ त्रिदोष जन्य आंव रोग ८४ भगंदर प्लीहा गुल्म जिह्वा कंठ रोग ग्रीव पीठ इन सब के रोग नाश होंइ ८५ शरीर के नीचे के रोगनि में भोजनादि औषधि देवा मंदाग्नि जनित में भोजन के मध्य देह शिरो संबंधी रोगन में भोजनांत देना ८६ गंडु माला पर कचनार गुग्गुल कचनार छाल १० पल त्रिफला ६ पल त्रिकुटा ३ पल ८७ बरुणा १ पल इलाइची पत्रज कर्ष कर्ष भर

मोदकां पलिकां कृत्वा प्रयुं जित यथोचितान् हन्यात्सर्वाणि कुष्ठानि त्रिदोष प्रभवा मयान् ८४ भगंदरं प्लीह गुल्मे जिव्हाता लगला मयान् शिरोक्षि भ्रूगताद्रोगान्मन्या षष्ठि गतानपि ८५ प्राग्भोजनस्य देहं स्यादधः काय स्थिते गदेः भेषजं भक्त मध्ये च रोगे जठर संस्थिते भोजनस्योपरि ग्राह्य मूर्ध्व जंतु गदेषु च ८६ कचनारत्वचो ग्राह्यं पलानां दशकं बुधैः त्रिफला षट् पला ग्राह्या त्रिकटुः स्यात्पलत्रयं ८७ पलकं वरुणः कुर्यादेला त्वक्पत्रकं तथा एकैक कर्ष मात्रं स्यात्सर्वाण्येकत्र चूर्णयेत् ८८ यावच्चूर्ण मिदं सर्वं तावन्मात्रस्तु गुग्गुलः सकटुः सर्वमेकत्र पिंडं कृत्वा च धारयेत् ८९ गुटिका शाण मात्रेण प्रात ग्राह्या यथोचिता गंड मालां जयेत्युग्राम पची मर्वुदानि च ग्रंथि व्रणादि गुग्गुलांश्च कुष्ठानि च भगंदरं ९० प्रदेयश्चानुपानार्थं क्वाथो मुंडितिका भवः क्वाथः खदिर सारस्य पथ्या क्वाथो दकोस्नकं ९१ निस्तुषं माष चूर्णस्य तथा गोधूम संभवं निस्तुषं यव चूर्णं च शालितं दुलजं तथा ९२

सब एकत्र करि चूर्ण करै ८८ सर्व चूर्ण समान गुग्गुल पीसि चूर्ण मिलाइ पिंड बनावै ८९ चारि मासे की गोली बनाइ रोग बल औषधि बल देखि रोगी को प्रात समय देय गंडु माला अपची अर्बुद घाव ग्रंथि कुष्ठ भगंदर ९० अस्यानुपानं मुंडीरस्य रस इड क्वाथ वा उष्णोदक में देइ ९१ धातु पुष्टि पर माषादि मोदक माष कहैं उरद दालि धोइ चूर्ण करि लेइ गोहूं चूर्ण यव की गूदी का चूर्ण साठी चावर का चूर्ण ९२ ॥

॥ ॥ ॥

वा॰ पिपरी चूर्ण सब पल पल भर लेइ सब चूर्णों का आधा गो घृत दे भूजे ६३ चूर्णों के समान खांड ले तब सब का दूना जल डारि मंद मंद आंच दे घो
टै ६४ जब सिद्ध हो तब पल पल भर के लड्डु बांधि सांझ को खाइ उस पर चारि पल दूध पिये ६५ फिर क्षार और खटाई दो रस न खाइ स्त्री प्रसंग
करै तो वीर्य न द्रवै देह पुष्ट रहै ६६ इति श्री शार्ङ्गधर सुधाकरे सप्तमोऽध्यायः ७ अथावलेह कल्पना द्रव्य को क्वाथ सदृश औटावे फिर विशेष आं
च देइ जब गाढ़ा हो तब अवलेह कहैं लेह भी कहते हैं मात्रा ४ मुद्रा भर १ चूर्ण से मिश्री चौगुनी देना गुड दूना द्रव्यादि चौगुने यह सर्वत्र रीति है

सूक्ष्मं च पिप्पली चूर्णं पलकान्युप कल्पयेत् एतदेकी कृतं सर्वं भर्जयेद्गो घृतेन च ६३ अर्धमात्रेण सर्वेभ्यस्ततः खंड समं क्षिपेत् ज-
लं च द्विगुणं दत्वा पाचयेत्तं शनैः शनैः ६४ ततः पक्वं समुद्धृत्य मोदकं च पलोन्मितं कुर्यात्सायं च तं भुक्त्वा पिबेत्क्षीरं चतुर्गुणं ६५
वर्जनीयौ विशेषेण क्षाराम्लौ द्वौ रसावपि कृत्वैवं रमये न्नारीं वीर्येन क्षीयते नरः ६६ इति श्री शार्ङ्गधरे मध्य खंडे वट कल्पनाध्या
यः सप्तमः ७ क्वाथादेयं पुनः पाकाद् घनत्वं सा रसक्रिया सोऽवलेहश्च लेहः स्यात्तन्मात्रा स्यात्पलोन्मिता १ सिता चतुर्गु
णा कार्या चूर्णाच्च द्विगुणो गुडः द्रव्यं चतुर्गुणं दद्यादिति सर्वत्र निश्चयः सुपक्वे तंतुमत्वं स्यादवलेहोऽप्सु मज्जति स्थिरत्वं पीडयते
मुद्रा गंध वर्ण रसोद्भवं ३ दुग्धमिक्षुरसं यूषं पंचमूल कषायजं वासा क्वाथं यथा योग्यमनुपानं प्रशस्यते ४ कंटकारी तु-
लां नीरं द्रोण पक्वा कषायकं पाद शेषं गृहीत्वा च तस्मिंश्चूर्णानि दापयेत् ५ ॥

२ जब आंच देने पर तार बंधे और पानी में पाक की बूंद न बूड़े न घुलै तब सिद्ध जानै और अंगुरी से दबाने से कुछ दबै तब सुगंध रसादि डारे ३ औ
र दूध से ऊख से उत्पत्ति वस्तु यूस से पंच मूल क्वाथ से रूसा क्वाथ से इन अनोपान से देना अथवा और जो रोगो चित अनुपान हो सो देना ४
हिच की और कास श्वास पर भट कटैया अवलेह भटकैठया ४ सेर ले द्रोण जल में औटै जब चौथाई रहे तब उस में चूर्ण डारे ५

गुर्च चाव चीता मोथा काकड़ासिंगी त्रिकुटा जवासा ६ भारंगी ये सब कचूर ये पल पल भरले चूर्ण करै शक्कर ३० पल घृत ८ पल तेल ८ पल ७ ये सब काढ़े में औटै अवलेह सिद्ध हो ठंढा करि ८ पल सहत वंशलोचन ४ पल पिप्पली चूर्ण ४ पल मिलावै ८ उत्तम पात्र में धरै दूध अवलेह से हिचकी श्वास कास अशेष नाश करै ९ क्षयादि पर च्यवन प्राशावलेह सिर्स अग्निमंथ खमारी पाटल बेल सोनाक बन मूंग बन उर्दी गुखरू भटकटैया २ पीपर काकड़ासिंगी दाख गुर्च हड़ १० नाग बलायता लावाला रूला रिद्धि बिना वाराही कंद दधियाफली कचूर नीव करैदल भक दून बिना बिलाई कंद मोथा

पृथक्पलांशान्येतानि गुडूची चव्य चित्रकैः मुस्त कर्कटशृंगीच त्र्यूषणो धन्वयासकं ६ भार्ङ्गीरास्ना शठी चैव शर्करा पलविंशतिः प्रत्येकंच पलान्यष्टौ प्रदद्यात् घृततैलयोः पक्त्वालेह त्वमानीय शीते मधुपलाष्टकं चतुःपलंतुको क्षीर्या पिप्पलीनां चतुःपलं ८ क्षिप्त्वा निदध्यात्तु दृढे मृण्मये भाजने शुभे लेहोयं हंति हिक्का निश्वास कासानशेषतः ९ पाटला ग्निमंथ श्योनाक बिल्वारल्वुक गोक्षुरैः पर्ण्यौ वृहत्यौ पिप्पल्यः शृंगी द्राक्षा मृता भया १० बलाभूम्यामली वासा ऋद्धी जीवंतिका शठी जीवकर्षभकौ मुस्तं पौष्करं काक नाशिका ११ मुद्गपर्णी माषपर्णी विदारीच पुनर्नवा काकोल्यौ कमलं मेदे सूक्ष्मैला गरु चंदनं १२ एकैकं पलसंमानं स्थूल चूर्णीमौषधं एकीकृत्य महत्पात्रे पंचामलशतानिच १३ पक्त्वे द्रोण जलं क्षिप्त्वा ग्राह्यमष्टावशेषितं ततस्तुतान्यामलानि निष्कुली कृत वाससा १४ दृढ़ हस्ते संपीड्य क्षिप्त्वा तत्र ततो घृतं पल सप्त मितं तानि किं विभृष्टा स्त्य वन्हिना २५ ॥

पुष्कर मूल काक तुंडी ११ बन मूंग बन उर्दी बिलाई कंद गदा चूर्ण काकोली क्षीर काकोली दून बिना अस गंध कमल गट्टा महा मेदा दून बिना मुरेली इलायची अगर स्वेत चंदन १२ ये सब पल पल ले जो को पकावै ५०० आंवरे और चूर्ण द्रोण भरि पानी बडे पात्र में डारि पकावै जब अष्टमांश रहै तब उतारि आंवरा की गुठली दूर करै १४ कपड़ा में निचोरै आंवरा स्वास और काढ़ा छानि जुदा धरै फिरि आंवरा की गूदी मल के सात पल घी में भूंजि ले १५

तब वह काढ़ा और तुला खांड दे अवलेह सा पके तब यह चूर्ण डारे २६ पीपरि २ बंश लोचन ४ पल तज इलाइची पत्रज केसर २७ चारों ३ शाण सहत ६ पल दे च्यवन ऋषि का कहा यह च्यवन प्राश है २८ अग्नि बल देखि क्षीण पुरुष खाद यह रसायन है बालक वृद्ध क्षत से क्षीण नारिका क्षीण जिस की अति मंद नारी चलै लुंगरि तरे सूख गया हो २९ हृदे रोग स्वर क्षीण को खिलावे श्वास कास प्यास बात रक्त जंघ पीर ३० बात पित्त शुक्र

ततस्तत्र क्षिपेत्क्वाथे खंडस्याष्टपलोन्मितं लेहवत्साधयित्वाच चूर्णानीमानि दापयेत् २६ पिप्पली द्विपला देया तुगाक्षीरी चतुष्पला प्रत्येकंच त्रिशाणाः स्यात्त्वगेला पत्रकेशरं २७ ततस्त्वेकीकृतं सर्वं क्षिपेत्क्षौद्रंच षट्पलं इत्येतच्च्यवनं प्रोक्तं च्यवनप्राश संज्ञकं लेहं वन्हिबलं दृष्ट्वा खादेत् क्षीणो रसायनं बालवृद्धाः क्षतक्षीणा नारी क्षीणाश्च शोषिणः २८ हृद्रोगिणः स्वरक्षीणा येन रास्तेषु युज्यते कासं श्वासं पिपासांच वातास्त्र मुरसो ग्रहं ३० वातं पित्तं शुक्रदोषं मूत्रदोषं च नाशयेत् दद्यात्स्मृतिं स्त्रीषु हर्षं कांति वर्ण प्रसन्नतां अस्य प्रयोगात्प्राप्नोति नरो जीर्णाविवर्जितः ३१ निष्कुली कृत्य कूष्मांड मष्टौ पल शतं पचेत् निक्षिप्य द्विगुणे नीरे अर्द्धस्थंच गृह्यते ३२ तानि कूष्मांड खंडानि पीडयेद्दृढवाससा आतपे शोषयेत्किंचिच्छूलाग्रैर्बहुशो व्यधेत् ३३ सिक्त्वा ताम्र कटाहेच दद्यादष्ट पलं घृतं तेन किंचिद्भर्जयित्वा पूर्वोक्तंच जलं क्षिपेत् ३४

मूत्र दोष ये सब नाश हों मंदा स्मृति बढ़ावे स्त्री को सुखद हो कांति वर्ण प्रसन्नता उदय हो शरीर जीर्ण न हो ३१ रक्त पित्त पर कूष्मांड पाक कुम्हड़ा छीलि १०० टूक करि दूने हों पानी में पचावे आधा रहे तब उतारि ले ३२ उन टुकरन को वस्त्र में बांधि निचोर घाम में सुखाइ कै गुदना से गोदै ३३ तांबे की कढ़ाही में ७ पल घी दे भूंजे तब उस का निचुरा पानी उसी में डारे ॥ ३४ ॥

ड़ा· सौ पल खांड दे पकाइ सोंठ पीपरि जीरा दै दै पल २५ धनियां पत्रज इलाइची मर्च तज अर्ध अर्ध पल सब का चूर्ण घी का आधा सहत डारै २६ बलानुसार स्तु पित्त वाले को ज्वरी को क्षयी को सोष प्यास कास श्वास छर्दि ये रोग युक्ति न को क्षतातुर को दे २७ कूष्मांड अवलेह बालक वृद्ध को दे-ना छाती पुष्ट करै वीर्य धातु बढ़ावे बल वर्द्धन है २८ अर्श पर खंड कूष्मांड वलेह जैसे कुम्हड़ा की विधि है सोई सूरन की भी है पेठा और जमीकं-

र,ड़ात्पल शतं दत्वा सर्वमेकत्र पाचयेत् सुपक्वे पिप्पली शुंठी जीरकं द्वे पले पृथक् पृथक् पलार्द्ध धान्याकं पत्रैलामरिचं त्वच चूर्णी कृत्य क्षिपेत्तत्र घृतार्द्ध क्षौद्रमावहेत् २६ खादेदग्निबलं दृष्ट्वा रक्तपित्तज्वरी क्षयी शोषतृष्णातमच्छर्दिकासश्वास क्षतातुरः २७ कूष्मांडकावलेहोयं बालवृद्धेषु पुज्यते २८ उरःसंधानकृद्वृष्यो बृंहणी बलकृन्मतः युक्त्या कूष्मांड खंडस्य शूरणं विपचे-त्सुधीः अर्शसां मूढ बातानां मंदाग्नीनां च युज्यते हरीतकी शतं भद्रं यवानी माढकं तथा २६ पलानि दश मूलस्य विंशतिश्च नियो-जयेत् ३० चित्रकं पिप्पली मूल मपामार्गः शटी तथा कपि कच्छु शंखपुष्पी भार्गी च गजपिप्पली ३१ बला पुष्कर मूलं च पृथ-ग्द्विपल मात्रया पचेत्पंचाढके नीरे यवैः स्विन्नैः सृतं नयेत् ३२ तत्राभया शतं दद्यात्क्वाथेनास्मिन्विचक्षणः सर्पिस्तैल-च्च पलकं क्षिपेद्गुड तुलां सह ३३॥

र की छोटी करै कारि दोनों एकत्र करि उसी रीति से अवलेह बनाइ खिलावै तौ अर्श मंदाग्नि मूढ वात ये सब अच्छे हों २६ क्षयी पर अगस्त्य हरीतकी बड़ी हड़ै यव १ आढक दश मूल २० पल ३० चीता पीपरा मूल चिर्चिरा कचूर के बांच कौंछ डाला भारंगी जल पीपरि ३१ बरियारा पोक-र मूल सब दै दै पल ५ आढ़ आक जल में पचाइ गलाइ उतारि छान लेइ ३२ तिस में १०० हड़ तेल घी ८पल गुड तुला भर देइ ३३

पकावे ठंढा करि सहत पीपरि का चूर्ण ये सब एक एक कुडव डारै ३४ इस अवलेह के संग दो हड़ नित खाय क्षयी का रोग श्वास ज्वर हिचकी अर्श अरु-
चि पीनस ३५ गृहणी ये रोग नाश होंइ वलवंत हो स्वेत वार कृष्ण हों रूपवान हो पुरुष को यह अवलेह रसायन है अगस्त्य मुनि की कही यह हरीन की
सब रोग नाश करै ३६ अथापर कुरैया अवलेह कुरैया की छाल तुला भर एक द्रोण पानी में पचावे जब चौथाई रहै तब उतारि वस्त्र में छान

पत्त्वाले दत्त्व मानीते सिद्ध शीते पृथक् पृथक् क्षौद्रं च पिप्पली चूर्णं दद्यात्कुडव मात्रया ३४ हरीत की द्वयं खादेतेन लेहेन
नित्यशः क्षयं काशं ज्वरं श्वासं हिक्का र्शो रुचि पीनसान् ३५ गृहणीं नाशये देष वली पलित नाशनः वल वर्ण करः पुंसां मवं-
लेहो रसायनः विहितोगस्त्य मुनिना सर्व रोग प्रणाशनः ३६ कुटजत्वक्तुलां द्रोणे जलस्य विपचे त्सुधीः कषायवादशेषं
च गृह्णीयाद्वस्त्रगालितं ३७ त्रिंशत्पलगुडं स्यात्र दत्वा च विपचेत्पुनः सांद्रत्व मागतं दृष्ट्वा चूर्णानी मानि दापयेत् ३८
सांजनं मोचरसं त्रिकटुं त्रिफला तथा लज्जालू चित्रकं पाढा विल्व मिंद्रयवं वचा ३९ भल्लातक प्रति विषा विडंगानि च वालकं
प्रत्येकं पल संमानं घृतस्य कुडवं तथा ४० सिद्ध शीते ततो दद्यान्मधुना कुडवं तथा जये द्दोषो वले हस्तु सर्वाण्य र्शांसि वेगतः
दुर्नाम प्रभवा रोगा अतीसार मरोचकं गृहणी पांडु रोगं च रक्तपित्तं च कामलं अम्लपित्तं तथा शोथं कार्श्यं चैव प्रवाहिकाम् ४२

ले ३७ फिरि ३० पल गुड़ दे पकावै गाढ़ा भए यह चूर्ण डारि ३८ रसोत मोच रस त्रिकुटा त्रिफला लजालू चीता पाढ़ा वेल इंद्रजौ वच ३९ भि-
लावा अतीस विडंग सुगंधवाला ये पल पल भर घी कुडव भर ४० ठंढा परे कुडव भर सहत दे यह अवलेह सर्वार्श वेग ही दूरि करै ४१ दुर्नाम
रोग अतीसार अरुचि गृहणी पांडु रक्त पित्त कमल पित्त शोथ खजुरी प्रवाहिका ये सब दूर होंय ॥ ४२॥

तस्या नोपानं छगरी का दूध वा मट्ठा दही घी उसी का यो पानी भोजन के पाचन समय औषधि खाय ४३ सर्वातीसार पर कुरैयाष्टक आदि तुला कुरैया छाल द्रोण भर पानी में पकावै जब चौथाई रहै तब यह चूर्ण डारै ४४ लजालू धौ फूल बेल पाढ़ा मोच रस मोथा अतीस ये पल पल भर ४५ फिर उसी काढ़े को औटै जब लग करछी में न लगे तब सिद्ध जानो सो बकरी पय वा पानी वा मांड संग पिये ४६ तो सर्व अतीसार की घोर वेदना निवृत्त हो सब भांति रक्त वात सर्वार्श प्रवाहिका नाश करै ४७ इतिश्री शार्ङ्गधर सुधा करेण विरचिते अवलेह कल्पनाष्टमोऽध्यायः ८ अथ घृत तैल सा-

अनुपाने प्रयोक्तव्य माजं तक्रं पयो दधि घृतं जलं वा जीर्णेन्न पथ्य भोजी भवेन्नरः ४३ कुटजत्वक् तुलामर्द्धां द्रोण नीरे विपाचयेत् पाद शेषं सृतं नीत्वा चूर्णान्ये तानि दापयेत् ४४ लज्जालु धातकी विल्व पाढा मोच रस स्तथा मुस्तं प्रति विषा चैव प्रत्येकं स्यात्पलं पलं ४५ ततस्तु विपचेद्दर्व्यो यावद्दर्वी प्रलेपनं जलेन छाग दुग्धेन पीतो मंडेन वार्जयेत् ४६ घोरान्सर्वानतीसारान् नानावर्णान्स वेदनां असृग्दरं समस्तं च सर्वार्शांसि प्रवाहिकां ४७ इतिश्रीशार्ङ्गधरे मध्यखंडे अवलेह कल्पनाष्टमो ध्यायः ८

कल्काच्चतुर्गुणी कृत्य घृतं वा तैल मेव च चतुर्गुणे द्रवे साध्यं तस्य मात्रा पलोन्मिता निक्षिप्य क्वाथये तोयं क्वाथ द्रव्याच्चतुर्गुणं पाद शिष्टं गृहीत्वा च स्नेहस्तेनैव साधयेत् २ चतुर्गुणं मृदौ द्रव्ये काठिन्येऽष्ट गुणं जलं अत्यंत कठिने द्रव्ये नीरं षोडशिकं मतं ३ तथा च मध्य मे द्रव्ये दद्यादष्ट गुणं पयः कर्षादितः पलं यावद्द्यात्षोडशिकं जलं ॥ ४ ॥

धना कल्क सो चौगुणा घृत वा तेल और क्वाथादि द्रव्य भी चौगुनी देना ४ तिसिरा कल्क की मात्रा पल भर है १ जिस द्रव्य का क्वाथ देना हो तो चौगुने जल में औटै चौथाई रहै उतारि छान ले उस में घी तेल सिद्ध करै २ कोमल द्रव्य में चतुर्गुण जल कठोर में अठ गुण अत्यंत कठोर में सोलह गुणा जल दे ३ मध्यम में अठ गुणा पुनर्विधि रुपया भर से ४ रुपया भर तांई में सोलह गुना पानी दे क्वाथ करे पल से कुडव तांई अठ गुना प्रस्थ से खारी

वा· और जो केवल कल्क पानी घी तेल में सिद्ध करै तो चतुरांश कल्क दे सेर भर तेल पाउ सेर कल्क और जो कल्क काढ़े के संग घी तेल पकावै तो घृत तेल का षष्ठांश कल्क देना तीन पाव में आध पाव और जब कल्क रस के संग घी वा तेल में पकावै तो तेल का अष्टमांश कल्क देना सेर में आध पाव घृत तेल का प्रमान यही है ५ दूध दही रस मट्ठा इन में अष्टमांश कल्क देइ और कल्क भली भांति पकाने के कारण चौगुना जल देना ६ और जहां कल्क घी तेल काथ पाथ पांचो होंय तहां स्नेहादिक समान देना पानी चौगुना देइ ७ जब सर्णी द्रणी द्रव्य घृत तेल में पकानी होय तो जल में द्रव्य पीसि गला वा

नतस्तु कुडवंयावत्तोयंचाष्टगुणं भवेत् प्रस्थादितःक्षिपेन्नीरे स्वारीयावच्चतुर्गुणं ४ अंबुकाथरसेर्यत्र पृथक् स्नेहस्य साधनं कल्कस्यांशस्तत्र दद्याच्चतुर्थं षष्ठमष्टमं ५ दग्धेदधिरसे तक्रे कल्के देयोऽष्टमांशकः कल्कस्य सम्यक्पाकार्थं तोयमत्र चतुर्गुणं ६ द्रव्याणि यत्र स्नेहेषु पञ्चादीनि भवंति हि तत्र स्नेहसमान्याहुर्यथापूर्वं चतुर्गुणं ७ द्रव्येन केवलेनैव स्नेहपाको भवेद्यदि तत्रांबुपिष्टःकल्कःस्याज्जलंचात्र चतुर्गुणं ८ काथेन केवलेनैव पाको यत्रेरितः क्वचित् काथ्यद्रव्यस्य कल्कोपि तत्र स्नेहे प्रयुज्यते ९ कल्कहीनस्तु यःस्नेहःससाध्यःकेवलेद्रवे पुष्पकल्कस्तु यत्स्नेहस्तत्र तोयंचतुर्गुणं स्नेहात्स्नेहाष्टमांशश्च पुष्पकल्कःप्रयुज्यते १० वर्तिवत्स्नेहकल्कःस्याद्यदांगुल्याविवर्तितः शब्दहीनोऽग्निनिःक्षिप्तस्नेहसिद्धो भवेत्तदा

कल्क करि चौगुने पानी में पचावै ८ जो केवल काढ़े में कहा हो तहां उसी काथ की द्रव्य का कल्क करि घृत वा तेल युक्त वह काढ़ा और चौगुना पानी दे पकाना ९ जहां कल्क रहित है तो केवल द्रव्य वस्तु दूध पानी देके पकालेना जब फूल के कल्क में स्नेह सिद्ध करेंगे तब चौगुना पानी देंगे जब स्नेह से स्नेह सिद्ध करेंगे तब स्नेह का अष्टमांश दूसरा स्नेह ले पुष्प कल्क युक्त पकालेना १० जब वह स्नेह पाक अंगुरी में लेके मल से पती बनजाय उसे आगि पर डारै और जल से शब्द चिर्चिरा हट न करै तब सिद्ध भया जानो ॥ ११॥

तेल फेन उठने से सिद्ध जानिये घृतफेन शांति से सिद्ध जानिये जब गंध आवे और निर्मल हो जाइ और रस उत्पत्ति करै तब घृत वा तेल सिद्ध भया जानिये
२२ स्नेह पाक तीन प्रकार का है मृदु मध्य खर जो कल्क मोम वत रहै तो मृदु जानिये २३ जो कल्क निरस हो कुछ कोमल रहै तो मध्य जानियेजो
कल्क निरस और कठोर हो जाइ तो खरा जानिये २४ जो इस प्रमाण से अधिक जरै तो जानो स्नेह बिगड़ गया अकार्य गया जो कच्चा रहै तो से-
वन करै से मंदाग्नि करै और भारी हो २५ नास लेने को नरम हित है मध्यम सर्व कार्य साधक है खरा मर्दन की है जहां जैसा चाहै तहां तैसा बना-

यदा फेनोद्गमस्तैले फेन शांतिश्च सर्पिषि गंधवर्णरसोत्पत्तिः स्नेह सिद्धस्तथा भवेत् २२ स्नेहपाकस्त्रिधा प्रोक्तो मृदुर्म
ध्य खरस्तथा ईषत्सरसकल्कस्तु स्नेहपाको मृदुर्भवेत् २३ मध्यपाकश्च सिद्धश्च कल्के नीरस कोमलेः ईषत्कठिनक
ल्कश्च स्नेहपाको भवेत्खरः २४ तदूर्ध्वं दग्धपाकः स्याद्दाहकन्निष्प्रयोजनं आम पाकश्च निर्वीर्यो वन्हि मांद्यक
रो गुरुः २५ नस्यार्थस्यान्मृदुः पाको मध्यमः सर्व कर्मसु अभ्यंगार्थः खरः प्रोक्तो युज्यादेवं यथोचितं २६ घृततैल
गुडादींश्च साधयेन्नैक वासरे प्रकुर्वंत्युषिता ह्येते विशेषाद्गुण संचयं २७ पिप्पली पिप्पली मूलं चव्य चित्रक नागरैः
ससैंधवैश्च पलिकैर्घृत प्रस्थं विपाचयेत् २८ क्षीरं चतुर्गुणं दत्वा तत्सिद्धं प्लीह नाशनं विषमज्वर मंदाग्नि हृत्रुचि करं प-
रं २९ पिप्पली पिप्पली मूलं चित्रको हस्तिपिप्पली स्वदंष्ट्रा नागरं धान्यं पाठा बिल्वं यवानिका ३०

वै २६ तेल घृत गुड़ एक दिन में न साधै दिनांतर दे करै तो अधिक गुन करै २७ पिलही पर क्षीर षट पल पीपरि पीपरा मूल चाब चीता सोंठि सें
धो ये सब पल पल भर घी प्रस्थ भर में पचावै २८ दूध चौगुना जब सिद्ध हो तो यह घी प्लीहा को नाश करता है विषमज्वर मंदाग्नि दूर हो और रुचि
करै संग्रहणी अतीसार पर चांगेरी घृत २९ पिपरी पिपरा मूल चीता गज पीपरि गुखरू सोंठि धनियां पाढ़ा बेल अजवाइन ॥ ३० ॥

ये पल पल भर और घी चौसठ पल छोटी लुनिया का रस २५६ पल दे २१ और २५६ पल दही के दे मंद मंद आंच पचावे इस का नाम चांगेरी घृत है २२ इ-
स्से बात कफ गृहणी अर्श दूर हो पेट फूटन कांचनिः सरण मूत्र कृच्छ्र प्रवाहिका सब नाश करै २३ अतीसार पर मसूर घृत सौ पल मसुरी द्रोण भर
जल में क्वाथ करे चोथाई रहे उस काढ़े में आठ पल बेल की गूदी दे २४ और प्रस्थ भर घृत दे पचावे उस्से सब अतीसार गृहणी और विषरा मल गिरना
प्रवाहिका ये सब दूर हों २५ रक्त पित्त पर कामदेव घृत असगंध २०० पल गुखरू ५० पल शतावरि बिलाईकंद बन उर्दी वरियारा गुर्च २६ पीपरि

द्रव्यैश्च पलकै रेतैश्चतुः षष्टिपलं घृतं घृताच्चतुर्गुणं देयं चांगेरीसरसं बुधैः २१ तथा चतुर्गुणं दत्वा दधि सर्पिर्विपाचये
त् शनैः शनैः विपक्तव्यं चांगेरीघृतमुत्तमं २२ तद्घृतं कफवातघ्नं ग्रहण्यर्शोविकारनुत् हन्त्यावाहगुदभ्रंशं मूत्रकृच्छ्र
प्रवाहिकां २३ मसूराणां पलशतं नीरद्रोणं विपाचयेत् पादशेषं स्रुतं नीत्वा दत्वा बिल्वपलाष्टकं २४ घृतप्रस्थं पचेत्ते
न सर्वातीसारनाशनं गृहणीभिन्नविटकं च नाशयेच्च प्रवाहिकां २५ अश्वगंधापलशतं तदर्द्धं गोक्षुरं मतं शतावरी
विदारी च शालिपर्णी बलास्मृता २६ अश्वत्थस्य च शुंगानि पद्मबीजं पुनर्नवा काश्मर्यश्च फलं चैव माषबीजं तथैव च २७
पृथग्दशपलान्भागांश्चतुर्द्रोणेंभसः पचेत् द्रोणे शेषे रसे तस्मिन्न्यसेच्चैव घृताढकं २८ मद्वीका पद्मकं कुष्टं पिप्पली रक्तचंदनं प
त्रकं नागपुष्पं च आत्मगुप्ताफलं तथा २९ नीलोत्पलं सारिवे द्वे जीवनीयगणस्तथा पृथक्कर्षसमान्भागान्छर्करायाः पलद्वयं ३०

का ठिंगुसा रक्त कमल गट्टा गदापुरैना खंभारी पुष्प काले उर्द २७ ये दश दश पल ४ द्रोण पानी में पचावे चतुरांश रहे तब आढक भर घी दे
पचावे २८ फिर दाख पद्माख पीपर रक्त चंदन पत्रज नाग केसर किंवाच बीज की मींगी २९ नील कमल का फूल विना कमल गट्टा सरि
वन पिटवन जीवनी गण पूर्वोक्त जो न मिले तो केवल वरियारा ऐला ये सब द्रव्य कर्ष कर्ष भर ले शक्कर दो पल यत्न करना ३०

१४०

आढक भर पौंड़ा का रस सब इकट्ठा उस में पचावै जब घी रहै केवल तब छानि ले रक्त पित्त उरःक्षत क्षीण कमल बात रक्त ३१ हलीमक पांडु हरै स्ववर्ण हो स्वर क्षय मूत्र कृच्छ्र उरदाह पसुरी पीड़ा दूर करै ३२ यह घृत बहुर मणी को देइ बांझ पुत्र वती हो दुर्बल को दे तौ मोटा हो ३३ श्रेष्ठ है बल कर्त्ता है शरीर की रंगत अच्छी हो हृदय को प्रिय पुष्ट कर्त्ता है रसायन है तेज बल आयु प्राण बढ़ाता है ३४ कर्ष बढ़ाता है दुर्बलेंद्री पुरुष की बली हों सब रोग नाश हों जैसे सींचने से वृक्ष तरुण होता तैसे मनुष्य का शरीर होता है यह काम देव घृत बड़ा गुण दाई है ३५

रसस्य पौंड्र के क्षुणा माढ कै कं समा हरेत् रक्त पित्तं क्षतं क्षीणं कामलां बात शोणितं ३१ हलीमकं पांडु रोगं वर्ण भेदं स्वर क्षयं मूत्र कृच्छ्र मुरो दाहं पार्श्व शूलंच नाशयेत् ३२ एतत्सर्पि प्रयोक्तव्यं बह्वंतःपुरचारिणां स्त्रीणांचैव प्रजा तानां दुर्बला नांच देहिनां ३३ श्रेष्ठं बल करं वर्ण्यं हृद्यं पुष्टि रसा यनं ओजस्तेजस्करं हृद्य मायुष्य प्राण वर्द्धनं ३४ संवर्द्धयति शुक्रस्य पुरुषं दुर्बलेंद्रियं सर्व रोग दिनिर्मुक्तो पय सिक्तो यथा द्रुमः कामदेव इति ख्यातः सर्पि रुक्तं मह्त गुणं ३५ त्रिफला द्वे निशे कौं तीसारि वे द्वे प्रियं गुका शालि पर्णी पृष्ट पर्णी देव दार्व्वेल बालकं ३६ नर्त विशाला दंतीच दाडिमं नाग केसरं नीलोत्पलै लामंजिष्ठा विडंगं पद्म कुष्ठकं ३७ जाती पुष्पं चंदनंच तालीसं बृहती तथा एतैः कर्ष समैः कल्कैर्जलं दत्वा चतुर्गुणं ३८ घृत प्रस्थं पचेद्धी मान पस्मारे ज्वरे क्षये उन्मादि वात रक्तेच कासे मंदा नले तथा ३९

कल्यायन घृत अपस्मार पर त्रिफला दूनो हरदी रेनु का सरिवन पिठवन मकरावन उदी वन मूंग देव दारु राल वा लून मिलै तौ सुगंध वाला देइ ३६ तगर इंद्र दा रुन जमाल गोटे का बीज अनार नाग केसर नील कमल इलायची मजीठ बिडंग पद्माष कूट ३७ मालती पुष्प स्वेत चंदन तालीस पत्र वृहद् भटकटैया ये सब कर्ष पानी में पीसि कल्क करि चौगुना पानी दे ३८ उस पानी में प्रस्थ भर और वह कल्क दे कै पका वैद्य देइ

नाक टपकना कटि पीड़ा तिजरी चातुर्थिक मूत्र कृच्छ्र विसर्पिका खजुरी पांडु ४० दोनों विष में प्रमेह में और रोग सब अच्छे हों बांझ पुत्र जनै भूत राक्षस बाधा सब दूर हो पानी कल्यान घृत इस का नाम है ४१ बात रक्त पर अमृतादि घृत गुर्च का कल्क गुर्च का क्वाथ दूध के साथ घृत पचावे इस्से बात रक्त और कोढ़ दूर हो ४२ बात कुष्ठादि पर महा तिक्तादि घृत छितौनी अमलतास अतीस कटुकी पाढ़ा मोथा खस त्रिफला पित्त पापड़ा ४३ पटोल नीम मजीठ पीपरी पद्माष कचूर चंदन जवासा इंद्रजव दोनों हरदी ४४ गुर्च सरिवन पिटवन मुर्रा रूसा शतावरि त्रायमान

प्रति श्याये कटीशूले तृतीयक चतुर्थके मूत्रकृच्छ्रे विसर्पेच कंडु पाण्ड्वा मयेतथा ४० विषदूये प्रमेहेषु सर्वथैव प्रयुज्यते वंध्यानां पुत्रदं भूतयक्ष रक्षो हरं स्मृतं ४१ अमृता क्वाथ कल्काभ्यां सक्षीरं विपचेत् घृतं बातरक्तं जयत्याशु कुष्ठं जयति दुस्तरं ४२ सप्तच्छद प्रतिविषा संपाक कटु रोहिणी पाठा मुस्त मुशीरंच त्रिफला पर्पटस्तथा ४३ पटोल निंब मंजिष्ठा पिप्पली पद्मकेशठी चंदनं धन्वयासश्च निशाले द्वे निशे तथा ४४ गुडूची सारिवे द्वेच मूर्वा वासा शतावरी त्रायंती दुखवा यष्टी भूनिंबाश्चास भागिकं ४५ घृतं चतुर्गुणं दत्वा घृता दामलकी रसः द्विगुणं सर्पिषश्चान्नजल मष्टगुणं भवेत् ४६ तेन्सिद्धं पाययेत्सर्पि र्वात रक्तेषु सर्वसु कुष्ठानि रक्तपित्तंच रक्तार्शांसिच पांडुतां ४७ हृद्रोग गुल्म वीसर्प्प प्रदरं गंड मालिकां क्षुद्ररोगं ज्वरं चैव महातिक्त मिदं जयेत् ४८

प्रसिद्ध है इंद्र जौ मुरेठी चिरायता ये सब कर्ष कर्ष भर ले ४५ घी चौगुना दे घी का दूना आंवरे का रस दे आठ गुण जल दे ४६ यह सिद्ध घी सब बात रक्त के विकार में देइ अठारहों कुष्ठ में दे रक्त पित्त में देइ रक्तार्श पांडु में ४७ हृदि रोग गुल्म विसर्प प्रदर गंड माला क्षुद्र रोग ज्वर दूरि करै वह महातिक्त इस का नाम है पहिले कहे रोग सब अच्छे होंइ ४८

कुष्ठदाद खाज पर कासीसादि घृत कसीस दोनों हरदी मोथा हरताल मैनशिल कवीला गंधक विडंग गुग्गुल ४९ मोम मर्चि कूट तूतिया पीत सरसों रसौत सिंदूर राल लाल चंदन ५० खैर नीम का पत्ता करंज सरिवन बच मजीठ महुआ छाल जटा मासी सिरस लोध पद्माख ५१ गदा पुरैना हड़ ये सब एक एक कर्ष चूर्ण करै तिसे तीस पल घृत में सानि ५२ ताम्र पात्र में भरि सात दिन घाम में धरै इस घी के लगाने से कुष्ठ दाद खाज

कासीसंद्वे निशे मुस्तं हरितालं मनःशिलां कपिल्लकं गंधकंच विडंगं गुग्गुलं तथा ४९ सिक्थकं मरिचं शुंठी तुत्थकं गौरसर्षपं रसांजनं च सिंदूरं श्रीवासं रक्तचंदनं ५० दूतिमेदं निंबपत्रं करंजं सारिवा वचा मंजिष्ठा मधुकं मांसी शिरीषं लोध्र पद्मकं ५१ हरीतकी प्रपुन्नाटं चूर्णये त्कार्षिकं पृथक् ततस्तच्चूर्णमालोड्य त्रिंशत्पल मिते घृते ५२ स्थापयेत्ताम्रपात्रेच धर्मे सप्त दिनानि वै अस्याभ्यंगेन कुष्ठानि दद्रु पामा विचर्चिकाः ५३ सूक दोष विसर्पाश्च विस्फोटा वातरक्तजाः शिरः स्फोटो पदंशाश्च नाडी दुष्ट व्रणानिच ५४ शोथो भगंदराश्चैवलूता सास्यंच देहिनां शोधनं रोपणंचैव सवर्ण करणं घृतं ५५ जातीनिंब पटोलंच द्वे निशे कटु रोहिणी मंजिष्ठा मधुकं सिक्थं करंजो शीर सारिवा ५६ तुत्थंच विपचेत्सम्यक् कल्कै रेभिः घृतं बुधः अस्य योगा प्ररोहंति सूक्ष्म नाडी व्रणा अपि मर्माश्रिता ल्केदिनश्च गंभीरा सरुजो व्रणाः ५७

विचर्चिका ५३ सब दोष विसर्पि शीतला बात पित्तज नितमस्तक घाव गरमी नासूर ५४ सोथ भगंदर लूता दूर हों घाव अति शुद्ध हो पुरावै घाव चिन्ह न रहै ५५ घाव पर जाती घृत चमेली नींव पर्वल तीनो पत्ती दूनों हरदी कटुकी मजीठ मुरेठी मोम करंज खस सारिवन ५६ तूतिया ये सब समान ले लुगदी करि घृत में पचावै इस घी के लगाने से घाव नासूर और मर्म स्थान का दुख दाई गंभीर घाव पीड़ा सब दूर करै ५७

उदर रोग पर बिंदु घृत चीता शंखाहूली हड़ कर्बीला दोनों निशोथ विधारा अमल तास जमाल गोटा त्रिफला ५८ कडु तरोई देव दाली कंदे बंदा
ल नील की पत्ती कोदा मुंडी सेंहुड की छीमी पिपरामूल बिडंग कटुकी ५९ चोकरा सब कर्ष कर्ष भर ले कल्क करि प्रस्थ भर घी में पचावे ६ पल सें-
हुड़ का दूध डारे ६०। २ पल मदार दुग्ध डारे वह सिद्ध घी दे तो गुल्म कुष्ठ अच्छा हो शूल उदावर्त शोथ पेट फूलना भगंदर ६१ आठो उदर रोग दूर

चित्रकं शंखिनी पथ्या कंपिल्लं रक्तचूर्णायुगं इंद्रदारु कं संपाको दंतीच त्रिफला तथा ५८ कोशातकी देवदालीनीलनी गि-
रि कर्णिका शातला पिप्पली मूलं विडंगं कटुकी तथा ५९ हेमक्षीरीन्च विपन्चेत्कल्कैरेभिः विचूर्णितैः घृतप्रस्थं स्नुहीक्षी
रंषट्पलंतु पलद्वयं ६० अर्कक्षीरस्यमतिमान्त्सिद्धं गुल्मकुष्ठनुत् हंतिशूलमुदावर्तं शोथाऽध्मानंभगंदरं ६१ शमयत्यु
दराण्यष्टौ निपीतंविंदु संख्यया गोदुग्धेनोष्ट्रदुग्धेनकुलत्थस्यरसेनवा ६२ उष्णोदकेन वापीत्वा विंदु वेगैर्विरिच्यते एतद्विंदु
घृतंनाम नाभिलेपाद्विरिच्यते ६३ त्रिफलायारसप्रस्थं प्रस्थं वासारसं तथा भृंगराजरसप्रस्थं प्रस्थं माजं पयस्तथा ६४ दत्वातत्र
घृतं प्रस्थं कल्कैः कर्षमितैः पृथक् त्रिफला पिप्पली द्राक्षा चंदनं सैंधवं वला ६५ काकोली क्षीरकाकोली मेदा मरिच नागरं शर्करा पुंड
रीकंच कमलंच पुनर्नवा ६६ निशायुगंच मधुकं सर्वैरेभिर्विपाचयेत् नक्तांध्यनकुलांध्यंच कंडू पिल्लं तथैवच ६७

हों आठ बूंद पानी से वा दूध से वा ऊंट के दूध से कुलथी क्वाथ से ६२ गरम पानी से जो बूंद पिये से दस्त हों यह बूंद घृत नाभि से दस्त आवे ६३॥
नेत्र पर रोग त्रिफला घृत त्रिफले का रस १ प्रस्थ ११ रूसे का १ प्रस्थ भंगरे का १ प्रस्थ बकरी का दूध ६४ प्रस्थ घी कर्ष कर्ष और द्रव्य त्रिफला
पीपरि दाख चंदन सैंधव बरियारा ६५ दोनों काकोली विना असगंध मेदा विना मुरेठी मरिच सोंठि खांड सेत कमल रक्त कमल गदापुरैना ६६
दोनों हरदी मुरेठी दून का कल्क करि घी में पकावे तो नक्तांध नकुलांध खाज पिल्ल रोग ६७॥

१४९

नेत्र स्राव पटल तिमिर नील बिंदु ये सब अच्छे हों इस त्रिफलादि घृत को खाइ वा नास ले यथोचित अनोपान करै ६८ घाव पर गौर्यादि घृत हर्दी दोनों शालि पर्णी मुर्रा सरिवन चंदन दोनों मुरेठी कमल केसर कमल ६९ नील कमल खस मेदा विना मुरेठी त्रिफला आम्र वट पीपर पाकर गूलर इन की छाल सब कर्ष कर्ष ले कल्क करि प्रस्थ भर घी में पचावे ७० यह गौर्यादि घृत विसर्पिका अगि आसन सीतला कीट विष क्षत सब अच्छे करै ७१ शिरो रोग पर मयूर घृत वरियारा मुरेठी रासन दश मूल त्रिफला दो दो पल दे द्रोण भर जल में पकावे ७२ मयूर

नेत्र स्रावंच पटलं तिमिरं काचकं जयेत् अन्येपि प्रशमं यांति नेत्र रोगा सुदारुणाः त्रैफलं घृतमेन द्धि पानेन स्याद्विबूचितं ६८ द्वे-हरिद्रे स्थिरा मूर्वा सारिवा चंदन द्वयं मधुपर्णीचमधुकं पद्मकेशर पद्मकं ६९ उत्पलो शीर मेदो भिस्त्रिफला पंच वल्कलैः कल्कैः कर्षमितै रेतै र्घृत प्रस्थं विपाचयेत् ७० विसर्पलूता विस्फोट व्रण कुष्ट विषापहं ७१ गौर्यादिकमिति ख्यातं सर्वव्रण हर स्मृतः ७१ बला मधुक रास्नाभि र्दश मूल फलत्रिकैः पृथग्द्विद्वि पलै रेभिर्द्रोणे नीरेण पाचयेत् ७२ मयूर पिच्छ पितांत्रय कृत्यादास्य वर्जितं पाद शेषं स्रुतं नीत्वा क्षीरं दत्वाच तत्समं ७३ घृतं प्रस्थं पचेत्सम्यक् जीवनीयै र्पिचून्मितैः तत्सिद्धं सिरसः पीडा मन्याप्रष्ठ ग्रहं तथा ७४ अर्दितं कर्णनासाक्षि जिव्हा गल रुजोजयेत् पाने नस्ये तथाभ्यंगो कर्ण पूरेषु युज्यते ७५

मांस बिना आंत ओझरी पित्ता पाव पानी में गलावे चौथाई रहै उतारि ले यह यूस जितना हो तितना दूध दे ७३ प्रस्थ भर घी में कर्ष कर्ष भर जीवनी गण और काढ़ा सब पचावे सिर रोग मन्या विथा पृष्ट ग्रह ७४ लकवा कर्ण नाक नेत्र जीभ गला सब के रोग नाशै खाइ सूंघे मलै कान में डारै हेमंत शिशिर वसंत में सेवन करै ॥ ७५ ॥ ॥ ॥ ॥

दूनका क्वाथ प्रस्थ भर घी ४ प्रस्थ दूध में पकावे जब घी सिद्ध हो तब स्त्री पिये तो सब योनि दोष दूर हों ८५ पलित चलित निश्चित विकृत पित्त विभ्रांत खंड योनि ८६ ये सब योनि रोग मिटैं और गर्भ टिके यह फल घृत नाम घृत योनि दोष पर बहुत अच्छा है ८७ विषम पर पंच तिक्त घृत रू म खुर्द भटकटैया पटोल दून ही का काढ़ा और कल्क में घी पकाय खाय तो विषम ज्वर जाय पांडु कुष्ट विसर्प कृमि अर्श ये भी दूर होय ८८ इति श्री·

कल्की कृत्य घृतप्रस्थं पचेत्क्षीरं चतुर्गुणं तत्सिद्धं पाययेन्नारीं योनिरोगनिपीडितां ८५ पलिता चलिता याच निःसृता विकृता च या पित्तयोनिं च विभ्रांतां खंडयोनिश्च या स्मृता ८६ प्रपद्यंते हिता स्थानं गर्भं गृह्णंति वासकृत् एतत्फलघृतं नाम योनिदोषहरं स्मृतं ८७ विषनिंबाम्लखाब्राह्मीपटोलानां रसेन च कल्केन पक्वं सर्पिस्तु निहन्याद्विषमज्वरान् पांडुकुष्टं विसर्पं च कृमीनर्शांसि नाशयेत् ८८ इति श्री शार्ङ्गधरमध्यखंडे घृतकल्पना नवमोऽध्यायः ९ लाक्षाढकं क्वाथयित्वा जलेस्य चतुराढकैः चतुर्थांशं स्तुतं नीत्वा तैलं प्रस्थमितं क्षिपेत् १ मस्त्वाढकं च गोदध्नः सर्वं तैले विनिःक्षिपेत् शतपुष्पा मश्वगंधा हरिद्रा देवदारु च २ कटुकां रेणुकां मूर्वां कुष्ठं च मधुयष्टिकां चंदनं मुस्तकं रास्नां पृथक्कर्षप्रमाणतः ३ चूर्णयेत्तत्र निक्षिप्य साधयेन्मृदुवन्हिना अस्याभ्यंगात्प्रशाम्यंति सर्वेऽपि विषमज्वराः ४ कासश्वासं प्रतिश्यायं त्रिकपृष्ठग्रहस्तथा।

धर सुधा करे नवमोऽध्यायः ९ अथ घृत तेल साधन प्रकारः लाक्षादि तेल लाही एकाढक आढक तीन सेर छः रुपया भर होता है चारि आढक पानी में काढ़ा करि चौथाई रहै उतारि ले प्रस्थ भर तेल दे प्रस्थ ६४ रुपया भर है १ दही का जल आढक भर दे सौंफ असगंध हर्दी देवदारु २ कटुकी सेंवढी बीज मुर्रा कूट मुलहठी चंदन मोथा रासन कर्ष भर ३ चूरण करि तेल में सिद्ध करै मध्यम आंच से इस तेल के लगाये विषम ज्वर समन होय ४ कास श्वास नाक बहब

मिरगी यक्ष राक्षसी उन्माद ५ खाज पेट पीर दुर्गंध देह फूटन मिटे गर्भिनी मलै तो गर्भ पुष्टि होय ६ वायु पर नारायण तेल असगंध वरियारा वेल पाढ़ा भट कटैया दोनो गुरच कंकई नीम सोहन पत्ती गदा पुरैना ७ गंध प्रसारिणी अरणी ये दश दश पल सब द्रव्य ले चारि द्रोण पानी में पकावै जब एक द्रोण रहै द्रोण १ सेर एक ५– छटांक होता है ८ तब एक आढक तेल में आता वरि का रस एक आढक देइ जो गीली होय तो रस निचोरि कै देइ सूखी हो तौ काढ़ा करिकै देय तेल का चौगुना दूध गऊ का दे ९ तिस में कल्क डारि धीरे धीरे पचावै कूट इलायची चंदन सुगंध वाला जटा मासी

बात पित्त मप स्मार मुन्मादं यक्ष रक्षसं कंडू शूलं च दौर्गंध्यं गात्राणां स्फुटनं जयेत् पुष्ट गर्भा भवेदस्य गर्भिण्यभ्यंग तो ध्रुवं ६ अश्व गंधा बला बिल्व पाटला बृहती द्वयं श्वदंष्ट्रा तिवला निंब श्योना कंच पुनर्नवा ७ प्रसारिण्य ग्निमंथं च कुर्याद्दश पलं पृथक् चतुर्द्रोण जले पक्का पाद शेषं शृतं नयेत् ८ तैला ढके रसं योज्यं शतावर्या रसाढकं क्षिपेत्तत्र च गोक्षीरं तैला त्तस्माच्चतुर्गुणं ९ शनैर्विपाचयेदेभिः कल्कै र्द्वि पलिकैः पृथक् कुष्ठैला चंदनं वाला मांसी शैलेय सैंधवैः १० अश्वगंध बला रास्ना शतपुष्पेंद्र दारुभिः पर्णीच तुष्टये नेव नगरेण प्रसाधयेत् ११ तत्तैलं नाव नेभ्यंगे पाने वस्तौ च योजयेत् पक्षा घातं हनु स्तंभं मन्या स्तंभं गल ग्रहं १२ कुब्जत्वं वधिरत्वं च गति भंगं कटिग्रहं गात्र शोषेंद्रिय ध्वंसं नष्ट शुक्रे ज्वर क्षये १३

छरीला १० सैंधा लौन असगंध वरियारा रासन सौंफ देव दारु शाल पर्णी पृष्ट पर्णी वन उर्दी वन मूंग तगर ये सब दो दो पल लेकै कल्क करि और में साधि लेइ ११ उस तेल की नास देइ और शरीर पै मलै पिचकारी आदि कर्म में देइ पक्षाघात मेढ़ी जकड़ना मन्या गला जकड़ना १२ कूबरा बहिरा लंगड़ा कमर जकड़न देह सूखना नपुंसकत्व ये सब अच्छे होंय और ज्वर क्षय होइ– १३

वा· अंड वृद्ध अंत्र वृद्ध दंत रोग शिरोरुज पसुरी पीड़ा पंगुत्व गृध्रसी २४ बुद्धि हानि विषम वात सब देह की वाई इस तेल के प्रभाव से बंध्या के पुत्र हो
मनुष्य घोड़ा हाथी सब को हित है २५ दृष्टांत जैसे नारायण दुष्ट दैत्यों को नाश करते हैं तैसे यह तेल वात रोगों को नाश करता है २६ वात पर वरि-
यारा तेल वरियारा की जड़ का क्वाथ दश मूल क्वाथ कुरथी क्वाथ यव क्वाथ गरबेरी क्वाथ ये काढ़े और दूध २७ ये सब आठ आठ सेर तेल सेर भर

अंत्र वृद्धं कुरंडं च दंत रोगं शिरो ग्रहं पार्श्व शूलं च पंगुत्वं बुद्धि हानिं च गृध्रसीं २४ हन्याच्च विषमं वातं जयेत्सर्वांग संश्रयं अ-
स्य प्रभावाद्वंध्यापि नारी पुत्रं प्रसूयते २५ मर्त्यो गजो वा तुरगस्तैलादस्मात्सुखी भवेत् यथा नारायणो देवो दुष्ट दैत्यविनाश-
येत् तथैव वात रोगाणां नाशनं तैल मुत्तमं २६ बलामूल कषायेण दशमूल शृतेन च कुलत्थ यव कोलानां क्वाथेन प-
यसा तथा २७ अष्टांश भाग युक्तेन भागमेकं च तैलतः पचेन्न जीवनीयेन शतावर्येंद्र वारुणी २८ मंजिष्ठा कुष्ठ शैलेय तगरा गुरु
सैंधवैः वचा पुनर्नवा मांसी सारिवा द्वय पत्रकैः २९ शत पुष्पा श्वगंधाभ्यां तैलमेत्त्वाच पाचयेत् गुर्विणीनां च नारीणां नराणां
क्षीणरेतसां ३० व्यायाम क्षीणगात्राणां सूतिकानां च युज्यते राजयोग्य मिदं तैलं सुखीनां च विशेषतः बला तैलमिति ख्या-
तं सर्व वात मयापहं ३१ प्रसारिणी पल शतं जलद्रोणे विपाचयेत् पाद शिष्टः शृतो ग्राह्य स्तैलं दधि च तत्समं ३२

जीवनी गण शतावरि इंद्रायन १८ मजीठ कूट छरीला तगर अगर सैंधव वच गदा पुरैना जटामासी सरिवन पिठवन तेजपात २९ सौंफ अस-
गंध इन सब को मिलाइ के पचावै गर्भिणी स्त्री और धातु क्षीण पुरुष ३० अति श्रमी प्रसूती को दे यह तेल राजा और सुखी पुरुषों के कारण
है बला तेल सब वात को हरता है ३१ प्रसारिणी तेल गंधक प्रसारिणी १०० पल ले पसेरी एक एक द्रोण जल में पचावै चौथाई रहे तब उतारि ले

तेल के समान कांजी और तेल का चौगुना दूध तेल का आठवां भाग सब द्रव्य २३ मुलेठी पिपरा मूल सेंधा चीता बच गंध प्रसारिणी देवदारु रासन गजपीपरि २४ भिलावा सौंफ जटामासी इन सब का कल्क तेल में पचावे यह तेल पकावे उत्तम है बात श्लेष्म रोग को जीतता है २५ कुबड़ा अंगभंग पंगु को हित गृध्रसी वायु हनु पृष्ठ शिर ग्रीव कटि इन का जकड़ना दूर करै और कठिन बात रोग नाश करै २६ वायु पर माष तैल उर्द यव

कांजिकं च समं तेन क्षीरं तैलाच्चतुर्गुणं तैलात्तथाष्ट मांशेन सर्व कल्का नियोजयेत् २३ मधुकं पिप्पली मूलं सैंधवं चित्रकं वचा प्रसारिणी देव दारु रास्ना च गज पिप्पली २४ भल्लातः शत पुष्पा च मांसी चैभिर्विपाचयेत् एत तैलं वरं पक्वं बात श्लेष्मामयाञ्जयेत् २५ कुब्ज खंजत्वयं गुल्मं गृध्रसी मर्दितं तथा हनु पृष्ठ शिरो ग्रीवा कटी स्तंभं च नाशयेत् अन्यांश विषमान वातान्सर्वान्नाशु व्यपोहति माषाय बातसी क्षुद्रा मर्कटी च कुरंटकं गो कंटकः टंटु कश्च कुर्यात्सप्त पलं भिषक् २७ चतुर्गुणे बुना पक्का पाद शेषं सृतं नयेत् कर्पासका स्थि वदरं शण वीजं कुलत्थकं २८ पृथक्चतुर्दश पलं चातुर्गुण जले पचेत् चतुर्थांशाव शिष्टं च गृह्णीयात्क्वाथ मुत्तमं २९ प्रस्थैकं छाग मांसस्य चतुः षष्टि पले जले निक्षिप्यं पाचयेद्धीमान्याद शेषं समानयेत् ३० तैल प्रस्थे ततः सर्वान्क्काथा नेतान्विनिःक्षिपेत् कल्कैरेभिश्च विपचेदमृता कुष्ट नागरैः ३१

असी भटकटैया के वांच कुरैया गुखरू सोनाक ये सातो पल पल भर ले २७ चौगुने पानी में पचाइ चौथाई रहे उतारि ले विनवर गूदी वेर सनई बीज कुरथी २८ ये चौदह चौदह पल ले चौगुने पानी में पचाइ चौथाई रहे उतारि ले २९ प्रस्थ भर छाग मांस चौसठ पल जल में पचाय उतारि छानि ले ३० तब प्रस्थ भर तेल में सब क्वाथ और मांस यूश देकै पचावै और यह कल्क भी पचावे गुर्च सोंठि ३१

गद्य पुर्नवा रासन रंड पीपरि सौंफ वरियारा गंध प्रसारिणी जटा मासी कुटकी ३२ ये सब आधा आधा पल धीमी आंच दे उस तैल में पकावै इस तेल से ग्रीव जकड़ना बाहु व्यथा ३३ अर्द्धांग सूखना आक्षेप उरुस्तंभ पतानक सर्वांग कंप शीत रस इस माषादि तैल ते ये रोग दूर होंय सब बात विकार न रहैं ३४ शतावरि तैल शतावरि दूनौ बला दूनौ पर्णी रंड असगंध गुखरू बेल कास कुरैया ३५ सब डेढ २ पल कल्क करि चौगुने जल में पचाइ चौथाई रहे उतारि ले ३६ फिर प्रस्थ भर तेल प्रस्थ भर दूध में पचावै एक प्रस्थ शतावरि रस प्रस्थ भर पानी में पचावै

रास्ना पुनर्नवैरंड पिप्पल्या शतपुष्पया बलाप्रसारिणी श्यांच मांस्याकटुकयातया ३२ पृथगर्द्ध पलैरेभिस्साधयेन्मृदुवह्निना हन्यात्तैलमिदं शीघ्रं ग्रीवास्तंभापबाहुकौ ३३ अर्धांगशोषमाक्षेपमुरुस्तंभापतानकौ शाखाकंपःशिरःकंपविश्वाचीमर्दितं तथा माषादिकमिदं तैलं सर्ववातविकारनुत् ३४ शतावरी बला युग्मं पर्ण्यो गंधर्वहस्तकः अश्वगंधाश्वदंष्ट्राच विल्वकाशःकुरंटकः ३५ एषान्सार्द्ध पलान्भागान्कल्कयेच्च विपाचयेत् चतुर्गुणेन नीरेणपादशेषस्ततं नयेत् ३६ विपाच्य प्रस्थतैलेन क्षीरप्रस्थं विनिक्षिपेत् शतावरिरसप्रस्थं जलप्रस्थंच योजयेत् ३७ शतावरी देवदारु मांसी नगरचंदनं शतपुष्पा बला कुष्ठमेला शैलेयमुत्पलं ३८ ऋद्धिमेदाच मधुकं काकोली जीवकस्तथा सर्वाकर्षसमैःकल्कैस्तैलं गोमयवह्निना ३९ पचेत्तन्मूर्द्धितैलेन नरः स्त्रीषु वृषायते नारी च लभते पुत्रं योनिशूलं च नश्यति ४०

३७ फिर शतावरि देवदारु जटा मासी तगर चंदन सौंफ वरियारा कूट इलाइची छरीला कमल ३८ रिद्धि सिद्धि बिना बराही कंद मेदा विना मुरेठी दुइ बार कही है इससे दूनी लेना काकोली बिना असगंध जीवक बिना वाराही कंद ये सब कर्ष भर ले कल्क करि गोइहा की आंच में पचावै ३९ ऐसे माथे में लगाने से पुरुष स्त्रियों में वृषभ तुल्य रहैं स्त्री पुत्र जनै योनि विकार नाश होय ४०

१८५

क- कंडू पर मदार तैल मदार पत्र का रस हरदी का कल्क सरसों के तेल में पकावै तो खजुरी दाद विचर्ची दूर हो कुष्ठ पर मरिच तैल हरिताल निसो-
थ रक्त चंदन मोथा मैन सिल जटामासी दोनों हरदी देवदारु ५० इंदूरन कनेर कूट मदार का दूध गोबर का रस कर्ष कर्ष भरले ५१ आधा पल सिंगि-
या प्रस्थ भर करुआ तेल गोमूत्र दूना जल दूना दे ५२ इस मरिचादि तैल से कुष्ठ के घाव अच्छे हों श्वेत रक्त काले दाग मिटैं खसरा खुजली कच्छु
दाद भैंसहा दाद सब दूर हों ५३ घाव पर त्रिफला तैल त्रिफला नीम चिरायता दोनों हरदी रक्त चंदन इन का बना तैल लगाने से मनुष्य को बहुत

अर्क पत्र रसे पक्वं हरिद्रा कल्क संयुतं सार्षपस्तार्षपं तैलं पामा कच्छू विचर्चि नुत् ४९ मरिचं हरितालं च त्रिवृता रक्त चंदनं मु-
स्तामनःशिला मांसी द्वे निशे देव दारु च ५० विशाला करवीरं च कुष्ठ मर्क पयस्तथा तथैव गोमय रसं कुर्यात्कर्ष मितं पृथक् ५१
विषं चार्ध पलं देयं प्रस्थं च कटु तैलकं गोमूत्रं द्विगुणं दत्वा जलं च द्विगुणं भवेत् ५२ मरिचाद्यमिदं तैलं सिद्धं कुष्ठ व्रणाप-
हं जयेच्छ्वित्राणि सर्वाणि पुंडरीकं विचर्चिकां पामां सिध्मानि रकसां दद्रू कच्छू विनाशयेत् ५३ त्रिफला त्रिवृ भूनिंबं द्वे निशे रक्त
चंदनं एतैः सिद्धं मनुष्याणां तैलमभ्यंजने हितं ५४ भावयेन्निंब बीजानि भृंगराज रसे न हि तथासनस्य तोयेन तत्तैलं हंति न
स्यतः अकाल पलितं सर्वं पुंसां दुग्धान्न भोजनं ५५ यष्टी मधुक क्षीराभ्यां नवधात्री फलैः स्रुतं तैलं नस्यो कृतं कुर्यात्केशान्स
प्तीणि संघनः ५६ करंज स्नुक् जाति करवीर प्रसाधितं तैलमेभिः कृतं हन्यादभ्यंगादिंद्रलुप्तकं ५७

गुण है ५४ पलित पर निंब तैल नींब बीज की मिंगी भंगरा रस में भावना दे फिर आसन रस में दे उस का तेल निकारि नास ले तो अकाल के पके
बाल काले हों दूध भात पथ्य दे ५५ पुन तैल मुरेठी सो आंवरे का कल्क चौगुना तैल दे पकावै फिर चौगुना पानी दे पकावै केवल तैल रहे तब
उतारि ले इस के नास से केश सघन हों ५६ करंज तैल इंद्र लुप्त पर कंजा चीता चमेली कनेर से तैल पकाइ लगावै तो बाल झरना दूर होइ ५७

शा· टी· द्वि· १५९

पलित पर नीलकादि तेल नील केतकी मूल भंगरा कटसरैया अर्जुन फूलन का हार ८९ चमेली काले तिल तगर कमल का सर्वांग लोहचूर
आस कंगनी अनार की छाल गुर्च ८९ त्रिफला कमल की जड़ की माटी कर्ष कर्ष भर सब द्रव्य ले के उस में तेल पकावे त्रिफले का काथ सके
त ९० भांगरे का रस भी डारि सिद्ध करि तेल लगावे बाल स्थिर होंय अकाल पलित अरुंषिका दारुण उपजिह्वक शिर रोग ये सब अच्छे हों
९१ पलित पर भृंगराज तेल भांगरे के रस में लोहचून वा कीट त्रिफल सारिवा इन के कल्क में तेल पकावे दारुण नाश हो पलित खाज इंद्रलुप्त

नीलिका केतकी कंदं भृंगराजः कुरंटकः तथार्जुनस्य पुष्पाणि बीजकः समनापि च ८९ कृष्णास्तिलाश्च तगरं समूलं कमलं
तथा अयोरजः प्रियंगुश्च दाडिमत्वग्गुडूचिका त्रिफलापद्मपंकश्च कल्कैरेतैः पृथक् पृथक् कर्षमानैः पचेत्तैलं त्रिफला
क्वाथसंयुतं ९० भृंगराजरसेनैव सिद्धं केशस्थिरीकृतं अकालपलितं हंति दारुणं चोपजिह्वकं ९१ भृंगराजरसेनैव लोह
कीटं फलत्रिकं सारिवं च पचेत्कल्कैः तैलं दारुणनाशनं अकालपलितं कंडूमिंद्रलुप्तं च नाशयेत् ९२ इरिमेदत्वचस्तुलां
पचेत्पलशतोन्मितं जलद्रोणेन तत्क्वाथं गृह्णीयात्पादशेषितं ९३ तैलस्यार्धाढकं दत्वा कल्कैः कर्षमितैः पचेत् इरिमेदल
वंगाभ्यां गैरिकागुरुपद्मकैः ९४ मंजिष्ठा लोध्रमधुकं लाक्षान्यग्रोधमुस्तकैः त्वग्जातीफलकर्पूरकंकोलखदिरैस्तथा ९५
पतंगधातकीपुष्पं सूक्ष्मैला नागकेशरं कट्फलेन च संसिद्धं तैलं मुखरुजं जयेत् ९६

मिटै ९२ मुख दंत रोग पर इरिमेदादि तेल खैर छाल १०० पल कूट के द्रोण भर जल में पकावे चौथाई रहे उतारि ले ९३ आधा आढक
तेल दे खैर लौंग गेरू अगर पद्माख ९४ मजीठ लोध मुलेठी लाही वट की जड़ मोथा तज जायफल कपूर कंकोल खदिर सार ९५ पतंग धौ
पुष्प इलायची नागकेसर ये सब कर्ष कर्ष भर ले इस में तेल पकावे लगावे तो मुख रोग दूर हों ९६

दे तीसरे दिन काढ़ै सो मधु शुक्त है ७५ पीनस पर पाठादि तेल पाढ़ा दूनो हलदी मुर्रा पीपरि चमेली पत्र दतूनि इन के तेल से दुष्ट पीनस अच्छा होय
७६ नाक रोग पर भटकटैया तेल: भटकटैया दतूनि वच सहिंजन तुलसी सोंठि मिरच पीपरि सैंधव इन के तेल से नाक से पीप गिरना और नाक
रोग दूर होंय ७७ छिंका पर कूट तेल कूट बेल पीपरि सोंठि दाख इन का काढ़ा और कल्क करि तेल वा घी में पचाइ नास लेइ तौ छींक रोग
दूर हो ७८ नासार्श पर गृहधूमादि तेल रसोई के स्थान का कर डुआं पीपरि देवदारु जवाखार करंज सैंधव चिपड़ा बीज इन का तेल नाक

धान्यराशौ त्रिरात्रस्थं मधुशुक्तं मुसा हितं ७५ पाठा द्वे च निशे मूर्वा पिप्पली जाति पल्लवैः दंत्या च तैलं संसिद्धं नस्यं स्याद्दुष्टपी
नसे ७६ व्याघ्री दंती वचा शिग्रु तुलसी व्योष सैंधवं कफस्य पाचनं तैलं पूतिनासागदापहं ७७ कुष्ठ बिल्व कणा शुंठी तै
लं नासार्शसां हितं ७८ वज्रक्षीरं रविक्षीरं धत्तूरं चित्रकं माहिषी विटभवरसं सर्वांशं तिल तैलकं ७९ पचेत्तैलावशे
षं तद्गोमूत्रे च चतुर्गुणे तैलावशेषं पक्तं च तत्तैलं प्रस्थमात्रकं ८० गंधकाग्नि शिलातालं विडंगानि विषा विषं विक्र
को शातकी कुष्ठं वचा मांसी कटुत्रयं ८१ पीतदारुद्वय ष्याह्व खर्जिका सीरजीरकं देवदारु च कर्षांशं चूर्णं तैले विमिश्रये
त् वज्रतैलमिति ख्यातम भ्यंगात्सर्वकुष्ठनुत् ८२ सिद्धं शिखकारिष्ठो द्राक्षा कल्कः कषायवान् साधितं तैलमाज्यं वा नस्या
त्स्रावयुनाशनं ८३ गृहधूमकणा दारुक्षारनक्ताह्व सैंधवैः

रोग हर्ता हित है ७९ सब कोढ़ पर छमिया सेंहुंड का दूध मदार का दूध धतूरे और चीते का रस भैंस के गोबर का रस तिल तेल ८० में ये सब पचाइ
तेल रहे तब चौगुनो गोमूत्र दे फिर पचाइ तेल रहै तब प्रस्थ भर तेल में ८१ गंधक भिलावा चीता मैनसिल हरताल विडंग दूनो अतीस कडुतोर
ई कूट जटामासी वच त्रिकुटा ८२ दारु हरदी मुरेठी सज्जी जीरा देवदारु ये सब कर्ष कर्ष भर पीसि तेल सिद्ध करै इस वज्र के तेल लगाने से सब कुष्ट

वा॰ कनेर का तेल रोम सातन पर कनेर मूल दंतीमूल निशोथ कटु तुंबई केला क्षार और केले के पानी में तेल सिद्ध करि लगावे तो बाल गिर परें ८४ इति तेल कल्पना नवमोध्याय: ९ अथ सब कल्पना उदकादि द्रव्य वस्तु में औषधि देके पात्र में भरि मुंह मूंदि मास भरि रखने से औषधि उत्तम होती हैं उसे आसव या अरिष्ट कहते हैं आसव अरिष्ट में दो भेद हैं १ उदकादि पदार्थ में जो औषधि पूर्वोक्त रीति से सिद्ध करै उसे आसव कहिये जो कोई द्रव्य के क्वाथ में उसी रीति से सिद्ध करै उसे अरिष्ट कहिये इस के खाने की मात्रा ४ रुपये भर है २ जहां

करवीरसिफादंतीत्रिवृत्कोशातकीफलं रंभाक्षारोदके तैलं प्रशस्तं लोमशातनुत ८४ इति श्रीशार्ङ्गधरे तैलकल्पना नवमोऽध्याय: ९ द्रवेषु चिरकालस्थं द्रव्यं यत्संधितं भवेत् आसवारिष्टभेदैस्तत्प्रोच्यते भेषजोचितं १ यदपक्वौषधांबुभ्यां सिद्धं मद्यस आसव: अरिष्ट: क्वाथसिद्ध: स्यात्तयोर्मानं पलोन्मितं २ अनुक्तमानारिष्टेषु द्रवद्रोणे तुलां गुडं क्षौद्रं क्षिपेद्गुडादर्धं प्रक्षेपं दशमांशिकं ३ ज्ञेय: शीतरस: सिंधुरपक्वमधुरद्रवै: सिद्ध: पक्वरस: सिंधु: संपक्वमधुरद्रवै: ४ परिपक्वान्नसंधानसमुत्पन्नां सुरां जगु: सुरामंड: प्रसन्ना: स्यात्तत: कादंबरी घन: ५ तदधो जगलो ज्ञेयो मेदको जगलाद्घन: पक्वसो हृतसार: स्यात्सुराबीजं च किण्वक: ६ यत्तालखर्जूररसै: संधितं स्याद्धि वारुणी

अरिष्ट में द्रव्य की तोल होय तो जलादि पदार्थ द्रोण भर दे गुड तुला भर सहत अर्द्ध तुला और द्रव्य का चूर्ण गुड का दशांश दे अरिष्ट करै ३ सिंधु का भेद कहते हैं जो कच्चे ऊख रसादि मधुर पदार्थ में सिद्ध करै उसे शीत रस सिंधु कहिये जो पकाई के रस में सिद्ध करै उसे पक्व रस सिंधु कहिये ४ सुरा प्रसन्नादि भेद करि अग्नि बल यंत्र से उतारे उसे सुरा कहिये उस के फेन को प्रसन्ना कहिये फेनरहित जो नीचे रहै उसे कादंबरी कहिये घन भी कहिये ५ सुरा के नीचे रहै उसे जगल कहिये जगल के घने भाग को मेदक मस्त कहिये मेदक पकाने से जो सारान करै उसे सुराबीज

भा·
टी·
हि·
२६३

ताड वा खजूर का रस अग्नि यंत्र योग करि वा कच्चा लेप सिद्ध करै सो वारुणी है कंद मूल फल घृत तैलादि स्नेह लवण ७ ये सब द्रव्य पदार्थ में अग्नि वा यंत्र योग से मथनि करै उसे सूक्त कहिये ८ जो विनष्ट कहैं चलित रस लो केद नीर सो खमीर उठी मद्य वा तुरंत मधुर द्रव में द्रव्य चूर्ण करि संधित करी मास भर को उसे चुक्र कहिये वा गुड पानी तेल कंद मूल फल ९ इन्हें पूर्वोक्त रीति कर मास भर में सिद्ध करै उसे गुड सूक्त कहिये इसी प्रकार ऊख रस का और दाख का सूक्त होता है १० यव पानी युक्त एक दिन संधित करै उसे तुषांतु कहिये और यव भूसी पानी में

कंदमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च ७ यत्र द्रवेभिषूयंते तत्सूक्तमभिधीयते विनिष्टमम्लतां [illegible] मद्यं वा मधुरद्रवः द्रवि
नष्टे संधितो यस्तु तच्चुक्रमभिधीयते गुडांबु मास तैलेन कंद शाक फलैस्तथा ९ संधितं चाम्लतां जातं गुडसूक्तं प्रचक्षते एवमेवेक्षु
सूकस्यान्मृद्वीकासंभवं तथा १० तुषांबु संधितं ज्ञेयं मामैर्विदलितैर्यवैः यवैस्तु निस्तुषैः पक्वैः सौवीरं संधितं भवेत् ११ कु
ल्माषधान्यमंडादि संधितं कांजिकं विदुः संडाकी संधिता ज्ञेया मूलकैः सर्षपादिभिः १२ उशीरं बालकं पद्मं काश्मीरी नील
मुत्पलं प्रियंगु पद्मकं लोध्रं मंजिष्ठा धन्वयासकं १३ पाठा किराततिक्तं च न्यग्रोधोदुंबरः शटी पर्पटं पुंडरीकं च पटोलं कां
चनारकं ॥ १४ ॥

१४

रिकाय एक दिन संधित राखै उसे सौवीर कहिये ११ कुरथी वा चावल पानी में रिझावे उसे मांड कहिये उस मांड में सोंठि राई जीरा हींग लोन डारि तीन चारि दिन संधित राखै उसे कांजी कहिये मूरी उबाले पानी में हींग सरसों जीरा सेंधा अदरक डारि चारि पांच दिन राखै उसे संडाकी कहिये इस भांति आसव अरिष्ट बनता है १२ रक्त पित्त पर खस सब खस सुगंध वाला कमल पत्र खंभारी नील कमल पद्माख माल कंनी लोध मजीठ जवासा १३ पाढा चिरायता कदु की बद जय गुलरी कचूर पित्त पापडा स्वेत कमल पमोल कचनार ॥ १४

वा॰ जामुनि सेमर का गोंद ये सब पल पल भरले चूरण करि दाख बीस पल देइ २५ धव फूल सोरह पल डुइ द्रोण जल तुला भर शक्कर तुला भर सहत २६ जटा मासी और मिर्च इन का धुवां दे बासन में सब औषधि भरि महीना भरि राखै इसे उसी रासव कहते हैं रक्त पित्त को नाश करता है पांडु कुष्ट प्रमेह अर्श कृमि सूजन ये रोग भी अच्छे होंय २७ छर्दि पर पीपरि आसव पीपरि मरिच चाव हरदी चीता मोथा विडंग सुपारी लोध पाढा आंवरा छरीला २८ खस सुपेद चंदन कूट लवंग तगर जटा मासी दाल चीनी इलाइची तेज पात पुष्प प्रियंगु वा गोंदी नाग केसर

जंबूशाल्मलिनिर्यासं प्रत्येकं पलसंमितं भागान्सुचूर्णितान्कृत्वा द्राक्षाया पलविंशतिः २५ धातकी षोडशपलं जलद्रोणद्वये क्षिपेत् शर्करायास्तुलां दत्वा क्षौद्रस्यैकतुलां तथा २६ मासैकं स्थापयेद्भांडे मांसी मरिच धूपिते उशीरासवइत्येष रक्तपित्तविनाशनः पांडुकुष्टप्रमेहार्शःकृमिशोथहरस्तथा २७ पिप्पली मरिचं चव्यं हरिद्रा चित्रको घनः विडंगकमलो लोध्रपाठाधात्र्येलवालुकं २८ उशीरं चंदनं कुष्टं लवंगं तगरं तथा मांसी त्वगेलापत्रं च प्रियंगुर्नागकेशरं २९ एषामर्द्धपलान्मानं सूक्ष्मचूर्णीकृतान्सुभान् जलद्रोणद्वये क्षिप्त्वा दद्याद्गुडतुलात्रयं ३० पलानि दश धातक्या द्राक्षाषष्टिपलान्क्षिपेत् एतान्येकत्र संयोज्य मृद्भांडे विनिक्षिपेत् ३१ ज्ञात्वा गतरसं तस्य भाषये दग्न्यपेक्षया क्षयं गुल्मोदरं कार्श्यं ग्रहणीं पांडुतागरं अर्शांसि नाशयेच्छीघ्रं पिप्पल्याद्यासवस्त्वयं ३२ लोहचूर्णं त्रिकटुकं त्रिफला च यवानिका विडंगं चित्रकं मुस्तं चतुःपलमितं पृथक् ३३

२९ आधा आधा पल लेके महीन बुकनी करि जल द्रोण दोमें डारि तीन तुला गुड देय ३० दश पल धौ पुष्प साठि पल दाख ये सब माटी के वासन में एक मास राखै ३१ जब जानै सब औषधि एक तन हो गई तब खिलावे अग्नि बल देखि कै तो छर्दि पेट रोग दुर्बलता ग्रहणी पांडु अर्श यह पीपरि आसव इन रोगों को जल्दी दूर करै ३२ पांडु पर लोह आसव लोह चून त्रिकुटा त्रिफला अजवाइन विडंग चीता मोथा सब द्रव्य चारि

इन सब का चूर्ण करै चौसठ पल सहत तुला भर गुड़ दे दुइ द्रोण जल दे २४ घृत पात्र में एक मास राखि यह वन्हि कर लोह आसव पीने से २५ पांडु शरीर फूलना गुल्म अर्श कुष्ट पिलही खाज कास श्वास भगंदर अरुचि संग्रहणी हृदिरोग ये रोग नाश होंइ २६ ज्वर पर कुरैया रिष्ट कुरैया छाल दाख आधा तुला महुआ खंभारी छाल दश दश पल २७ चारि द्रोण पानी में पचाय द्रोण भरि रहै उतारि ले बीस पल धवफूल

चूर्णीकृत्य ततः क्षौद्रं चतुःषष्टिपलं क्षिपेत् दद्याद्गुडतुलां तत्र जलद्रोणद्वयं तथा २४ घृतभांडे विनिक्षिप्य विदध्यान्मासमात्रकं लोहासवमिदं मर्त्यः पिवेद्वन्हिकरं परं २५ पांडुश्वयथुगुल्मानि जठराण्यर्शसां रुजं कुष्ठप्लीहामयं कंडूं कासश्वासं भगंदरं २६ अरोचकं च ग्रहणीं हृद्रोगं च विनाशनं तुला कुटजमूलस्य मृद्वीकार्धतुलां तथा मधूकपुष्पकाश्मर्या भागान्दशपलोन्मितान् २७ चतुर्द्रोणेंभसः पक्त्वा क्वाथये द्रोणशेषिते धातक्या विंशतिपलं गुडस्य च तुलां क्षिपेत् २८ मासपात्रं स्थिते भांडे कुटजारिष्टसंज्ञकः ज्वरान्प्रशमयेत्सर्वान्कुर्यात्तीक्ष्णं धनंजयं २९ विडंगं ग्रंथिकं रास्ना कुटजत्वक्फलानि च पाटलं वालुकं धात्री भागान्यंच पलान्पृथक् ३० अष्टद्रोणेंभसः पक्त्वा कुर्याद्द्रोणावशेषितं पूते शीते क्षिपेत्तत्र क्षौद्रं पलशतत्रयं ३१ धातकी विंशतिपलं त्रिजातं द्विपलं तथा प्रियंगु कांचनाराणां सलोध्राणां पलं पलं ३२

तुला भर गुड़ डारि २८ माटी के पात्र में मास भर राखै यह कुटजारिष्ट सब ज्वर दूरि करि अग्नि तीक्ष्ण करै २९ विद्रधी पर विडंगारिष्ट विडंग पीपरा मूल रासन कुरैया छाल एक एक पल पाढ़ा येला वालछड़ आंवरा ये पांच पांच पल ३० आठ द्रोण जल में औटाव द्रोण भर रहै उतारि ले ठंढा भये तीन सै पल सहत ३१ बीस पल धव फूल तज पत्रज इलाइची द्वै पल गोंदी कचनार लोध पल पल भर ३२

त्रिकुटा आठ पल चूरण करि करिके डारे घृत भाजन में एक मास भर राखे ३३ जैसा अग्नि बल देखे तैसा पिलावे तो विद्रधी दूर हो उरुस्तंभ पथरी प्रमेह प्रत्यष्ठीला भगंदर गंडमाला हनुस्तंभ इस विडंगारिष्ट से ये रोग अच्छे होंय ३४ प्रमेह पर देवदारु आरिष्ट अर्द्ध तुला देवदारु रूसा २० पल मजीठ इंद्रजव दन्ती तगर दोनों दार्वी ३५ रासन विडंग मोथा सिर्स खैर अर्जुन दश दश पल अजवायन कुरैया ३६ चंदनगुर्च

व्योषस्य चपलात्र्यंशो चूर्णीकृत्य प्रदापयेत् घृतभांडे विनिःक्षिप्य मासमेकं निधापयेत् ३३ ततः पिबेद्यथाग्निं च जयेद्विद्रधिमुत्थितं उरुस्तंभाश्मरीमेहान्प्रत्यष्ठीला भगंदरान् ३४ तुलार्द्धं देवदारुः स्याद्वासा च पलविंशतिः मंजिष्ठेंद्रयवा दंती तगरं रजनी द्वयं ३५ रास्ना कृमिघ्नं मुस्तं च शिरीषं खदिरार्जुनं भागान्दश पलान्दद्यात् यवान्या वत्सकस्य च ३६ चंदनस्य गुडूच्याश्च रोहिणी चित्रकस्य च भागान्सप्त पलान्येतानष्टद्रोणेंभसः पचेत् ३७ द्रोणशेषे कषाये च पूते शीते प्रदापयेत् धातक्याः षोडश पलं माक्षिकस्य तुलात्रयं ३८ व्योषस्य द्विपलं दद्यात्त्रिजातस्य चतुःपलं चतुष्पलं प्रियंगोश्च द्विपलं नागकेशरं ३९ सर्वाण्येतानि संचूर्ण्य घृतभांडे निधापयेत् मासादूर्ध्वं पिबेदेनं प्रमेहं हंति दुर्जयं ४० वातरोगान्ग्रहण्यर्शो मूत्रकृच्छ्राणि नाशयेत् देवदार्व्यादिको रिष्टः ददुकुष्ठनिवारणः ४१

कडुकी चीता आठ आठ पल पानी ८ द्रोण में पकावे ३७ जब द्रोण भर रहै तो ये औषधि डारे धौ पुष्प १६ पल तीन तुला सहत ३८ त्रिकुटा दो पल तज पत्रज इलायची ४ पल प्रियंगु ४ पल नागकेसर २ पल ३९ इन सब का चूरण घी के बरतन में मास भर राखे फिर पिवै तो दुर्जय प्रमेह को हने ४० बात रोग ग्रहणी अर्श मूत्र कृच्छ्र नाशै इस देवदारु आरिष्ट से दद्रु कुष्ट अच्छा हो ॥ ४१॥

वा· कुष्ठ पर खदिराद्य खैर आधी तुला देवदारु आधी तुला बकुची १२ पल हल्दी २० पल ४२ त्रिफला २० पल आठ द्रोण जल में पचावै द्रोण रहे ठं-
ढा करि के औषधि डारै ४३ सहत दो तुला खांड २ तुला धव फूल २ पल कंकोल नागकेसर ४४ जाय फल लौंग इलायची तज पत्रज ये
सब पल भर पीपरि ४ पल ४५ घी के बासन में मास भर राखि कै पिये से महाकुष्ठ हृद्रोग पांडु अर्बुद ४६ गुल्म ग्रंथि कास पिलही ये सब जा-
य यह एक खदिरारिष्ट सब कुष्ठ को खोता है ४७। छर्दि पर बबूलारिष्ट बबूर छाल २ तुला ४ द्रोण पानी में पचाइ द्रोण भर राखि ठंढा करि

खदिरस्य तुलार्द्धं तु देवदारु च तत्समं बाकुची द्वादश पला दार्वी स्यात्पल विंशतिः ४२ त्रिफला विंशति पला चाष्ट द्रोणेंभसः
पचेत् कषाये द्रोण शेषेण पूते शीते विनिक्षिपेत् ४३ तुला द्वयं माक्षिकस्य तुलैका शर्करा मता धातक्या विंशति पलं कंकोलं
नागकेशरं जाती फलं लवंगैला त्वक्पत्राणि पृथक् पृथक् पलोन्मितानि कृष्णाया स्यात्पल चतुष्टयं ४५ घृत भांडे विनिक्षिप्य
मासादूर्ध्वं पिबेन्नरः महाकुष्ठानि हृद्रोगं पांडुरोगार्बुदानि च गुल्म ग्रंथींश्च मीन्कासं तथा प्लीहोदरं जयेत् एषो वै खदिरारिष्टः स
र्व कुष्ठ निवारणः ४७ तुला द्वयं च बब्बूलं चतुर्द्रोणे जले पचेत् द्रोण शेषे रसे शीते गुडस्य च तुलां क्षिपेत् धातकी षोडश पलां
कृष्णां द्विपलिकां तथा जाती फलानि कंकोलं त्वगेला पत्र केसरं ४८ लवंगं मरिचं चैव पलिकान्युप कल्पयेत् मासं पात्रं स्थि
तं स्थाप्यं बब्बूलारिष्टको जयेत् ५० क्षयं कुष्ठ मतीसारं प्रमेहं श्वास कास जित् द्राक्षा तुलार्द्धं द्विद्रोणे जलस्य विपचेत्सुधी
५१ पाद शेषे कषाये च पूते शीते विनिःक्षिपेत् गुडस्य द्वितुलां तत्र त्वगेला पत्र केसरं ५२

तुला भर गुड दे ४८ धव फूल १६ पल पीपरि २ पल जाय फल सीतल चीनी तज पत्रज केसर ४९ लौंग मरिच ये पल पल भर पीसि के
डारि मास भर माटी के पात्र में राखि इस बबूरारिष्ट से ५० छर्दि कुष्ठ अतीसार प्रमेह श्वास कास सब दूर हों ऊरुस्तंभ पर द्राक्षारिष्ट आधी
तुला दाख २ द्रोण जल में पचाइ ५१ चौथाई राखि ठंढा करि ये औषधि डारै गुड २ तुला तज इलायची पत्रज केसर ॥ ५२॥

वा॰ पुष्प प्रियंगु अथवा मकरा मरिच पीपरि विडंग ये सब एक एक पल माटी पात्र में धरि एकंग करि ५३ मुंह पर वासन के मुद्रा करि मास भरि राखै तब पियै तौ उरुक्षत क्षई कास गले के भीतर का रोग दूर होय ५४ यह द्राक्षा रिष्ट बल करै मल शोधै रोहिता रिष्ट अंश पर हर हारी कुश १ तुला ४ द्रोण पानी में पचावै ५५ चौथाई रहै उतारि ठंढा करि गुड़ २०० पल दे धव पुष्प १६ पल १६ सोंठि पीपरि पीपरा मूल चाव चीता पत्रज इलायची तज पत्रज त्रिफला ये पल पल भर ले चूर्ण करि सब द्रव्य वासन भरि धरै ५७ महीना भर पीछे पियै तौ कांच के रोग

प्रियंगु मरिचं कृष्णां विडंगं चेति चूर्णयेत् पृथक्पलोन्मितैर्भागैस्ततो भांडे निधापयेत् ५३ समंततो मर्दयित्वा पिबेज्ज्ञात्वा रसं ततः उरःक्षतं क्षयं हंति कास श्वास गलामयान् ५४ द्राक्षारिष्टः स्मृतः प्रोक्तो बलकृन्मलशोधनः रहीतक तुलामेकां चतुर्द्रोणे जले पचेत् ५५ पादशेषे रसे पूते शीते पलशतद्वयं दद्याद्गुडस्य धातक्याः पलषोडशकं मतं ५६ पंचकोलं त्रिजातं च त्रिफलां च विनिक्षिपेत् चूर्णयित्वा पलांशेन ततो भांडे निधापयेत् ५७ मासादूर्ध्वं च पिबतां गुल्मजायांति संक्षयं ग्रहणी पांडु हृद्रोग प्लीह गुल्मोदरज्वरान् कुष्ठ शोफारुचिहरो रोहितारिष्ट संज्ञकः ५८ दशमूलानि कुर्वीत भागैः पंचपलैः पृथक् पंचविंशत्पलं कुर्याच्चित्रकं पौष्करं तथा ५९ कुर्याद्विंशत्पलं लोध्रं गुडूचीं तत्समां भवेत् पलैः षोडशभिर्धात्री रविसंख्यैर्दुरालभा ६० खदिरो बीजसारश्च पथ्या चेति पृथक्पलैः अष्टभिर्गुणितं कुष्ठं मंजिष्ठा देवदारु च ६१ विडंगं मधुकं भार्गी कपित्थोक्ष पुनर्नवा चव्यं मांसी प्रियंगुश्च सारिवा कृष्ण जीरकं ६२ ॥

ग्रहनी पांडु हृद रोग पिलही गुल्म और कुष्ट शोथ अरुचि दूर रोहिता रिष्ट से दूर होय ५८ क्षई प्रमेह पर दश मूला रिष्ट दश मूल पांच पांच पल चीता पुष्कर मूल पच्चीस पच्चीस पल ५९ लोध २० गुर्च २० आंवरा १६ जवासा १२ पल ६० खैर बिजै सार हड़ आठ पल कूट मजीठ देवदारु ६१ विडंग भारंगी कैथा बहेरा गदापुरैना चाव जटामासी मकरा सरिवन कृष्ण जीरा ६२

वा· निशोथ मेवड़ी का बीज रासन पीपरि सुपारी कचूर हर्दी सौंफ पद्माक नागकेसर ६३ मोथा इंद्रजव सोंठ दूनों कट सैंया मेदा महा मेदा काको· ली रिद्धी वृद्धी ६४ ये सब दो दो पल सर्व औषधीन का अठ गुना जल औटावै जब चौथाई रहि जाय तब उतारि माटी के पात्र में धरै ६५ दा· ख साठ पल चौगुना जल दे औटे चौथाई जैं तीन चरण रहै तब ठंढा करि पहिले क्वाथ साथ मिलावै ६६ सहत पल ३२ गुड़ पल ४०० धवपु

त्रिवृता रेणुका चाला पिप्पलीक्रमुकः शठः हरिद्रा शालः पुष्पा च पद्मकं नागकेसरम् ६३ मुस्तमिंद्रयवं शुंठी जीवकर्षभ· कौ तथा मेदा चान्या महा मेदा काकोल्यौ ऋद्धि वृद्धि के ६४ कुर्यान्पृथग्द्विपलिकान्यष्ट गुणे जले चतुर्थांश स्रुतं नी· त्वा भृङ्गांडे संनिधापयेत् ६५ ततः षष्टि पलां द्राक्षां पचेन्नारे चतुर्गुणे त्रिपाद शेषं शीतं च पूर्व क्वाथे स्रुतं क्षिपेत् ६६ द्वात्रिं शत्पलिकं क्षौद्रं दद्या द्गुड चतुः शतं त्रिंशत्पला नि धातक्या कंकोलं जल चंदनं ६७ जाती फलं लवंगं च त्वगेला पत्र केशरं पिप्पली चेति संचूर्ण भागे द्विपलिकैः पृथक् ६८ शाणमात्रां च कस्तूरीं सर्व मेकत्र निक्षिपेत् भूमौ निखातयेद्भांडे ततो जा· त रसं पिबेत् ६९ कतकस्य फलं क्षिप्त्वा रसं निर्मलतां नयेत् ग्रहणी मरुचिं शूलं श्वास कास भगंदरं ७० वात व्याधिं क्षयं छर्दि पांडु रोगं च कामलां कुष्टान्यर्शांसि मेहांश्च मंदाग्निं पदरा णि च ७१

के फूल पल ३० शीतल चीनी खस वा चंदन ६७ जायफल लौंग तज इलाइची पत्रज केसर पीपरि इन सब का चूर्ण दो दो पल ६८ कस्तूरी चा· र मासे सब इकट्ठे करि उसी में डारि धरती खोदि गाड़े उस में का रस पिये ६९ निर्मली रुगर के डारे तो रस निर्मल हो जाइ इस के पान करनेसे ग्रहणी अरुचि शूल श्वास कास भगंदर ७० बात व्याधि क्षयई छर्दि पांडु कमल कुष्ट अर्श प्रमेह और मंदाग्नि उदर रोग ७१

वा० सिक्ता प्रमेह पथरी मूत्र छच्छ्र धातु क्षय ये रोग जांय दुर्बल मोटा होय बांझ पुत्र जने यह दश मूलारिष्ट तेज धातु बल देता है ७२ इति शार्ङ्गधर सुधा करे दशमोध्यायः १० स्वर्णादि धातु शोधन सोना चांदी तांबा सीसा रांगा लोह इन सातों धातुन के शोधने की रीति कहते हैं १ सोना चांदी पीतर तांबा लोहा पांचों के सूक्ष्म पत्र बना आगि में लाल तपाइ तेल मट्ठे कांजी में बुझाइ २ गो मूत्र में कुरथी क्वाथ में इन सब में तीन तीन वार बुझावे इसी भांति स्वर्णादि धातु शुद्ध होती हैं ३ सीसा रांगा जस्ता ये गलाइ के पूर्वोक्त पदार्थन में तीन तीन वार

शर्करामश्मरीं मूत्रकृच्छ्रं धातुक्षयं जयेत् कृशानां पुष्टिजननो वंध्यानां गर्भदः परं अरिष्टो दशमूलाख्यस्तेजः शुक्रबलप्रदः ७२ इति श्री शार्ङ्गधरेणविरचितं संधान कल्पना दशमोध्यायः १० स्वर्णतारारताम्रारि नागवंगौ च तीक्ष्णं धातवः सप्तविज्ञेयाः स्ततस्तान्शोधयेद्बुधः १ स्वर्णतारारताम्रायःपत्राण्यग्नौ प्रतापयेत् निषिंचेत्तप्ततप्तानि तैले तक्रे च कांजिके २ गोमूत्रे च कुलित्थानां कषाये च त्रिधा त्रिधा एवं स्वर्णादिलोहानां विशुद्धिः संप्रजायते ३ नागवंगौ प्रतप्तौ वा गलितौ तौ निषेचयेत् त्रिधा त्रिधा विशुद्धिः स्याद्रवि दुग्धेन च त्रिधा ४ स्वर्णास्याद्द्विगुणं सूतमम्लेन सह मर्दयेत् तद्गोलक समं गंधं निदध्यादधरोत्तरं ५ गोलकं च ततो रुध्वा शरावदृढसंपुटे त्रिंशद्वनोपलैर्दद्यात्पुटान्येवं चतुर्दश ॥ ६ ॥

बुझावे फिर तीन वार मदार दूध में बुझावै ४ सोना मारने की विधि शुद्ध सोना जितना दूना शुद्ध पारा नींबू के रस में घोटि गोली करि गोली समान गंधक पीसि तरे ऊपर धरै ५ मट्टी के दो सरवा ले एक नीचे में गोला धरि दूसरा ऊपर ढकै उस पर कपरौटी करि बिनवां कंडा की आंच देइ इसे सराव संपुट कहते हैं इसी प्रकार आगि से निकारि संपुट करि चौदह बार आंच देइ ॥ ६ ॥

धों प्रति आंच दे गंधक देने से स्वर्ण भस्म निर्भय होती है पुन विधि सोने की १६ मासे सोना गलाइ मासा भरि सीसा डारि उतारि ठंढा करि ७ चूरण करै नीबू के रस में गोला बांधे नीचे ऊपर गंधक धरि ८ गोले के समान सराव संपुट करि ३० गोइठा की आंच दे तब सोना रुस्थ भस्म हो ९ तीसरा कचनार के रस में पारा गंधक समान मिलाय खरल करै जब कजली हो तब सोने के पत्र पर लगावै १० फिर कचनार की छाल पीसि के उस गोले पर बहुत सील पेटे फिर दो घरिया मिट्टी की बना एक में धरि दूसरी ऊपर ढक ११ कस के कपरौटी करि सुखाय

निरुत्थं जायते भस्म गंधो देयः पुनः पुनः कांचने गलिते नागं षोडशांशेन निः क्षिपेत् ७ चूर्णयित्वा तथा म्लेन घृष्ट्वा कृत्वा च गोलकं गोलकेन समं गंधं दत्वा चैवाधरोत्तरं ८ सराव संपुटे धृत्वा पुटे त्रिंशद्वनोपलैः एवं सप्त पुटे हेम निरुत्थं भस्म जायते ९ कांचनार रसे घृष्ट्वा सम सूतक गंधकं कज्जली हेम पत्राणि लेपयेत्सम मानया १० कांचनारत्वचः कल्कैः मूषा युग्मं प्रकल्पयेत् धृत्वा तत्संपुटे गोलं तन्मूषा संपुटे च तत् ११ निधाय संधिरोधं च कृत्वा संशोष्य केकिलैः वन्हिः खरतरं कुर्यादेवं दत्वा पुट त्रयं १२ निरुत्थं जायते भस्म सर्व कार्येषु योजयेत् कांचनार प्रकारेण लांगली हंति कांचनं १३ ज्वाला मुखी तथा हन्या तथा हंति मनःशिला सिला सिंदूर यो श्चूर्णं समयोरर्क दुग्धकैः १४ सप्तैव भावना दद्या च्छोषयेच्च पुनः पुनः ततस्तु गलिते हेम्नि कल्कोयं दीयते समः १५

बड़ी आंच दे इसी तरह प्रथम कही रीति से तीन आंच दे १२ जब जिलाने से न जिये तो उत्तम है भस्म जैसे कचनार विधान मरता है तैसे ही कलिहारी रीति से भी मरता है १३ ऐसे ज्वाला मुखी कहैं अरणी से भी भस्म होता है तैसे मैन सिल से चौथा मैनसिल सिंदुर समले मदार दूध में घोटि १४ सात वार घोटि घोटि सुखाय सुखाय ले तब दश मासे सोना गलाइ चरक खाने लगै तब दश मासे मैन सिल सिंदुर का सिद्ध चूर्ण सोने में

बुकनी देके तीव्र आंच दे जब तक यह बुकनी न जरि जाइ तब तक आंच दे इसी भांति बुकनी दे दे तीन आंच देइ तौ सोना भस्म होय २६ पांच वा कबूतर की वा कुक्कुट की बीट दोनों सोने के पत्र करि लपेटै ऊपर नीचे २७ उसी के समान गंधक चूर्ण भी दोनों ओर धरै तब संपुट करै फिर थोरीसी भूमि खोदि पांच कंडे में फूंक दे २८ इस प्रकार नववार आंच देय दशवीं वार बड़ी आंच ३० कंडे की देइ इसी प्रकार सोना भस्म होता है २९ इति स्वर्ण भस्म प्रकार अथ तार विधिः एक भाग नव किया हरताल जंभीरी नींबू के रस में घोटि जंभीरी के अभाव में जो खट्टा नींबू मिले सो लेइ तब तीन भा-

पुनर्धमेद्दलितरां यथा कल्को विलीयते एवं तारत्रयं दद्यात्कल्को हेममृतिर्भवेत् २६ पारावतमलैर्लिंपेद्यद्वा कुक्कुटोद्भवैः हेमपत्राणि लेप्यं च दद्यादंतरान्तरं २७ गंधचूर्णं समं कृत्वा सरावयुगसंपुटे दद्यात्कुक्कुटपुटं पंचभिर्गोमयोत्पलैः २८ एवं नवपुटं दद्याद्दशमं च महापुटं त्रिंशद्वनोपलैरेवं जायते हेमभस्मता २९ भागैकं तालकं मर्द्यं यमम्लेन केनचित् तेन भागत्रयं तारपत्राणि परिलेपयेत् ३० धृत्वा मूषापुटे रुध्वा पुटेत्रिंशद्वनोपलैः समुद्धृत्य पुनस्तालं दत्वा रुध्वा पुटे पचेत् एवं चतुर्दशपुटैस्तारं भस्म प्रजायते ३१ स्नुहीक्षीरेण संपिष्टं माक्षिकं तेन लेपयेत् तालकस्य प्रकारेण तारपत्राणि बुद्धिमान् ३२ पुटेच्चतुर्दशपुटैस्तारं भस्म प्रजायते ३२ अर्कक्षीरेण संपिष्टो गंधकस्तेन लेपयेत् समेन तारस्य पत्राणि पुटान्यष्टौ दहेन्मुहुः ३३ ॥

ग चांदी का पत्र करि पहिले कही कजली चांदी के पत्र पर तले ऊपर लेप करै ३० मूसा यंत्र में १० बिनवां कंडा से फूंक दे मूसा यंत्र रीति से धरियानुनार कैसी बनाइ एक में वस्तु धरि दूसरी ढकि कपरौटी करि सुखाय ले ऐसे ही पूर्वोक्त कजली लेप देय २४ बार मूसा यंत्र में फूंके तब चांदी भस्म होइ ३१ दूसरी विधिः छिंगिया सेंहुंड के दूध में रूपा माखी पहर भर घोटि तिगुने चांदी पत्र पर लपेटै पूर्वोक्त प्रकार चौदह चौदह आंच देइ तौ रूपा भस्म होय ३२ इति रूप्य भस्म अथ पीतर के पत्र पतरे करि खटाई दे दे अच्छी भांति मांजै जब चुकने लगै तब उन पत्र पै

मूष संपुट करि गज पुट में आंच दे गज कहैं जो गज भर गहरा गढ़ा हाथ भर की गुलाई में नीचे तक खोदि गोइठा भरि बीच में यंत्र धरि फूंक दे ऐसे ही दो आंच में निश्चय पीतर मरै २४ पीतर की नाईं कांस तांबा भी भस्म होता है मदार पय वा छगरी पय वा सिंहुडि रस में गंधक पीसि तांबे वा कांसे वा पीतर पत्र पर लगाइ पूर्वोक्त रीति से फूंके तो तीनों मरैं २५ ताम्र भस्म दूनी पत्र की मुटाई सम पत्र करि ताम्र पत्र पर खटाई का पानी दे तीन दोला यंत्र की आंच दे खरल करै २६ तांबे की चौथाई पारा दे पहर भर नींबू में घोटै फिर तांबे की दूनी गंधक

ततो मूषा पुटे दत्वा पुटेद्गज पुटेन तु एवं पुट द्वयेनैव भस्मारं भवति ध्रुवं २४ आरवत्कांस्यमप्येवं भस्म [illegible] निश्चितं अर्क क्षीर वटा जंस्या क्षीरं निर्गुंडिका तथा ताम्र रीति ध्वनि वधे समं गंधक योगतः २५ सूक्ष्माणि ताम्र पत्राणि [illegible] दापयेद्बुधः वासर त्रय मम्लेन ततः खल्वे विनिःक्षिपेत् २६ पादांशं सूतकं दत्वा याममम्लेन मर्दयेत् तत उद्धृत्य पत्राणि लेपयेद् [illegible] गं- धकं ताम्र घृष्टेन तस्य कुर्याच्च गोलकं ततः पिष्ट्वा च मीनाक्षीं चांगेरी च पुनर्नवा २७ दत्वा कल्केन [illegible] लेपयेद् [illegible] निर्मितं कृत्वा तद्गोलकं भांडे सरावेनावरोधयेत् २८ वालुकाभिः प्रपूर्याथ विभूति लवणाम्बुभिः दत्वा भांडे मुखे मुद्रां ततश्चुल्ल्यां वि- पाचयेत् २९

नींबू में घोटै फिर तांबे की दूनी गंधक नींबू के रस में घोट पत्र पत्र लेप गोला बांधि मको- इ वा अमलनिया वा गदा पूरैना २७ इन की पीठी दो अंगुल मोटी गोला पर लपेट एक वासन में धरि मुख मूंदि दे २८ तब एक बड़े वासन की पेंदी में छेद करि उस पर अभ्रक धरि थोरा बालू भरै तिस पर लोन का पानी छिरकि पहिला वासन धरै फिर बालू भरि लो- न का पानी दे दबाई दे जिस में वह वासन तुप जाइ तब बड़े वासन का मुंह मूंदि कपरौटी करि चूल्हे पे धरि लकरी की आंच देइ २९

मंद आंच दे फिर क्रम से तेज करता चार पहर आंच दे ठंढा करि चूरन के में एक दिन ३० उसी तांबे की आधी गंधक आधा पीसे खरल करि उसे तांबे पर लेप करि मूसा यंत्र में धरि फिर गज पुट आंच दे ३१ जब उसी में स्वाभाविक शीत होजाइ तब निकारि ले तो उसकी भ्रम चित्त विकलाई और दस्त आना दूर हो तब जानिये तांबा शुद्ध भया ३२ सीसा भस्म पान के रस में मैनसिल को पीसि सीसे के पत्र पर लगावै बत्तिस कंडा की आंच दे ऐसी ही बत्तिस आंच दे ३३ पुनर्विधानं पीपरि अमली की छाल का चूरन चौथाई सीसा दे माटी के बासन में धरि

क्रम वृद्धाग्निना सम्यक्पाचयाम चतुष्टयं स्वांगशीतलमुद्धृत्य मर्दयेच्चूरणाद्रवैः ३० दिनैकं गोलकं कुर्याद्ध्यर्द्ध गंधेन लेपयेत् सघृतेन ततो मूषापुटे गजपुटे पचेत् ३१ स्वांगशीतं समुद्धृत्य मूर्तताम्रं शुभं भवेत् वांति भ्रांतिक्लमं रेकं न करोति कदाचन ३२ तांबूली रससंपिष्टशिला लेपात्पुनः पुनः द्वात्रिंशद्भिः पुटैर्नागो निरुत्थो याति भस्मतां ३३ अश्वत्थचिंचात्वक्चूर्णं चतुर्थांशेन निक्षिपेत् मृत्पात्रे द्राविते नागे लोहदर्व्या प्रचालयेत् ३४ यामैकेन भवेद्भस्म तत्तुल्यां च मनःशिला कांजिकेन द्वयं पिष्ट्वा पचेद्गजपुटेन च ३५ स्वांगशीतं पुनः पिष्ट्वा शिलया कांजिके पुनः पचेत्त्याचाभ्यामेवं षष्टिपुटैर्मृतिः पचेत् मृत्पात्रे द्राविते वंगे चिंचाश्वत्थत्वचो रजः क्षिप्त्वा वंग चतुर्थांश मयो दर्व्या प्रचालयेत् ३७

नीचे आंच करै जब सीसा गले तब वही दोनों छाल का चूरन डारि डारि लोहे की कलछी से चलाता जाय ३४ ऐसे पहर भर आंच देइ तब सीसे की भस्म ले कै बराबर मैनशिल दे कांजी में घोटि सुखाय गज पुट आंच देय ३५ ठंढा भये फिर मैनशिल कांजी दे पीसि गज पुट देइ ऐसे साठ आंच देइ तब सीसा मरै जो साठ से कम देइ तो जी सकता है ३६ वंग भस्म रांगा माटी के बासन में गलाइ चौथाई पीपरि अमली की

दो पहर घोटे तो रांगा भस्म होय रांग भस्म तुल्य हरताल डारि नींबू के रस में घोटि ३८ गज पुट की आंच दे फिर निकार नींबू का रस औ-
र दशांश हरताल दे घोटे पहर भर ३९ फिर उसे फूंक दे इस भांति दश आंच दे तब वंग तयार होय शुद्ध लोहा तिस का चूरण पाताल मूली और पा
ताल मूली विना छर हटा के रस में घोटे आंच दे ऐसे तीन आंच दे ४० घी कुवार के रस में घोटे तीन आंच दे फिर कुरैया छाल के क्वाथ में घोटि
छः आंच दे तो लोह भस्म होता है ४१ पुनः जितना लोहा हो तिस का बारहवां अंश सिंगरफ दे घी कार के रस में दो पहर घोटै आंच दे तो

ततो द्वियाममात्रेण वंगभस्म प्रजायते अथ भस्म समं तालं क्षिप्त्वा म्लेन विमर्दयेत् ३८ ततो गज पुटे पत्कारसेन पुनरम्लयेत् ताले
न दशमांशेन याम मेकं ततः पुटेत् ३९ एवं दशपुटैः पक्वं वंगस्तु म्रियते ध्रुवं शुद्धं लोह भवं चूर्णं पाताल गरुडी रसैः मर्दयित्वा पुटे
द्वन्हौ दद्या देवं पुट त्रयं ४० पुटत्रयं कुमार्याश्च कुठार छिन्न का रसैः पुट षड्कं ततो दद्या देवं तीक्ष्णं मृतिर्भवेत् ४१ क्षिपे द्वादश
मांशेन दरदं तीक्ष्ण चूर्णतः मर्द्दये त्कन्य का द्रावैर्याम युग्मं ततः पुटेत् एवं सप्त पुटै र्मृत्युं लोह चूर्ण मवाप्नुयात् ४२ रसे कुठा
र छिन्नायाः पाताल गरुडी रसैः स्तन्येन चार्क दुग्धेन तीक्ष्णस्यैवं मृति र्भवेत् ४३ सूतका द्विगुणं गंधं दत्वा कुर्याच्च कज्जलीं
द्वयोः समं लोह चूर्णं मर्द्दये त्कन्यका द्रवैः ४४

लोह भस्म होता है ४२ पुनः कुरैया रस वा छरहटा रस में वा स्त्री के दूध
में वा मदार रस में सिंगरफ युक्त किसी में घोटि सात आंच दे तो लोह भस्म होता है ४३ पुनः पारे की दूनी गंधक मिलाइ कजली करि
कजली के समान लोह चूर्ण ले घी कार के रस में दोनों घोटे ४४ ॥ ॥

दो पहर घोटि पिंडी बनाइ तांबे के पत्र में धरि रंड पात से ढकि ४५ चारि घरी धूप में राखि पतौआ उतारि फेंक देइ दूसरे पात्र से ढांपि अ-
नाज राशि में तीन दिन गाडि के निकारि लेइ ४६ तब पीसि के कपडे में छानि पानी पर डारे से लोह तिरेगा ऐसे ही स्वर्णादि सब धातु मारि-
ये ४७ तीसरी विधि मैनसिल और गंधक मदार के दूध में खल करिये इसी प्रकार सात धातु में चाहै जिस धातु को बारह आंच देइ सो
धातु भस्म हो जाती है यह रीति निश्चय है जैसे गुरु सत्य वचन कहता है ४८ सोना रूपा माखी तूतिया अभरख सुरमा शिलाजीत हरताल खपरि-

यामयुग्मं ततः पिंडं कृत्वा ताम्रस्य पात्रके घर्मे धृत्वोरुबुकस्य पत्रेणाच्छादयेद्बुधः ४५ यामोर्द्धेनोद्धृतां भूयाद्धान्यराशौ न्यसेत्ततः द-
त्वोपरि सरावं च त्रिदिनान्ते समुद्धरेत् ४६ पिष्ट्वा च गालयेद्वस्त्रादेवं वारितरं भवेत् एवं सर्वाणि लोहानि स्वर्णादीन्यपि मारयेत् ४७
शिलागंधार्कदुग्धाक्ताः स्वर्णाद्याः सप्तधातवः म्रियन्ते द्वादशपुटैः सत्यं गुरुवचो यथा ४८ सास्यीकं तुत्थकाभ्रौ च नीलांजनशिलालकाः
रसकश्चेति विज्ञेया एता स्सप्तोपधातवः ४९ माक्षिकस्य त्रयो भागा भागैकं सैंधवस्य च मातुलुंगद्रवैर्वाथ जंबीरोत्थद्रवैः पचेत् ५० चाल-
येल्लोहपात्रेण यावत्पात्रं सुलोहितं भवेत्ततस्तु संशुद्धं स्वर्णमाक्षिकमृच्छति ५१ अन्यच्च कुलत्थस्य कषायेण तथा तैलेन वा पुटेत् त-
क्रेण वाजमूत्रेण म्रियते स्वर्णमाक्षिकं ५२ कर्कोटी मेषशृंग्युत्थैर्द्रवैर्जंबीरजैरसैः भावयेद्दापयेत्तीव्रे विमला शुद्ध्यति ध्रुवं ५३

या ये सात उपधातु हैं ४९ सोना रूपा माखी शोधन मारन सोना वा रूपा माखी तीन भाग सैंधव एक भाग बिजौरा वा जंभीरी का रस ५० लोह पात्र में डा-
रि आगि पर चढाइ घोटै जब बासन लाल हो जाइ तब जाने कि सोना रूपा माखी शुद्ध हो मर गई ५१ तब उतारि उसे कुलथी क्वाथ तिल तेल समान
ले घोटै वा मट्ठा वा छाग मूत्र में घोटि ३० कंडे की आंच में फूंक दे तो सोना माखी मरै ५२ रूपा माखी बंध्या खिकसा मेंढासिंगी इन के वा जंभीरी के रस में घोटि

तृतिया शोधन बिलाई बीट तृतिया का दशांश सुहागा दे घोटि मध्यम आंच दे फिर दही का पुट दे फूंके फिर सहत पुट दे फूंके तब शुद्ध होय ५४ऋा०
वरक शोधन मारण कृत अभ्रक लाल करि तपाइ दूध में बुझाइ चूर्ण करि चौराई और कोई खटाई मिलाइ आठ पहर घोटे तो शुद्ध होय तब
वस्त्र में बांधि धान और अभ्रक कांजी में डारे मलै ५६ फिर छानि वासन में धरि जब थिराइ कांजी बहाइ अभ्रक सुखाइ मदार दूध में दिन
भर घुटाइ टिकिया करै ५७ मदार पत्र में लपेट गजपुट आंच दे ऐसे ही मदार दूध में घोटि घोटि सात पुट देइ ५८ फिर बरगद जटा क्वाथ में

विषया मर्दय तुल्यं मार्जारकफा तयोः दशांशं टंकणं दत्वा पुटे न्मृदु पुटेन तत् पुटं दध्ना रपुटं क्षौद्रे देयं तुल्य विशुद्धये ५४ कृत्वा
भ्रकं धमे द्वन्हौ ततः क्षीरे विनिःक्षिपेत् भिन्न पत्रं ततः कृत्वा तंदुली याम्ल योर्द्रवैः ५५ भावये दष्ट यामं तदेवं शुद्ध्यति चाभ्रकं
बध्वा धान्य युतावस्त्रे मर्दये त्कांजिके स्सह ५६ कृत्वा धान्याभ्रकं तस्तु शोषयित्वा थ मर्दयेत् अर्कक्षीरै र्दिनं मर्द्य चक्राकारं
तु कारयेत् ५७ वेष्टये दर्क पत्रै श्च सम्यग्गज पुटे पचेत् पुनर्मर्द्य पुनः पाच्यं सप्त वारं प्रयत्नतः ५८ ततो वट जटा क्वाथै स्तद्वद्देयं पुट
त्रयम् मृयते नात्र संदेहः सर्व कर्म सु योजयेत् ५९ शुद्धं धान्याभ्रकं मुस्तं शुंठी षड्भाग योजितं मर्दये त्कांजिके नैवं दिनं चित्रक जै
रसैः ६० ततो गज पुटं दद्या त्तस्मा दुद्धृत्य मर्दयेत् त्रिफला वारिणा तद्वत्पुटे द्देवं पुटै स्त्रिभिः ६१ बला गो मूत्र मुशली तुलसी
सूरण द्रवैः मर्दितं पुटितं वन्हौ त्रित्रि वेलं व्रजेन्मृतिं ६२

घोटि घोटि तीन पुट देइ इस प्रकार निस्संदेह अभ्रक मरेगा सर्व कर्म योग्य होयगा ५९ दूसरी विधि शुद्ध अभ्रक ले छठा ऊठा अंश मो-
था सोंठि दे कांजी में दिन भर खरलकरि फिर चीता के रस में ६० तब गज पुट आंच दे फिर निकार तीन वार त्रिफला रस में घोटि घोटि गज
पुट आंच देइ ६१ फिर वरियारा गोमूत्र मुशली कृत तुलसी सूरन इन के रस मे घोटि घोटि तीन वार गज पुट आंच देइ तो अभ्रक मरै ६२

एक भाग शुद्ध अभ्रक दो भाग सुहागा दे कै अंध मूषक यंत्र में रुंधि गज पुट की तीव्र आंच में फूंके इस्की ठंढी प्रकृति है सब रोग में देने योग्य है ६३ सुरमा शोधन मारण सुरमा चूर्ण करि जंभीरी नींबू के रस में घोटि एक दिन घाम में धरे तो सब कार्य लायक होता है ६४ ऐसे ही गेरू कसीस सुहागा कौड़ी शंख फटकड़ी चीक ये सब शुद्ध होंय ६५ मैनशिल शोधन मारण मैनशिल बकरी के मूत में डोल यंत्र में तीनि दिन पकाय बकरी के मूत में सात भावना दे तब मैनशिल शुद्ध होय ६६ वा अगस्ति पत्र के रस में सात भावना दे वा अदरक के रस में सात भावना

धान्याभ्रकस्य भागैकं द्वौ भागौ टंकणस्य च पिष्ट्वा तदन्धमूषायां रुध्वा तीव्राग्निना पचेत् स्वभाव शीतलं चूर्णं सर्वरोगेषु योजयेत् ६३ नीलाञ्जनं चूर्णयित्वा जंबीरद्रव भावितं दिनैकमातपे शुद्धं भवेत्कार्येषु योजयेत् ६४ एवं गैरिक कासीसं टंकणानि वराटिका शंखस्तोरुचकं कुरु शुद्धमायाति निश्चितं ६५ पचेद् हे अजामूत्रे दोलायंत्रे मनःशिलां भावयेत्सप्तधा दिनैरजाया शुद्धिमृच्छति ६६ अन्यच्च अगस्ति पत्र तोयेन भावयेत्सप्त वारकं शृंगवेर रसे वापि विदधातिः मनःशिला ६७ तालकं कणशः कृत्वा सचूर्णे कांजिके क्षिपेत् दोलायंत्रेण यामैकं ततः कूष्मांडजैर्द्रवैः ६८ तिलतैलैः पचेद्यामं यामं च त्रिफला जलैः एवं यंत्रे चतुर्यामं पाच्यं शुद्धति तालकं ६९ नरमूत्रेण गोमूत्रे सप्ताहं रसकं पचेत् दोलायंत्रेण शुद्धस्यात्ततः कार्येषु योजयेत् ७०

दे तो मैनशिल कार्य साध्य हो ६७ हरताल शोधन हरताल चूर्ण कांजी के पानी में डोलायंत्र करि सिद्ध करे योंही कुम्हड़ा के रस में करै ६८ तिल के तेल में पहर भर दोला यंत्र करै पहर भर त्रिफला क्वाथ में इस प्रकार कर वार में चारि पहर में सिद्ध करे शुद्ध होय ६९ खपरिया शोधन खपरियाले गोमूत्र दे वा मनुष्य मूत्र दे सात दिन दोला यंत्र में शुद्ध करै तब कार्य साध्य होय ॥७०॥

सब धातुन के सत्व निःसारण विधिः लाखी लघु मीन छगरी पय सुहागा मृगसींग पीला सरसो सहिजन लाल गुंजा गुड़ सैंधव ७१ अव कडु
का घृत मधु इन में जो एक दो न होंतो चिंता नहीं जिस धातु में चाहे तिस में दे अंध मूषयंत्र करि आंच देनो सब धातु का सत निकलता है ७२ ही-
रा शोधन मारन कुरथी और कोदव के क्वाथ को दोलयंत्र में भरि तिस में भटकटैया की जड़ की लुगदी में हीरा रख कपड़े में बांधि सिद्ध करै तीन दिन
तब हीरा शुद्ध हो फिर आगि में तपाय खर मूत्र में २१ बार बुझावै ७४ सत्कुण कहैं खटकिरवा और हरताल पीसि गोला करि उस में हीरा धरि तीव्र आंच दे

लाक्षामीनपयश्छागं टंकणं मृगशृंगकं पिण्याकं सर्षपा शिग्रु गुंजोर्णा गुड सैंधवं ७१ यव तिक्ता घृतं क्षौद्रं यथालाभं विचूर्ण
येत् एभिर्विमिश्रिताः सर्वे धातवो गाढ वन्हिना मूषाध्माना प्रजायंते मुक्त सत्वा न संशयः ७२ कुलत्थ कोद्रव क्वाथे दोलायंत्रे वि
पाचयेत् व्याघ्री कंदगतं वज्रं त्रिदिने शुद्धिमृच्छति ७३ तप्तं तप्तं तु तद्वज्रं खरमूत्रे निषेचयेत् पुनस्तप्तं पुनः सेच्यमेवं कुर्यात्त्रि
सप्तधा ७४ मत्कुणैस्तालकं पिष्ट्वा तया वज्रवर्ति गोलकं तद्गोले निहितं वज्रं तद्गोलं चाधिकं धमेत् ७५ सेचयेदश्वमूत्रेण तद्गो
लं च क्षिपेत्पुनः रुध्वा ध्मातं पुनः सेच्यमेवं कुर्यात्त्रिसप्तधा एवं च विधते वज्रं चूर्णं सर्वत्र योजयेत् ७६ हिंगु सैंधव संयुक्ते क्वाथे
कौलत्थजे क्षिपेत् तप्तं तप्तं पुनर्वज्रं भूयाच्चूर्णं त्रिसप्तधा ७७ मंडूकं कांस्यजे पात्रे निगृह्य स्थापयेत्सुधीः स भीतो मूत्रये
त्तत्र तन्मध्ये वज्रमावहेत् तप्तं तप्तं च बहुधा वज्रस्यैवं मृतिर्भवेत् ७८ इ मूषा यंत्र में राखि भाथी में फूंके ७५ फिर अश्व मूत्र में
२१ बार बुझाय हरताल गोला में धरि फूंकि इक्कीस बार अश्व मूत्र में बुझाय फूंके ऐसे हीरा भस्म होता है उस्को चूर्ण सर्वत्र साध्य है ७६ पुन विधि
हींग सेंधा नोन कुरथी क्वाथ में डारि उस में हीरा तपाय तपाय २१ बार बुझावे तो हीरा मरे ७७ तृतीय विधि मेंढुक कांसे के पात्र में मूंदे उसे डरावै
जब भय से मूते उस मूत में हीरा तपाय तपाय बहुत बुझावै तो खिल के चूर्ण हो मर जाय ७८ ॥

वैक्रांती शोधन मारण वैक्रांत कच्चे हीरे को कहते हैं काला हो वा लाल सो हीरे की नाई शोधे लाल करि करि १४ बार बुझाइ ७९ मेंढा सिंही के पंचांग के गोले में धरि मूसा यंत्र में भरि संपुट करि फूंक दे इसी तरह सात बार ८० तब वैक्रांत भस्म होय सो हीरे की ठौर देइ सर्व रत्न शोधन मारन अन्छे मोती वा माणिक वा मूंगा अरणी रस दे दोलयंत्र में सिद्ध करै एक पहर तो शुद्ध होय ८१ घी क्वार चोराई वा स्त्री का दूध इन तीनों में सात सात बार माणिका हित पाइ तपाइ बुझावे ८२ मूंगा मुक्तादि सब क्षण भर में वर्ण पलट जाते हैं इस में संशय नहीं ८३ मूंगा मोती

वैक्रांत वज्र वच्छोध्य नीलं वा लोहितं तथा हयमूत्रेण सिंचेत तप्तं तप्तं हि सप्तधा ७९ ततश्च मेषदुग्धेन पंचांगे गोलके क्षिपेत् पुटेन्मूषा पुटे रुध्वा कुर्यादेवं च सप्तधा ८० वैक्रांतभस्म तां याति वज्रस्थाने नियोजयेत् स्वेदये दोलिकायंत्रे जयंत्यारवारसेन च म णि मुक्ताप्रवालानि यामैकं शोधनं भवेत् ८१ कुमार्या तं दुलीयेन स्तन्ये न च निषेचयेत् प्रत्येकं सप्तवेलं च तप्त तप्तानि कृत्स्वरा: ८२ मौक्तिकानि प्रवालानि तथा रत्नान्य शेषतः क्षणाद्विकृतवर्णानि म्रियंते नात्र संशयः ८३ उक्त माक्षिकवन्मुक्ताप्रवालानि च मारयेत् वज्रवत्सर्व रत्नानि शोधयेन्मारयेत्तथा ८४ शिला जतु समानीय ग्रीष्म तप्त शिलाच्युतं गो दुग्ध त्रिफला क्वाथे भृंगराजे श्च मर्दयेत् आतपे दिन मेकं तु तच्छुद्धून शुद्धतां व्रजेत् ८५ सुरव्य शिला जतु शिलां सूक्ष्म खंड प्रकल्पितं निक्षिप्यात् नपानीये यामैकं स्थापयेत्सुधी: ८६

सोना माखी की रीति भी मरता है और सब रत्न हीरे की नाई शोधे मारे ८४ शिलाजीत शोधन ग्रीष्म की ताप करि पर्वत से चुवा शिलाजीत लाइ गाइ का दूध वा त्रिफला क्वाथ वा भंगरे के रस में पहर भर घोटि दिन भर घाम में धरै सूरव जाइ तो शुध जाइ ८५ दूसरी रीति अन्छे शिला जीत की शिला ले छोटे छोटे टूक करै अति उष्ण जल में पहर भर राखै ॥ ८६ ॥

उसे पीसे पानी में फिर छान कै ले लेइ फिर माटी के बासन में करि घाम में धरै ८७ जब मलाई परै उसे काढ़ि और पात्र में रक्खै फिर और ज
ल तत्ता कर ८८ दे फिर मलाई लेले पहिली मलाई में रखता जाइ इसी भांति दो मास तक करै तब शिलाजीत कार्य का होता है और आगि में
रखने से लिंगाकार होता है ८९ निर्धूम भये जानिये कि शिलाजीत अच्छा बन गया पहिली मलाई इस प्रकार बनी फिर मलाई के तरे
और जो बहु बार का निकाला पानी उस के तरे थिराइ रहे इन दोनों को गरम पानी दे दे पीसि फिर दो मास ताई इना पानी डारि शुद्ध करै

मर्दयित्वा ततो नीरं गृह्णीयाद्वस्त्रगालितं स्थापयित्वा च मृत्पात्रे धारयेदातपे बुधः ८७ उपरिस्थं घनं यत्स्यात्तत्क्षिपेदन्यपा
त्रके धारयेदातपे तस्मादुपरिस्थं घनं नयेत् ८८ एवं पुनः पुनर्नीत्वा द्विमासाभ्यां शिलाजतु भूयात्कार्य्यसमा वन्हौ क्षिप्त्वा लिं
गोपमं भवेत् ८९ निर्धूमं च ततः शुद्धं सर्वकर्मसु योजयेत् अधःस्थितं च तच्छेषं तस्मिन्नीरं विनिःक्षिपेत् विमर्द्य धारयेद्घर्मे
पूर्ववच्चैव तन्नयेत् ९० आक्षांगारैर्धमेत्किट्टं लोहजं तद्द्रवां जलैः सेचयेत्तप्ततप्तं च सप्त बारं पुनः पुनः ९१ चूर्णयित्वा त
तः क्वाथैर्द्विगुणैस्त्रिफलाभवैः आलोड्य भर्जयेद्वन्हौ मंडूरं जायते वरं ९२ क्षारवृक्षस्य काष्ठानि शुष्काण्यग्नौ प्रदीपयेत्
नीत्वा तद्भस्म मृत्पात्रे क्षिप्त्वा नीरे चतुर्गुणे ९३ विमर्द्य धारयेद्रात्रौ प्रातर्वध्वा जलं नयेत् तन्नीरं क्वाथयेद्वन्हौ यावत्सर्वं
विशुष्यति ९४ ॥

९० अथ मंडूर विधि कीटी लोहा का मैल बहेरा की लकड़ी के कोइला में लाल कर गोमूत्र में सात बार बुझावै ९१ तब कीट का चूर्ण करि दूने
त्रिफला क्वाथ में मिलाइ पात्र में धरि आंच में त्रिफला क्वाथ जराइ कै उतारिले तब मंडूर अच्छा होय ९२ अथ क्षार विधि क्षार वृक्ष की
लकड़ी राख करि चौगुने पानी में घोलि ९३ रात भर राखि प्रात थिराना पानी ले आगि पर चढ़ाइ पानी जरावै जब पानी जरि जाय ९४

तब उतारि ले इसी को क्षार कहते हैं सपेद हो जाता है और सब पानी जरै तो क्वाथ सम रहता है ये दो प्रकार खार वैद्यजन औषधि में दे
ते हैं कुरैया पलास बकायन बहेड़ा अमलतास मदार असली सेंहुड चिर्चिरा पाढ़ा केला जवाल नोटा सहजन मूरी इत्यादि क्षार वृक्ष हैं
८५ इति शार्ङ्गधरे एकादशोऽध्यायः ११ पारा सर्व रोग जीतने वाला और पुष्टि कारक कहते हैं शुभ दिन शुद्ध करना आरंभ करै अच्छा
सिद्ध होतो जरा व्याधि दूरि करै लोहादि धातु पारेले संस्कार करे उत्तम होइ शरीर पुष्ट करती है प्रमाण उत्तमं रस राजेन मध्यमं वंध कादि

ततः पात्रात्समुल्लिख्य क्षारो ग्राह्यः सितप्रभः चूर्णाभः अति सार्द्धस्तु जिह्वास्यात्क्वाथवस्थितः इति क्षारद्वयं धीमान्यु
क्तः कार्येषु योजयेत् ८५ इति श्री शार्ङ्गधरे० एकादशोऽध्यायः ११ पारदः सर्वरोगाणां जेता पुष्टिकरः स्मृतः सुदिनेसा
धनं कुर्यात् संसिद्धि देहलोहयोः १ रसेंद्रः पारदः सूतः हरजः सूतको रसः षुधैस्तस्येति नामानि ज्ञेयानि रसकर्मसु २ ताम्र
तारं नागाश्च हेम वंगौ च तीक्ष्णकं कांस्यकं सूत लोहं च धातवो नव संस्थिताः सूर्यादीनां ग्रहाणां ते कथिता नामभिः क्रमात् ३
राजीरसोनमूषायां रसं क्षिप्त्वा पिधापयेत् वस्त्रेण दोलिका यंत्रे स्वेदयेत्काञ्जिके त्र्यहं दिनैकं मर्दयेत्सूतं कुमारीसंभवैर्द्रवैः तथा
चित्रकजैः क्वाथैर्मर्दयेदेकवासरं काकमाचीरसैस्तद्वद्दिनमेकं च मर्दयेत् ४ त्रिफलायास्तथा क्वाथैरसो मर्द्यः प्रयत्नतः ततस्तेभ्यः
पृथक्कुर्यात्सूतं प्रक्षाल्य काञ्जिकैः ६

भिः अधमं मूलक्षारेश्च तैलेनाप्यध माधमं १ पारा नाम रसेंद्र पारद सूत हरज सूतक रसये
छः नाम पंडित रसक्रिया में समझ लेइ २ तांबा रूपा और सीसा सोना रांगा पोलाद कांसा लोह ये नव धातु सूर्यादि नवग्रह के क्रमसे न
वो नाम समझ लेइ ३ रस शोधन राई लहसुन की मूषरी का मूसा बनाइ तामें पारा भरि मुख मूंदि गाढ़े वस्त्र में बांधि दोला यंत्र में कांजी के संग
तीन दिन आंच दे शुद्ध करै फिर एक दिन घीक्वार में घोटि ४ एक दिन चीता क्वाथ में एक दिन मकोइ रस में ५ एक दिन त्रिफला के रस में घोटै पारा

पारा १ भाग सेंधा अर्द्ध भाग दिन भर नींबू के रस में खूब घोटि ७ राई लहसुन अच्छा नोसादर येसब पारे के समान ले पारे के संग दे तुयांबु में सब मिलाय मर्दन करै जब खूब के गाढा हो तब टिकरी बना ढांरा लेप करि फिर एक हांडी नोन भरि तिस के बीच में पूर्वोक्त टिकिया धरि तिस पर दूजी हांडी के मुहर गरे हों जिस में संधि न रहै तब कपरौटी करि आंच देइ ऊपर भीजी कपरी राखे उसे सीतला रहे नीचे आंच तेज राखै तीन पहर तक जब ठंढी हो तब ऊपर वाली हांडी में जो दोष वर्जित रस लपटा छुड़ाइ के सब काम में युक्त करै ८ गंधक शोधन लोह की कड़ाई में घी अति

ततः क्षिप्त्वा रसं खल्वे रसाद्र्दौ रासैंधवं मर्द्दयेल्लिंबुकरसै र्दिनमेकमनाकुलं ७ ततो राजी रसोनश्च मुख्यश्च नवसादरः एतै रससमैस्तद्वत्तस्तो मर्दयेत्तुयांबुना ८ ततः संशोष्य चक्राभं कृत्वा लिप्ताब हिंगुना द्विस्थाल्यां संपुटे कृत्वा पूरये ल्लवणेन च अधःस्थाल्यां ततो मुद्रां दद्यादृढतरां बुधः विधोपपाद्धि विधाया योनिविंचेदंतुनोपरि ततस्तु कुर्यात्तीव्राग्निं तदधः प्रहरत्रयं एवं निपातयत्सूर्ध्वं रसो दोषविवर्जितः अद्योर्ध्वपिटरी मध्ये लग्नो ग्राह्यो रसोत्तमः ९ लोहपात्रे विनिःक्षिप्य घृतमग्नौ प्रतापयेत् तप्ते घृते तत्समानं क्षिपेद्गंधकजं रजः १० विद्रुतं गंधकं ज्ञात्वा दग्धमध्ये विनिःक्षिपेत् एवं गंधकशुद्धिःस्यात्सर्वकार्येषु योजयेत् ११ मेषी क्षीरेण दरदम्लवर्गैश्च भावितं सप्तवारं प्रयत्नेन शुद्धिमायाति निश्चितं १२

तप्त करि घी समान गंधक चूर्ण छोड़े जब गलै तब चौगुने दूध में गरम ही नाइ के बुझावे तो गंधक शुद्ध हो सर्व कार्य योग्य है ११ सिंगरफ शोधन सिंगरफ भेड के दूध नींबू के रस में घोटि सुखावे इसे भावना कहिये ऐसे सात भावना देने से सिंगरफ निश्चय शुद्ध होय ॥ १२ ॥

भा· सिंगरफ से खार निकालने की बिधि नींबू रस वा नीम पत्र रसमें पहर भर सिंगरफ घोटि फिर डमरू यंत्र करि उतारि लेइ डमरू यंत्र यों कहते हैं जैसे प्रथम पारा उड़ाया है उड़ाय लेने से भी पारा शुधि जाता है सब कार्य कारक हो जाता है २३ अब पारे का मुख करना कहै क्षुधा कर करना भी कहते हैं काल कूट बछ नाग सिंगिया अदीपन हला हल ब्रह्म पुत्र हरदिया सुक्तुक सौराष्ट्रक येनव बिष हैं और मदार सेंहुड़ धतूरा करियारी कनेर लाल घुंघुंची अफीम ये सात उप विष हैं २५ इन सब विष में मरदन करने से पारा क्षुद्धीन हो जाता है समस्त धातुन के भक्षण करने को समर्थ

नीबूरसैर्निंबपत्ररसैर्वायामसात्रकं पिष्ट्वा तस्मादूर्ध्वं च पातयेत्सूतयुक्तिवत् ततः शुद्धरसं तस्मान्नीत्वा कार्येषु योजयेत् २३ कालकूटं वत्सनाग शृंग कश्च प्रदीपनः हालाहलो ब्रह्मपुत्रो हारिद्रः सक्तुकस्तथा सौराष्ट्रिक इति प्रोक्ता विषभेदा अमीनव २४ अर्कसेहुंड धत्तूरा लांगली करवीरकः गुंजाहिफेनमित्येताः सप्तोपविषजातयः २५ एतैर्विमर्दितः सूतश्छिन्नपक्षः प्रजायते मुखं च जायते तस्य धातूंश्च ग्रसते परा २६ अथवा कटुकक्षारो राजी लवण पंचकैः रसोनो नवसारश्च शिग्रुश्चैकत्र चूर्णितैः समांशे पारदादेतैर्जंबीरोत्थरसेन वा निंबूतोये कांजिके सोष्णखल्वे विनिक्षिपेत् २७ अहोरात्र त्रयेण स्याद्रसो धातुश्चरेन्मुखं अथवा विंदुलीकीटैः रसो मर्द्यस्त्रिवासरं लवणाम्ले मुखं तस्य जायते धातुघस्मरं २८

होता है २६ अथ दूसरी प्रकार त्रिकुटा दोनों खार और राई और पांचो लोन लहसुन नवसादर सहजन की छाल ये सब सम भाग ले चूर्ण करै तब पारे के समान ले जंभीरी रस वा नीबू रस वा कांजी में गरम करि खल करै २७ तीन दिन रात तब पारा सब धातुन को खाइ और तोलन बढै पारा के मुख होता है और छर बुंदा वा वीर बहूटी में तीन दिन घोटै फिर पांचो लोन और नीबू के रस में घोटै तब पारे का मुख खुलै और धातु भक्षण

बाकच्छप यंत्र करि गंधक फूकन दिधि एक माटी का कूंडा ले तिस में चार अंगुर पानी भरि एक सहन की रा ख उस सह नकी के तरे पानी एक अं· गुल १९ तिस में पारा और गंधक समभाग धरि ऊपर दूसरी सहन कद्द कि चूने से दोनों सहन कामुखनिः संधि मूंदि करि फिर उस के मुंहपर मा· टी लगाद् बंद करे जिसमें फंडन की करसीन गिरे तब ऊपर से चार छिनवां कंडा की आंच देइ इसी प्रकार छः बार पारा गंधक समान दे ४ कंडा की आंच दे दे फूंके तो पारा तीक्ष्णाग्नि होता है और सर्व कार्य लायक होता है २० अथ पारद भस्म विधि धुआं का सार अर्थात् करुवा पारा फट·

अथ कच्छप यंत्रेण गंधजारण मुच्यते मृत्कुंडे निक्षिपेन्नीरं तन्मध्ये च सरावकं १९ महत्कुंड पिधानाभं मध्ये मेखलयायुतं लिस्वा च मेखला मध्ये चूर्णे तत्र रसं क्षिपेत् रसस्योपरि गंधस्य रजो दद्यात्समांशकं दत्वोपरि सरावं च भस्म मुद्रां प्रदापयेत् तस्योपरि पुटं दत्वा चतुर्भिर्गोमयोपलैः एवं पुनः पुनर्गंधं षड्गुणं जारयेद्बुधः गंधजीर्णो भवेत्सूतस्तीक्ष्णाग्निः सर्व कर्मसु २० धूमसारं रसं तोरी गंधकं नवसादरं यामैकं मर्दयेदम्लैर्भाग कत्वा समांशकं २१ कांचकूप्यां विनिक्षिप्य तां च मृद्वस्त्रमुद्रया विलिप्य परितो वक्त्रे मुद्रां दत्वा च शोषयेत् २२ अधः सच्छिद्र पिठरी मध्ये कूपीं निवेशयेत् पिठरीं वालुका पूरैर्भृत्वा चाकूपिकागलं निवेश्य चुल्ल्यां तदधः कुर्याद्वह्निं शनैः शनैः तस्मादप्यधिकं किंचित्पावकं ज्वालयेत्क्रमात् एवं द्वादशभिर्यामैर्म्रियते सूतकोत्तमः स्फो· टयेत्स्वांग शीतं तं मूर्द्ध गं गंधकं त्यजेत् अधस्थं म्रियते सूतं सर्व कार्येषु योजयेत् २३ करी गंधक नवसादर सब द्रव्य समभाग ले प· हर भर नींबू के रस में घोटि २१ फिर आतशी सीसी में भरि कपरौटी करि धूप में सुखावै २२ तब एक नांद ले बीच पेंदी छेद उस छिद्र पर अभ्रक प· रि उस पर सीसी स्थित करि ऊपर बालू भरि चूल्हे धरि तरे आगि वार पहर बारह पहिले अति मंद आंच करि फिर क्रम क्रम आंच तीव्र करे तो पारा न उडै सिद्ध होय जब सिराद् तब सीसी निकारि फौरे उस में गंधक ऊपर गले में पारा तले पेंदी में होइगा उस गंधक को फैंक पारा समेटि ले वह पारा

पुनः चिचिड़ा बीज पीसि दो मूषा बनाइ पारा कठ गूलर के दूध में घोटि २४ मूषा यंत्र में इस चूर्न के बीच में पारा धरै गूमा फूल विडंग खैर का चूर्न ऊपर दूसरा मूषा धरि कपरौटी करि माटी लेस के सुखावै एक गज पुट की आंच दे ऐसे पारा एक ही आंच में भस्म होय २५ पुनः कठगूलर के दूध में पारा घोटि फिर उसी दूध में हींग पीसि मूषा बनाइ पारा धरि कपरौटी करि माटी के मूसा में धरै पुनः कपरौटी करि २७ तीस गोइठा की आंच दे पारा भस्म होता है पुनः पान के रस में पारा घोटि दियसा जड़ कोल के भरै उसी से मूंदि कपरौटी करै माटी लेप सुखाइ थोरी आंच में फूंके से

अपामार्गस्यबीजानां मूषायुग्मं प्रकल्पयेत् तत्संपुटेन्यसेत्सूतं मलयूदुग्धमिश्रितं २४ द्रोणपुष्पीप्रसूनानि विडंगगिरिमेदकं एतच्चूर्णमधोर्ध्वेचदत्वा मुद्रां प्रकल्पयेत् तद्गोलं संधयेत्सम्यक्सूरणमूषासंपुटे सुधीः मुद्रां दत्वा शोषयित्वा ततोगजपुटे पचेत् एवमेकपुटेनैव संजातं भस्मसूतकं २५ काष्ठोदुंबरिकादुग्धैःरसेकिंचिद्विमर्दयेत् तद्दुग्धघृष्टहिंगोश्च मूषायुग्मं प्रकल्पयेत् २६ धृत्वातत्संपुटेसूतं तत्रमुद्रां प्रदापयेत् धृत्वातद्गोलकं भाण्डे सूरणमूषासंपुटेधिके २७ पचेन्मृदुपुटेनैवसूतको याति भस्मतां नागवल्लीरसैर्घृष्टः कर्कोटीकंदगर्भितः २८ सूरणमूषासंपुटेपक्वः सूतोयात्येव भस्मतां २९ इतिश्रीशार्ङ्गधरेद्वादशोध्यायः १२ खंडितं हारिणं शृंगं ज्वालामुख्यारसैः समः रुध्वा भांडे पचेच्चूल्ल्यां यामयुग्मं ततोजयेत् १ अस्यांशं त्रिकुटं दद्यान्निष्कमात्रंतु भक्षयेत् नागवल्लीरसैः सार्धंवातपित्तज्वरापहं २

पारा भस्म होता है २८ इति श्री शार्ङ्गधरे द्वादशोध्यायः १२ अथ ज्वरांकुश हरिण का सींग चूर्ण करि बराबर जैत का रस ले माटी के बासन में धरि मूंह मूंदि दो पहर की आंच देइ उतारि लेइ २ अठवां अंश त्रिकुटा दे पीसै चार रत्ती ज्वरांकुश पान के रस युक्त खिलावै तो वात पित्त ज्वर नाश करै ॥ २ ॥

यह ज्वरांकुश नाम रस सब ज्वर को अच्छा है ज्वरारि रस पारा खपरिया हरताल तूतिया सुहागा गंधक ये समान शोधि करि लेके रस में एक
दिन ३ घोटि के ताम्र पात्र में आई अंगुल मोटा लसि पात्र मुख मूंदि ४ कपरौटी करि वालुका यंत्र में धरि यंत्र मुख खुला राखि आंच देय जब
उस बालू में धान डारे से खील होजाय तब जानिये कि रस सिद्ध भया ५ जब स्वभाव से ठंढा हो तब उसे पात्र में छुडाइ ले इस ज्वरा रस के समान
मरिच मिलाइ पीसि लेइ एक मासे पान के बूक में धरि खिलावे ज्वर को नाश करै तीन दिन खाने से अति कठिन ज्वर अंतरिया तिजारी चातुर्थिक

अथ ज्वरांकुशोनाम रस सर्वज्वरापहः पारदं रसकं तालं तुत्थं टंकणगंधकं सर्वमेतत्समं शुद्धं कारवेल्या रसैर्दिनं १ मर्दयेल्ले प
येत्तेन ताम्रपात्रोदरं भिषक् अंगुल्यर्द्धप्रमाणेन ततोरुध्वाच तन्मुखे ४ पचेत्तं वालुकायंत्रे क्षिप्ताधान्यानि तन्मुखे यदा स्फुटं
ति धान्यानि तदा सिद्धं विनिर्दिशेत् ५ ततो नयेत्स्वांग शीतं ताम्रपात्रोदराद्भिषक् रसज्वरारिनामायं निचूर्णमरिचैः समं ६
माषैकं वर्ण खंडेन भक्षयेन्नाशयेज्ज्वरान् त्रिदिनैर्विषमं तीव्रमेकद्वित्रिचतुर्थकं ७ तालकं तुत्थकं ताम्रं रसगंधमनःशिलाः
कर्षं कर्षं प्रयोक्तव्यं मर्दयं त्रिफला बुधैः ८ गोलं न्यसेत्संपुटके पुटं दद्यात्प्रयत्नतः ततो नीरसा के [illegible] सप्त धा
९ क्वाथेन दत्त्वा प्यामाया भावयेत्सप्तधा पुनः माषमात्रं रसं दिव्यं पंचाशन्मरिचैर्युतं १० गुडं [illegible] चैव तुलसी दल
युग्मकं भक्षयेत्त्रिदिनं भक्त्या शीतारीदुर्लभं परं ११

सब दूर होय ७ सीतज्वरारि भस्म हरिताल तूतिया तांबा भस्म सोधा पारा गंधक शुद्ध मैनशिल ये सब कर्ष कर्ष भर लेवे त्रिफला के रस में घो
टै ८ गोला बांधि कपरौटी मांदी लेस खब फूंकि मदार के दूध में सात भावना दे ९ फिर जमाल गोटा के जड़ के काढे में फिर निसोथ के काढे में
सात भावना दे तब एक मासे रस पचास मरिच १० छह मासे गुड दो तुलसी दल भक्ति पूर्वक तीन दिन खाय शीतारि रस इसका नाम है बहुत दु

पथ्य दूध भात देय जूडी दाह ज्वर तिजारी चातुर्थक २२ अंतरिया नित्यज्वर और ज्वर जनित बिकार सब नाश होइ अथ ज्वरघ्नी गुटिका शुद्ध पारा एक भाग गन्धक पीपरि हड़ जंगी २३ अकरकरह कडुआ तेल का शोधा गंधक इंद्रायन ये चार चार भाग २४ इंद्रायन रस में घोटि माष मात्र गोली बांधि तरुण ज्वर में गुर्च रस में देइ ज्वरघ्नी गुडिका खिलावे २५ लोकनाथ रस पारा बुभुक्षित धातु भक्षक दो भाग दोनों

पथ्यं दुग्धौदनं देयं विषमं शीतपूर्वकं दाहपूर्वं हरत्याशु तृतीयकचतुर्थकौ २२ याहिकं सततं चैव वैवर्ण्यं च नियच्छति भागकैः स्याद्रसाद्रुद्रा देलीयः पिप्पली शिवा २३ अकारकरभो गंधः कटुतैलेन शोधितः फलानि चेंद्रवारुण्या श्चातुर्भागमिता अमी २४ एकत्र मर्दयेच्चूर्णमिंद्रवारुणिकारसैः माषोन्मितां वटीं कृत्वा दद्यात्सद्यज्वरेभिषक् छिन्नारसानुपानेन ज्वरघ्नी गुटिका मता २५ शुद्धो बुभुक्षितः सूतो भागद्वयमिता भवेत् तथा गंधस्य भागौ द्वौ कुर्यात्कज्जलिकां द्वयोः २६ सूतात्चतुर्गणो वेक पारदेषु विनिक्षिपेत् भागैकं टंकणं दत्त्वा गोक्षीरेण मर्दयेत् २७ तथा शंखस्य खंडानां भागानष्टौ प्रकल्पयेत् क्षिपेत्सर्वं पुटस्यांतं चूर्णं लिप्तसरावयोः २८ गर्ते हस्तोन्मिते धृत्वा धान्यं गजपुटेनच स्वांगशीतं समुद्धृत्य पिष्ट्वा तत्सर्वमेकतः २९ षड्गुंजासंमितं चूर्णं मकोनत्रिंशदूषणैः घृतेन वातजे दद्यान्नवनीतेन पैत्तिके ३०

खल करि कजरी करै पारेसे चौगुनी कौड़ी की भस्म पारे समान सुहागा गोदूध में घोटै २७ पारे से आठ गुणी शंख की भस्म शुद्ध सब पीसि दो सर्वों के भीतर लेस २८ दोनों को संपुट करि वस्त्र लपेटि मांटी लगाइ गजपुट में फूंक दे जब ठंढा हो तब निकारे खुरच के खल करै २९ फिर उन्नीस मिरच संग खल करि बात रोग में घी में देय पित्त में मक्खन साथ देइ ॥ ३० ॥

कफरोगमें लंहन संग दे अतीसार छर्दि अरुचि ग्रहणी दुर्बलता मंदाग्नि २१ कास श्वास गुल्म इन रोगों में सहत युक्त दे इस लोकनाथ रस प्रथम घी भात खाय तीन कौर फिर क्षण भर बिना तकिये बिछौने खाट पर उतान सोइ फिर चाहे जैसे सोवै २२ खटाई छोड मधुर दही अच्छा घृत के संग अन्न खाय और अवश्य जंगली मृगादि पशु भक्ष मांस घी में अच्छी तरह भूंजि खाइ २३ और संध्या के समय पक्व अइव शेष दूध भात भोजन करै और मूंग के मोदक अधिक घृत में बने खाइ भोजन संग २४ तिल आंवरा पीसि उबटना लगाइ वा घी मर्दन करि अन्हाइ वा उखोरल से

श्लेष्मेण कफजे दद्या द्दतीसारे क्षये तथा अरुचौ ग्रहणी रोगे कार्श्ये मंदानले तथा २१ कासश्वासेषु गुल्मेषु लोकनाथ रसा भिधा नस्यो परि घृतान्नं च भुंजीतक वल त्रयं मंच स्योत्तानसुप्तः पीताद्यु पधानके २२ अनम्ल मन्नं सघृतं भुंजीत मधुरं द- धि प्रायेण जांगलं मांसं प्रदेयं घृतपाचितं २३ सदुग्ध मन्नं दद्याच्च जाते ग्नौ सेव्य भोजनं सघृतान्मुग्धवटकान्व्यंजने व्यवचारये- त् २४ तिलामलक कल्केन स्नापयेत्सर्पिषाथवा अभ्यंजयेत्सर्पिषा च स्नानं कोष्णोदकेन च २५ क्वचितैलेन गृह्णीयान्न बिल्वं कारवेल्लकं वार्ताकं च फरी चिंचां त्यजेद्व्यायाम मैथुनं २६ मद्यं संधानकं हिंगु शुंठी माष मसूरिका कूष्मांडं राजिका कोलं कांजिकं चैव वर्जयेत् २७ त्यजेदयुक्त निद्रां च कांस्य पात्रे च भोजनं ककारादि युतं सर्वं त्यजेच्छाक कलादिकं २८ ग्राह्योयं लोक नाथस्तु शुभे नक्षत्र वासरे पूर्णा तिथौ सिते पक्षे जाते चंद्रबले तथा २९ पूजयित्वा लोकनाथं कुमारीं भोजयेत्ततः दानं दत्वा द्विघटि का मध्ये ग्राह्यो रसोत्तमः ३०

कमर नाई न्हाइ २५ तेल न छुवै बेल करेला नय नखरी अमली श्रम स्त्री भोग त्यागे २६ मद्य अचार हींग सोंठि उर्द मसूर पेठा राई बेर कांजी तजै २७ अस मयन सोवै कांसे में न खाय ककारादि आम के फल और साग तजै २८ यह लोकनाथ रस शुभ मुहूर्त पूर्णा तिथि शुक्ल पक्ष बलवान चंद्रमा देखि २९ लोकनाथ रस को पूजि कुमारि जिमाइ दान दे दु घटिका साधि भक्षण आरम्भ करै ३०

दूस के खाने पर तप आती है तब मिश्री गुर्च का सत वंश लोचन इन सब को मिलाइ कै दे ३१ खजूर अनार दाख ऊख की गंडेरी इनो रस ताप दूर
हो बाधा की छाल दूर करि घी में भूंजि कै चूर्ण करि मिश्री मिलाइ खिलावै ३२ उसी ताप में धनियां गुर्च का काढ़ा देय सरूखे का काढ़ा दे मधु
मिश्री मिलाइ दे ३३ रक्त पित्त कफ कास श्वास स्वर भंग ये सब अच्छे होंय भांग भूंजि चूर्ण करि लोक नाथ संयुक्त खिलावै रात को ३४
नींद नाश में अतीसार में संग्रहणी में मंदाग्नि में ये सब दूर होंय सोचर हड़ पीपरि साथ रस दे गरम पानी पिलावै ३५ तौ शूल और अजीर्ण

रसाच्च जायते तापस्तदा शर्करया युतं सत्वं गुडूच्या गर्ल्लीया दंश लोचनया युतं ३१ खर्जूरं दाडिमं द्राक्षा इक्षुदण्डाश्च ताप
येत् अरूची निस्तुषं धान्यं घृतभ्रष्टं सशर्करं ३२ तथा तथा ज्वरे धान्यं गुडूची क्वाथमाहरेत् उशीरं वासक क्वाथं दद्यान्म
धु शर्करं ३३ रक्त पित्ते कफे श्वासे कासे च स्वर संक्षये अग्नि भ्रष्ट जयाचूर्णं मधुनानि शिदीयते ३४ निद्रा नाशे तिसारे च ग्र
हण्यां पावक क्षये सो वर्चला भया कृष्णा चूर्णं मुलजले क्षिपेत् ३५ शूले जीर्णे तथा कल्का मधुयुक्तं ज्वरे हिता क्षीरोदरे बा
त रक्ते छर्द्यांचैव गुदांकुरे ३६ नासिकादियु रक्तेषु रसं दाडिम पुष्पजं दूर्वाया स्वर संतस्ये मद्या कर्षोत्थितं ३७ कोल
मज्जा तरुणा कर्हि पक्ष भस्म सशर्करं मधुना लेहये छर्दि हिका कोप प्रशांतये ३८ विविधैस्तः प्रयोगैस्तु सर्वेष्विन्नलोट
ली रसे मृगांके हेम गर्भे च मौक्तिकाख्ये परे शुच ३९

दूर करै पीपरि सहत युक्त खिलाइ वात रक्त छर्दि अर्श दूर करै ३६ गतास्तु कारण अनार रस में दे दूब रस मिश्री लोक नाथ युक्त नास दे ३७ बेर
गिरी मोर पंख की भस्म मिश्री सहत युत सदा खाय तौ छर्दि हिच की दूर करै ३८ ये जो भांति भांति के खनोपान लोकनाथ में कहे सो सब पोट
का रस में भी उसी रीति देना जैसे मृगांक हेम गर्भ मौक्तिकाख्य और पंच रत्नादि पोटलिका रस इन सबों में लोक सदृश पंथु करै तौ संपूर्ण रोगआ-

मृगांक पोटली रस क्षयादि पर सोने का यंत्र समान बनाइ सोने का सम पारा मिलाइ खल करै ४० कचनार का रस वा अरणी वा क्वारिया रस में घोटै ज-
ब तक गोला बंध जाइ ४१ सोने का चौथाई सुहागा दे और सोने का दूना मोती का चून दे ४२ इन सब के समान गंधक दे सब खल करि गोला
बांधि खूब कपड़ा लपेटे ४४ फिर माटी से लेस सुखाइ सराव संपुट करि ४४ लोन पूरित पात्र में संपट धरे उसका मुंह सुखाइ गज पुट में फूंकदे

दूत्ययं लोकनाथोक्तो रसः सर्वरुजो जयेत् ३९ भुर्जवन्तनु पात्राणि हेम्नः सूक्ष्मा निकारयेत् तुल्यानि तानि सूतेन खल्वे
क्षिप्त्वा विमर्दयेत् ४० कांचनार रसेनैव ज्वाला मुख्या रसेन वा लांगल्या वा रसैस्ता वद्या वद्बघति पिंडिका ४१ ततो हेम्नश्च
तुर्थांशं टकणं तत्र निःक्षिपेत् पिष्ट मौक्तिक चूर्णं च हेम द्विगुणमाहरेत् ४२ तेषु सर्वसमं गंधं क्षिप्त्वा चैकत्र मर्दयेत् तेषां कृत्वा
ततो गोलं वा सोभिः परिवेष्टयेत् ४३ पश्चान्मृदा वेष्टयित्वा शोषयित्वा च धारयेत् सराव संपुट स्यांत स्तत्र मुद्रां प्रदाप-
येत् ४४ लवणैः पूरिते भांडं स्थापयेन्नंत संपुटं मुद्रां दत्वा ततो गोलं वा सोभिः परिवेष्टितं प्रशोषयित्वा मुखमस्य च हु
भिर्गोमयैः पुटेत् ४५ ततः शीते समाहृत्य गंधं सूतसमं क्षिपेत् दध्वाच पूर्ववत्खल्वे पुटे इजपुटेन च ४६ स्वांग शीतं त-
तोनीत्वा गुंजा युग्मं प्रयोजयेत् अष्टाभिर्मरिचैर्युक्ता कृत्वा वयमथः पिवा ४७ विलोक्य देया दोषादि ह्येकैव रस रत्तिका स
पिषा मध्वुना वापि देया दोषाद्यपेक्षया ४८

४५ ठंढा भए निकारि के सोने समान पारा सोने समान गंधक युक्त करि पूर्व वत रस में खरल करि फिर उसी क्रिया से गज पुट में फूं-
के ४६ जब ठंढा हो तब निकासि दो गुंजा रस आठ मरिच वा तीन पीपरि संग दे ४७ और दोष को विचारि के औषधि रत्ती भर घाट
वा बाढ समझ के देइ घी अथवा सहत साथ दोष विचारि के देना ४८

पथ्य लोकनाथ सदृश इस में भी देना योग्य है चित्त एकाग्र करि अति पवित्र हो खाइ तो श्लेष्मा ग्रहणी कास श्वास क्षय अरुचि यह मृगांक रस इन रोगों को दूर करता है बल हीन को बलवान कर्ता है दुर्बल को मोटा करै ४९ कफ क्षय पर हेम पुटली रस पारा पारे की चौथाई सोना ले खल करै जब पीठी होइ तब दोनों से दूनी गंधक दे कचनार रस में घोटि गोला करै ५० सो मूषा यंत्र में भरि संपुट करि वस्त्र लपेट माटी लगाइ सुखाइ भूधर यंत्र में फूंक दे भूधर यंत्र एक हाथ गहिरा लंबा चौड़ा खोदि तिस में छोटा गढ़ा खोदि औषधि रस माटी से दाबि तिस पर

लोकनाथ समं पथ्यं कुर्यात्स्वस्थमना शुचिः श्लेष्माणं ग्रहणीकासं श्वासं क्षयमरोचकं मृगांकोयं रसो हन्यात्कुरुते बल हानितां ४९ सूक्ष्मात्पादप्रमाणेन हेम्नापिष्टीं प्रकल्पयेत् तयोः स्याद्विगुणं गंधं मर्दयेत्कांचवारिणा ५० कृत्वा गोलं क्षिपेन्मूषां संपुटे मुद्रयेत्ततः पचेद्भूधरयंत्रेणावासरं निलयं बुधः ५१ तत उद्धृत्य तत्सर्वं दद्याद्गंधं च तत्समं मर्दयेदर्द्रकरसैश्चित्रकस्य रसेन वा स्थूलपीतवराटेषु पूरयेत्तेन यत्नतः एतस्मादौषधात्कुर्यादष्टमांसेन टंकणं ५३ टंकणार्द्धं विषं दत्वा पिष्टा सेहुंड दुग्धकैः मुद्रयेत्तेन कल्केन वराटीनां मुखानि च ५४ भांडे चूर्णप्रलिप्ते च धृत्वा मुद्रां प्रदापयेत् गर्तेद्वितीये धृत्वा पुटे इजपुटेन च ५५ स्वांगशीतं रसं नीत्वा प्रदद्याल्लोकनाथवत् पथ्यं मृगांकवत्ज्ञेयं त्रिदिनं लवणं त्यजेत् ५६ यदा छर्दिर्भवेत्तस्य दद्याच्छिन्नारसं तदा मधुयुक्तं तदा श्लेष्मकोपे दद्याद्गुडार्द्रकं ५७

तिनकी कंडा करसी करि बड़े गढ़े में भरि आंच दे तीन दिन ५१ जब स्वभाव से शीतल हो तब निकारि समान गंधक ले अद्रक वा चीते के रस में घोटि ५२ बड़ी पीली कौड़ी में भरि औषधि का अष्टमांश सुहागा ५३ सुहागे का आधा सिंगिया दोनों सेहुंड के दूध में पीसि कौड़ी का मुख बंद करि ५४ फिर माटी पात्र में चूना लेसि कौड़ी में भरि दूसरे दिवस बंद करि मुद्रित करि गजपुट आंच दे ५५ ठंढा भये निकारि लोकनाथ की रीति से खिलावे मृगांक की रीति से पथ्य दे तीन दिन लोन वर्जित रहै ५६ जो छर्दि होइ तो गुर्च का रस वा क्वाथ मधु युक्त दे कफार्ति में गुड़ आद्रक रस

अतीसार में भूनी भांग हींग दोनों के संग दे कास श्वास क्षयी ग्रहणी अरुचि इन में भी दही भंग संग दे ५८ अग्नि दीपन कफ बात नाश न यह हेम पोटली रस श्रेष्ठ है ५९ पुन हेम गर्भ रस कासफपाए लेता चार भांग दोनों पीठी करि द्वादश गंधक दे ६० तीनों की कजली करि २९ भाग मोती २४ भाग शंख २ भाग सुहागा ६ ये सब एकत्र करि पक्के नीबू के रस में घोटि गोला बांधि मूसा पुट में धरि मुद्रा साधि ६२

विश्वे भर्जिता भंगा प्रदेया दधिसंसता जयेत्कासं क्षयं श्वासं ग्रहणी मरुचिं तथा ५८ अग्निं च कुरुते दीप्तं कफं वातं नियच्छति हेमगर्भः परोक्तेयो रसः पोटलिकाभिधः ५९ चतुर्विंशश्च शंखस्य भागैकं टंकणस्य च तयोश्च पिष्टिकां कृत्वा गंधो द्वादशभागिकः ६० कुर्यात्कज्जलिकां तेषां मुक्ता भागश्च षोडश चतुर्विंशश्च शंखश्च भागैकं टंकणस्य च ६१ एकत्र मर्दयेत्सर्वं पक्व निंबुकजै रसैः कृत्वा तेषां ततो गोलं मूषासंपुटके न्यसेत् ६२ मुद्रां दत्वा ततो हस्तमात्रे गर्ते च गोमयैः पुटे द्वजपुटे नैव स्वांगशीतं समुद्धरेत् ६३ पिष्ट्वा गुंजा चतुर्मानं दद्यात् द्रव्याज्य संयुतं एकोनत्रिंशदुन्मान मरिचैः सह दीयते ६४ राजते मृण्मये पात्रे कांचजे वापि लेहयेत् लोकनाथ समं पथ्यं कुर्यात्स्वयन मानसः ६५ कासे श्वासे क्षये बाते कफे ग्राहणिका गृहे अतिसारे प्रयोक्तव्या पोटली हेमगर्भिका ६६

मुद्रा दे हाथ भर पृथ्वी खोदि उस में धराद् हाथ भर कंडा भराद् फूंक दे जब शीत परे तब निकारि धरै ६३ चार रत्ती रस मिर्च उन्तीस गो घृत में पीसि ६४ चांदी वा माटी वा कांच के पात्र में धरि खिलावै लोक नाथ रस सम पथ्य बतावै ६५ इस यत्न से कास श्वास क्षयी बात कफ ग्रहणी अती सार मयी को देवे यह हेम गर्भ पोटली इन सब रोगन को हर लेद ॥ ६६ ॥

पारा गंधक विष शोधे चारि चारि मासे धतूरा बीज १२ मासे सब का दूना ६७ चोक चोक विना कूट सब युक्त करि सूक्ष्म चूर्ण करि दै गुं-
जा रस जंभीरी के ६८ वा अदरक रस में दे त्रिदोषजनित ज्वर नाश करै नित आने वाला अंतरिया तिजरिया चातुर्थक यह ज्वरांकुश बिष
म ज्वर नाश करै निश्चय कर ६९ आनंद भैरव रस अतीसार पर शुद्ध सिंगरफ सिंगिया मरिच सुहागा पीपरि ये सब समान ले महीन
चूर्ण करिये यह आनंद भैरव ७० रोगी का बल देखि रस एक ज्वआर वा दो गुंजा दूंढजो कुरैया छाल दूनी दश मासे पीसि रस युक्त

शुद्ध सूतं विषं गंधं प्रत्येकं शाणसंमितं धूर्तबीजं त्रिशाणं स्यात्सर्वेभ्यो द्विगुणा भवेत् ६७ हेमाह्वा कारये देषां चूर्णं
सूक्ष्मं प्रयत्नतः देयं जंबीरमज्जाभिश्चूर्णं गुंजाद्वयोन्मितं ६८ आर्द्रकस्वरसैर्वापि ज्वरं हंति त्रिदोषजं एकाहिकं द्वा
हिकं च तृतीयं वा चतुर्थकं विषमं च ज्वरं हन्याद्विख्यातोयं ज्वरांकुशः ६९ दरदं वत्सनाभं च मरिचं टंकणं कणा चूर्णये

त्सम भागेन रसो ह्यानंदभैरवः ७० गुंजैकं वा द्विगुंजा वा बलं ज्ञात्वा प्रयोजयेत् मधुना लेहयेच्चानु कुटजस्य फलं त्वचं
चूर्णितं कर्षमात्रं तु त्रिदोषोत्थातिसारजित् दध्यन्नं दापयेत्पथ्यं गव्याज्यं तक्रमेव चापि पासाया जलं शीतं विजया
च हिता निशि ७२ विषं पल मितं स्तः शालिकश्चूर्णयेद्द्वयं तच्चूर्णं संपुटे धृत्वा कांचलिप्त सरावयोः मुद्रां दत्वा च सं
शोष्य ततश्चुल्ह्यां निवेशयेत् ७३ वह्निः शनैः शनैः कुर्यात्प्रहर द्वय संख्यया ७४

सहत में मिलाय चटावै तो त्रिदोषजन्य अतीसार दूर होय ७१ गऊ का दही वा मट्ठा वा घृत पथ्य भात साथ खाय ठंढा पानी पिलावै
और भांग अच्छी तरह धोय बनाद रात को पिलावे ७२ सन्निपात पर लघु सूचिका भरण सिंगिया १ पल पारा ४ मासे दूनो खल करि
दो परई कांच के लुक करी हुई में धरि कै ७३ मुद्रा करि सुखाद चूल्हे पर चढाद मंद मंद दो पहर की आंच देद ॥ ७४॥

दूनो जुदा करि ऊपर के सरवे में लगाधु आरल ले से छील ७५ जिस पात्र में पौन न जा सके वा सीसी में धरै सूची मुख से सीसी के रि लेद सू-
ची मुख एक सूई सम ले कहो उस्का मुख सूई समान हो उसे सूखा मुख कहते हैं उस्से जितना निकसै ७६ तितना सन्नि मूर्छित का शिर
मुड़ाइ पछने देइ जो रक्त निसरै उसी घाव पर उस रस को अंगुरी से मलै ७७ जो रुधिर और रस में मिल जाय तो मूर्छित जागै तैसे ही सांप का का-
टा जागै फिर दूसे दूस उपचार से तप आवै तब उस रोगी को मधुर अर्थात् गंडेरी अनार छुहारा दाखादि खिलावै ७ सन्नि पर जल बूंद रस पारा

ततउत्पाट्यतन्मुद्रा उपरिस्थेसरावके संलग्नोयोभवेद्धूमः सग्राह्लीया च्छनैःशनैः ७५ वायुस्पर्शोपयानस्याततःकु-
प्यांनिवेशयेत् रसःसूचीमुखे लग्नं कुप्यांनिर्यातिभेषजं ७६ तावन्मात्रो रसो देयो मूर्छितेसन्निपातिनि क्षुरेणप्रच्छि-
ते मूर्द्धि तदंगुल्याचधर्षयेत ७७ रक्तभेषजसंपर्कान्मूर्छितो पिहि जीवति तथैवसर्पदष्टस्तु मृता वस्थोपि जीवति
यदा तापो भवेत्तस्य मधुरं तत्र दीयते ७८ भस्मसूतसमंगंधं गंधात्पादं मनःशिला माक्षिकं पिप्पली व्योषं प्रत्येकं शिल-
या समं ७९ चूर्णयेद्भावयेत्पित्ते र्मत्स्य मायूरसंभवैः सप्तधाभाव्यसंशुष्कं देयं गुंजा द्वयोन्मितं ८० तालपर्णी रसैश्चानु
पंचकोलशृतं पिबा जलबुंदो रसो नाम सन्निपातं नियच्छति जलयोगश्च कर्तव्य स्तेन वीर्यं भवेद्रसः ८१ शुद्धसूतं विषं गं-
धं मरिचं टंकणं कणा मर्दयेद्धूर्तजैद्रावैर्दिनमेकंच शोषयेत् ८२

भस्म समान गंधक की चौथाई मैनशिल सोना माखी पीपरि सोंठि मर्च राव मैनशिल समान ले ७९ खल करि मछरी के पित्ते में सात भावना दे
तैसे मयूर पित्ते में सात भावना दे सुखाइ दो गुंजा खवावै ८० स्वेत मुसली के रस में और पंच कोल कहैं सोंठि मिर्च पीपरि चाब चीता इन के कांढ
में दे यह जल बुंद रस सन्नि को दूर करता है जल ठंढा पियै ठंढे जल से हाथ मुंह धोवै जल का अस्पर्श राखे तो औषधि वल पाती सन्निपा-
त दूर करती है ८१ सन्नि पर पंच वक्र रस शुद्ध पारा सिंगिया गंधक मिर्च सुहागा पीपर धतूरा के रस में एक दिन मर्दन करै घाम में सुखावै ८२ १९५

१४०

यह पंचवक्त्र रस दुइ गुंजा सन्निपात में देइ तो सन्नि दूर जाइ मदार मूल क्वाथ सोंठि मिरच पीपरि के संग दे यही अनोपान है ८३ पथ्य दही भात दे और जल योग करैं जल बैठि औषधि खाइ सहत संग देय तो कफ जनित उपद्रव अच्छे होंय ८४ अद्रक सहत संग देय तो अग्नि दीपन करे और यथा योग्य घृत मांस खाइ तो अग्नि प्रबल करे ८५ सन्निपात पर उन्मत्त रस पारा गंधक समभाग ले धतूरे फल के रस खल करि तिस्के समान त्रिकुटा दे पीसि यह उन्मत्त रस की नास देने से सन्निपात दूर होइ ८६ सन्निपात पर अंजन जमाल गोटा छीलि पिन्ना दूरि करि चालीस मासे

पंचवक्त्रो रसो नाम द्विगुंजः सन्निपातहा अर्कमूलकषायं तु सत्र्यूषमनुपाययेत् ८३ युक्तं दध्योदनं पथ्यं जलयोगं च कारयेत् रसेनानेन साम्यंति स क्षौद्रेण कफोद्भवाः ८४ मध्वार्द्रकरसं चानु पिबेदग्निविवृद्धये यथेष्टं घृतमांसाशी शक्तो भवति पावकः ८५ रसगंधकतुल्यांशं धतूरफलजै रसैः मर्द्दयेद्दिनमेकं तु नतुल्यं त्रिकटुकं क्षिपेत् उन्मत्ताख्यो रसो नामनस्ये स्यात्सन्निपातजित् ८६ निस्त्वग्जेपालवीजं च दश निष्कं विचूर्णयेत् मरिचं पिप्पली शुंठी प्रति निष्कं विमिश्रयेत् ८७ भाव्यो जंबीरजैर्द्रावैः सप्ताहं संप्रयत्नतः रसोयमंजने दत्तः सन्निपातं विनाशयेत् ८८ सूतं टंकणकं तुल्यं मरिचं सूततुल्यकं गंधकं पिप्पली शुंठी द्वौ द्वौ भागौ विचूर्णयेत् ८९ सर्वतुल्यं क्षिपेद्दंतीवीजं निस्तुषितं भवेत् गुंजैकं रेचनं सिद्धं नाराचोयं महारसः आध्मानमलविष्टंभमुदावर्तं च नाशयेत् ९०

चूर्ण करै सोंठि मिरच पीपरि चार चार मासे ले ८७ जंभीरी रस में सात दिन घोटि अंजन करै तो सन्निपात दूर होइ ८८ शूल पर नाराच रस पारा सुहागा सम भाग करि समान मिरच गंधक पीपरि सोंठि द्वै द्वै भाग ले खल करै ८९ सब के समान शुद्ध जमाल गोटा दे एकत्र करि खल करै गुंजा भर देने से रेचन होइ यह नाराच नाम रस आध्मान मल विष्टंभ उदावर्त ये सब रोग नाश करता है ९०

शूल पर वृच्छा भेदी रस शुद्ध सिंगरफ सुहागा सोंठि पीपरि कर्ष कर्ष भर चोक पल भर जमाल गोटा पल भर ८१ सब खल करि गो दूध में तीन गुंजा रेच नार्थ देइ यह वृच्छा भेदी रस से विष्टब्ध आध्मान दूर हो ८२ छर्दि पर राज मृगांक रस पारा भस्म ३ भाग सोना भ॰ १ तांबा भ॰ मैनसिल शुद्ध गंधक हरताल ८३ द्वै द्वै भाग सब घोटि कौड़ी में भरि बकरी के दूध में सुहागा पीसि कौड़ी का मुख मूंदि माटी पात्र में धरि संपुट करि ८४ सुखाइ गज पुट में फूंक दे जब सिराइ तब खल करै इस राज मृगांक रस को ४ गुंजा देइ तो छर्दि क्षय होइ अनोपान उन्तीस मिर्च सहत

दरदं टंकणं शुंठी पिप्पली चैक कार्षिका हेमाव्हा पल मात्रं स्याद्दंती बीजं च तत्समं ८१ विचूर्ण्यैकत्र सर्वाणि गो दुग्धे नैव पाययेत् त्रिगुंजं रेचने दद्याद्विष्टं भाध्मान रोगिषु ८२ भस्म सूतत्रयो भागा भागैकं हेम भस्मकं मृततास्र स्य भागैकं शिला गंधक तालकं ८३ प्रति भाग द्वयं शुद्धमेकी कृत्य विचूर्णयेत् विराटी पूरयेत्तेन छागी क्षीरेण टंकणं पिष्ट्वा तेन मुखं रुध्वा मृद्भांडे संनिरोधयेत् ८४ शुष्कं गज पुटे पक्त्वा चूर्णयेत्स्वांग शीतलं रसो राज मृगांको यं चतुर्गुंजः क्षयापहः दश पिप्पलिका क्षौद्रै रेकोन त्रिंशदूषणैः ८५ शुद्ध सूतं द्विधा गंधं कुर्यात्खल्वेन कज्जलीं तयोः समं तीक्ष्ण चूर्णं मर्दयेत्कन्यका द्रवैः ८६ द्वियामांते कृतं गोलं तास्र पात्रे निधापयेत् गालयेच्चैव वस्त्रेण ततो वारितरं भवेत् ८७

वा दश पीपरि सहत संग देइ ८५ छर्दि पर खटा अग्नि रस शुद्ध पारे से दूनी शुद्ध गंधक खल करि कजली करि दोनों समान पोलाद भस्म ले सब घीकुवार के रस में ८६ दो पहर घोटि वासन में रख रेंड पत्र में ढांपि पहर भर दूध में धरे उष्ण होइ ८७ तब नाज की रास में एक दिन रात गाड़ि के निकार लेइ फिर खल करि वस्त्र में छानि ले तब जल पर डारे तो तिरैगी ८८

त्रिकुटा त्रिफला इलायची जाय फल लौंग ये सब नव भाग इन सबसमान क्षय मग्नि रस ले ९९ ये सब खरल करि सहत में दे निष्क खाइ यह क्ष मि रस हायी और कास को नाश कर्ता है २०० श्वास पर सूर्या वर्त रस पारा की आधी गंधक पहर भर घी कुवार के रस में घोटि दोनों सम तांबेका पा त्र ले तिस पर लेप करि यह कजरी २०१ एक दिन थाली यंत्र में पकाइ रेच ले थालिका यंत्र माटी की हांडी में लोन भरि तिसपै तांबे का पत्र ध रि मुंह मूंदि कपरोटी करि फूंक देइ यह सूर्या वर्त रस पीसि दे गुंजा खवावै तौ श्वास नाश करै २०२स्वछंद भैरव रस शुद्ध पारा मरा लोहा सोना·

त्रिकटु त्रिफलै लाभि र्जाती फल लवंगकैः नवभागोन्मितै स्तैः समं पूर्व रसो भवेत् ९९ संचूर्ण्य लोड येत्क्षौद्रे भक्ष्यं निष्क द्वयं द्वयं क्षयमग्नि रसो नाम्ना क्षय कास निकृंतनः २०० सूताधौ गंधको मर्द्यो याम मेकं कन्यका रसैः द्वयो स्तुल्यं ताम्र पत्रं पूर्व कल्केन लेपयेत् १ दिनैकं स्थालिकायंत्रे पक्त्वा मादाय चूर्णयेत् सूर्या वर्तो रसो सोयः द्वि गुंजः श्वास जिद्भवेत् २ शुद्धसूतं मृतं लोहं ताप्यं गंधक तालकं यथा मिमंथ नि र्गुंडी भूषणं टंकणं विषं ३ तुल्या पंर्ग मर्द्दये त्खल्वे दिनं निर्गुंडिका द्रवैः मुंडी द्रावे दिनै कंतु द्विगुंजं वट की कृतं ४ भक्षये द्वा तरो गार्तो नाम्ना स्वछंद भैरवं रास्ना मृता देव दारु शुंठी वाता रिजं स्तनं सगुग्गुलं पिवे त्कोल मनु पानं सुखा वहं ५ दग्धा न्कपर्दिका न्पिष्ट्वा भूषणं टंकणं विषं गंधकं सूतमुंडं च तुल्यं जंबीरजै र्द्रवैः ६ मर्द्दयेद्भ क्षयेन्माष मरिचाज्यं लिहन्नु॥ मारवी गंधक हरताल हड़ अरणी मेवड़ी त्रिकुटा भूना सुहागा सिंगिया मेवड़ी रस ३ में सब नि लाइ समान खरल करि फिर एक दिन गोरख मुंडी के रस में खरल करि दे गुंजा समान गोली करै ४ यह स्वछंद भैरव रस बात रोगी को खिलावै तौ रासन गुर्च देव दारु सोंठि रेंड की जड़ इनकाकाढाकीगुग्गुल युक्त गरम उस के संग पिलावै यह अनोपान सुख दाई है ५ हंस पदोली ग्रहणी पर भुंजी कौड़ी पीसि सोंठि मिर्च पीपरि सुहागा सिंगिया गंधक शुद्ध पारा सब द्रव्य समान ले जंभीरी के रस में ६ खरल करि मासा एक भर खाइ

मरिच घी के साथ तब ग्रहणी नाश होय माठा भात पथ्य देय १०७ त्रिविक्रम रस पथरी पर मरा तांबा बकरी दूध समान ले किसी पात्र में
धरि आंच दे दूध जरे उतारि तब तांबे के समान शुद्ध पारा गंधक दे १०८ मेवड़ी रस में एक दिन घोटि गोली करि मूसा यंत्र में धरि वालुक यंत्र में आं
च दे तब दो गुंजा खिलावै ९ बिजौरा की जड़ को समेवा काढ़े में यह रस देय इस रस का त्रिविक्रम नाम है मासे भर सेवन करै तो पथरी दूर
हो १० कुष्ट पर महातालेश्वर हरतालेश्वर सोना माखी मैनसिल पारा सैंधव सुहागा ये सब समान खल करि पारे से दूनी गंधक दे ११ गंधक

निहंति ग्रहणी रोगं पथ्यं तक्रोदनं हितं ७ मृतताम्रमजाक्षीरैः पाच्यं तुल्यैर्गतं द्रवं तत्ताम्रं शुद्धसूतं च गंधकं च समे समे ८ नि-
र्गुंडी स्वरसै मर्द्य दिनं तद्गोल संधयेत् यामैकं वालुकायंत्रे पाच्यं भोज्यं द्विगुंजकं ९ बीजपूरकमूलं च सजलं चानुपाययेत् रसा
स्त्रिविक्रमो नाम मासैकेनाश्मरी प्रणुत् १० तालं ताप्यं शिला सूतं शुद्धं सैंधवकं कणां समांशं चूर्णयेत्खल्वे सूताद्द्विगुणगंध
कं ११ गंधतुल्यं मृतं ताम्रं जंबीरैर्दिवपंचकं मर्द्यं षड्भिः पुटैः पाच्यं मधुरे संपुटे पचेत् पुटे पुटे द्रवैर्मर्द्य सर्वमेतत् षट्पलं १२
द्विपलं मारितं ताम्रं लोहभस्म चतुष्पलं जंबीराम्लेन तत्सर्वं दिनं मर्द्यं पुटे लघुः १३ विंशदंशं विषं चास्य क्षिप्त्वा सर्वं विचूर्णयेत् म
द्विषाज्येन संमिश्रं निष्कार्धं भक्षयेत्सदा १४ मध्वाज्यैर्वा कुचं चूर्णं कर्षमात्रं लिहेदनु सर्वकुष्ठं निहंत्याशु महातालेश्वरो रसः १५

तुल्य मरा तांबा जंभीरी के रस में ५ दिन घोटि सराव संपुट में धरि कपरोटी करि भूधर यंत्र में फूंक दे ऐसे छः वार फूंक दे फिर निकारि विजा
सरा में पांच दिन घोटै पूर्ववत् आंच दे तब छः पल रस ले १२ मरा तांबा २ पल लोह मरा ४ पल ये तीनों जंबीरी रस में एक दिन घोटि व
न गोवटा में आंच दे १३ इस भस्म का तीसवां अंश सिंगिया दे खल करै तब दो मासे भैंस के घी में नित खाद १४ इस पीछे वकुची का
चूरन दश मासे मधु युक्त घी साथ खाद तो सब कुष्ट नाश होय इस का नाम महातालेश्वर है १५

कुष्ट कुठार रस पारा भस्म गंधक मरा लोहा ताम्र गुग्गुल त्रिफला बकाइन चीता सुद्ध शिलाजीत २६ ये द्रव्य सोलह शाण चौंसठि शाण करंज बीज का चूर्न २७ अभ्रक भस्म ६४ शाण सब चूकटी करि समान घृत में सानि घृत भांडे में भरि धरि दूसे आठ मासे खिलाइ सब कुष्ट दूर करै यह कुष्ट कुठार रस गलित कोढ़ भी नाश करता है २८ उदया दित्य रस सुद्ध पारा दूनी गंधक एक दिन घी कुआर के रस में मर्दन करि गोला बांधि माटी पात्र में धरि पारे से त्रिगुण तांबे की गहरी कटोरी बनाइ उस माटी पात्र के भीतर गोले पर ढांपि किसी वस्तु

भस्मसूतसमो गंधो मृतायस्ताम्रगुग्गुलः त्रिफला च महानिंबश्चित्रकश्च शिलाजतुः २६ तुल्येन चूर्णितं कुर्यात्प्रत्येकं शाण षोडश चतुःषष्टि करंजस्य बीजचूर्णं प्रकल्पयेत् २७ चतुःषष्टि मृतं ताम्रं मध्वाज्याभ्यां विलोडयेत् स्निग्धभांडे धृतं खादे द्विनिष्कं सर्वकुष्टनुत् रसःकुष्टकुठारोयं गलत्कुष्टनिवारणं २८ शुद्ध सूतं द्विधा गंधं मर्द्यं कन्याद्रवैर्दिनं तद्गोलं पिठरी मध्ये ताम्रपात्रेण रोधयेत् सूतिकात्रिगुणेनैव शुद्धेनाधो मुखेन च २९ पार्श्वे भस्म निधायाथ पात्रोर्ध्वे गोमयं जलं किंचित्किंचित्प्रदातव्यं चूल्यां यामद्वयं पचेत् चंडाग्निना ततः स्वांगशीतं समुद्धरेत् ३० काष्ठोदुंबरिका वन्हि त्रिफला राजवृक्षकं विडंगं वाकुची बीजं क्वाथयेत्तेन भावयेत् ३१ दिनैकमुदयादित्यो रसो देयो द्विगुंजकः विचर्चिकां दद्रु कुष्टं श्वेतकुष्टं च नाशयेत् ३२ अनुपानं प्रकर्त्तव्यं बाकुची फल चूर्णकं ॥

मेंसे निःसंधि करि बंद करि २९ चारों ओर ढकन राखि भरि चूल्हे पर धरि दो पहर आंच देइ और उस तांबे के ढकने पर पानी में गोबर घोलि थोरा थोरा छोड़ता जाइ अंत में तीव्र आंच दे ठंढा भये उतारि ३० कठगूलर चीता त्रिफला अमलतास पत्र विडंग बकुची बीज इन का क्वाथ करि रस को भावना दे ३१ दिन घोटै यह उदयादित्य रस दो गुंजा खिलाने से विचर्चिका दाद सेत कुष्ट अच्छा होइ ३२ अनोपान खदिर

त्रिफले के क्वाथ में तीन प्रमाण बकुची चूर्ण है गुंजा प्रमाण युक्त खाय २३ तो तीन दिन के अंत में फूटक कुष्ट दूर हो सात दिन के अंतसफे-
द कुष्ट दूर हो चित्र पर लेप नील पत्र गुंजा कसीस धतूरा हंस पद सूर्य मुखी छोटी लुनिया ये सब सम भाग लेप करने से २४ जहां फूटा
हो तहां तो सात दिन में गलित कुष्ट अच्छा होय और श्वेत कुष्ट साध्य वा असाध्य दूर होय २५ दूसी परश्रेष्ठ वैद्य और लेप कहते हैं
घुंघची चीता जल में पीसि लगाने से स्वेत कुष्ट दूर होय मैनसिल चिर्चिरा राखि पीसि पानी साथ लेप करै तो स्वेत कुष्ट दूर होय २६

खदिरस्य कषायेन समेन परिपाचितं त्रिप्रमाणं वागुजीक्षीरैः क्वाथैर्वा त्रिफलोद्भवैः त्रिदिनांते भवेत्स्फोटः सप्ताहाद्वांकि
लासके २३ नीलीगुंजा चकासीसं धत्तूरं हंसपादिकां सूर्यभक्तां च चांगेरीं पिष्ट्वा तुल्यानि लेपयेत् २४ स्फोटस्थान प्र-
शांत्यर्थं सप्तरात्रं पुनःपुनः स्वेतकुष्टं निहंत्याशु साध्यासाध्यं न संशयः २५ अपरं श्वित्रलेपोपि कथ्यतेऽत्र भिषग्वरैः
गुंजा फलाग्नि चूर्णं च लेपितं श्वेत कुष्ठनुत् शिलापामार्गभस्मापि लिप्ता श्वित्रं विनाशयेत् २६ शुद्ध सूतं चतुर्गंधं पलं यामं
विचूर्णयेत् सूतताम्राभ्रलोहानां दरदं च पलं पलं २७ सुवर्णं रजतं चैव प्रत्येकं दशनिष्ककं माषैकं मृत वज्रं च तालसत्त्व
पलत्रयं २८ जंबीरोन्मत्तवासाभिः स्नुह्यर्क विषमुष्टिभिः मर्दं ह्याग्निजैर्द्रावैः प्रत्येकेन दिनं दिनं २९ एवं सप्त दिनं म
र्द्य तद्गोलं वस्त्र वेष्टितं वालुकायंत्रगं स्वेद्यं त्रिदिनं लघु वन्हिना १३०

कुष्ट पर सर्वेश्वर रस शुद्ध पारा १ पल गंधक ४ पल एक पहर खल मरा तांबा अभ्रक लोह दूंगुर शुद्ध सब एक एक पल २७ मारा सोना
चांदी एक पल मासे भर हीरा ३ पल हरताल का सत २८ जंभीरी धतूरा वासा सेंहुड मदार बकादून वा कुचला करै रमूल दून सब के र-
स में एक एक दिन भावना दे घोटि २९ ऐसे सात दिन घोटि गोला करि सुखाय कपरौटी करि वालुका यंत्र में तीन दिन मंद मंद आंच दे प-

वे दूर निकोस खेले कोरे पल भर सींगिया है पल पीपरि दूती करि घोटै सर्वेश्वर रस इस का नाम है   इद् गुंजा सहत संग खिलावै से सुत
प्त मंडल दूर हो अनोपान बकुची देव दारु चूर्ण एक कर्ष रंडी के तेल में मिलाय ऊपर से चाटे यह अनोपान सुख देता है ३१ कुष्ठ पर स्वर्ण क्षीरी रस
पीलि पैसे भर चोक घड़ा भर मट्ठे में पचाइ जब मट्ठा गाढ़ा हो तब निकारि घड़ा भर दूध में पचावे जब दूध का खोआ हो जाय तब निकाल धोइ
सुखाइ ३२ उस चोक में दो पल मरिच पल भर पारे की कजली सब मिलाइ खल करे चारि मासे खिलावे तो सुप्त कुष्ठ पीडित के कारण यह स्वर्ण

आरग्वध चूर्णं चैलल्ल छ्रां पलैकं योजयेद्विषं द्वेपले पिप्पली चूर्णं मिश्रं सर्वेश्वरो रसः ३१ द्विगुंजो लिह्यते क्षौद्रैः सुप्त मंड
ल कुष्ठजित् वाकुची देव काष्ठं च कर्ष मात्रं सुचूर्णयेत् लिहेदेरंड तैलेन अनुपानं सुखावहं ३२ हेमाह्वा पंच पलिकं
क्षिप्त्वा तक्र घटे पचेत् तक्रे जीर्णे समुद्धृत्य पुनः क्षीर घटे पचेत् क्षीरे जीर्णे समुद्धृत्य क्षालयित्वा विशोषयेत् ३३
तच्चूर्णं पंच पलिकं मरिचानां पलं द्वयं पलैकं मूर्छितं सूतमेकीकृत्यानुभक्षयेत् निष्कैकं सुप्त कुष्ठार्तः स्वर्ण क्षीरी रसो
ह्ययं ३४ भस्म सूतं मृतं कांतं मुंडं भस्म शिलाजतु शुद्धं ताप्यं शिला व्योषं त्रिफलां कोल बीजकं ३५ कपित्थ रज
नी चूर्णं भृंगराजेन भावयेत् दिनं द्वारं विशोष्याथ मधु युक्तं लिहेत्तदा ३६ निष्क मात्रं हरेन्मेहान्मेह बद्ध रसो
महान् मह्वा निंबस्य बीजानि पिष्ट्वा षट् संमिलानि च ३७

क्षीरी रस कहा है २३३ प्रमेह पर मेह बद्ध रस मरा पारा कांजी भस्म लोह भस्म शिलाजीत शुद्ध सोना माखी मैनशिल शुद्ध त्रिकुटा त्रिफला
भरबेरी की गूदी ३४ कैथा हरदी इन सब का चूर्ण भंगरे के रस में घोटै जब सूख जाय तब सहत मिलाइ चाटे ३६ मासे ४ नित खा
इ तो प्रमेह नाश होय यह रस मेह बद्ध नाम कहते हैं बकाइन के बिया छह पीसि लेइ ॥ ३७ ॥

चारि पैसा भर चावर का धोवन आठ मासे घी सब मिलाइ के पिये तो बहुत दिनों प्रमेह दूर हो १३९ जलोदरपर वन्हि रस पारा पल चार गंधक पल ४ हरदी त्रिफला हड़ ये सब दुइ दुइ पल निशोथ जै पाल चीता १३८ ये सब तीन तीन पल त्रिकुटा जमाल गोटे की जड़ स्वेत जीरा आ ठ आठ पल सब मिलाइ खल करै १४० डेकार रस सेंहुड दूध भंगरा रस चीता रस वा काढ़ा रेंडी का तेल इन में क्रमसे सात सात भावना दे ४१ यह महा वन्हि रस ४ मासे मुंह में धरि गरम पानी से उतारि जाइ तब मल गिरै संध्या को रेच के पीछे पथ्य मट्ठा भात सैंधव लोन दे

मलं तंदुल तोयेन घृत निष्क द्वयेन च एकी कृत्य पिबेच्चानु हंति मेहं चिरंतनं ३८ चतुः सूतस्य गंधाष्टो रजनी त्रिफला शिवा प्रत्येकं च द्वि भागः स्यात्त्रि वृत्त्जे पाल चित्रकं ३९ प्रत्येकं च त्रि भागं स्यात्त्र्यूष हंतीच जीरकं प्रत्येकं मष्ट भागं स्यादेकी कृत्य वि चूर्णयेत् ४० जयंती स्नुवयो र्भृंग वन्हि वाता रितेलकैः प्रत्येकेन क्रमाद्भाव्यं सप्तवारं पृथक् पृथक् ४१ महा वन्हि रसोना म निष्क मुष्ण जलैः पिबेत् विरेचनं भवेत्तेन तक्र भक्तं स सैंधवं ४२ दिनांते दापये त्पथ्यं वर्जयेच्छीतलं जलं सर्वोदरहरः

प्रोक्तो मूढ बात हरः परः ४३ गंधकं तालकं ताप्यं मृत ताम्र मनः शिलां शुद्धं सूतंच तुल्यांशं मर्दयेद्भावये द्दिनं पिप्पल्याः स्नुकषायेण वज्री क्षीरेण भावयेत् निष्कार्द्धं भक्षये त्क्षौद्रै गुल्म प्लीहा दिकं जयेत् रसो विद्या धरो नाम गो मूत्रंच पिबेद नु ॥४४॥

और जल गरम पिये सब पेट के रोग दूर होंइ मूढ बात दूर हो ४० गुल्म पर विद्याधर रस शुद्ध गंधक हरताल सोना मारवी मरा तांबा मै नसिल पारा सब समान ले खल करि फिर पीपर काथ में दिन भर खल करै एक दिन सेंहुड दूध में खल करै ४३ दो मासे संग चाटै गुल्म प्लीहा दूर होइ यह विद्या धर रस खाइ ऊपर से गोमूत्र पिये ॥ १४४ ॥

त्रिनेत्र रस पंक्ति शूल पर सुहागा हरिण शृंग सोना तांबा औरपारा एक दिन अद्रक रस में घोटि गज पुट में फूंक दे ४५ यह त्रिनेत्र रस मा
सा भर घृत सहत में चाटै तिस पर सैंधव जीरा हींग घृत सहत में चाटै यों मास भर चाटै से पसुरी की समस्त पीड़ा दूर होय ४६ शूल पर गज
केसरी रस शुद्ध पारा दूनी शुद्ध गंधक दोनों बल पूर्वक घोटि तिस के समान शुद्ध तांबे के कूट करकजरी में मिलाइ संपुट करै ४७ फिर माटी
के पात्र में नोन बीच में संपुट गाड़ि गज पुट आंच दे ठंढा भये निकाले ४८ तब खल करि पके पान में दो गुंजा रस खवावे तो पेट का शूल मिटे

टंकणं हारिणं शृंगं स्वर्णं शुल्वं मृतं रसं दिनैक मार्द्रक द्रावै मर्द्य रुध्वा पुटे पचेत् ४५ त्रिनेत्राख्य रसः सोयं माषं मध्वाज्य कैर्लिहेत्
सैंधवं जीरकं हिंगु मध्वाज्याभ्यां लिहेदनु पंक्ति शूलं हरत्याशु मास मात्रं न संशयः ४६ शुद्ध सूतं द्विधा गंधं यामैकं मर्दये द्दृढं
द्वयो स्तुल्यं शुद्ध ताम्रं संपुटे तं निरोधयेत् ४७ ऊर्ध्वाधो लवणं दत्वा मृद्भांडे धारये द्भिषक् ततो गज पुटे पक्त्वा स्वांग शीतं समु
द्धरेत् ४८ संपुटे चूर्णये त्सूक्ष्मं पर्ण खंडे द्विगुंजके भक्षये त्सर्व शूलार्तो हिंगु शुंठी सजीरकं वचा मरिचजं चूर्णं कर्ष मुष्ण जलेपि
बेत् असाध्यं नाशयेच्छूलं रसोयं गज केशरी ४९ शुद्ध सूतं विषं गंधं मज मोदा फलत्रयं स्वर्जिक्षारं यवक्षारं वन्हि सैंधव जी
रकं ५० सौवर्चलं विडंगानि सामुद्रं त्र्यूषणं समं विष मुष्टि सर्व तुल्यं जंबीराम्लेन मर्दयेत् मरीचाभावटी खादे द्वन्हि मांद्य
प्रशांतये ५१ शुद्ध सूतं विषं गंधं समं सर्वं विचूर्णयेत् मरिचं सर्व तुल्यांशं कंटकार्य्याः फल द्रवैः

और उसी पर भूंजी हींग सोंठि जीरा बच मरिच इन का चूर्ण उष्णोदक साथ पिये तो असाध्य शूल भी नाश होइ यह गज केसरी रस है ४९
मंदाग्नि पर अग्नि तुंडी रस शुद्ध पारा विष गंधक तीनो अजमोद त्रिफला सज्जी यवा खार चीता सैंधव जीरा ५० काला लोन विडंग पांगा लो
न त्रिकुटा ये सब सम भाग ले और सब की सम कुचला ले जंभीरी के रस में घोटि मरिच सम गोली बांधि खाइ उस अग्नि तुंडी रस से मंदाग्नि दूर
हो ५१ बिसूचिका पर अजीर्ण कंटक रस पारा सिंगिया गंधक तीनो शुद्ध सब सम भाग ले खल करि सब के समान मिरच दे भटकटैया के फल

के रस में भिजोइ २१ बार घोटि ५२ तीन रत्ती भर बटी बनाइ खाइ इस अजीरण कंटक बटी के खाने से सब अजीर्ण शांति होइ और विशू
चिका हनै ५३ अथ मथान भैरव पारा तांबा मृतक हींग पोहकर मूल सैंधव शुद्ध गंधक हरताल कटुकी सब सम भाग खल करि ५४ गदापु
रैना बंदाल मेवड़ी चौराइ करुइ तोरइ इन सब के रस में एक एक दिन बल पूर्वक क्रम से घोटि ५५ मासा भर सहत युत नित खाइ यह मं
थान भैरव रस कफ रोग नाशार्थ इस पर निंदक क्वाथ पिये ५६ अथ बात नाशक रस शुद्ध पारा शुद्ध सोना शुद्ध लोहा शुद्ध हीरा शुद्ध

मर्दयेद्भावयेत्सर्वमेकविंशतिवारकं ५२ वटी गुंजात्रयं खादेत्सर्वाजीर्णप्रशांतये अजीर्णकंटकश्चायं रसो हंति विशूचि-
कां ५३ मृतं सूतं मृतं ताम्रं हिंगु पुष्करमूलकं सैंधवं गंधकं तालं कटुकीचूर्णयेत्समं ५४ पुनर्नवा देवदाली निर्गुंडी तंदुलीय
कैः त्रिककोशातकीद्रावैर्दिनैकं मर्दयेद्दृढं ५५ मासमात्रं लिहेत्क्षौद्रैः रसो मंथान भैरवः कफरोगप्रशान्त्यर्थं छिन्नाक्वाथं
पिवेदनु ५६ सूत हाटक वज्राणि ताम्रं लोहञ्च माक्षिकं तालं नीलाञ्जनं तुत्थं महिफेनं समांसकं ५७ पंचानां लवणानाञ्च भा
गमेकं विमर्दयेत् वज्रीक्षीरे दिनैकं तु रुध्वा तं भूधरे पचेत् ५८ माषैकमात्रं कद्रावैर्लेहये द्वातनाशनं पिप्पलीमूलजं क्वाथं सकृ
ष्णमनुपाययेत् सर्ववातविकारांस्तु निहन्यात्क्षेपकादिकान् ५९ कन्यकस्याष्टभागास्युः सूतो द्वादशभिः मतः गंधो
पि द्वादश प्रोक्तस्ताम्रं शाणद्वयोन्मितं ॥ ६० ॥

सोना माखी शुद्ध हरताल शुद्ध सुरमा शुद्ध तूतिया अफ़ीम ये
सम भाग ५७ एक भाग में पांचो लोन ये सब द्रव्य ले एक दिन सेंहुड़ के दूध में खल करै संपुट में राखि भूधर यंत्र में पचावै ५८ मासे भर
रस अद्रख के रस में मिश्रित करि खाइ तो सब वायु नाश होय वा पिपरा मूल क्वाथ में पीपरि मिलाइ के देय तो सब दांत विकार विलाव
जांइ आक्षेप कादि ५९ सन्निपात पर कनक सुंदर रस आठ भाग सोना भस्म बारह भाग पारा भस्म शुद्ध गंधक १२ भाग दो शाण ताम्र भस्म

अभ्रक भस्म ४ पारा सोना माखि भ॰ २ बंग २ सुर्मा भ॰ ३ लोह भ॰ ८ ॥ ६१॥ विष ३ करियारी पल भर ये द्रव्य और सरस एक दिन जंबी-
री नीबू में खल करै ६२ संपुट करि थोरी आंच दे फूंकि फिर खल करै मासा भर खिलावै तो अति बड़ा सन्नि दूर होइ ९६३ अदरख वा लह-
सुन के रस में खिलावै कि खास सर्व कुष्ठ विसर्प भगंदर ज्वर विष बिकार यह कनक सुंदर रस इन रोगन को हरै ६४ सन्नि पर भैरव रस पा-
रा ३ निष्क गंधक ३ निष्क दूनो घोटि कजली करि ताम्र चांदी पीतर बंग पोलाद ये पांचौ भस्म कर्ष भर ६५ सहिजन ढेकार सोंठि का काढ़ा

अभ्रकस्य चतुः भागं भाक्षिकस्य हि भागकं वंगो द्वि भागं सो वीरं त्रि भागं लोह मष्टकं ६१ विषं त्रि भाग कंचैव वगली
पल सम्मिता सर्व येकत्र मेकत्र रसो रस फलोद्भवः ६२ दद्या मृदु पुटं वन्हौ ततश्चूर्णं तु कारयेत माष मात्रो रसो देयः सन्नि
पाते सुदंधयः आर्द्रक स्वरसे नैव रसोन स्वरसे नवा विलासं सर्व कुष्ठानि विसर्पंच भगंदरं ज्वरं गरमजीर्णं च जयेद्रोग हरो
रसः ६४ रसो गंधस्त्रि निष्कः स्यात्कुर्यात्कज्जलिका तयोः ताम्रं तारंच वंगादि सारा श्चैकैक कर्षिकाः ६५ शिगुज्या ला
गुरवी शुंठी बिल्वे भ्य लांगुलीभ्य कान् प्रत्येकं स्वरसैः कुर्यात् घामे कैकं विमर्दयेत् ६६ कृत्वा गोलं दृढं वस्त्रे लेव गौः पूरितेन्य सेत्
कांच भांडे ततः स्थाल्यां काच कूपीं निवेशयेत् वालुकाभिः प्रपूर्याथ वन्हि याम द्वयं भवेत् ६७ भतः उद्धृत्य तं गोलं सु-
रो पित्वा विमिश्रयेत् प्रवाल चूर्णं कर्षेण पारा मात्र विषेण च कृष्ण सर्प स्य गरलैर्दिनं संभावयेत्तथा ॥ ६८ ॥

वेल के फल का रस चौराई रस इन रसों से पहर पहर भर घोटि ६६ गोला बांधि कपरोटी करि सो कांच के प्याले एक में लोन भरि गोला धरि दूसरा
लोन पूरित प्याला ढांकि कपरोटी करि तब माटी पात्र के वालुका यंत्र में धरि दो पहर की आंच देइ ६७ ठंढा भये निकारि खल करि फिर मूंगा
चूर्ण कर्ष भर विष मासा भर काले सांप का जहर युक्त एक दिन खल करै फिर कांच की सीसी में भरि वालुका यंत्र में दो पहर की आंच दे ठंढा भ-

नगर मुरली जटामासी चोक जगन्नाथी पीपरि नील की पाती लायची चीता कटसरैया ६९ सौंफ बनतरुई धतूरा अगस्त मुंडी महुआ च मेली मैनफल इन सब का रस वा काढ़ा करि क्रम से एक एक वार घोटि सुखाइ राखै ७० जंबीरी रस वा अद्रक रस २६ मिरच वा गुंजा रस के साथ सन्निपात में देइ यह प्रसिद्ध रस है यह सन्निपात भैरव रस है ७१ अथ ग्रहणी कपाट रस चांदी मोती सोना लोह इन की भस्म एक एक

तगरं मुरली मांसी हेमाह्वा वेतसंकराग नीलनी पत्र कं चैला चित्र कश्च ककारकः ६९ शत पुष्पा देवदाली धतूरागस्त्य शुंठिका मधूकजाती मदनारसैरेषां विमर्दयेत् प्रत्येक मेक वेलं च ततः संशोष्य धारयेत् ७० वीजपूराद्रक द्राव मरिचैः षोड शोन्मितैः रसोद्वि गुंजा प्रमितः सन्निपातेषु दीयते प्रसिद्धोयं रसो नाम्ना सन्निपातस्य भैरवः ७१ तार मौक्तिक हेमानि सार श्चैकैक भागिकः द्विभागो गंधकः सूतस्त्रि भागो मर्दयेद्दिनं ७२ कपित्थ स्वर सेर्गाढं मृग श्रृंगे ततः क्षिपेत् पुटेन मध्य पुटेनैव स मुद्धृत्य च मर्दयेत् ७३ वलारसैः सप्तवेल मपामार्गरसैस्त्रिधा लोध्र प्रति विषा मुस्ता धातकी द्रव्य वा मृता प्रत्येक स्वरसैर्दिनं भावनस्य त्रिधा त्रिधा ७४ माष मात्रो रसो देयो मधुना मरिचैस्तथा हन्यात्सर्वानतीसारान्ग्रहणी सर्व जानपि कपाटो ग्रहणी रोगे रसोयं वन्हि दीपनः ७५

भाग शुद्ध गंधक २ भाग शुद्ध पारा ३ भाग ये सब खल करि ७२ फिर कैथे के रस में खल करि हरिन सींग भरि कपरौटी करि ३० गोहटा की आँच दे ठंढा भये निकारि निकारि खल करि ७३ वरियारा रस में सात वार खल करि फिर तीन वार चिरचिरा रस में खल करि फिर लोध अतीस मोथा धव पुष्प इंद्रजौ गुर्च इन के रस में तीन तीन वार खल क्रम से करि ७४ मासा भर रस सहत मरिच मिलाइ चाटै सब अतीसार ग्रहणी दूरि करै यह

वज्र कपाट रस ग्रहणी पर पारा भस्म अभ्रक भस्म शुद्ध गंधक यवाखार सुहागा अरणी बीज वाल वच ये सब सम भाग ले ७६ यह रस जंभीरी भंगरा दून के रस में तीन तीन दिन घोटि गोला करि सुखाइ लोहे की कढ़ैया में धरि माटी पात्र से बंद करि ७७ मंद मंद ४ घरी आंच दे उतारि लेइ तब उस रस समान अतीस मोथा रस डारि कैथ भांग के रस में वैद्य सात सात बार घोटै ७८ फिर धव पुष्प इंद्रजव मोथा लोध वेल गुर्च दून के रस में एक एक बार घोटै सुखाइ ले ७९ यह वज्र कपाट रस शाणा भर सहत संग खाइ ऊपर से चीता सोंठि भांग नौन वेल सैंधव दून स

मृतसूताभ्रकं गंधं यवक्षारं सटंकणं अग्निमंथं वचां कुर्यात्स्तुल्यानि मान्सुधीः ७६ ततो जयंती जंबीरं भृंगद्रावैर्विमर्दयेत् त्रिवासरं ततो गोलं कृत्वा संशोष्य धारयेत् लोहपात्रे सरावं च दत्वोपरि विमुद्रयेत् ७७ अधो वन्हिं शनैः कुर्याद्यामार्द्धं तत उद्धरेत् रसतुल्यं प्रतिविषां दद्यान्मोच रसस्तथा कपित्थ विजयाद्रावै र्भावयेत्सप्तधा भिषक् ७८ धातकीं द्रव्य वा मुस्ता लोध्रं विल्वं गुडूचिकां एतद्रसे भावयित्वा वेले केकं च शोधयेत् ९७६ रसं वज्र कपाटाख्यं शाणैकं मधुना लिहेत् वन्हिं शुंठी विडं विल्वं लवणं चूर्णयेत्समं पिबे दुष्णां वुनाचानु सर्वजां ग्रहणीं जयेत् ८० तारं वज्रं सुवर्णं च ताम्रं सूतकं गंधकं लोहं क्रमादि वृद्धानि कुर्यादेतानि मात्रया ८१ विमर्द्य कन्यका द्रावैर्न्यसेत्कांचमये घटे विसुद्ध पिटरी मध्ये धारये त्सैंधवैर्भृते पिठरीं मुद्रयेत्सम्यक् ततश्चुल्ह्यां निवेशयेत् ८२ वन्हिं शनैः शनैः कुर्याद्दिनैकं तत उद्धरेत् स्वांग शीतं च संपूर्णं भावयेदर्क दुग्धकैः ८३ व का सम भाग चूर्ण करि उष्ण जल साथ खाइ तो सब ग्रहणी दूरि होइ ८० मदन काम देव रस चांदी हीरा सोना तांबा चारों भस्म पारा गंधक लोहा तीनों शुद्ध ये सातों क्रम से बढ़ती भाग ले ८१ घी कुम्भार के रस में घोटि सीसी में भरि कपरौटी करि माटी पात्र में नीचे ऊपर नोन पूरि बीच में सीसी धरि संपुट करि चूल्हे पर धरि ८२ मंद मंद आंच बारि दिन भर फिर निकारि मदार के दूध में

असगंध काकोली बिना भी असगंध किमाच मुशली ताल मखाना शतावरि इन के रस में तीन तीन भावना दे कमल की जड़ कसेरू कांस फिर इन के तीन तीन भावना देइ ८४ कस्तूरी त्रिकुटा कपूर शीतल चीनी इलाइची लवंग पीसि पूर्व चूर्ण जो भावनादि से सिद्ध किये का अष्टमांस कस्तूर्यादि चूर्ण युक्त करि ८५ सब के समान शक्कर मिलाइ शाण भर खाइ आठ पैसा भरि दूध पिये पथ्य मधुर करे इस के खाने से बहुत स्त्री गमन करे और धातु न घटै ८६ अथ कंदर्प सुंदर रस पारा शुद्ध हीरा मोती चांदी सोना कलाभ्रक ए पांच भस्म सब कर्ष कर्ष भर ले क्वाथ में एक

असगंधाच काकोली वानरी मुशली क्षुरा त्रिस्त्रि वेलं रसै रेवं शतावर्याश्च भावयेत् पद्म कंद कसेरूणां रसैः काशस्य भावयेत् ८४ कस्तूरी व्योष कर्पूर कंकोलैला लवंगकं पूर्व चूर्णाद्ष्ट मांशं तत् चूर्णं विमिश्रयेत् ८५ सर्वैः समं शर्करा स्याद् त्वा शाणोन्मितं भवेत् गो दुग्ध द्वि पलेनैव मधुराहार सेवकः तरुणी रमये द्वह्वीः शुक्र हानि र्न जायते ८६ सूतो वज्र मह्नि मुक्ता तारं हेमासि ताम्रकं रसैः कर्ष मिता नेता न्मर्दये दिरिमेदजः ८७ प्रवाल चूर्णं गंधश्च द्विद्वि कर्ष विमिश्रयेत् ततोश्व गंधाम्बु रसै र्विमर्द्य मृग शृंगके क्षिप्त्वा मृदु पुटे पक्का भावये द्धात की रसैः ८८ काकोली मधुकं मांसी वलात्रय विषेंदुकं द्राक्षा पिप्पल वंदाकं वाण पर्णीन्वतुष्टयं ८९ परूषकं कसेरुंच मधुकं वानरीं तथा भावयित्वा रसै रेषां शोषयित्वा विचूर्ण

दिन घोटे ८७ मूंगे का चूर्ण शुद्ध गंधक दो दो कर्ष मिलाइ असगंध रस में १ दिन घुटाइ मृग सींग में भर कपरौटी करि थोरी आंच में धरि फूंक दे फिर धव फूल के रस वा क्वाथ में भावना दे ८८ फिर काकोली बिना आसन मुरेठी जटा मासी बरियारा गुलशकरी ककई भसीड हिंगबट मुनक्का पीपरि काबांदा कटसरैया बनमूंग मुग्धपर्णी माषपर्णी ८९ फालसा कसेरू महुआ किमाच बीज इन सब के रस में एक एक भावना दे सुखाइ खल करि धरि राखै ॥ ९० ॥ ॥ ॥ ॥

इलाइची तज पत्रज बंशलोचन लौंग अगर केशर मोथा कस्तूरी पीपरि सुगंध बाला कपूर इन का चूर्ण करि ८१ शाण भर ले और शाण
भर पूर्वोक्त कंदर्प सुंदर रस और खांड आंवरा विदारी कंद ८२ इन सब को मिलाइ कर्ष भर घी राति को खाइ विषई पुरुष दूध पिये सो पु
रुष बहुत स्त्री संग भोग करै तौ बीर्ज हानि न होइ ८३ क्षयी पर लोह रसायन शुद्ध पारा १भाग शुद्ध गंधक १भाग दूनो घोटि कजली करि तीन भाग शु
द्ध पोलाद का चून स कजली संग पहर भर घोटि ८४ फिर घी कुआर के रस में ३ दिन घाम में बैठि घोटै तब घाम और घोटन की गरमी

एतच्चूर्णं शाणमितं रसः कंदर्प सुंदरः ८१ एला त्वक्पत्र कं वा शी लवंगा गुरु केशरं मुस्तं मृग मदं कृष्णा जलं चंद्रस्य मिश्रयेत् ८१
खादेच्छाण मितं रात्रौ शिता धात्री विदारिकः ८२ एला सां कर्ष चूर्णेन सर्पिः कर्षेराशं युतं तस्यानु द्विपलं क्षीरं पिबेत्सु खित मान
सः रमणी रमये दृह्वी हानिं कापि न गच्छति ८३ शुद्धं रसेंद्र भागे कं द्वि भागं शुद्ध गंधकं क्षिपेत्कज्जलि कां कृत्वा तत्र तीक्ष्ण
भवं रजः क्षिप्त्वा कज्ज लि का तुल्यं प्रहरै कं विमर्दयेत् ८४ तत्र कंन्या द्रवैर्धर्मे त्रिदिनं परि मर्दयेत् ततः संजायते तस्य सोष्मो
धूमोद्गमो महान् ८५ अत्यंतं पिंडितं कृत्वा ताम्र पात्रे निधायच मध्ये धान्य कुसूलाच त्रि दिनं धारये द्बुधः ८६ उद्धृत्य
तस्मा त्खल्वेतु क्षिप्त्वा घर्मे निधायच रसैः कुठारछिन्नाया स्त्रि वेलं परि भावयेत् ८७ संशोष्य घर्मे क्वाथै श्च भावये त्त्रिकु
टो स्त्रिशः वासा मूला चित्र का नां रसै र्भाव्यं क्रमा त्रिशः ८८ लोह पात्रे ततः क्षिप्त्वा भावये त्त्रिफला जलैः

से बहुत धुआं उठेगा ८५ जब कड़ा हो गोला बांधि रेंड पत्र लपेट तांबे के पात्र में रख मुख मूंदि घाम में तीन दिन गाड़ रखे ८६ उसको
निकारि वैद्य घाम में धरि सबुजा के रस में तीन भावना दे ८७ जब सूखि जाइ तब सोंठि मिरच पीपरि तीनों के तीन क्वाथ करि तीन भाव
ना दे फिर रूसा गुरच चीता इन्हें एक एक के रस में तीन तीन भावना दे ८८ जल से निकारि लोह पात्र में धरि त्रिफला में घोटि मेंवड़ी अनार का

पलाश केला वृक्ष रस विजैसार के रस का क्वाथ नील मुंडी रस बबूर फलीस। २०० ये सब रस वा क्वाथ में तीन तीन भावना दे फिर वरियारा
शतावरि गुखरू छर हट इन के रस में तीन तीन भावना देना जो मिले २ प्रभात समय आठ मासे रस घृत सहत में खिलावे तिस पर त्रिफला का-
थ पल भर पिये यह अनोपान है ३ तीन मासे सेवन करै स्वेत वार न होंइ और त्वचा की गुरी परना दूर होइ मंदाग्नि स्वास खांसी पांडु कफ वायु

निर्गुंडी दाडिमत्वग्भि र्विस भृंग कुरंडकैः ९९ पलाश कदली द्रावै र्बीजकस्य रसेनच नीलि कालं तुषाद्रावै र्वव्वूल
फलिका रसैः २०० भावयेत्त्रि त्रि वेलं च ततो नाग वला रसैः शतावरी गोक्षुरकैः पाताल गरुडी रसैः त्रि त्रि वेलं यथा-
लाभ भावयेदेभि रौषधैः १ ततः प्रातर्लिहेदाज्य मधुभ्यां कोल मात्रकं पल मात्रं वरा क्वाथं पिवेदस्यानुपानकं २
मास त्रयं प्रीलितस्या हन्ती पलित नाशनं मंदाग्नि श्वास कासांश्च पांडुरा कफ मारुतं ३ पिप्पलीमधु संयुक्तं हन्याद्देत
असंशयः वाता स्रं मूत्र कृच्छ्रं च ग्रहणीं चोदरं तथा ४ अंड वृद्धिं जयेदेतच्छिन्ना सत्व मधुप्लुतं वल वर्ण करं वृष्य
मायुष्यं परमं स्मृतं ५ कूष्मांडं तिल तैलं च माषान्नं राजिकां तथा मद्य मम्ल रसं चैव त्यजेल्लोहस्य सेवकः ॥ ६॥

इति श्री शार्ङ्गधर मध्यम खंडे रसशोधन मारणं द्वादशोध्यायः १२ ॥

विकार इन के अर्थ त्रिफला युक्त खाइ ३ पीपरि सहत में देइ तो वात रक्त मूत्र कृच्छ्र ग्रहणी जलोदर ४ अंड वृद्धि न रहै गुर्च के सत और सहत
युक्त देइ तो वल सुंदरता वायु बढ़ावे ५ स्वेत कुम्हड़ा तिल तेल उर्द राई मद्य खटाई ये पदार्थ लोह खाने वाला तजै २०६ इति शार्ङ्गधर मध्य खंडे-

श्रीशार्ङ्गधरस्य उत्तर खण्डारम्भः

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथोत्तर खंडः प्रारभ्यते प्रथम स्नेह पान क्रिया स्नेह चार भांति कहिये घृत १ तेल २ वसा कहें मांस में मिली चर्वी ३ हाड़ के भीतर की मज्जा ये चारों स्नेह वैद्य सूर्योदय होते मनुष्य को पिलावे १ ते स्नेह दो प्रकार हैं स्थावर और जंगम स्थावर कहिये अचर जो जहां उपजे वहीं थिर रहैं ऐसे स्नेह अनेक प्रकार के हैं तिन में तिल का तेल श्रेष्ठ है जंगम कहें चर जो श्वासा सहित है तिन सें उत्पत्ति घृतादि अनेकनि में घृत श्रेष्ठ है २ अथ स्नेह भेद घी तेल वैद्य तिसे यम कहें घी तेल वसा मिलावे तो त्रिवृत कहें घी तेल वसा मज्जा संयुक्त हो तो महान कहें ३ अथ स्नेह पान क्रम घृत रोगी को तीन दिन पिलावे तेल चार दिन वसा पांच दिन मज्जा छह दिन घृतादि स्नेह सात दिनसे अधिक से अधिक पान करने

श्रीगणेशायनमः स्नेहश्चतुर्विधा प्रोक्तो घृतं तैलं वसा तथा मज्जा च तं पिबेन्मर्त्यो किंचिदभ्युदिते रवौ १ स्थावरो जंगमश्चैव द्वियोनिः स्नेह उच्यते तिलतैलं स्थावरेषु जंगमेषु घृतं वरम् २ द्वाभ्यां त्रिभिश्चतुर्भिस्तैर्यमकस्त्रिवृतो महान् ३ पिबेत्त्र्यहं चतुरहं पंचाहं षडहं तथा सप्तरात्रात्परं स्नेहः सात्म्यी भवति सेवितः ४ दोषकालाग्निवयसां बलं दृष्ट्वा प्रयोजयेत् हीनां च मध्यमां ज्येष्ठां मात्रां स्नेहस्य बुद्धिमान् ५ अमात्रया तथाकालेमिथ्याहारविहारतः स्नेहः करोति शोफार्शस्तंद्रा निद्राव संज्ञिताः ६ अकाले चातिमात्रं वा असात्म्यं यच्च भोजनं विषमाशनं यदुक्तं मिथ्याहारः स कथ्यते ७

सें अहार हो जाता है औषधि सदृश गुण नहीं करता है ४ अथ स्नेह मात्रा प्रकार बालादि दोष ऋतु काल जठराग्नि अवस्था और निर्बल सबल सम बल विचारि अल्प मध्य ज्येष्ठ मात्रा यथोचित रोगी के घृत स्नेह की मात्रा देना ५ और मात्रा और प्रारा और बिना दोष समझे बिना बल जाने न्यूनाधिक मात्रा अकाल वा विपरीत भोजन और विहार करने से सूजन अर्श औंघना निद्रा असाव धानता ये रोग होते हैं ६ बिना समय घट बढ़ बिना रुचित देश काल विरुद्ध पदार्थ खाना यह मिथ्या हार है असमर्थ करना अकाल परिश्रम करना ऋतु से विपरीत यथा गरमी सें धूप खानासे

अथ मात्रा प्रमाण दीप्ताग्नि वाले को मात्रा घृतादि स्नेह पल भर देना मध्यमाग्नि मनुष्य को तीन कर्ष प्रमाण देना मंदाग्नि मनुष्य को दो कर्ष प्रमाण मात्रा देना ८ और ऋषि घृतादि पान की सामान्य मात्रा कहते हैं ते भी तीनो हैं ९ जो मात्रा आठ पहर में पचै सो महती है दिन भर में पचै वह मध्यमा है जो पहर में पचै सो अल्पा है इन तीनो मात्रा नमें तोल का प्रमाण नहीं जैसा पचै और महती मध्यमा से अल्पा सुख दाई है १० अथाल्पा मात्रा गुण अल्प मात्रा दो कर्ष की अग्नि दीप्त करै स्त्री प्रसंग की इच्छा करै जो थोरे वातादिक कुपित हो तिन्हें शांति करै मध्यम मात्रा कर्ष

देया दीप्ताग्नये मात्रा स्नेहस्य पलसंमिता मध्यमाय त्रिकर्षा स्याज्जघन्याय द्विकर्षिकी ८ अथ वा स्नेहमात्राः स्युस्तिस्रोन्याः सर्वसंमताः अहोरात्रेण महती जीर्यत्यह्नि तु मध्यमा ९ जीर्यत्यल्पा दिनार्द्धेन सा विज्ञेया सुखावहा अल्पा स्याद्दीपनी वृष्या वातदोषेषु पूजिता १० मध्यमा स्नेहनी ज्ञेया बृंहणी भ्रमहारिणी ज्येष्ठा कुष्ठविषोन्माद ग्रहापस्मारनाशिनी ११ केवलं पैत्तिके सर्पिर्वातिके लवणान्वितं पेयं बहु कफे वन्हि व्योषक्षारसमन्वितं १२ रूक्षक्षतविषार्तानां वातपित्तविकारिणां हीनमेधास्मृतीनांच सर्पिःपानं प्रशस्यते १३ कृमि कोष्ठानिलाध्मातः प्रवृद्धकफ मेदसः पिबेयुस्तैलसात्म्याये तैलं दीप्ताग्निन

तीन की शरीर पुष्ट धातु वृद्ध भ्रम शांति करै ज्येष्ठ मात्रा पल भर की कुष्ट रोग विष बिकार उन्माद भूत प्रेत बाधा मृगी ये रोग दूर करती है ११ दोषोचित अनोपान पित्त कोप में केवल घृत वायु कोप में सैंधव संयुक्त घृत कफ कोप में सोंठि मिर्च पीपरि यवाखार पीसि घृत में युक्त करि प्यावै १२ अपर रोगों पर घृत रूखाई उरुक्षत विषार्ति वात पित्त दोष हीन बुधि सुधि भूलना इन में अवश्य घृत पिलावै १३ तेल योग्य रोगी कृमि विकार वायु बद्ध शरीर कफ और मेद वृद्ध इन में तेल पिलावै जो तेल उसे सो भाविक अहिवन हो मातो अग्नि दीप्त करैगा ॥ १४ ॥

वसा पान योग्य जो मनुष्य परिश्रम करि दुर्बल और पीडित हो धातु क्षीण शुष्क रक्त शरीर पीडा भस्मक आक्षेपकादि वायु बलिष्ट वायु इन नें
वसा पिलाना योग्य है १५ अस्थि मज्जा योग्य दृष्ट कोष्ठ को लोहित को वायु पीडित को प्रबलाग्नि को मज्जा पिलाना योग्य है और घी सर्व शरी
र को हित है १६ अथ स्नेह पान समय शीत काल में दिन को पिलावै उष्ण काल में रात को वात पित्त अधिक वाले को रात को वात कफ अधिक वाले
को दिन में पिलावै १७ घृतादिक कर्म विशेष पर नास के कारण मर्दन को कुल्ली को मस्तक में डावने को कान आँखि में डालने को घृत वा तेल

व्यायामकर्षिताः शुष्करेतोरक्ता महारुजः महाग्निमारुतप्राणा वसायोग्या नराः स्मृताः १५ क्रूराशयाः क्लेशसहा वातार्ता दीप्त
वन्हयः मज्जानं च पिबेयुस्ते सर्पिर्वा सर्वतो हितं १६ शीत काले दिवा स्नेहमुष्ण काले पिबेन्निशि वातपित्ताधिके रात्रौ वात
श्लेष्माधिके दिवा १७ नस्याभ्यंजन गंडूष मूर्द्ध कर्णाक्षि तर्पणे तैलं घृतं वा युंजीत दृष्ट्वा दोष बलाबलं १८ घृते कोष्णं ज
लं पेयं तैले यूषं प्रशस्यते वसा मज्ज्ञोः पिबेन्मंडमनुपानं सुखावहं १९ स्नेहद्विषः शिशून्वृद्धान्सुकुमारान्कृशानपि तृष्णा
लूनुष्ण काले सह भक्तेन पाययेत् २० सर्पिष्मती बहुतिला यवागूः स्वल्प तंडुला सुखोष्णा सेव्यमाना तु सद्यः स्नेहस्य कारि·

वातादि दोष सबल निर्बल विचारि वैद्य युक्त करै १८ अथ स्नेह पानानुपान घृत उष्णोदक के संग पिवै तेल यूष से युक्त चरबी हाड मज्जा
मांड युक्त पिवै तो सुखद होइ यूष मंड विधि मध्य खंड में देखि करना १९ स्नेह द्वेषी कहैं जिसे स्नेह न भावै तिसे अन्न के संग देना और बा
लक बूढा सुकुमार दुर्बल तृषा युक्त ऐसे मनुष्य को भात के साथ गरमी में देना २० स्नेह यवागू तिल भले प्रकार कूटि थोरा चावर का चू
रन डारि थोरा छान और जल देके पतला पकाइ ले तब गुन गुना रखाइ तौ तुरत धातु उत्पन्न करै शरीर चिकना करै ॥ २१ ॥

बा॰ अथ धारोष्ण दुग्ध विधिः दोहनी के भीतर मिश्री पीसि घृत मिलाइ लिप्त करे तिसे सेंकि दुग्ध दुहाइ तुरंत गर्म गर्म पिये तो तुरंत धातु उत्पन्न होइ २२ स्नेह पिये पर परिश्रम करने वा कफ कृत पदार्थ खाने से स्नेह न पचा हो वा मला रोध किया हो तो उष्ण जल से वमन करावे तो अजीर्ण दोष मिटे २३ जो स्नेह अजीर्ण की शंका हो तो तप्त जल प्यावे जब शुद्ध डकार आवे अन्न पर इच्छा करे तब जाने अजीर्ण शांति भया २४ स्नेह अन्य पित्त कोप यत्न पित्त प्रकृती को स्नेह पान से गरमी होती है प्यास विशेष लगती है उसे शीत जल पिला वमन करावे तो

शर्करा चूर्ण संसृष्टे दोहन्यस्थे घृते तु गां दुग्ध्वा क्षीरं पिबेदुष्णं सद्यः स्नेहन मुच्यते २२ मिथ्याहार विहाराभ्यां यस्य स्नेहो न जीर्यति विष्टभ्य चापि जीर्येत वारिणोष्णेन वामयेत् २३ स्नेहस्याजीर्ण शंकायां पिबेदुष्णोदकं नरः ततोद्गारो भवेच्छुद्धो भक्तं प्रति रुचिस्तथा २४ स्नेहेन पैत्तिकस्याग्निर्यत्नात्तीक्ष्णतरीकृतः तदास्यो दीरयेत्तृष्णां विषमां तस्य पाययेत् शीतं जलं वामयेच्चापि पासा तेन शाम्यति २५ अजीर्णी वर्जयेत्स्नेहमुदरी तरुणज्वरी दुर्बलो रोचकी स्थूलो मूर्छितो मदपीडितः २६ दत्तवस्ती विरक्तश्च वांतिस्तृष्णाश्रमान्वितः अकालप्रसवा नारी दुर्दिने च विवर्जयेत् २७ स्वेद्य संशोध्य मद्य स्त्री व्यायामासक्त मानसाः वृद्ध बाल कृशो रूक्षाः क्षीणास्राः क्षीणरेतसः २८

प्यास उष्मा शांति हो २५ स्नेह निषेध अजीर्ण में उदर रोग में तरुण ज्वर में दुर्बल को अरुचि को अति स्थूल को मूर्छा में मदार्ति को २६ वस्ति कर्म भय को बिरेचन भये को वमना को परिश्रमी को गर्भ गिरी स्त्री को इन सब को स्नेह न प्यावे २७ स्नेह योग्य औषधि दे जिसे स्वेद निकला हो रेचन कराया हो मद्य पीने वाले को मैथुन श्रमी को बाल वृद्ध को रूक्ष शरीरी को रक्त धातु क्षीण को वातार्ती तिमिर रोगी को

शा० टी० उ० २१८

बा० स्नेह गुण दल क्षरा जो स्नेह पान से गुण भया है सो आरोग शरीर में वायु शुद्ध करती हो अग्नि दीप्त मल चिकना गाड़ा सफ़ा तन दो बल तेज युक्त चिकना ग्लानि रहित स्नेह से भी मनुष्य ऐसा होजाता है उपद्रव विना शरीर हल का इंद्री निर्मल ये लक्षण अच्छे स्नेह भये के हैं और रूखे के लक्षण हों तो स्नेह पान विपरीत भया समझना २८ स्नेह विशेष पीने के उपद्रव अन्न न भावै मुख में पानी छूटै मल मार्ग में जल न रहै और मल वहै तंद्रा अतीसार शरीर पांडु ये अति स्नेह लक्षण हैं ३० अथ स्नेह रूक्ष रूखे स्निग्ध प्रतीकार रूक्ष मनुष्य को विना मक्खन निकरा म-

वातार्तास्तिमिरार्ताये तेषां स्नेहनमुत्तमं २८ वातानुलोमं दीप्ताग्निर्वर्चः स्निग्धमसंहतं मृदुस्निग्धांगता ग्लानि स्नेहोद्वेगो ऽथलाघवं २९ विमलेंद्रियता सम्यक् स्निग्धे रूक्षे विपर्यया भुक्तद्वेषो मुखस्रावो गुदे दाहः प्रवाहिका ३० तंद्रातिसारः पांडुत्वं भृशं स्निग्धस्य लक्षणं श्यामाकचणकाद्यैश्च तक्रपिण्याकसक्तुभिः ३१ दीप्ताग्निः शुद्धकोष्ठश्च पुष्टधातुर्दृढेंद्रियः निर्जरो बलवर्णाढ्यः स्नेहसेवी भवेन्नरः ३२ स्नेहे व्यायामसंशीतवेगाघातप्रजागरान् दिवास्वप्नमभिष्यंदि रूक्षान्नं च विवर्जयेत् ३३ इति श्री शार्ङ्गधरेणाविरचिते स्नेहपानाध्यायः १ स्वेदश्चतुर्विधः प्रोक्तस्तापोष्मस्वेदसंज्ञकः उपनाहो द्रवः स्वेदः सर्वे वातार्तिहारिणः ॥ २ ॥

ठा तिल का कल्क यव के सत्तू खिलावै स्निग्ध करै स्निग्ध को समा चावल चनादि खिलावै रूखा करै ३१ स्नेह सेवन गुण अग्नि दीप्त शुद्ध कोठा धातु पुष्ट इंद्री दृढ जरा रहित बल कांति युक्त लक्षण होते हैं ३२ स्नेह सेवी को वर्ज्य पदार्थ श्रवन करै ठंडे पदार्थ तजे मल मूत्र न रोकै बहुत न जागै न दिन में सोवै कफ कूल पदार्थ रूखान्न न खाय ३३ इति स्नेह पान विधि प्रथमोध्यायः १ अथ स्वेदन विधि स्वेदन ४ भांति हैं तिस के नाम ताप कहैं सेकना ऊषा कहैं बफारा उपनाह कहैं पोटरी से सेकना द्रव कहैं काढ़ादिक में बैठाना ये चारों वायु पीड़ा हरते हैं ॥ १ ॥

बा·स्वेत विशेष कर्तव्य ताप स्वेद और उष्म विधि सौ कफ नाशक है उपनाह स्वेद बिधि वायु नाशक है द्रव स्वेद बिधि पित्त वान नाशक है चर्कमें क हा है बात कफ में स्वेद करै और वायु में सूक्ष्म और वायु में कुछ लक्षण पित्त के मिलें तौ सूक्ष्म स्वेद लेइ इस कारण पित्त वायु में हल का स्वेदन कर ना २ बल वान शरीरी को वायु का बड़ा बेग होतो स्वेद अधिक करना उचित है हल के शरीर में हल का स्वेद उचित है मध्यम रोग वाले को मध्यम तर स्वेद उचित है ३ कफ दोष में रूक्ष पदार्थ रेणुकादि से स्वेद करै कफ बात रोग में रूक्ष स्निग्ध पदार्थ से करै कफ मेद वायु युक्त रोग में उस्न

स्वेदौ ता पोष्म जा प्रायः श्लेष्म घ्नौ समुदीरितो उपनाहस्तु वातघ्नः पित्तसंगेद्रवो हितः २ महाबले महाव्याधौ शीते स्वेदो महान् स्मृ तः दुर्बले दुर्बलः स्वेदो मध्ये मध्यतमो मतः ३ बलाशे रूक्षणः स्वेदो रूक्षः स्निग्ध कफानिले कफ मेदो वृतो वाते कोष्ण गेहं रवेः करा· न् ४ नियुद्ध मार्ग गमनं गुरु प्रावरणं भवं चिंता व्यायाम भारांश्च सेवे ता मय मुक्तये ५ तेषां नस्यं विधातव्यं वस्तिश्चापिहि दे हिनां शोधनीयाश्च ये केचित्पूर्वं स्वेद्याश्च ते मताः ६ पश्चात्स्वेद्या गते शल्ये मूढ गर्भ गदे तथा स्वेद्याः पूर्वं त्रयः स्त्रीह भगंदर्य्यर्श सां तथा श्मर्यश्चातु रोजं तु शमयेच्छस्त्र कर्मणा ७ सर्वान्स्वेदान्निवाते च जीर्णा हारे च कारयेत् ॥ ८ ॥

स्थान में बैठाय स्वेद करै वा घाम में बैठाय के करै हल का सा ४ वा मल्ल युद्ध मार्ग चलावै वा भारी वस्तु उठावै वा चिंता उपजाय कै वा परिश्रम करा इ वो रु उठवाइ ऐसी युक्ति से कफ मेद युक्त वायु रोग दूर होता है ५ और नास योग्य वस्ती योग्य रेचन योग्य को प्रथम स्वेद निकराय उपाय करै ६ जिस स्त्री के पेट के भीतर गर्भ का साल हो वा मूढ गर्भ हो इन सो का गर्भ जब बाहिर हो जाइ तब स्वेद करै जिस मनुष्य की स्त्री ह भगंदर अर्श और श्मरी इन चारों रोगा र्तोन को प्रथम स्वेदन करि शास्त्र उपाय करना उचित है ७ स्वेद कर्म करने का समय स्थान आहार पचने के अनंतर जिस स्थान में

बा· स्नेह गुण दल क्षण जो स्नेह पान से गुण भया हो तो आरोग शरीर में वायु शुद्ध करती हो अग्नि दीप्त मल चिकना गाढ़ा सफा तन दो बल तेज युक्त चिकना ग्लानि रहित स्नेह से भी मनुष्य ऐसा होजाता है उपद्रव विना शरीर हल का इंद्री निर्मल ये लक्षण अच्छे स्नेह भये के हैं और रूखे के लक्षण हों तो स्नेह पान विपरीत भया समझना २९ स्नेह विशेष पीने के उपद्रव अन्न न भावे मुख में पानी छूटै मल मार्ग में जल न रहे और मल वहे तंद्रा अतीसार शरीर पांडु ये अति स्नेह लक्षण हैं ३० अथ स्नेह रूक्ष रूखे स्निग्ध प्रतीकार रूक्ष मनुष्य को विना मक्खन निकरा म-

वातार्तास्तिमिरा लीये तेषां स्नेहनमुत्तमं २८ वातानुलोमं दीप्ताग्नि र्वर्चः स्निग्धमसंहतं मृदु स्निग्धांगता ग्लानि स्नेहद्वेगो लाघवं २९ विमलेंद्रियता सम्यक् स्निग्धे रूक्षे विपर्यया भुक्तद्वेषो मुखस्रावो गुदे दाहः प्रवाहिका ३० तंद्रातिसारः पांडुत्वं भृशं स्निग्धस्य लक्षणं श्यामाकचणककोद्रवतक्रपिण्याकसक्तुभिः ३१ दीप्ताग्निः शुद्धकोष्ठश्च पुष्टधातुर्दृढेंद्रियः निर्जरो बलवर्णाढ्य स्नेहसेवी भवेन्नरः ३२ स्नेहे व्यायामसंशीतवेगाघातप्रजागरान् दिवास्वप्नमभिष्यंदि रूक्षान्नं च विवर्जयेत् ३३ इति श्री शार्ङ्गधरविरचिते स्नेहपानाध्यायः १ स्वेदश्चतुर्विधः प्रोक्तस्तापोष्मस्वेदसंज्ञकः उपनाहो द्रवः स्वेदः सर्वे वातार्तिहारिणः ॥ १ ॥

ठा तिल का कल्क यव के सत्तू खिलाइ स्निग्ध करै स्निग्ध को समा चावल चनादि खिलाइ रूखा करै ३१ स्नेह सेवन गुण अग्नि दीप्त शुद्ध कोठा धातु पुष्ट इंद्री दृढ जरा रहित बल कांति युक्त लक्षण होते हैं ३२ स्नेह सेवी को वर्ज्य पदार्थ श्रवन करै ठंढे पदार्थ तजे मल मूत्र न रोके बहुत न जागे न दिन में सोवै कफ कर्त्ता पदार्थ रूखान्न न खाय ३३ इति स्नेह पान विधि प्रथमोध्यायः १ अथ स्वेदन विधि स्वेदन ४ भांति हैं तिस के नाम ताप कहें सेकना ऊष्मा कहें वफारा उपनाह कहें पोटरी से सेकना द्रव कहें काढ़ादिक में बैठाना ये चारों वायु पीड़ा हरते हैं ॥ १ ॥

सा स्वेद विशेष कर्तव्य ताप स्वेद और उष्म विधि सो कफ नाशक है उपनाह स्वेद बिधि वायु नाशक है द्रव स्वेद बिधि पित्त वान नाशक है चर्कमें कहा है बात कफ में स्वेद करे और वायु में सूक्ष्म और वायु में कुछ लक्षण पित्त के मिलें तो सूक्ष्म स्वेद लेइ इस कारण पित्त वायु में हल का स्वेदन करना २ बल वान शरीरी को वायु का बड़ा बेग हो तो स्वेद अधिक करना उचित है हल के शरीर में हल का स्वेद उचित है मध्यम रोग वाले को मध्यम तर स्वेद उचित है ३ कफ दोष में रूक्ष पदार्थ रेणुकादि से स्वेद करे कफ बात रोग में रूक्ष स्निग्ध पदार्थ से करे कफ मेद वायु युक्त रोग में उष्ण

स्वेदौ तापोष्मजौ प्रायः श्लेष्मघ्नौ समुदीरितौ उपनाहस्तु वातघ्नः पित्तसंसर्गे द्रवो हितः २ महाबले महाव्याधौ शीते स्वेदो महान् स्मृतः दुर्बले दुर्बलः स्वेदो मध्ये मध्यतमो मतः ३ बलाशे रूक्षणः स्वेदो रूक्षः स्निग्ध कफानिले कफ मेदावृतो वाते कोष्ण गेहं रवेः कराः ४ नियुद्ध मार्ग गमनं गुरु प्रावरणं क्षुवं चिंता व्यायाम भारांश्च सेवेतामय मुक्तये ५ तेषां नस्यं विधातव्यं वस्तिश्चापि हि देहिनां शोधनीयाश्च ये केचित्पूर्वं स्वेद्याश्च ते मताः ६ पश्चात्स्वेद्या गते शल्ये मूढगर्भ गदे तथा स्वेद्याः पूर्वत्रयः क्लीह भगंदर्यर्शसां तथा प्रमर्दश्चातु रोजं तु शमये च्छस्त्र कर्मणा ७ सवान्स्वेदान्निवाते च जीर्णाहारे च कारयेत ॥ ८ ॥

स्थान में बैठाय स्वेद करे वा घाम में बैठाय के करे हल का सा ४ वा मल्ल युद्ध मार्ग चलावे वा भारी वस्तु उठावे वा चिंता उपजाय के वा परिश्रम कराइ बोझ उठवाइ ऐसी युक्ति से कफ मेद युक्त वायु रोग दूर होता है ५ और नास योग्य वस्ती योग्य रेचन योग्य को प्रथम स्वेद निकराय उपाय करे ६ जिस स्त्री के पेट के भीतर गर्भ का साल हो वा मूढ गर्भ हो इन रोग का गर्भ जब बाहिर होजाइ तब स्वेद करे जिस मनुष्य की क्लीह भगंदर अर्श और पथरी इन चारों रोगातौंन को प्रथम स्वेदन करि शस्त्र उपाय करना उचित है ७ स्वेद कर्म करने का समय स्थान आहार पचने के अनंतर जिस स्थान में

बा स्वेद किये पुरुष को बड़े पात्र में तेल भरि बैठावे तो वातादिक दोष और रसादि सप्त धातु के विकार मल को पतला करि उसी क्षण निकस जाते हैं यह अन्य ग्रंथ मत है और शार्ङ्गधर मते स्वेदी मनुष्य के पसीना निकालते ही से रसादि सप्त धातु में स्थित वातादि बिकार मल को पतला करि निकल जाते हैं ९ स्वेदी के चित स्वास्थ्य करने का यत्न जिस का स्वेद करि पसीना निकालने से मल पतला हो चित सावधान हो तो छाती पर चंदन लगाने से सावधान होगा जिस्का शरीर तेल में भिजोया गया है और मल पतला गिरता है उस की आंखों पर कदली वा केवड़ा के जल में वस्त्र भिजोइ

स्नेहाधातुस्थिता दोषाः स्नेहक्लिन्नस्य देहिनः द्रवत्वं प्राप्य कोष्ठांतर्गता यांति विरिक्ततां ९ स्विद्यमानशरीरस्य हृदयं शीतलैः स्पृशेत् स्नेहाभ्यक्तशरीरस्य शीतैराच्छादयेच्चक्षुषी १० अजीर्णी दुर्बलो मेही क्षतक्षीणः पिपासितः अतीसारी रक्तपित्ती पांडुरोगी तथोदरी ११ मदार्ती गर्भिणी चैव नहि स्वेद्या विजानता एतानपि मृदुस्वेदैः स्वेदसाध्यानुपाचरेत् १२ मृदुस्वेदं प्रयुंजीत तथा हृन्मुष्कदृष्टिषु अतिस्वेदात्संधिपीडा दाहस्तृष्णा क्लमो भ्रमः १३ पित्तास्रकोपपिडकाः कोपस्तत्र शीतैरुपाचरेत् तेसुतापाभिधः स्वेदो वालुकावस्त्रपाणिभिः १४ कपालकंदुकांगारैर्यथा योग्यं प्रयुज्यते उष्मस्वेदः प्रयोक्तव्यो लोहपिंडेष्टिकाश्मभिः १५ भ्रतैरम्लसिक्तैश्च क्वाथेनक्वाथने स्थिते ॥

के धरने से चित स्वस्थ होगा १० स्वेद अयोग्य अजीर्णी दुर्बल मेही उरक्षत पीडित प्यासातुर अतीसार रक्त युक्त रक्त पित्त रोगी पांडु शरीरी उदर रोगी ११ मदार्ती गर्भिणी ऐसे रोगी को स्वेदन न करे जो अवश्य करना हो तो सूक्ष्म स्वेद ले १२ अल्प स्वेदन निधि हृदय अंड दृष्ट नेत्र रुक इन रोगन में थोरा स्वेद ले १३ अति स्वेद पञ्चव संधि पीर दाह तृषा ग्लानि भ्रम रक्त पित्त से फुनसी इन के समतार्थ शीतोपचार करे शांति होइ १४ अथ ताप स्वेद वालू कपड़ा कपड़े की गेंद बनाइ के और अग्नि ये छः भांति के ताप से कहे जैसा जहां योग्य हो तैसा करै १५ अथोष्मावि

वा अथो पनाह महा शाल्वण क्रिया अर्थात् पोटलिका सिक्त विधि ग्रामी मांस जल चर मांस जीवनी गरा द्रव्य गो दधि सज्जी यवा खार खारी लोन वीरत वीदि गण वा गुग्गुरु मूल कुलथी उदर गेहूं अरसी तिल सरसों सौंफ देवदारु निर्गुंडी मयरैला रेंडी रासन मूल सहिजन सोआ वीज पीपरि नाज वेर्द पांचों लोन अनार कठ कुरैया असगंध वरियारा दशमूल गुर्द किमाच विया इन में जितनी मिलै तिन्हें जल में पीसि तपाइ पोटली बांधि के से के ठंडी धरे गरम तवे पर तपाइ तपाइ सेकै इस शाल्वण प्रयोग से सब वायु पीड़ा दूर होती है २३ अथ द्रव स्वेद विधि दश

ततो ग्राम्यानूप मांसै र्जीवनीय गरोनच दधिसौ वीर कञ्जारै वीरतर्वा दिना तथा २५ कुलत्थ माषगोधूमैरतसी ति-लसर्षपैः शतपुष्पा देव दारु शेफाली स्थूल जीरकैः २६ एरंड मूल वीजैश्च रास्ना मूल कपिगुभिः मिसि कला कुठे रैश्च लवणै रम्ल संयुतैः २७ प्रसारण्य श्वगंधाभ्या वलभिं र्दशमूलकैः गुडूची वानरै वीजै र्यथालाभं समाहृतैः २८ खि-न्नैश्च वस्त्र संवुद्धैः सदा संस्वेदयेन्नरः महा शाल्वण संज्ञोयं योगः सर्वानिलार्तिहृत् २३ द्रवस्वेदस्तु वातघ्नं द्रव्य क्काथेन पूरिते कटाहे कोसके वापि सूपविष्टो वगाहयेत् सौवर्णे राजते वापि ताम्र आयः सदा रुजां कोष्ठकं तत्र कुर्वीतो च्छ्रायेण द्वि षडंगुलं आ-यामे नल्वदेनस्या च्चतुष्कोंद समान्वितं नाभे षडंगुलं यावन्मग्नः क्काथस्य धारया कोष्टके संवृतो सिञ्चेत् स्निग्ध तनुर्नरः

सूलादि वायु इन द्रव्यों का काथ बनाइ रोगी कैठाउ ता चौकोन कोठ सोने वा चांदी तांबा लोहा वा काठ छ बीस अंगुल ऊंचा बनाइ बैठाइ वह काढा ले रोगी के ऊपर पतली धार से नावै नाभि के छः अंगुल ऊंचे आवे तब साथ को हटावे इसी प्रकार एक वा दो दिन दार दार करे इसी भांति तेल दूध घृत द्रव स्वेदन भी करे फिर पौन को बचावे ऐसे दो तीन दिन तक ॥

वा॰ घृत वा तैल लगाइ करै सवन सें अरु रोमों का मुख खुलि जाता है जो पौन प्रवेश करने पावै तो उन के मुख से स्नेहादि पदार्थ प्रवेश करके वायु को निकार देते हैं शरीर को लघु और वलवान करते हैं दृष्टांत जैसे जल से अंकुर की जड़ में जल सींचने से वृक्ष बढ़े पुष्ट हो तैसे द्रव सम्यक स्वेद से मनुष्य को रोग नाश हो उमर बढ़े तैसे ही रसादि सप्त धातु में वात दोष बढ़ने से पेट वा मल मार्ग में भड भरा हुआ हो तो तेल स्वेद करै इस से परे वात नाशक और यत्न नहीं २४ जब ताईं स्वेद करै कि वायु शूल देह जकड़ना भारी पन दूर होइ अग्नि दीप्त देह को मल

स्वंतैलेन दुग्धेन सर्पिषा स्वेदयेन्नरं एकोंतरे द्व्यंतरे वास्ने हो युक्ते वगाहने २२ शरीरे बलमाधत्ते युक्तः स्नेहावगाहके शिरामु खै रोमकूपैर्धमनाभिश्चतर्पयेत् २३ जलसिक्तस्य वर्द्धते यथा मूलेंकुरस्तरोः तथा धातुविवृद्धिर्हि स्नेहसिक्तस्य जायते २४ नातः

परतरः कश्चिदुपायो वातनाशनः शीतशूला द्युपरमे स्तंभ गौरव निग्रहे २५ संदीप्ते मार्दवे जाते स्वेदना द्विरतिर्मता २५ सम्यक्स्विन्नं विमृदितं स्नानमुष्णांबुभिः शनैः २६ भोजयेच्चानभिष्यंदि व्यायामं च न कारयेत् २७ इति श्री शार्ङ्गधरे स्वेदविधिर्द्वितीयोध्यायः २ शरत्काले वसंते च प्रावृट्काले च देहिनां वमनं रेचनं चैव कारयेत् कुशलो भिषक् १ बलवन्तं कफव्याप्तं हृल्लासादिनिपीडितं तथा वमनसात्म्यं च धीरचित्तं च वामयेत् ॥ २ ॥

हलकी हो नव न करै २५ स्वेद करै पर तेल लगाइ सुखोष्ण जल से न्हाय कफ कृत भोजन करै २६ इति द्वितीयोध्यायः २ शरद वसंत प्रावृट काल के आदि चतुर वैद्य वमन विरेचन करावै क्योंकि अश्विनी कुमार संहितादि सब ग्रंथ कार ऐसे ही कहते आये हैं इस से मनुष्य को प्रकृति शुद्ध रहती है १ वमन योग्य जिसे वमन करने की सामर्थ्य हो कफ व्याप्त हो मुख से लार बहता हो जिसे वमन हित हो धीर चित्त हो तिसे वमन करावै ॥ २ ॥

भा·विषरोग स्तन्य रोग मंदाग्नि पीनस पद अर्बुद हृद्रोग कुष्ट विसर्प प्रमेह अजीर्ण भ्रम ३ विदारी अपची कास श्वास पीनस वृद्ध अपस्मार ज्वर उन्मादि रक्तातीसार ४ नासा ओष्ठ तालुपाक कर्णस्राव द्विजिह्वक गलगंड अतीसार पित्त श्लेष्म मेद अरुचि इन रोगों में वैद्य वमन बतावे ५ वमन अयोग्य तिमिरी गुल्म रोगी उदर रोग कृश दुर्बल अति बूढ़ा गर्भिणी मोटा उरःक्षती ६ मद पीड़ित बालक रूक्ष देही भूखा निरूहण बस्ती किया ऊर्ध्ववायु उर्ध्व की छर्दि रोगी केवल वातार्ती पांडु रोगी कृमी बहु वाक्य श्रम से स्वर भंगी ऐसे रोगियों को वमन

विषदोषे स्तन्यरोगे मंदेऽग्नौ श्लीपदे तथा हृद्रोग कुष्ठ वीसर्प मेहाजीर्णभ्रमेषु च ३ विदारिकापचीकासश्वासपीनसवृद्धिषु अपस्मारे ज्वरोन्मादे तथा रक्तातिसारके ४ नासाताल्वोष्ठपाकेषु कर्णस्रावे द्विजिह्वके गलगंडे ऽतीसारे पित्तश्लेष्मगदे तथा ५ मेदोगदे रुचौ चैव वमनं कारयेद्भिषक् न वामनीयस्तिमिरी न च गुल्मोदरी कृशः नातिवृद्धो गर्भिणी च न स्थूलो न क्षतातुरः ६ मदार्तो बालकोरूक्षः क्षुधितश्च निरूहितः उदावर्त्यूर्ध्वरक्ती च दुःछर्दिः केवलानिली ७ पांडुरोगी कृमिव्याप्तः पठनात्स्वरघातकः एतेप्यजीर्णव्यथिता वाम्या विषपीडिताः ८ कफव्याप्ताश्च ते वाम्या मधुकक्वाथपानतः सुकुमारं कृशं बालं वृद्धं भीरुं न वामयेत् ९ पीत्वा यवागूमाकंठ क्षीरतक्रदधीनि च असात्म्यैश्श्लेष्मलैर्भोज्यैर्दोषानुत्क्लिश्य देहिनः १०

न करावे ७ और अजीर्ण युक्त विष पीड़ित कफ व्याप्त इन मनुष्यों को मुलेठी महुआ की छाल का क्वाथ पिलाय वमन करावे ८ और सुकुमार दुबला बालक बूढ़ा भय भीत इन को कभी वमन न करावे ९ वमन के पूर्व उपचार जिसे वमन कराना हो उसे पहिले पेट भर यवागू दूध मट्ठा दही और अन भावन पदार्थ और कफ कृत पदार्थ इन के खाने से दोष ऊपर उभर आते हैं तब वमन की औषधि देइ तो

वमन योग्य पदार्थ सब वमन प्रयोग में सैंधव वा सहत युक्त औषधि हित कारक होती है जो तूतिया वा तांबा घृत युक्त देते हैं वह विभ-त्स वमन है जिसे विभत्स वमन दिये पर रेचन देना होतो घृत न खाने देव २१ वमन औषधि यदि क्वाथ का प्रमाण क्वाथ की द्रव्य कुडव भरि कूटिकै आढक भर जल में औटाव आधा जल जाव तब उतारि लेव फिर वमन करने वाले मनुष्य को पिलावे १२ वमन क्वाथ पान करने का प्रमाण वमन क्रिया का क्वाथ नव प्रस्थ पिलावे सो ज्येष्ठ मात्रा है छः प्रस्थ पिलावे सो मध्यम मात्रा है तीन प्रस्थ पिलावे सो छोटी मात्रा है १३ वमन कार्य में कल्कादिक औषधि का प्रमाण वमन में कल्क चूरण अवलेह तीन तीन पल देना सो बड़ी मा-

स्निग्ध स्विन्नाय वमनं दत्तं सम्यक् प्रवर्तते वमनेषु च सर्वेषु सैंधवं मधु चा हितं ११ विभत्सं वमनं देयं विपरीतं विरेचनं क्वाथ द्रव्यस्य कुडवं श्रपयित्वा जलाढके १२ अर्द्धभागावशिष्टं च वमनेष्ववधारयेत् १२ क्वाथ पाने नव प्रस्था ज्येष्ठा मात्रा प्रकीर्तिताः १३ मध्यमा षड्भिरुद्दिष्टा त्रिप्रस्था च कनीयसी कल्कचूर्णावलेहानां त्रिपलं श्रेष्ठ मात्रया १४ मध्यमां द्विपलां विद्यात्कनिष्ठां पलसंमितां १५ वमने चापि वेगा स्युरष्टौ पित्तान्त मुत्तमाः षड्वेगा मध्यमा वेगाश्चत्वारस्त्ववरा मताः १६ वमने च विरेके च तथा शोणित मोक्षणे सार्द्धत्रयं दश पलं प्रस्थमाहुर्मनीषिणः ॥ १६ ॥

त्रा है दो दो पल की मध्यम मात्रा है एक एक पल की लघु मात्रा जानना १४ वमन कार्य उत्तम मध्यम कनिष्ठ वेग का प्रमाण जिस मनुष्य को वमन की औषधि देव उस के सात वार तांई सब दोष गिरैं आठवी वार पित्त गिरै तो उत्तम वेग है पांच वार में सब दोष गिरि छठी वार पित्त गिरै वह मध्यम वेग है तीन वार में सब दोष गिरि चौथी वार पित्त गिरै वह कनिष्ठ वेग है १६ वमनादिक में प्रस्थ प्रमाण वमन और रेचन और शिरा रक्त मोक्षण अर्थात् फस्त लेने में प्रस्थ साढे तेरह पल का जानना ॥ १७ ॥

दोष विशेष में वमनो पचार द्रव्य कटु तीक्ष्ण उष्ण पदार्थ से वमन कराये से कफाती का कफ नाश होता है मधुर शीतल पदार्थ करि वमन कराये पित्त नाश होता है मधुर क्षार खटाई वा उष्ण पदार्थ से कफ युक्त बात नाश होता है सोंठि मिर्च पीपरि ये तीक्ष्ण हैं मुनक्का अनारादि मधुर हैं १८ कफे वमन विधिः कफ प्रकृति को पीपरि मैनफल सैंधव चूर्ण करि उष्ण जल में पिलाने से वार वार कफ गिरैगा पित्त प्रकृति को पटोल नीम पत्र चूर्ण करि ठंढे पानी में पिलाने से वार वार पित्त गिरैगा १९ और कफ बात पीडित को मैनफल दूध में पिलाने से कफ बात दूर हो और सैंधव उष्ण

कफं कटुकतीक्ष्णोष्णैः पित्तं स्वादु हिमैर्जयेत् सस्वादु लवणाम्लोष्णै संसृष्टं वायुना कफं १८ कृष्णा राटफलैः सिंधु कफे कोष्णजलैः पिवेत् पटोलकसानि वेष्म पित्ते शीतजलं पिवेत् १९ सश्लेष्म बात पीडायां सक्षीरं मधनं पिवेत् अजीर्णी कोलपानीयं सिंधु पीत्वा वमेत्सुधीः २० वमनं पाद विल्वा च जानु मात्रासने स्थितं कंठमें रंड नालेन स्पर्शनं वामये द्भिषक् २१ ललाटं वमनः पुंसः पार्श्वौ होच प्रबोधयेत् प्रसेको हृद्ग्रहः कोष्ठ कंडू दुष्टे हिते भवेत् २२ अति वांते भवेत्तृष्णा हिक्कोद्गारो विसंज्ञता जिव्हाक्षिः सर्पणं चाक्ष्णोर्भ्रांति र्हनु संहतिः २३ रक्त च्छर्दिः ष्ठीवनं च कंठ पीडा च जायते २४

जल में पिलाने से अजीर्ण मिटै २० वमन करने की रीति वमन औषधि पीके दोनों घुटने नोरि के बैठे और रंड पत्र की डंडी शुद्ध करि गरेमें प्रवेश करै तो वमन होगा और वमन करने वाले का मस्तक और दोनों ओर की पसुरी सहराता जाय इसी रीति से वैद्य लोग वमन कराते हैं २१ वमन को फल लक्षण जो वमन अच्छी तरह न होय तो रोगी के मुख से लार वहै हृदे में पीड़ा रहै कोठे में खजुरी ये उपद्रव होंय २२ अति वमन उपद्रव तृष्णा अधिक हुच की डकार अज्ञानता जीभ निकलना नेत्र चंचलता संभ्रम चित्त ठोढी जकड़ना मुख से रुधिर गिरना बार बार थूकना कंठ पीड़ा ये अति वमन लक्षण हैं २३ ॥ ॥ ॥

अति बात चिकित्सा जो वमन प्रयोग से वमन अधिक हो तौ उसे मृदु रेचन करे २४ वमने जिव्हा खेदन पर चिकित्सा अति उबकाई अति जीभ खेंच जाती है उसे जो पदार्थ अच्छा लगता हो चिकना वा खट्टा वा सलोना सो घी युक्त को खवाई उसके मुख में रख देना वा दूध दही घृत इन में कोई मे सानि मुख में रक्खे और उस के सन्मुख और मनुष्य खट्टे फलादि खिलावे तौ उसे देखने से वामनी की जीभ में पानी छुटै तौ जीभ को मल हो जाती है प्रकृति स्वस्थ होती है २५ अति बात से जीभ बाहर निकल आवै उस का यत्न जो उवाकते उवाकते जीभ निकल आवै तौ तिल और दाख पीसि जीभ पर लेप कर बैठाय देव और जो आंखे चंचल भई हों तो आंख पर घी लगाई धीरे धीरे सहराइ देइ २६ वमने हनुस्तंभ उपचार जो वमन के अंत

वमनस्यातियोगे तु मृदु कुर्याद्विरेचनं वमनांतः प्रविष्टायां जिव्हायां कवलग्रहः २४ स्निग्धाम्ललवणैर्हृद्यैर्घृतक्षीररसैर्हितः फलान्यम्लानि खादेयुस्तस्य चान्ये यतो नराः २५ निःसृतां तिलद्राक्षाकल्केलिप्ताप्रवेशयेत् व्यावृते क्षिणि घृताभ्यक्ते पीडयेच्च शनैः शनैः २६ हनुमोक्षे स्मृतः स्वेदो न्यस्तं च श्लेष्मवातहृत् रक्तपित्तविधानेन रक्तस्रुतिमुपाचरेत् २७ धात्रीरसः समा शीरलाजाचंदनवारिभिः मंथं कृत्वा पाययेच्च सघृतक्षौद्रशर्करं आम्ब्यंजनेन कृत्वा या पीडा छर्दिसमुद्भवः २८ हृत्कंठशिरसां शुद्धिं दीप्ताग्निं च लाघवं कफपित्तविनाशश्च सम्यग्वांतस्य चेष्टितं ॥ २९ ॥

में दाढ़ा जकड़ जाय तौ सेकने और कफ बात हारी द्रव्य सूंघने से खुल जाता है वमन के अंत में रक्त गिरने का यत्न जो वमनांत में रुधिर आने लगै तौ मध्य खंड में कहा रक्त पित्तोपचार करे २७ अति वमन से प्यास बढ़ने का यत्न जो तृषा बढ़ै तौ आंवरे का रस खीत धान की खीलें लाल चंदन खस ये पांचों पल भर चार पल ठंढे पानी में मथि के घी सहत संयुक्त मिश्री डारि कै पिलावे तौ शांति होइ रसांजन कहें रस वत बनाने की बिधि दारुहरदी क्वाथ करि तिस के समान बकरी का दूध मिलाइ औटि गाढ़ा करि सुखाइ ले उसे रसांजन कहते हैं २८ वमन उत्तम होने का लक्षण जो वमन सम्यक् होतौ हृदय कंठ मस्तक के कफादिक का दोष न रहै अग्नि दीप्त हो अंग हलका हो कफ पित्त जनित बिकार नाश होइ २९ ॥

वमन पर पथ्य मूंग वा साठी चावर का यूस देना वा हिरन मांस अभावे खसी मांस का यूस दे ३० सम्यक् वमन भये ये रोग नहीं रहते न होते हैं तंद्रा निद्रा मुख में दुर्गंध खाज संग्रहणी विष दोष ३१ वमन पर संयम भारी और गरिष्ठ पदार्थ और ठंढा जल परिश्रम मैथुन तेल मर्दन क्रोध जिस दिन वमन करे तो इन से बचा रहे ३२ इति शार्ङ्गधर उत्तरे तृतीयोध्यायः ३ वमनांते बिरेचन प्रथम मनुष्य स्नेह पानादिक कर्म करि स्नेह कर्म कों फिर वमन करे तब रेचन करे सो रेचन उत्तम प्रकार है और प्रथम कर्म हीन रेचन करे कफ नीचे जाइ ग्रहणी कहै पित्त धरा अग्नि धरा छाइ लेता है १ इस कारण से अग्नि मंद देह भारी देर नकड़ना प्रवाहि कहै दारुण अतीसार ये रोग उत्पन्न होते हैं जो कर्म हीन रेचन शीघ्र दिया चाहै तो नीचे

ततो परान्हे दीप्ताग्निं मुद्गषष्टीकशालिभिः हृद्यैश्च जांगलरसैः कृत्वा यूषं च भोजयेत् ३० तंद्रा निद्रास्य दौर्गंध्यं कंडूश्च ग्रहणी विषं गुर्वंतिस्य न पीडायै भवंतो ते कदाचन ३१ अजीर्णं शीत पानीयं व्यायामं मैथुनं तथा स्नेहाभ्यंगं प्रकोपं च दिनैकं वर्जयेत्सुधीः ३२ इति श्री शार्ङ्गधरे तृतीयः ३ स्निग्धस्विन्नस्य वांतस्य दद्यात्सम्यग्विरेचनं अवांतस्य त्वधः स्रस्तो ग्रहणीं छादयेत्कफः १ मंदाग्निं गौरवं कुर्याज्जनयेद्वा प्रवाहिकां अथवा पाचनैरामं श्लेष्माणं वा चयोजयेत् २ स्निग्धस्य स्नेहनैः कार्य्यं स्वेदैः स्विन्नस्य रेचनं शरद्यो वसंते च देहशुद्धौ विरेचयेत् अन्यदात्यायिके काले शोधनं शीलयेद् बुधः ३ पित्ते विरेचनं दद्यादामोद्भूते गदे तथा॥ गिरने वाला कफ और आंव तिसे सूखे रंड की जड़ आदि सेवन कराइ पचाइ रेचन करे और भेउ चरक सुश्रुत बाग भट्ट इनका मत यह है कि प्रथम वमन कराइ छः दिन बिताइ तीन दिन स्नेह पान कराइ फिर तीन स्वेद साधित तीन बार सो रहे दिन लघु भोजन दे रेचन करवै २ रेचन का दूसरा प्रकार जो घृत दूध करि स्निग्ध मनुष्य का भट्टी के गोला वा ईंट करि स्वेदित मनुष्य तिसे रेचन और वमन दे और शरद आतिक वैव वैशाख में रेचन कर्म किये देह शुद्ध हो जाती है और जो वैद्य रोगी का रोग विचार तिनके निवारणार्थ अनुक्त काल में भी बिरेचन करे ३ विशेष रेचन योग्य पित्त विकार आम वायु उदर मैं आन वायु को इन्द इन रोगों को विशेष शुद्ध करि कता गर जो अधिक मसे जानना नस्तिकर्म रेचन कर्म

कर्म तैल घृत सहत यथा रोग बल करै ४ दोष लिखाएला ये उत्कर्ष रेचन बातादि दोष लंघन पाचन करे दबजाते हैं परंतु थोरे कुपथ किये उभर आते हैं और जो रेचन करि बातादि दोषों से शुद्ध किये शरीर रोग नहीं उभरते ५ रेचन के अयोग्य बालक वृद्ध अति स्नेह पान पर उरुक्षत नी हरा मनुष्य भय युक्त श्रमित तृषित स्थूल शरीर गर्भिणी नव ज्वरी ६ तुरत पुत्र जनिता स्त्री मंदाग्नि अति मंद पीड़ित शल्य बेधि तक्षत युक्त रूक्ष कहे निस्तेज मनुष्य इन को रेचन नहीं देना ७ रेचन योग्य जीर्ण ज्वरी विष पीड़ित बात रक्त भगंदर रोगी अर्श रोगी पांडु रोगी उदर रोगी ग्रंथ रोगी

शरीरजानां दोषाणां क्रमेण परमौषधं बस्तिर्विरेको वमनं तथा तैलं घृतं मधु ४ दोषाः कदाचित्कुप्यंति जिता लंघनपाचनैः ये तु संशोधनैः शुद्धास्तेषां पुनरुद्भवः ५ बाल वृद्धावतिस्निग्धः क्षतक्षीणो भयान्वितः श्रांतस्तृषार्तः स्थूलश्च गर्भिणी चनवज्वरी ६ नव प्रसूता नारी च मंदाग्निश्च मदात्ययी शल्यार्दितश्च रूक्षश्च न विरेच्या विजानता ७ जीर्णज्वरी गरव्याप्तो बातरक्ती

भगंदरी अर्शः पांडुदरो ग्रंथी हृद्रोगारुचिपीडिताः ८ योनिरोगः प्रमेहार्तो गुल्मप्लीहव्रणार्दिताः विद्रधी छर्दिविस्फोटविषूची कुष्ठसंयुतः ९ कर्णनासाशिरोवक्त्रगुदमेढ्रामयान्विताः प्लीह शोफाक्षिरोगार्ताः कृमिक्षारविलार्दिताः शूलिनो मूत्रघातार्ता विरेकार्हा नरा मताः १० बहुपित्तो मृदुः प्रोक्तो बहुश्लेष्मा च मध्यमः बहुवातः क्रूरकोष्ठो दुर्विरेच्यः स कथ्यते ११

हृदय रोगी योनि ये प्रमेह गुल्म प्लीहा व्रण विद्रधि छर्दि विस्फोटक विसूची ८ कुष्ठ कान रोग मस्तक रोग मुख रोग गुदा रोग गरमी प्रकृत सजन नेत्ररोग कृमि रोग सो स्नादि रोग शूल मूत्र घात इन रोगन करि पीड़ित मनुष्य को रेचन दीजे १० रेचन तीन प्रकार कोमल मध्यम कराल कोष्ठ बेधक जिस मनुष्य की कोमल प्रकृति हो उस का कोठा मृदु है जिस की केवल प्रकृति है उसका कोठा मध्यम है जिस की केवल बात प्रकृति उस का कठोर कोठा है सो कड़े कोठे वाला रेचन विषय में दुख पाता है उसे रेचन करने से मल स्राव शीघ्र नहीं होता ॥ ११ ॥

कोमल कोठा समुझि मृदु रेचन करावे मध्यम कोठा वाले को मध्यम मात्र विरेचन करावे २२ मृदु मध्यमादिक कोठी को मृदु मध्य मध्य-
मादि औषधि दे कोमल कोठी को दाख दूध रेंडी का तेल युक्त करि रेचन दे मध्यम कोठी को निशोथ कटुकी अमलतास इन को रेचन दे
क्रूर कोठी को सेंहुड का दूध वा जमाल गोटा इन करि रेचन दे २३ उत्तम मध्यम कनिष्ठ रेचन प्रमाण मल गिरते गिरते अंत में कफ गिरे
ऐसे तीस वेग आवें सो उत्तम मात्रा है वेग कहें दस्त जिसमें बीस वेग तक अंत में कफ गिरे वह मध्यम है जिस में दश वेग तक कफ गिरे वह
हीन रेचन मात्रा है २४ रेचन क्वाथादि प्रमाण रेचन में काढा की मात्रा दो पल उत्तम एक मध्यम आध पल कनिष्ठ मात्रा है २५ रेचन

मृद्वीमात्रा मृदौ कोष्ठे मध्य कोष्ठेच मध्यमा क्रूरेतीक्ष्णा मता द्रव्यैर्मृदुमध्यमतीक्ष्णकैः २२ मृदुर्द्राक्षापयश्चंचुतैलैरपि विरि-
च्यते मध्यमस्त्रिवृतातिक्ता राजवृक्षैर्विरिच्यते क्रूरस्तु कायसाहेमक्षीरी दंतीफलादिभिः २३ मात्रोत्तमा विरेकस्य त्रिंश-
द्वेगैः कफांतिका वेगैर्विंशतिभिर्मध्या हीनोक्ता दशवेगका २४ द्विपलं श्रेष्ठमाख्यातं मध्यमंच पलंभवेत् पलार्द्धंच कषायाणां
कनीयस्तु विरेचनं २५ कल्कमोदकचूर्णानां कर्ष मध्वाज्यलेहतः कर्षद्वयं पलं वापि वयोरोगाद्यपेक्षया २६ पित्तोत्तरे त्रिवृच्चूर्णं द्रा-
क्षाक्वाथादिभिः पिबेत् त्रिफलाक्वाथगोमूत्रैः पिबेद्व्योषं कफार्दितः २७ त्रिवृत्त्र्युषणसैंधवानां चूर्णमम्लैः पिबेन्नरः वातार्दितो
विरेकाय जांगलानां रसेनवा ॥ २८ ॥

कल्कादिक प्रमाण कल्क मोदक चूर्ण तीनो का कर्ष कर्ष प्रमाण है और सहत घृत यु-
क्त रेचन देइ वा रोगी का रोग अवस्था बल देखि दो कर्ष से पल भर तक यथोचित मात्रा देना २६ रेचने द्रव्य प्रकार पित्त में निशोथ चूर्ण
दाख क्वाथ में वा गुलकंद गुलाब फूल बडी सौंफ के काढे में देइ कफ कोप में सोंठि मिर्च पीपरि चूर्ण त्रिफला क्वाथ में पिआवे कफ दोष दूर
होइ २७ बात कोप में निशोथ सोंठि सेंधव चूर्ण नींबू रस वा कांजी वा जंगली जानवर के गोश्त का यूस युक्त देइ तो रेचन अच्छा हो वायु कोप

अपर औषधि रेचन पर रेंडी तेल से दूना त्रिफला क्वाथ प्यावै वा दूना दूध युक्त प्यावे भाड़ा जल्द हो १९ रेचने ऋतु भेद निशोथ इंद्रजव पीपरि सोंठि दाख के क्वाथ सहत डारि वर्षा में प्यावे २० शरद में निशोथ जवासा मोथा सुगंध वाला मिश्री खेद चंदन मुरेठी दाख क्वाथ में प्यावे तौ रेचन हो २१ हेमंत में निशोथ चीता पाढा जीरा देव दारु वच चोक इन का चूरण उष्ण जल साथ पियै तौ रेचन हो २२ शिशिर बसंत में

एरंडतैलं त्रिफलाक्वाथेन द्विगुणेन वा युक्तं पीत्वा पयोभिर्वा न चिरेण विरिच्यते १९ त्रिवृत्ता कौटजं बीजं पिप्पली विश्वभेषजं मृद्वीकाया रसक्षौद्रं वर्षाकाले विरेचनं २० त्रिवृद्दुरालभा मुस्ता शर्करा दिव्य चंदनं द्राक्षांबुना सयष्ट्याह्व शीतलं च घनात्यये २१ त्रिवृत्या चित्रकं पाढा मजाजी सरलां वचं हेमक्षीरं च हेमंते चूर्णं मुष्णांबुना पिबेत् २२ पिप्पली नागरं सिंधु श्यामा त्रिवृता सह लिहेत् क्षौद्रेण शिशिरे वसंते च विरेचनं त्रिवृता शर्करा तुल्या ग्रीष्मकाले विरेचनं २३ अभया मरिचं शुंठी विडंगामलकानि च पिप्पली पिप्पली मूलं त्वक्पत्रं मुस्तमेव च २४ एतानि सम भागानि दंतीच त्रिगुणा भवेत् त्रिवृदष्टगुणा ज्ञेया षड्गुणा चात्र शर्करा २५ मधुना मोदकं कृत्वा कर्षमात्र प्रमाणतः एकैकं भक्षयेत्प्रातः शीतं चानुपिबेज्जलं २६

पीपरि सोंठि सैंधव विधारा निशोथ इन का चूर्ण सहत युक्त चाटै तौ रेचन हो ग्रीष्म में निशोथ का चूरण शक्कर सम भाग युक्त करि फांके तौ रेचन हो २३ रेचन पर अभयादिक मोदक हड़ मिर्च सोंठि बिडंग आंवरा पीपरि पीपरा मूल तज पत्रज मोथा २४ सब सम भाग ले जमाल गोटा की जड़ त्रिगुण निशोथ अठगुणा शक्कर छः गुणी २५ सहत में मल कर्ष कर्ष भर की गोली बांधि प्रभात एक खाद शीतल जल पियै २६

जब वेग मल को रोका चाहै तब तत्ता जल पिये और खान पान बिहार यत्न से परहेज रक्खै २७ तौ बिषम ज्वर मंदाग्नि पांडु कास भगंदर दुर्नाम कुष्ठ गुल्म अर्श गल गंड भ्रम उदर रोग २८ दाह प्लीह प्रमेह यक्ष्मा नेत्र रोग बात रोग पेट फूलना मूत्र कृच्छ्र पथरी पीठ पसुरी छाती जांघ कटि पेट इन के रोग दूर होंं इस अभया मोदक सेवन से तुर्त ही बाल पकना मिटै यह रसायन श्रेष्ठ है २९ रेचन अच्छे प्रकार होने का यत्न रेचनौषधि पीके ठंढे जल से आंखें भुरक पीछे सुगंधादि फूल सूंघे पान खाया करै इस यंग के करे से चित्त स्वस्थ रहता है अच्छी तरह वेग आते हैं ३० रेचन समय साधना पे-

तावद्दिरिच्यते जंतुर्यावत्तत्सं न सेव्यते पाना हार बिहारेषु भवेन्नियंत्रितः सदा २७ बिषमज्वरमंदाग्निं पांडु कास भगंदरान् दुर्नाम कुष्ठ गुल्मार्शो गल गंड भ्रमो दरान् २८ बिदाह प्लीह मेहांश्च यक्ष्माणं नयनामयान् बात रोगं तथाध्मानं मूत्र कृच्छ्राश्मरींस्तथा अभया मोदका होते रसायन वराः स्मृताः पृष्टि पार्श्वोरु जघन कटूदर रुजं जयेत् सततं शीलना देषां पलिता-निप्रणाशयेत् २९ पीत्वा विरेचनं शीत जलैः संसिच्य चक्षुषी सुगंधिं किंचिदाघ्राय तांबूलं शीलयेद्बुधः ३० नवातस्थान

वेगांश्च धारयेन्नस्वपेत्तथा शीतांबु न स्पृशेत्क्वापि कोष्णं नीरं पिबेन्मुहुः ३१ बलादोषधिपित्तानि वायु र्यांति यथा व्रजे-त् रेकात्तथा मलं पित्तं भेषजं च कफो व्रजेत् ३२ दुर्विरिक्तस्य नाभेस्तु स्तब्धत्वं कुक्षि शूलना पुरीष बात संगश्च कंडूमंडल गौ-रवाः बिदाहो रुचिराध्मानं भ्रमः छर्दिश्च जायते ॥ ३३॥

न मल मूत्र न रोके न औटै ठंढा जल न छुवे ज्यों ज्यों वेग होइ त्यों बार बार तत्ता पानी पिये इस से खुल के मल गिरैगा ३१ सम्यक् रेचन में जै-से सम्यक् वमन में कफ और खाई हुई औषधि पित्त वायु सब दोष मुख से गिरते हैं तैसे ही ये सब मल मार्ग से गिरते हैं ३२ रेचन देने पर बेग न होइ तिस के उपद्रव जिस मनुष्य को रेचन देने से बेग न आवें अच्छी तरह न आवें उस की नाभि के नीचे कड़ापन और कोख में शूल मल में वा-यु मिल जाइ खजुरी मंडल देह जकड़ना दाह अरुचि पेट फूलना भ्रम छर्दि ये उपद्रव उत्पन्न होते हैं ॥ ३३॥

असुद्ध रेचन यत्न जिसे रेचन अच्छी तरह न हुआ उसे राल को अगर वधादि पाचन दे फिर स्नेह विधि से घृत पिलाइ कोठा चिकना करै रेचन देने से सुद्ध रेचन होगा सब उपद्रव शांति होगा और जठराग्नि दीप्त हो देह हल की ३४ अति विरेके उपद्रव मूर्छा कांच निकरन पेट में सूल कफ आदि का गिरना मांस के धोवन सदृश गिरना चरबी सी वा पानी वा रुधिर गिरै ३५ अति विरेको उपद्रव यत्न ठंढे जल से शरीर पोछे वा गुलाब के जड़ा छिडके वस्त्र से पोछे वा चावर का धोवन सहत युक्त पीवे और शरद औषधि दे मृदु वमन करावे इससे उपसमन होता है आम की छाल गो

लं पुनः पाचनैः स्नेहैः प क्वाशयं संविरेचयेत् तेनास्योपद्रवा यांति दीप्ताग्निर्लघुता भवेत् ३४ विरेकस्याति योगेन मूर्छाभ्रंशो गुदस्यच मूलं कफाति योगः स्यान्मांसधावन संनिभं मेदोनिमज्ज लाभासं रक्तं वापि विरिच्यते ३५ तस्य शीतांबुभिः सिक्तं शरीरं तंदुलांबुभिः मधुमिश्रै स्तथा शीतैः कारयेद्वमनं मृदु ३६ सहकार त्वचः कल्को दध्ना सौवीर केणवा पिष्टो नाभिप्रलेपेन हंत्यतीसार मुल्वणं ३७ अजाक्षीरं पिवेद्वापि विकिरान्हरिणांस्तथा शालिभिर्षष्ठिकैः स्वल्पं मसूरैर्वापि भोजयेत् ३८ शीतैः संग्राहिभिर्द्रव्यैः कुर्यात्संग्रहणं भिषक् लाघवं मनसस्तुष्टिर्मनुलोमं गते निले ३९ सुविरिक्तं नरं ज्ञात्वा पाचनं पाययेन्निशि इंद्रियाणां बलं बुद्धेः प्रसादं वन्हिदीपनं धातुस्थैर्यं वयस्थैर्यं भवेद्रेचन सेवनात् ४०

दधि सो वीर ये पीसि कल्क करि नाभि पर लगावे तो बेग बंद हो सो बीर में आम की छाल पीसि नाभि पर लगावे सो वीर की क्रिया मध्य खंड में कही है झाड़ा बंद करने को बकरी का दूध शकुनी चिड़िया का मांस यूस भात खाय वा मसूरी मत साठी चावर का भात खाइ और अनार सेवन करै ठंडे पदार्थ का सेवन करै बेग बंद होइ ३६ सम्य विरेक लक्षण शरीर हल का प्रसन्न चित्त स स्य गमन वायु ऐसे लक्षण देखि राति को पाचन देना वा पाचनार्थ रंडे मूल सोंठि धनिये का क्वाथ दे ३७ रेचन सेवन से इंद्रियां बलवान हो बुद्धि प्रसन्न रहे अग्नि दीप्त हो धातु पुष्टि अवस्था बढ़ स्थिर होती है ४०

रेचन पर वर्जित वयार ठंढा जल तेल मर्द अजीर्ण श्रम मैथुन इन से बचे हुए रेचन पर पथ्य चावर मूंग क यवागू वा हरिणादि मांस का यूस वा लवाबटेर तीतर मांस का यूस भात में दे इति शार्ङ्गधर सुधाकरे चतुर्थोध्यायः अथ वस्ति कर्म गुदा के भीतर अंड कोश की जड़ ताईं द्रव्य भरि पिचकारी देने को बस्ती कहते हैं सो दो प्रकार की है अनुवासन १ निरूहण २ जिस में घी तेलादि चिकनी वस्तु भरि दीजे उसे अनुवासन वस्ती कहैं और काढ़ा दूध तेल मिश्रित पिचकारी भरि पीड़ित करै वह निरूहण बस्ती है २ सो प्रथम अनुवासन बस्ती है पीछे निरूहण है इसी से निरूहण को उत्तरवस्ती

प्रवातसेवां शीतांबु स्नेहाभ्यंगमजीर्णतां व्यायामं मैथुनं चापि न सेवेत विरेचितः ४१ शालिषष्टिकमुद्गाद्यैर्यवागूं भोजयेत्कृतां जांगलैर्विष्किराणां वा रसैः शाल्योदनं हितं ४२ इति शार्ङ्गधरे उ॰ रेचनाध्यायः ४ बस्तिर्द्विधानुवासाख्यो निरूहश्च ततः परं बस्तिभिर्दीयते यस्मात्तस्माद्बस्तिरिति स्मृतः १ यः स्नेहैर्दीयते स स्यादनुवासननामकः कषायक्षीरतैलैर्यो निरूहः स निगद्यते २ तत्रानुवासनाख्यो हि बस्तिर्यः सोऽत्र कथ्यते पूर्वमेव ततो बस्तिर्निरूहाख्यो भविष्यति ३ निरूहादुत्तरश्चैव बस्तिः स्यादुत्तराभिधः अनुवासनभेदश्च मात्राबस्तिः कीर्तितः ४ पलद्वयं तस्य मात्रा तस्मादर्द्धापि वा भवेत् अनुवास्यस्तु रूक्षः स्यात्तीक्ष्णाग्निः केवलानिली ५ नानुवास्यस्तु कुष्ठी स्यान्मेही स्थूलस्तथोदरी अनास्थाप्या नानुवास्याः स्युरजीर्णोन्मा

स्ती कहते हैं अनुवासन की द्रव्य का प्रमाण स्नेहादि दो पल वा एक पल प्रमाण जानना ऐसे पिचकारी के भेद हैं ३ अनुवासन योग्य रूक्ष प्रकृती को वा स्नेह पान रहित को वा अग्नि दीप्त करने को केवल बात रोगी को ये अवश्य अनुवासन योग्य हैं ४ अथानुवासन अयोग्य निरूहण योग्य कुष्टी प्रमेही मोटा शरीर उदररोगी ये अनुवासन योग्य नहीं और अजीर्ण उन्मादी तृषी शोक मूर्छा अरुचि भय श्वास कास क्षय इन से पीड़ित को निरूहण बस्ती अयोग्य है ॥ ६ ॥

परंतु अनुवासन योग्य है ४ बस्ती कहैं पिचकारी निर्मान विधि नेत्र कहे पिचकारी की नल जो गुदा में प्रवेश होजाइ सो सुवर्णादि धातु की वांस नर
कुल्ल गज दंत मृग सींग की और अग्र भाग पन्ना वा बिल्लौर की बनावे ५ नली योग्य अवस्था जो वर्ष एक से छः वर्ष ताईं बालक के बस्ती की
नली छः अंगुल बनावे और छः वर्ष से बारह वर्ष ताईं की आठ अंगुल की बनावे और बारह वर्ष से ऊपर वाले की नली बारह अंगुल की बना-
वै ६ नली छिद्र प्रमाण और निर्माण विधि छः अंगुल की नली का प्रवेश करने वाला मुख मूंग समान करै नीचे का छोटी अंगुरी समान और

शोकमूर्च्छारुचिभयश्वासकासक्षयातुराः ४ नेत्रं कार्यं सुवर्णादिधातुभिर्वृक्षवेणुभिः नलैर्दन्तैर्विषाणाग्रैर्मणिभिर्वा विधीयते ५ एकवर्षात्तु षड्वर्षं यावन्मानं षडंगुलं नलो द्वादशकं यावन्मानं स्यादष्टसंयुतं ततः परं द्वादशभिरंगुलैर्नेत्रदीर्घता ६

११०

मुद्गच्छिद्रं कलायाभं छिद्रं कोलास्थिसन्निभं यथासंख्यं भवेन्नेत्रं श्लक्ष्णं गोपुच्छसन्निभं आतुरांगुष्ठमानेन मूले स्थूलं विधीयते कनिष्ठिकापरीणाहमग्रे च गुटिकामुखं तन्मूले कर्णिके द्वे च कार्ये भागाच्चतुर्थकात् योजयेत्तत्र बस्तिं च बंधद्वयविधानतः ७ मृगाजशूकरगवां महिषस्यापि वा भवेत् मूत्रकोशस्य बस्तिस्तु तदलाभेन चर्मजः कषायरक्तः सुमृदुर्बस्तिः स्निग्धो दृढो हितः ॥ ८ ॥

आठ अंगुली का मटरसा दूसरा मध्य अंगुरी सा बारह अंगुल वाली का
झरबेरी के बेर समान दूसरा अंगुर समान राखे नली बहुत चिकनी रहे गो पुच्छ सदृश एक ओर पतली दूसरी ओर मोटी मोटी ओर के चौ-
थाई भाग में दो छल्ले जड़े हों तिस में थैली दृतिकादि के मूतने की चढ़ाइ पूर्वोक्त छल्लों का मध्य थैली समेत बहुत पुष्ट करे जिसमें थैली औष-
धि न और राह से निसरे तब पिचकारी ठीक जानी ७ थैली निर्मित जाती हरण छाग वराह बैल भैंसा इन के मूत्र की थैली उस नली में ल-
गावे जो न मिले तो इन के चमड़े को कसैल पत्र सन कादि दोनों ओर छील साफ करि थैली समान बनाइ नली पर चढ़ावे ॥ ८ ॥

पिचकारी पीडित प्रकार अनुवासन कर्म के प्रथम तैल लगाइ गरम पानी से नहवाइ यथा लिखित भोजन कराइ कुछ टहलाइ पीन मल मूत्र
शंका मिटाइ बाई करवट पोढ़ाइ दहिना गोड़ सिकोड़ सिकोड़ बायां पसारि मल मार्ग में घी लगावे तब पिचकारी थैली में यथा लिखित स्नेह
मात्रा भरि बैद्य वर वस्ती प्रबंध नालिका में कर धारि धीरे धीरे मल मार्ग में दो अंगुल प्रवेशे तब दहिने हाथ से द्रव्य भरी थैली मंद मंद पीडित करै
जिस्में भीतर पिचकारी देते हैं उस समय उबासी छींक खांसी न आवे २६ रोगी को वस्ति प्रद समय पिचकारी के तीस मात्रा तांई रोके इतनी बेर

अथानुवासस्त्वभ्यक्तं सुस्नातं तु स्वेदितं शनैः २६ भोजयित्वा यथाशास्त्रं कृतचंक्रमणं ततः उत्सृष्टानिलविण्मूत्रं योज
येत्स्नेहबस्तिना २७ सुप्तस्य वामपार्श्वेन वामजंघाप्रसारिणः कुंचितापरजंघस्य नेत्रं स्निग्धे गुदे न्यसेत् २८ बध्वा वस्तिमुखं
सूत्रे वामहस्तेन धारयेत् पीडयेद्दक्षिणेनैव मध्यवेगेन धीरधीः ३० जृंभाकासक्षवादींश्च वस्तिकाले न कारयेत् त्रिंशन्मात्रामितः
कालः प्रोक्तो वस्तेस्तु पीडिते ३१ ततः प्रणिहितःस्नेह उत्तानो वाक्शतं भवेत् जानुमंडलभावेष्ट्य कुर्याच्छोटिकया युतं ३२ एका मात्रा
भवेदेषा सर्वैरेव विनिश्चयः प्रसारितैः सर्वगात्रैर्यथावीर्यं प्रसर्पति ३३ ताडयेत्तलयोरेनं त्रीन्वारांश्च शनैःशनैः स्फिजश्चैवं ततः श्रोणीं
शय्यां चैवोत्क्षिपेत्ततः ३४ जाते विधाने तु ततः कुर्यान्निद्रां यथासुखं सानिलः सपुरीषश्च स्नेहः प्रत्येति यस्य तु ॥ ३५ ॥

में स्नेहादिक अंदर प्रवेश हो जाइगा फिर सौ मात्रा तक सीधा सुलावे २७ मात्रा प्रमाण जंघ मंडल कहें कटि से घुटनी पर्यंत तिस के चारों ओर
चुटकी बजाता हाथ घूम आवे तो एक मात्रा होइ यह सब ग्रंथ निश्चय है २८ वस्ती के पीछे कुल्य वस्ती पीडित करि रोगी के पांउ हाथ शरीर फैला
इ लंबा करदे इस्से सातों धातु अपने अपने स्थान में फैल जाती हैं तब हाथ पांय की हथेरी तरवा जांघ कटि नितंब में धीरे धीरे थपकी देदे सरकाइ
देतब रोगी को शय्या पर स्वस्थ करि पोढ़ाइ निद्रा करावे २९ अथ वस्ती सम्यक् गुण मलाशय में स्नेहादि पहुंचने से वायु और मल ये सब इकट्ठा

१४८

कोऽजलदी बाहर निकार देइ तो जानिये कि वस्ती नेग

गुण क्रिया २६ वस्ति विकार निवृत्त योग अनुवासनांत जब स्नेह औषधि मल मार्ग से गिरने पर अग्नि दीप्त हो तौ रात को पथ्य अति गलाइ थोरा दे दूसरे दिन तप्त जल पिलावे वा धनियां सोंठि का क्वाथ देय तौ जो स्नेहादि अनुवासन वस्ती से प्रवेश हुए हैं उस का विकार दूर हो और पुराने चावर का भात खिलावे २७ वातादि दोष वस्ती प्रमाण पूर्वोक्त वत पिचकारी बनाइ सात या आठ या नव वेग नाई देना अंत में निरूह ण पिचकारी देना २८ अन्योक्त वस्ती वेग का गुण प्रथम वस्ती वेग होने से वक्षण द्वारा शरीर में चिकनई आती है अर्थात धातु बढती है दूसरी से मस्तक वायु दूर जाय तीसरी से शरीर में बल होता है चौथी पांचवीं से रस रक्त बढता है छठी सातवीं से मांस मेदा चिकने होते हैं आठवीं नवमी

उपद्रवं विनाशीघ्रं सम्यग नुवासितः २६ जीर्णान्नमथ सायाह्ने स्नेहे प्रत्यागते पुनः लघ्वान्नं भोजयेत्कामं दीप्ताग्निस्तु नरोयदि २७ अनुवासितायं देयः स्यादिनीयेन्हि सुखोदकं धान्यशुंठी कषायोवा स्नेहव्यापत्ति नाशनः २८ अनेनविधिनाष ड्वासप्तचाष्टौनवापिवा विधेया चस्नेह मात्रा अंते चैवनिरूहणं २९ दत्तस्तु प्रथमोवस्तिः स्नेहयेद्वस्तिवंक्षणौ सम्यग्दत्तो द्वितीयस्तु मूर्द्धस्थमनिलंजयेत् ३० वलदर्सिंवजनयेत्तृतीयस्तु प्रयोजितः चतुर्थपंचमौदत्तौ स्नेहयेतां रसासृजौ ३१ षष्ठो मांसंस्नेहयति सप्तमो मेदएवच अष्टमो मलमश्चापि मज्जानंच यथाक्रमं ३२ एवं शुक्रगतान्दोषान्द्विगुणः साधुसाधयेत् अष्टादशाष्टादशकान् वस्तीनां योनिषेवते ३३ सकुंजरवलोप्यश्वंजयेत्तुल्योनरः प्रभुः रूक्षाय वहुवाताय स्नेहवस्तिंदिनेदि

से शुक्र धातु स्निग्ध होते हैं इस प्रकार से नव द्विगुनी अठारह वेग देने से शुक्र धातु का दोष नाश हो और जिसे छत्तीस वेग हों तिसे हाथी घोडे सदृश वल हो और देवता समान कांति हो अन्य मते जो रूक्ष वात करि अधिक पीडित हो उसे अनुवासन वस्ती जब प्रयोजन जानै तब तब देइ और चिकने वा मोटे मनुष्य को जब जब उचित जानै तब तब निरूहण वस्ती देइ तौ रोग नाश होता है ३६ भूखे मनुष्यको स्नेह वस्ती मनुष्य को हल की हल की नित्य प्रति देइ और जो रोग चिर काल का होइ तौ निरूहण वस्ती हल की हल की नित्य प्रति देइ ३४

स्नेह शीघ्र निकलने पर जब स्नेहादि शीघ्र निकल परैं तब निरूहण वस्ती करै इसी रीति से जितने वेग देइ सब के अंत में विंहण देता जाय ३५
स्नेह स्रावन होने पर उपद्रव जो विरेचन वमन करि शुद्ध किया वस्ती कर्म किया जिस्में स्नेहादिक करने से ये उपद्रव होते हैं शिथिल गात्र अध्मा
न पेट फूलना शूल श्वास ओकरी कठोर शूल उपद्रव के दूर करने को तीक्ष्ण निरूहण देना तीक्ष्ण औषधि युक्त फल वर्ती जिस्में वायु अधोगामी हुई
मल युक्त स्नेह को गिरावे तिस तीक्ष्ण रेचन तीक्ष्ण नास देने से शमन होते हैं ३६ जो स्नेह वस्ती रुकने से कोई उपद्रव न होइ और स्नेहादि भीतरही
दद्याद्वैद्यस्तथान्येषामन्यावाधमलाहरेत् स्नेहोपमात्रो रूक्षाणां दीर्घकालमनात्ययः ३५ तथा निरूहः स्निग्धानामल्पमात्रा
म्पास्यते अथावयस्य तत्कालं स्नेहो निर्याति केवलः ३६ तस्यान्योन्यतरो देयो नहि स्निग्धस्य तिष्ठति अनुदूस्य मलोन्वि
ष्टः स्नेहो नैति यदा पुनः ३७ तथा शैथिल्यमाध्मानं शूलं श्वासश्च जायते पक्वाशये गुरुत्वं च तत्र दद्यान्निरूहणं ३८ ती-
क्ष्णं तीक्ष्णौषधी युक्ता फलवर्तिर्हिता तथा यथानुलोमनं वायुर्मलं स्नेहश्च जायते ३९ तथा विरेचनं दद्यात्तीक्ष्णं नस्यं च सस्यते यस्य
नोपद्रवं कुर्यात्स्नेह वस्तिरनिःसृतः ४० सर्वाल्पो व्याहृतो रौक्ष्याद्दुपेक्ष्यः स विजानता अनायातेत्वहोरात्रे स्नेहं संशोधनैर्हरेत् ४१
स्नेह वस्त्यावनायाते द्वाभ्यां स्नेहो विधीयते गुडूच्येरंड पूतीक भार्गी वृषकरोहिषं ४२ शतावरीसहचरः काकनासा पलोन्मितम् ॥
कोठा के कारण से अटक रहै और शूलादि उपद्रव न करै तो उसे दीर्घ काल तक रहने देइ ३७ अथ वस्ती औषधि गिरने का यत्न जो पिचका-
रीकादि या स्नेह न गिरै तो दुसराय के फिर पिचकारी दे स्नेह गिरावे वा स्नेह रात भर वस रहै तो सर्द रेचन दे गिरावे यों दोनों प्रकार करि स्ने
ह गिरावे ३८ अनुवासन स्नेह गुर्च रंड की जड़ करंज की छाल भारंगी छाल रूसा अगिया खर शतावरि कटसरैया कोआडोढी ये पल पल भ
र अरद यव अरसी बेर की मींगी कुरथी ये दो दो पल ये सब अध पिसी चार द्रोण जल में औटाइ द्रोण भर रहै तब छानि आढक भर तिल

का तेल मिलाइ के जीवनी गण सूक्ष्म चूर्ण करि उसमें डारि कढाई में भरि औटि क्वाथ जराइ उतारि छानि इससे अनुवासन कहते हैं पिचकारी में भ-
रते हैं ४४ वस्ती कर्म उलटा होने से छिहत्तर रोग होते हैं तिस की चिकित्सा सुश्रुत देखि करना ४५ वस्ती कर्म में पथ्य पान आहार विहारादि आच-
रन पूर्वोक्त स्नेह पान सदृश देना इस में भी चाहिये ४६ इतिपंचमोध्यायः ५ अथ निरूह वस्ति विधिः निरूहण वस्ती कारण कहें रोगानुसार क-
रिके अनेक भेद हैं जहां जैसा करना चाहिये तहां मुनीश्वरोंने तैसा ही नाम धरा है यथा लेखन वस्ती दोष हर वस्ती दोष शमन वस्ती यह नाना प्रकार

षट्सप्ततिव्यापदस्तु जायन्ते बस्ति कर्मणः ४४ इयिनात्समुदायेन ताश्चिकित्स्याः सुश्रुतात् यत्नाया लसीकाल कुलिस्यान्त्र-
स्त्रोन्मितान् ४५ चतुर्द्रोणां भसाथ क्वाद्रोण शेषेणतेनच पचेत्तैला ढकं पेस्यैर्जीवनीयः पलोन्मितैः ४६ अनुवासन में तद्धि सर्व
बात विकारनुत् ४७ पानाहार विहाराश्च परिहाराश्च कृत्स्नशः स्नेह पान समाः कार्या नात्र कार्या विचारणा: ४८ इतिश्रीशा-
र्ङ्गधरेस्नेह बस्तिविधिः पंचमोध्यायः ५ निरूहवस्तिर्बहुधा भिद्यते कारणांतरैः तैरेव तस्य नामानि कृतानि मुनि पुंगवैः १ नि-
रूहस्य परंनाम प्रोक्तमास्थापनंबुधैः स्वस्थानस्थापना द्दोष धातूनां स्थापनं मतं २ निरूहस्यप्रमाणंतु प्रस्थ पादोत्तरंमतं म-
ध्यमं प्रस्थमुद्दिष्टं हीनस्य कुडवास्त्रयः ३ अति स्निग्धोत्क्लिष्ट दोषो क्षतोरस्कः कृशस्तथा आध्मान छर्दिहिक्कार्शःकासश्वासप्रपी-

जानना १ निरूहण का दूसरा नाम स्थापन वस्ती कहते हैं इस कारण से कि उत्पन्न हुए दोष संयुक्त रसादिक धातु अपने स्थान में प्राप्त हैं इनके
वातादिक दोष वा रोगों को दूरि करि शुद्ध धातों को स्थित करती है २ निरूह में क्वाथ प्रमाण निरूह सवाउ प्रस्थ की उत्तम मात्रा है प्रस्थ भर
की मध्यम तीन कुड़व की कनिष्ठ मात्रा है ३ निरूह में अयोग्य अति स्निग्ध कोठे वाला ऊर्द्ध गत दोष वाला उरक्षती ॥ ४ ॥

प्र० ती० उ० २४१

से कृमि आध्मानी छर्दि हिकी अर्शी श्वासी कासी ऐसे मनुष्य गुदा के निकट पीडित शोथी अतीसारी पीत रक्त कुष्टी गर्भिणी मनुष्य
ही जलोदरी इन रोगिन को निरूहण देना योग्य नहीं ५ निरूह वस्ती योग्य बात उदावर्त बात रक्त विषमज्वर मूर्छा तृषा उदर अनाह मूत्र
कृच्छ्र पथरी गुल्म रक्त स्राव मंदाग्नि प्रमेह शूल अश्म पित्त हृदय रोग इन रोगन युक्त को निरूह देना योग्य है ६ निरूह वस्ती विधान जि
से निरूह देनी हो तिसे मल मूत्र की शंका मिटाइ कोष्ठ शुद्ध करि देह में तेल लगाइ तप्त जल से अंग पाटरी से थोरा सेंकि दो पहर प्रथम

गुदशोफातिसारार्तो विषूची कुष्ठ संयुतः गर्भिणी मधुमेही च नास्थाप्यश्च जलोदरी ५ बातव्याधावुदावर्ते वातासृग्विषम
ज्वरे मूर्छा तृष्णोदरानाह मूत्र कृच्छ्राश्मरी षु च ६ वृद्धाश्म कुदर मंदाग्नि प्रमेहेषु निरूहणं शूलेऽस्र पित्त हृद्रोगयोजयेद्विधिवद्बुधः
७ उत्सृष्टानिल विरामूत्रं स्निग्धं स्विन्नम भोजनं मध्याह्ने गृहमध्ये च यथा योग्यं निरूहयेत् ८ स्नेहे वस्ति विधानेन बुधः कु
र्यान्निरूहणं जाते निरूहे च ततो भवे दुत्कट का समः ९ तिष्ठे न्मुहूर्त मात्रे च निरूहा गमनेच्छया अनायान्तं मुहूर्ते तु निरूहं
शोधनै र्हरेत् १० निरूहैः वमति मान्क्षार मूत्राम्ल सैंधवैः यस्य क्रमेण गच्छंति विट पित्त कफ वायवः ११ लाघवं चोपजायेत सु-
निरूहं तमादिशेत् १२ यस्यात्प्रवृत्ति रुल्याल्प वेगो हीन मलानिलः मूत्रार्ति जाड्यारुचि मान्दु निरूहं तमादिशेत् १३

से भोजन त्यागि जिसे जैसा दोष देखै तिसे तैसी औषधि पिचकारी में भरि पूर्वोक्त अनुवासन वस्ती विधान से निरूहन वस्ती क
रै फेर औषधि बाहर निकसने के कारण मुहूर्त कहैं दो घड़ी कची उकरू बैठावे इतने में औषधि गिरै तो अच्छा जौन गिरै तो सोध
न कहे रेचन ७ यों भी न गिरै तो यवाखार गो मूत्र खट्टे का रस सैंधव मिलाइ फिर पिचकारी देने से गिरैगी ८ अच्छी निरूह लक्षण
निरूह अच्छी होतो क्रम से मल पित्त कफ वायु गिरै और शरीर हलका होतो निरूह शुद्ध जानिये ९

१८।

दोष शमन औषधि सिरशोथ आदिक शोधन द्रव्य का क्वाथ करि तेल वा सैंधव डारि मथि देवै दोष शोध निमित्त इसी का अथवा और द्रव्य का कल्क भी मथि के पिचकारी देना २२ मकरा मूल महुआ छाल मोथा रसोत ये सब सम भाग दूध में पीसि दोष शमनार्थ देना २३ लेखन वस्ती त्रिफला क्वाथ में गोमूत्र सहत यवाखार ये द्रव्य सम भाग ले ऊषादि गण द्रव्य मिश्रित करि लेखन वस्ती देना लेखन करें जो मेद दूषित तिन रोगन को ह्रास करे २४ बृंहण वस्ती मुसली गुखरू केवांच बीज इत्यादि बृंहण द्रव्य हैं सो धातु को बढ़ाती है इनका शोधनं द्रव्यनिः क्वाथस्तत्कल्कैः स्नेह सैंधवैः युक्त्या खजेन मथिता वस्तयः शोधनाः स्मृताः २२ प्रियंगुर्मधुको मुस्ता तथैव चरसांजनं सक्षीरः शस्यते वस्ति र्दोषाणां शमने स्मृतः २३ त्रिफला क्वाथ गोमूत्र क्षौद्र क्षार समायुतः ऊषकादि प्रतीवापै र्वस्तयो लेखनास्मृताः २४ बृंहणं क्वाथ नि क्वाथ कल्कै र्मधुरकैर्युतः सर्पिर्मांसरसोपेता वस्तयो बृंहणा मताः २५ बदर्यै रावती शेलुः शाल्मली धन्वनागराः क्षीर सिद्धा क्षौद्र युक्ता नाम्ना पिच्छल संज्ञिताः २६ अजोरभ्रैण रुधिरै र्युक्ता देया विचक्षणैः मात्रापि च्छलवस्तीनां पलै र्द्वादश भिर्मता २७ दत्त्वादौ सैंधवस्याक्षं मधुनः प्रसृतिद्वयं विनिर्मथ्य ततो दद्यात्स्नेहस्य प्रसृतित्रयं २८ क्वाथ करि महुआ की छाल दाख अनारादि मधुर द्रव्य का कल्क और घृत मांस रस ये सब पूर्वोक्त क्वाथ में डारि धातु बढ़ाने को पिचकारी दे २५ पिच्छली वस्ती बेर की छाल इलायची लसोड़े की छाल सेमर जवासा मोथा ये सब सम भाग ले दूध में पीसि सहत छाग मेढ़ा हरिण इनका रुधिर मिश्रित करि चतुर वैद्य दोष पिघलाने को पिच्छल वस्ती देते हैं इसकी मात्रा का प्रमाण बारह पल है २६ निरूहण वस्ती प्रमाण विधि॥ अक्ष और कर्ष इन दोनों की एक ही संज्ञा है सैंधव कर्ष भर सहत चार पल मर्दन करि छः पल घी दे एकत्र करे इस में दो पल पूर्वोक्त कल्क द्रव्य

मिलाके अथवा पूर्वोक्त कल्क द्रव्य का क्वाथ करि के काढ़ा करि लिये

आठ पल प्रमाण कुशल वैद्य इकट्ठी करि मथि निरूह वस्ती देय निरूह वस्ती की साधारण बिधि जानौ विशेष विधान वात में ४ पल मधु ६ प-
ल स्नेह इकट्ठी करि पिचकारी देना पित्त में ४ पल मधु ३ पल स्नेह इकट्ठा करि पिचकारी देइ कफ में ६ पल मधु ४ पल स्नेह एक करि देना
२९ मधु तेल वस्ती रंड मूल क्वाथ ८ पल सहत तेल चारि चारि पल बड़ी सौंफ सैंधव आधा आधा पल ये सब एक करि सरा भर मथि यह मधुतै-
ल बस्ती है इसे देने से मेद रोग गुल्म कृमि प्लीह मल वा उदावर्त ये रोग नाश होंइ बल क्रांति स्त्री इच्छा धातु वृद्धि अग्नि दीप्त होइ ३० दीपनवस्ती

एकीभूते ततः स्नेहो कल्कस्य प्रसृतीं क्षिपेत् संमूर्छिते कषाये तु चतुःप्रसृति संमितं २९ क्षिप्त्वा विमथ्य दद्याच्च निरूहं कु-
शलो भिषक् वाते चतुःपलं क्षौद्रं दद्यात्स्नेहस्य षट् पलं ३० पित्ते चतुःपलं क्षौद्रं स्नेहस्य च पलत्रयं कफे षट्पलिकं क्षौ-
द्रं स्नेहस्यैव चतुःपलं ३१ एरंड क्वाथ तुल्यांशं मधुतैलं पलाष्टकं शतपुष्पा पलार्द्धेन सैंधवार्द्धेन संयुतं ३२ मधुतैलक संज्ञो-
यं बस्तिः खंज विलोडितः मेदो गुल्म कृमि प्लीह मलोदावर्त नाशनः ३३ बल वर्ण करश्चैव वृष्यो बृंहण दीपनः क्षौद्राज्यक्षी-
र तैलानां प्रसृतिं प्रसृतिं भवेत् ३४ हपुषा सैंधवं कार्षो बस्तिः स्याद्दीपनः परः एरंड मूल निःक्वाथो मधुतैलं ससैंधवं ३५ एष
युक्तरथो बस्तिः सवचा पिप्पली फलः पंचमूलस्य निःक्वाथस्तैलं मागधिका मधुः ३६ ससैंधवः समधुकः सिद्धबस्तिरिति
स्मृतः

सहत घी दूध तेल ये दो पल हाउबेर सैंधव कर्ष कर्ष सूक्ष्म पीसि सब मिलाइ पिचकारी दिये अग्नि दीप्त होइ ३१ युक्तरथव-
स्ती रंड मूल क्वाथ सहत तेल में सैंधव वच पीपरि मैनफल चारों सम भाग चूर्ण करि मिलाइ पिचकारी देइ यह उक्तरथ वस्ती सब रोगों
पर दीजाती है ३२ सिद्ध वस्ती पंच मूल क्वाथ तेल और महुआ मुरेठी क्वाथ में पीपरि सैंधव मिलाइ देइ यह सिद्ध वस्ती सब रोगन परदेने हैं ३३

वस्ती में सेव्य निषेध पदार्थ वस्ती सेवक उष्ण जल सें न्हाइ दिन में न सोवै अजीर्णी न होइ और स्नेह वस्ती वत सब आचरन साधे २६ इति शार्ङ्गधर सुधा करे षष्टोध्यायः ६ अथोत्तर वस्ती विधान उत्तर वस्ती कहैं मूत्र मार्ग में पिचकारी देने की विधि तिस में प्रमाण बारह अंगुल लांबी तिस्के मध्य में पखुरी चमेली पुष्प सदृश और चमेली पुष्प की डंडी समान मोटी रहे १ मात्रा प्रमाण मनुष्य के २५ वर्ष तांई स्नेह मात्रा दो कर्ष की देइ पचीस के ऊपर पल भर देना २ अथा स्थापन व॰ विधि स्थापन कहैं उत्तर सेवक को शुद्ध स्नान भोजन कराय घुटने

स्नान मुक्तो दकैः कुर्यादिवा स्वप्नमजीर्णतां २७ वर्जयेद्परं सर्वमाचरेत्स्नेह बस्तिवत् इति श्री शार्ङ्गधरे उत्तर खंडे निरूहण विधिः षष्टोध्यायः ६ अतः परं प्रवक्ष्यामि बस्तिमुत्तरसंज्ञितं द्वादशांगुलकं नेत्रं मध्ये च कृत कर्णिकं १ मालती पुष्प वृन्ताभं छिद्रं सर्षप निर्गमं पंचविंशति वर्षाणामधो मात्रा द्विकर्षिकी २ तदूर्ध्वं पल मानं च स्नेहस्योक्ता विचक्षणैः अथास्थापन शुद्धस्य तृप्तस्य स्नान भोजनैः ३ स्थितस्य जानु मात्रेण पीठे त्वच्छ शलाकया स्निग्धया मेहमार्गेण ततो नेत्रं नियोजयेत् ४ शनै शनैर्घृताभ्यक्तं मेहमध्येंगुलानिषट् ततो वपीडयेद्बस्तिं शनैर्नेत्रं च निर्हरेत् ५ ततः प्रत्यागते स्नेहे स्नेहबस्ति क्रमो हितः स्त्रीणां कनिष्ठ कास्थूलं नेत्रं कुर्याद्दशांगुलं ६ मुद्र प्रवेशं योन्यं च योन्यं नक्षतुरंगुलं द्व्यंगुलं मूत्र मार्गे च सूक्ष्मं नेत्रं नियोजयेत् ७

टिकाय बैठावै वा घुटने को टेकि खड़ा रहै तब इस शलाका चांदी का २ अंगुल मुंह पर मुरा ८ अंगुल सीधा सरसों निकर जाने माफिक छेद होता है उस में घी वा तेल लगाइ मूत्र मार्ग में धीरे धीरे छः तथा आठ अंगुल प्रवेश करै यत्न पूर्वक जिस में पीड़ा न करै जब मूत्र थैली तक पहुंचि खट खट बजै तो जानौ इस के पथरी है इसी शलाका से बंद मूत्र भी खुल जाता है शलाका छिद्र से बहि जाता है और जो पिचकारी देनी हो तो शलाका की पेंदी पर थैली चढाइ औषधि भरि पूर्ववत् पीड़ित करै इस्से मूत्र कृच्छ्रादि दूर होते हैं यह उत्तर वस्ति क्रम है ॥ ३ ॥

११७

स्त्री के उत्तर वस्ति निधानं स्त्री की योनि में दो छिद्र होते हैं एक मूत्र मार्ग दूसरा गर्भ मार्ग योनि वही है उस की शलाका छंगुनियाँ की मुटाई दश अंगुल की मूंग निकरने माफ़िक छेद राखि चारि अंगुल योनि में प्रवेश पिचकारी दे और मूत्र मार्ग में सूक्ष्म शलाका दो अंगुल प्रवेश ८ बालके एक अंगुल शलाका प्रवेशे चतुर्वैद्य अति महीन बालक के रसायन से देइ पिचकारी पीडुने में हाथ न कंपे ९ स्त्रियों की वस्ति की मात्रा प्रमाण योनि मार्गे पिचकारी देने की मात्रा दो पल औषधि लेना मूत्र मार्ग की मात्रा एक पल है बालक बस्ती की दो कर्ष है निपुण वैद्य स्त्री को उतानापौढाइ

मूत्र कृच्छ्र विकारेषु बालानां त्वेकमंगुलं शनैर्निःकंप मादेयं सूक्ष्मनेत्रं विचक्षणैः ८ योनि मार्गेषु नारीणां स्नेह मात्रा द्विपालिकी मूत्र मार्गे पलोन्मानाबालानां च द्विकार्षिकी ९ उतानायै स्त्रियै दद्यादूर्ध्वजान्वै विचक्षणः अप्रत्यागच्छति भिषग्वस्तावुत्तर संज्ञिके १० भूयो बस्तिं निदध्यात्तु संयुक्तैः शोधनैर्गणैः फलवस्तिं निदध्याद्वायोनिमार्गे दृढं भिषक् ११ सूत्रेविनिर्मितां स्निग्धां शोधनद्रव्य संयुतां दत्तमाने न याव स्तौ दद्याद्वर्तिं विचक्षणः १२ क्षीर वृक्ष कषायेन पयसा शीतलेन च वस्तिः शुक्र रजः पुंसां स्त्रीणामार्तवजा रुजः १३ हन्यादुत्तर वस्तिस्तु नो चितो मेहिनां क्वचित् सम्यग्दत्तस्य लिंगानि व्यापदः क्रम एव च १४

पिचकारी पीडित करे फिर उकरू बिठाइ दिया हुआ स्नेह गिरावे ९ शोधन द्रव्य मूत्र कृच्छ्रादि में शोधन द्रव्य रेंडी तेलादि द्रव्य भरि पिचकारी देइ अथवा फलवर्ती रेंड बीजादि सूत वा वस्त्र की कड़ी बत्ती बनाइ रेंड तैलादि में तप्त करि भिजोइ उस पर रेंडी पीसि चुपरि योनि में राखे जो वस्ति दिये नाभि तरे बस्ती स्थान अधिक उष्ण होइ तो वटमूलरि की छाल के काथ की पिचकारी देना वा ठंढे दूध की इन से बस्ती शुद्ध होती है और शुक्र संबंधी पीड़ा और स्त्री के आर्तव संबंधी रोग पीर दूर होइ प्रमेही को उत्तर बस्ती कभी अयुक्त नहीं उत्तम बस्ती लक्षण उत्तर बस्ती में स्नेह बस्ती हुवे

शा. टी. उ. २६७

फल वस्ति मल मार्ग विधान मल मार्ग में घी लगाइ मल गिराने के कारण रेचन द्रव्य रख के आदि कडी बत्ती पर लेपि गुदा में धरै इसे फलव-
र्ती कहैं २५ इति श्री शार्ङ्गधर सुधा करे उत्तर खंडे सप्तमोऽध्यायः ७ अथ नस्य कर्म नाक की राह औषधि देने को नास कहते हैं इसके दो
नाम हैं नावन १ नस्य २। २ नस्य रीति दो विधि की है एक रेचन दूसरी स्नेहन और रेचन को कर्षण भी कहिये सो वातादि लेखाने को
कर्षण करने वाली है और स्नेहन नस्य धातु को वृद्ध करती है इसे बृंहण कहिये २ नस्य कर्म समय कफ दूषित को प्रात नस्य देना पित्त

वस्ते कृत संस्थस्य शमनं स्नेहवस्तिनां घृताभ्यक्ते गुदे क्षेप्या फलवर्त्यां गुष्ठ संनिभा २५ मलप्रवर्तिनी वर्तिः फलवर्तिश्च
सा स्मृता इति श्री दामोदरसूनुना शार्ङ्गधरेण विरचितायां संहितायां चिकित्सास्थाने उत्तरखंडे उत्तरवस्ती विधानं नाम सप्तमोऽध्या
यः ७ नस्यं तत्कथ्यते धीरैर्नासाग्राह्यं यदौषधं नावनं नस्यकर्मेति तस्य नामद्वयं मतं १ नस्ये भेदो द्विधा प्रोक्तो रेचनं स्नेहनं तथा
रेचनं कर्षणं प्रोक्तं स्नेहनं बृंहणं मतं २ कफपित्तानिलध्वंसे पूर्वमध्यापराह्न के दिनस्य गृह्यते नस्यं रात्रौ वा प्युत्कटे गदे ३
नस्यं त्यजेद्भुक्तभक्तो जलं ते दुर्दिने चापि तर्पणे तथानवप्रतिश्यायी गर्भिणी गरदूषितः ४ अजीर्णी दत्तवस्तिश्च पीतस्नेहोद-
कासवः क्रुद्धः शोकाभिभूतश्च तृषार्तो वृद्ध बालकौ ५ वेगावरोधी स्नातश्च स्नातुकामश्च वर्जयेत् ॥ ६ ॥

१५८

दूषित को मध्यान्ह में देना वायु दूषित को संध्या के भीतर देना और जो अति पीडित होतो रात्रि को देना ३ अथ नस्य निषेधः नस्य कर्म ऐसो को
वर्जित है भोजन कर चुके पर तुरत ही न दे दुर्दिन कहैं आंधी वा पौन अग्नि वा मेघादि हो और लंघनी को पीनस के आरम्भ में गर्भिणी को वि-
कारी को अजीर्ण पर बस्ती कृत को स्नेह पीत को पानी वा मद्यपी को तर्पण कृत को क्रोध शोकार्ती वृद्ध और बालक को मल मूत्र वायु धारी-
धी को तुरत स्नान किये पर स्नान काङ्क्षी को ऐसे मनुष्यन को और इन कर्म न किये पर नस्य कर्म न करै ॥ ६ ॥

२७८

नस्य कर्म योग्य योग्य आठ वर्ष उपरांत अस्सी वर्ष पर्यंत नास कर्म करना ७ रेचनास्तविधि रेचन कार कारक द्रव्य की नास देना चाहे तो सरषों वा सरसों का तेल तीक्ष्ण है तिसकी नास देना वा तीक्ष्ण द्रव्य में सिद्ध किया तेल वा तीक्ष्ण द्रव्य का काढा वा तीक्ष्ण द्रव्य का स्वरस ले ते ल घृत सिद्ध करि नास देना ८ रेचन नस्य प्रमाण: रेचन संबंधी औषधि की आठ बूंद दोनों नकुवासे देइ तो उत्तम मात्रा है छः बूंद की मध्य म चारि बूंद की कनिष्ठ मात्रा है ७ नस्ये द्रव्य प्रमाण नास देने को तेलादि सिद्ध करने में तीक्ष्ण औषधि एक शाण देना हींग यव भरि सैंधव

अष्ट वर्षस्य वालस्य नस्य कर्म समाचरेत् अशीति वर्ष ऊर्ध्वं च नावनं नैव दीयते ७ अथ दै रेचनं नस्यं ग्राह्यं तैलैः सुतीक्ष्ण कैः तीक्ष्णभेषजसिद्धैर्वा स्नेहैः क्वाथै रसैस्तथा ८ नासिकारंध्रयोरष्टौ बद् चत्वारश्च बिंदवः प्रत्येकं रेचने योज्यो मुख्य म ध्यांत्य मात्रया ९ नस्य कर्मणि दातव्यं शाणोक्तं तीक्ष्ण मौषधिं हिंगुस्याद्यवमात्रं तु माषैकं सैंधवं मतं १० क्षीरं चैवाष्ट शाणं स्यात्पानीयं च त्रिकर्षिकं कार्षिकं मधुरं द्रव्यं नस्य कर्मणि योजयेत् ११ अवपीडः प्रधमनं द्वौ भेदावपरौ स्मृतौ शिरोविरेचनस्यापि तौ तु देयौ यथायथं १२ कल्कीकृताद्यौषधाद्यः पीडितो निःसृतो रसः सोऽवपीडः समुद्दिष्टस्तीक्ष्ण द्रव्यसमुद्भवः १४ षडंगुला द्विवक्त्रा या नाडी चूर्णं तया धमेत् तीक्ष्णं कोलमितं वक्त्रवातैः प्रधमनं हि तत् १५

माष भरि दूध आठ शाण पानी तीन कर्ष प्रमाण देना ९ मस्तक रेचन विधि मस्तक रेचन दो प्रकार का है एक अवपीडन दूसर प्रधमन ये मस्त क रेचन जानना १० अवपीड वा प्रधमन विधान तीक्ष्ण द्रव्य पीसि के स्वरस लेने को अवपीडन कहते हैं १ दूसरी छः अंगुल प्रमाण नली दो मु ख की बनाई एक पर तीक्ष्ण द्रव्य का चूर्ण धरि नाक में प्रवेश करि दूसरे मुख में मुह लगाइ फूंके उसे प्रधमन कहते हैं तीक्ष्ण द्रव्य सोंठि मिर्च पीपरि

रेचन वास्ते हैं नास योग्य कहै गल काहैं भृकुटी मस्तक कपाल दशम द्वार पर्यंत गतरोग कफजन्य स्वर भंग अरोचक नाक टपकना माथे की पीड़ा पीनस सूजन मृगी कुष्ठ इन में रेचन उचित है स्त्री दुर्बल बालक इन्हें स्नेह नहीं उचित है १६ अब पीड़न योग्य कंठ रोग सन्निपात तंद्रा विषमज्वर मनो विकार इन में अब पीड़न नाम योग्य है १७ प्रधमन योग्य मूर्छा अपस्मार संन्यासादि अचेतन रोग में अत्यंत तीक्ष्ण चूर्णादि करि नास देना १८ अथ रेचन संज्ञक नस्य गुड़ सोंठि औटिके वा अद्रक रस गुड़ घोलि नास दे पीपरि सेंधा औटि के दे तिस्से कान नाक माथा ठोढ़ी कंध

ऊर्ध्वजत्रुगते रोगे कफजे स्वरसंक्षये अरोचके प्रतिश्याये शिरःशूले च पीनसे १६ शोफापस्मारकुष्ठेषु नस्यं वै रेचनं हितं भीरुस्त्रीकृशबालानां नस्यं स्नेहो न दीयते १७ गलरोगे सन्निपाते निद्रायां विषमज्वरे मनोविकारे कृमिषु युज्यते चावपीडनं १८ अत्यंतोत्कटदोषेषु विसंज्ञेषु च दीयते चूर्णं प्रधमनं धीरैस्तद्धि तीक्ष्णतरं यतः १९ नस्यं स्याद्गुडशुंठीभ्यां पिप्पलीसैंधवेन च जलपिष्टेन तेनाक्षिकर्णनासाशिरोगदाः २० हनुमन्यागलोद्भूता नश्यंति भुजपृष्ठजाः मधुकं सारकृष्णाभ्यां वचा मरिच सैंधवैः २१ नस्यं कोष्णजले पिष्टं दद्यात्संज्ञाप्रबोधनं अपस्मारे तथोन्मादे सन्निपातेऽपतंत्रके २२ सैंधवं श्वेतमरिचं सर्षपा कुष्ठमेव च वस्तमूत्रेण पिष्टानि नस्यं तंद्रानिवारणं २३ रोहीतमत्स्यपित्तेन भावितं सैंधवं वचा मरिचं पिप्पली शुंठी कंकोलं लशुनं परं २४

गल हाथ पाय की पीर अच्छी होइ १६ पुनः प्रकार महुए की छाल का गाभा पीपरि वच मिरच इन्हें पीसि तप्तजल से नास देइ तो मृगी उन्माद सन्निपात अपतंत्र अज्ञान ये सब रोग मिटैं शरीर हलका हो बुद्धि सावधान होती जानना २० पुन स्तृतीय प्रकार सेंधव श्वेत मरिच सरसौं कूट ये सब छाग मूत्र में पीसि नास देने से तंद्रा नेत्रालस्य दूर होइ २१ अथ प्रधमन नस्य सेंधव वच पीपरि मरिच कंकोल लहसुन गगुल काय फर इन का चूरण रोहू मछुरी के पित्ता में पुट देइ एक नली के मुंह में धरि दूसरा मुख नाक में प्रवेशि औषधि की ओर से फूंक देइ

रोग नाश होइ इस चूरण का प्रधमन नामहै २७ अथ बृंहण नस्य विधान बृंहण कहें धातु को पुष्ट करै और बढ़ावै इस बृंहण नाश की मात्रा बृंहण नाव के दो भेद हैं एक मर्श १ दूसरा प्रति मर्श २ ये दोनों बृंहण हैं इनके योग्य मर्श में तर्पण नस्य की मात्रा अष्ट शाण की मुख्य प्रमाण है चारि शाण मध्यम मात्रा का प्रमाण है एक शाण हीन मात्रा का प्रमाण है ये तीन मात्रा विषे रोग और वातादि दोष का बलाबल विचारि कै रोगी को बिठाय बस्त्र उढाय नाक में नाश देय दो वा तीन वार एक दिन का अंतर देकै देइ दो दिन का अंतर देके देइ वा तीन दिन का अंतर देइ वा पांच दिन का अंतर देइ वा सात दिन का अंतर करि नस्य कर्म विचक्षण वैद्य करै २८ जो मर्श संज्ञक नास से वा रेचन संज्ञक नास से कोई उपद्रव बढै उसका यत्न कह

कट्फलं चेति तच्चूर्णं देयं प्रधमनं बुधैः २५ अथ बृंहण नस्यस्य कल्पना कथ्यतेधुना मर्शश्च प्रति मर्शश्च द्वौ भेदौ स्नेहने मतौ २६ मर्शस्य तर्पणी मात्रा मुख्या शाणैः स्मृताष्टभिः मध्यमा च चतुःशाणै हीना शाण मिता स्मृता २७ एकैकस्मै तु मात्रेषं दद्या नासा पुटे बुधैः मर्शं द्वित्रिवलं वीक्ष्य वीक्ष्य दोष बलाबलं २८ एकांतरं द्व्यंतरं वा त्र्यंतरं दद्याद्विचक्षणः त्र्यहं पंचाहमथवा सप्ताहं वा प्रयत्नतः २९ मर्शो शिरो वि॰ ;वे केच व्यापदो नि विधाः स्मृताः शेषोत्के श्लेष्मणा चैव विज्ञेया स्तायथाक्रमं ३० सेबोत्थार्थ निमित्ता सुयुंज्याद्वमन शोधनं अथ क्षय निमित्ता सु यथास्वं बृंहणं मतं ३१ शिरो नासाक्षि रोगेषु सूर्यावर्तार्द्ध भेदके दंतरोगे बले हीने मन्यावाहु प्रजे गदे ३२ मुख शोष कर्णनादे वात पित्त गदे तथा ॥

ते हैं मर्श नास में मात्रा अधिक दी जाय वा रेचन नास में मात्रा अधिक दी जाय तो मेदादिक धातु घटि जाती हैं तो अनेक उपद्रव उत्पन्न होते हैं इस कारण से जो उद्र वादि होती है और क्षयादि व्याधि हो तो बृंहण कहिये जो धातु बढ़ावै सो नाक में देइ वा खिलावै २९ बृंहणनस्य योग्य मस्तक रोग घ्राण रोग नेत्र रोग सूर्यावर्त रोग सूर्य के चढ़ते बढ़ै और सूर्य के उतरे घटै आधा सीसी दांत रोग दुर्बलता कटि पीड़ा बाहु कंध पीड़ा मुख शोष कर्णनाद बात पित्त विकार अकाल केश पाक और बालन का गिर जाना इंद्र लुप्त इन रोग में घृतादि

स्निग्ध पदार्थ वा शर्करादि मधुर पदार्थ इन करिके बृंहण नास देना ३२ पक्षाघातादि पर नास उरद किमाच बीज मीगी रासन वरियारा रंड की जड़ रोहिष तृण असगंध इन का क्वाथ करि भुनी हींग सेंधव डारि नस्य नाश देय तो पक्षाघात कंप वायु समे अर्दित वायु मन्या स्तंभ अपबाहुक इनने वात रोग समन होइ ३३ प्रतिमर्श ना एकी मात्रा दो बिंदु रूप है घृतादि स्निग्ध पदार्थ द्वै द्वै बुंद एक एक नथुना में देइ इसे प्रति मर्श नास कहते हैं ३४ बिंदु संज्ञा पिघला घी वा तेल में छोटी अंगुरी बोरि के उठाने से जितना बुंद टपकता है उसे बिंदु

अकाल पलिते चैव केश श्मश्रु प्रपातने ३२ युज्यते बृंहणा नस्यं स्नेहै र्मधुरद्रवैः माषात्मगुप्ता रास्ना भिर्बलाएरबुकरो हिषैः ३३ कृतोऽश्वगंधया क्वाथो हिंगु सैंधवसंयुतः कोष्णोनस्य प्रयोगेन पक्षाघातस कंपदैः ३४ जयेदर्दितवातं च मन्यास्तंभापबाहुकौ प्रति मर्शस्य मात्रा तु द्विद्विबिंदु मिता मता ३५ प्रत्येक शो मस्तक योः स्नेहेनेति विनिश्चितं स्नेहे ग्रंथिद्वयं यावन्निमग्नाचोद्धृता ततः ३६ तर्जनी लग्न बिन्दूनां बिन्दु संज्ञा प्रकीर्तिता एवं विधैर्बिंदु संज्ञैरष्टभिः शाणमुच्यते ३७ सदे यो मर्श नस्ये तु प्रति मर्शोहि बिंदुकः समयाः प्रति मर्शस्य बुधैः प्रोक्ताश्चतुर्दश प्रभाते दंतकाष्ठाने गृहान्निर्गमने तथा ३८ व्यायामाध्व व्यवायांते विण्मूत्रांतेंजने कृते कवलांते भोजनांते दिवा सुप्तोत्थिते तथा ३९ वमनांते तथा सायं प्रति मर्शः प्रयुज्यते दृष्ट दुच्छिंदना स्नेहो यदा वक्त्रं प्रपद्यते ४०

कहते हैं और आठ बिन्दु को शाण कहते हैं सोई शाण मर्श नास की मात्रा है और प्रति मर्श की दो बिंदु की मात्रा है ३५ प्रति मर्श काल सवेरे दातून करके घर से निकसते परिश्रम पर राह चलके मूत्र मल त्याग के अंजन करिके भोजन किये पर सूर्य निकरते वमनांत में संध्या समय ये प्रति मर्श देने के समय हैं प्रति मर्श नस्य लक्षण नास देने से छींक थोरी आवे और स्नेह थूक मार्ग हो मुंह से गिर परै तो

प्रति मर्श योग्य क्षीण धातु तृषित शुष्क मुख बालक बूढ़ा इन को प्र: उचित है और गले के ऊर्द्ध रोग में शिथिल को त्वचा की झुरी परने प-
र पलित इन रोगन को प्रति मर्श नास दूर करै इंद्रिन में बल होइ ४१ अकाले केश पाक पर नास बहेड़ा नीम खंभारी हर्र लसोड़ा काकतुंडी इ-
नके बीजन का तेल भिन्न भिन्न काढ़ि नास देइ तौ बार कारे होइ ४२ नस्य बिधि पौन और धूरि वर्जित स्थान में मनुष्य दांतून करि हुक्का पी
गला मस्तक शुद्ध करि घाम में उताना पौढ़े पीछे शिर झुकानाक ऊंची रहे हाथ पांउ फैलाइ कपड़े से आंखे ढकि बैद्य दहीं ओर से एक एक

नस्येनिर्विन्नंतं विंद्यात्प्रतिमर्शप्रमाणतः उच्छिंदंनपिवेच्चैतन्निष्टं विन्मुखमागतं ४१ क्षीणेतृषार्स्यशोषार्तेंबालेवृद्धे
च युज्यते प्रतिमर्शेन शाम्यंति रोगाश्चैवोर्ध्वजत्रुजाः ४२ वलीपलितनाशश्च वलमिंद्रियजं भवेत् विभीतनिंबगंभारी
शिवालेलुष्मकाकिनी ४३ एकैकतैलनस्येन पलितंनश्यति ध्रुवं अथनस्यविधिंवक्ष्ये नस्यग्रहणहेतवे देशे वातरजोमु
क्ते कृतदंतनिधर्षणः ४४ विशुद्धंधूमपानेन खिन्नभालगलंतथा उत्तानशायिनं किंचित्प्रलंवशिरसं नरं ४५ आस्तीर्ण
हस्तपादंच वस्त्राच्छादितलोचनं समुन्नमितनासाग्रं वैद्योनस्येनयोजयेत् ४६ कोष्णमच्छिन्नधारं च हेमतारादिशु-
क्तिभिः शुक्त्या वा पत्रयुक्त्या वा स्रोतैर्वा नस्यमाचरेत् नस्येच्चासिच्यमानेषु शिरोनैवप्रकंपयेत् ४७ नकुप्येन्नप्र
भाषेतनोच्छिदेन्नहसेत्तथा एतर्हि विहितस्नेहीनैवांतः संप्रपद्यते ४८ ततः कासप्रतिश्याय शिरसोगदसंभवः

और नास देइ नस्य देइ नस्य देने का पात्र सोने रूपे वा तांबे वा सीसी का होइ वा सीपी पत्र द्रोण वा कपड़े की पुटरी से नास देइ ४३
नास लेने वाला माथा न कपावै क्रोध न करै बोले नहीं माखी मच्छुर खट कीरादि काटने न पावे हंसे नहीं ऐसे संयम बिना नस्य द्रव्य प्रवे-
श नहीं होती खांसी आजाती है तो खराब हो मस्तक में आंखिन में कंठ पीड़ा उत्पन्न करती है ॥ ४८ ॥

नस्य साधारण प्रकारः नास देने से शृंगाटक में औषधि प्रवेशनार्थ पांचवां सातवां दश मात्रा ताईं नास धारण करे जब मुंह में उतर आवै तब परे परे दहिने बायें थूक दे सन्मुख उठ के थूकने से औषधि गिर जाती है शृंगाटक उसे कहते हैं जो नाक के दोनों छेद भौंह तक पहुंच दो गले को चले गये हैं एक दाहिनी एक बाईं भृकुटी के नीचे हो कपाल को चले गये हैं ४९ नस्ये वर्जित नास लेके संतापन करे भूरि क्रोध बैठना निद्रा सौ मात्रा ताईं दून से बचे उताना परा रहै धुवां न पावे थूक न लीजे ५० नस्य शुद्ध आदि भेद नास विषे तीन लक्षण शास्त्र

१५४

शृंगाटकमभिप्लाव्य स्यात्पयेन्न गिलेद्द्रवं ४९ पंचसप्त दशैवास्य मात्रा नस्यस्य धारणे उपविश्याथ निष्ठीवेन्मासावक्त्रगतं द्रवं ५० वामदक्षिणपार्श्वाभ्यां निष्ठीवेसन्मुखे नहि नस्ये नीते मनस्तापं रजः क्रोधं च संत्यजेत् ५१ शयीत निद्रां त्यक्त्वा च उत्तानो वाक्शतं नरः तथा वैरेचनस्यांते धूमो वा कवलो हितः ५२ नस्ये चीर्णयुपदिष्टानि लक्षणानि समासतः शुद्धहीनातियोगानि विशेषाच्छास्त्रचिंतकैः ५३ लाघवं मनसः शुद्धिः स्रोतसां व्याधिसंक्षयः चित्तेंद्रियप्रसादश्च शिरसः शुद्धिलक्षणं ५४ कंडूपदेहो गुरुता स्रोतसां कफसंस्रवः मूर्द्धि हीनविशुद्धे तु लक्षणं परिकीर्तितं ५५ मस्तुलुंगागमो वातवृद्धिरिंद्रियविभ्रमः शून्यता शिरसश्चापि मूर्द्धि गाढे विरेचिते ५६ हीनातिशुद्धे शिरसि कफवातघ्नमाचरेत् सम्यग्विशुद्धे शिरसि सर्पिर्नस्येन निषेचयेत् ५७

कहते हैं शुद्ध हीन अति योग्य सो मैं संक्षेप कहता हूं ५१ तम शुद्ध योग्य भये से देह हल की मन शुद्ध मुख नाक रंध्र शुद्ध शिर रोग रहित चित्त इंद्री प्रसन्न ये शुद्ध योग लक्षण हैं ५२ हीन योग लघु योग भये देह खजुरी गुरुत्व मुख नाक से कफ गिरे ये हीन योग लक्षण हैं ५३ अतियोग लक्षण मस्तक की मज्जा नाक से गिरे वाय वृद्ध इंद्री संभ्रम माथा खाली हीन वृद्ध योग यत्न कफ वायु हारक द्रव्य की भली भांति

अति स्निग्ध लक्षण जो नस्य कर्म से स्निग्धता अधिक हो तो कफ अधिक गिरे माथा भारी इंद्री भ्रम ऐसे मनुष्य को रूक्ष नास देना ४० नास
में पथ्य अभिष्यदान्न कहैं दध्यादि भक्षण त्यागे गुरु आचर करै पूर्वोक्त ४१ पंच कर्म संख्या वमन विरेक नस्य निरुह वस्ती अनुवासनव
स्तिये पंच कर्म हैं ४२ इति शार्ङ्गधर सुधा करेऽष्टमोध्यायः ८ अथ धूम पान विधान धूम पान छः प्रकार के हैं शमन बृंहण विरेचका सहर वाम
न व्रण धूमन ये छः प्रकार जानना १ शमन धूम पान की पर्याय संज्ञा मध्य और प्रायोगिक बृंहण पर्याय स्नेहन और मृदु रेचन पर्याय शोधन
कफ प्रसेकः शिरसो गुरुत्वेंद्रिय विभ्रमः लक्षणं नदति स्निग्धे रूक्षं तत्र प्रदापयेत् ४८ भोजयेच्चानभिष्यंदि नस्यावारिकमादिशे
त् वमनं रेचनं नस्यं निरूहमनुवासनं ४९ एतानि पंच कर्माणि कथितानि मुनीश्वरैः इति श्री शार्ङ्गधरे उत्तर खंडे नस्य विधिर
ष्टमोध्यायः ८ धूमस्तु षड्विधः प्रोक्तः शमनो बृंहणस्तथा रेचनः कासहा चैव वामनो व्रणधूपनः १ शमनस्यतु पर्यायो मध्य
प्रायोगिकस्तथा बृंहणस्यापि पर्यायो स्नेहनो मृदुरेवच २ रेचनस्यापि पर्यायो शोधनस्तीक्ष्ण एवच अधूमार्हश्च खल्वे
ते श्रांतो भीरुश्च दुःखितः ३ दत्तवस्ति विरक्तश्च रात्रौ जागरितस्तथा पिपासितश्च दाहार्तः तालुशोषी तथोदरी ४ शिरो
भिस्तापीतिभिरीछर्द्याध्मानप्रपीडितः क्षतोरस्कः प्रमेहार्तः पांडु रोगीच गर्भिणी ५ रूक्षः क्षीणो भावहतः क्षीर क्षौद्र घृता
सवः भुक्तान्न दधि मत्स्यश्च वालो वृद्धः कृशस्तथा ॥ ६ ॥

और तीक्ष्ण २ धूम में अयोग्य थकित भय भीत दुख पीडित वस्ती किया दस्त आने को रात्रि जागे को प्यासे को मुख सूखने वाले को सिर
गी रोगी को उदरी रोगी को अध्मान रोगी को पेट फूलने को उरुहाती को पांडु रोगी को गर्भिणी को रूक्ष को क्षीण को दूध दही सहत
घृत स्वरस मद्य मछली इन के भोजन किये को बालक वृद्ध इन को धूम पान योग्य नहीं और असमय धूम पान करे से उपद्रव उत्पन्न होते हैं ६

शा॰ टी॰ उ॰ २५५

धूम पानादि अव नले कृत उपद्रव की चिकित्सा धूम पान से भये उपद्रव में घी पिलावे नास देइ अंजन करै अर्थात् शरीर तृप्ति करने को दाख का यूस दे घृत ऊष रस दूध मिश्री घोलि खिलावै वा ईख का रस सहत युक्त पिलावे वा और मधुर वस्तु वा खट मिट्ठा पदार्थ दे तो धूम उपद्रव शांति हो ७ धूम पाना वस्था समय धूम सेवन बारह से अस्सी वर्ष पर्यंत के मनुष्य को करावे जो धूम पान अच्छा बने तो श्वास कास नाक बहना गले माथे की पीर बात कफ जन्य विकार ये सब दूर हों ८ धूम पान विषे उपयोगी की प्रकृति अच्छे धूम पान भये चक्षुरादि इंद्री और अंतः करण

अकाले चातिपीतश्च धूमः कुर्यादुपद्रवान् तत्रेष्टं सर्पिषः पानं नावनांजनतर्पणं ७ सर्पिरिक्षुरसं द्राक्षांपयो वा शर्करां वुवा मधुराम्लौ रसौ वापि शमनाय प्रदापयेत् ८ धूमश्च द्वादशाद् दूर्ध्वाङ्कृद्वाते शीतिकानच कासश्वासप्रतिश्यायान्मन्या हनु शिरो रुजः ९ वातश्लेष्मविकारांश्च हन्याद्धूमः सुयोजितः धूमोपयोगात्पुरुषः प्रसन्नेंद्रिय वाङ्मनः १० दृढकेश द्विजश्मश्रुः सु-गंधवदनो भवेत् धूमनाघ्नी भवेतत्र त्रिखंडा च त्रिपर्विका ११ कनिष्ठिका परीणाहा राजमाषागमांतरा धूमनाड़ी भवेद्दीर्घा श-मने रोगिणो गुलैः १२ चत्वारिंशन्मिते स्तद्वद्द्वात्रिंशद्भिर्मृदौ स्मृता तीक्ष्णो चतुर्विंशतिभिः कासघ्ने षोडशोन्मितैः १३ दशां-गुलिर्वामनीये तथा स्याद्व्रणनाडिका कपाल मंडलस्थूला कुलित्थागमरंधका ॥ १४॥

१०७

वानी ये प्रसन्न होती हैं और केश दंत ठेढी हो छगुनिया सी मोटी मटर सा छेद हो शमन दूध पान की नली ४० अंगुल लंबी लेद मृदु संज्ञक की ३२ अंगुल लंबी तीक्ष्ण संज्ञक की २४ अंगुल लंबी कासघ्न की १६ अंगुल लंबी वामनी संज्ञ की १० अंगुल लंबी और व्रण कहैं घाव में धू-नी देने की १० अंगुल लंबी परंतु व्रण की नली पूर्वोक्त नलियों से भही न हो और छेद कुलथी प्रवेश करने माफ़िक रहै तो व्रण धूपित होयगा १४

धूम पान स्यक विधानं द्वादश अंगुल की सीसक छिल के समेत पर द्रव्य कल्क चढाइ छांह में सुखाइ सीक निकार चकल कल्क लिप्त रहि जाइ उस
के छेद में धूम बोरी महीन बत्ती प्रवेश जलाइ देइ दूसरा छोर मुंह में ले धुवां खेचे और मुंह से धुआं छोडै और नाक से भी मुंह से छोडै बुद्धिमान धूनी
विधान दोस खेले एक संपुट करै ऊपर छेद रहै उस छेद से संपुट में अग्नि धरि कल्क सुलगावै तब दुमुहीं नली ले एक संपुट के छिद्र में दूसरे मुंह से व्रण पर
धुवां देइ २४ कल्क धूम द्रव्यानि शमन धूम पान से एलादि गण का कल्क देइ मृदु में घृतादि स्नेह गल मिलाइ कल्क करि देइ तीक्ष्ण में सरसों मधुवादि

अथैषिकां नलिं पेच्च सुश्लक्ष्णां द्वादशांगुलां धूमद्रव्यस्य कल्केन लेपश्चाष्टांगुलः स्मृतः २५ कल्कं कर्षमितं लिप्त्वा छाया
शुष्कं च कारयेत् ईषिकामपनीयाथ स्नेहाक्तां वर्तिमादरात् २६ अंगारे दीपितां कृत्वा धृत्वा नेत्रस्य रंध्रके वदने न पिवेद्धूमं वद

नेनैव संत्यजेत् २७ नासिकाभ्यां ततः पीत्वा मुखेनैव वमेत्सुधीः शराव संपुटे क्षिप्त्वा कल्कमागार दीपितं २८ छिद्रेनेत्रं सुवे
श्याथ व्रणं तेनैव धूपयेत् एलादि कल्कं शमने स्निग्धं सर्जरसं मृदौ २९ रेचने कल्क तीक्ष्णं च कासघ्ने क्षुद्रि कोषणं वामने स्नायु
चर्माद्यं दद्याद्धूमस्य पानकं ३० व्रणे निंबवचाद्यं च धूपनं संप्रचक्षते अन्येपि धूममार्गे हे युक्तव्या रोग शांतये ३१ मयूरपिच्छं निं
बस्य पत्राणि बृहतीफलं मरिचं हिंगु मांसी च बीजं कार्पास संभवं ३२ छागरोमाहि निर्मोकं विष्ठा वैडालिकी तथा गजदंतश्च तच्चू
र्णं किंचिद्घृत विमिश्रितं ३३ गेहेषु धूमनं दत्तं सर्वान्बालग्रहान्जयेत् पिशाचान्राक्षसान्जित्वा सर्वं ज्वरहरं भवेत् ३४

कल्क करि देइ कास में मरिच भटकटैयादि कल्क करि देइ वमन हेत चर्मादि का धुआं देना व्रण में नीव बचादि कल्क करि देइ बागभट्ट के एलादि ग-
ण उभय इलाइची शिलारस कूट कसेरू मूल मकरा जटामासी खस रोहिष त्वग वा अगिया खर कपूर कचरी किरमानी अज वाइन तज तमालपत्र
तगर मोथा चमेली कसर सीपी बाघनख देवदारु अगर केसर किमाच मूल गूगल राल कपूर चंपा पुष्प ये एलादि गण हैं ३४ बाल ग्रह निवारण धूप ॥

मोर पंख नींव पत्र भटकटैया मक्खि हींग जटामासी विन वर केचुरी विलार बीट हाथी दांत ग्यारहों के चूर्ण में घृत मिलाइ धर धूपित क
रे से सब बाल ग्रह पिशाच राक्षस उपद्रव और इन संबंधी सर्व ज्वर नाश होंइ २४ धूमे परिहार धूम पान से परिहार रेचन नस्य सदृश कर
ना धुवां पीनेकी नली धातु मय वा बास की में पिये २५ इतिश्री शार्ङ्गधरे उत्तर खंडे नवमोध्यायः ९ गंडूष कवल प्रति सार विधिः गंडूष ४
प्रकार का है स्नेहक शमन शोधन रोपण योंहीं ४ प्रकार कवल भी हैं १ स्नेहिक गंडूष भेद चिकना उष्ण पदार्थ स्नेहिक है वायु प्रवलता में दीजे १

परिहारस्तु धूमेषु कार्यो रेचन नस्य वत् नेत्राणि धातुजान्याहु र्नल वंशा दिजान्यपि २५ इतिश्री शार्ङ्गधरे धूम पान विधिर्नवमोध्या
यः ९ चतुर्विधः स्याद्गंडूषः स्नेहकः शमन स्तथा शोधनो रोपणश्चैव कवलश्चापि तद्विधः १ स्निग्धोष्णैः स्नेहको वाते स्वादु शी
तैः प्रसादनः पित्ते कट्वम्ल लवणै रूक्षैः संशोधनैः कफे २ कषाय तिक्त मधुरः कटूष्णो रोपणो व्रणे चतुः प्रकारो गंडूषः कवलश्चा
पि कीर्तितः ३ असंचारी मुखे पूर्णो गंडूषः कवलश्चरः तत्र द्रवेण गंडूषः कल्केन कवलः स्मृतः ४ दद्याद्द्रव्येषु चूर्णं च गं
डूषे कोल मात्रकं कर्ष प्रमाणः कल्कश्च दीयते कवले बुधैः ५ धार्यते पंचमाद्वर्षा द्गंडूषं कबलादयः गंडूषान्सुस्थितः कुर्या
च्छिरश्च भाल गला दिकः ६ मनुष्य स्त्री तथा पंच सप्त वा दोष नाशनात् ॥

ठंढा पदार्थ शमन में पित्त विकार में २ कडुवा खट्टा उष्ण शोधन में कफ विकार में ३ कषाय कटु मधुर उष्ण करि रोपण में देना व्रणादि में ऐ
से ही कवल में जानना २ गंडूष कवल रीति जो गीला काढ़ादि मुंह में भरि खूब गुल गुला वै उसे गंडूष कहैं जो कल्क करि मुंह में
धरि फेरा करै सो कवल है ३ उभयोः द्रव्य प्रमाण गंडूष के काथे में द्रव्य प्रमाण कोल कोल कवल में कर्ष कर्ष देना ४ गंडूष
कवल योग्य अवस्था पांच वर्ष के ऊपर साव धान करि रोग निवारणार्थ कपाल गला मुख कुछ सेक तीन वा पांच वा सात

वा दोष नाश तक गंडूष करे ७ पुनः प्रमाण जब मुख में कफ भर आवे वा तीनों दोष शांति तक वा नेत्र नाक से जल टपकने तक गंडूष करे ८ वात रोग स्नेह गंडूष तिल कल्क पानी दूध वा तिलादि स्निग्ध ये देना ८ पित्तेश मन गंडूषं तिल नील कमल घृत खांड दूध सहत युक्त कुल्ले करे से पित्तज दाह ठोढ़ी वो मुख से दूर होइ ९ व्रणादि पर गंडूष सहत के कुल्ले करने से मुख क्षत रस अरुचि चटकना दाह प्यास ये उपद्रव दूर हों मुख शुद्ध हो १० विषादि पर गंडूष घृत वा दूध के कुल्ले करने से विष विकार चूने से फटा

कफ पूर्णास्यतां यावच्छेदो दोषस्य वा भवेत् ७ नेत्र घ्राणाश्रुतिर्यावत्तावद्गंडूषधारणं तिलकल्कोदकं क्षीरं स्नेहो वा स्नेहिके हितः ८ तिलानीलोत्पलं सर्पिः शर्करा क्षीरमेव च सक्षौद्रो हनुवक्त्रस्थो गंडूषो दाहनाशनः ९ वैशद्यं जनयत्यास्ये संदधाति मुखव्रणान् दाहतृष्णा प्रशमनं मधुगंडूषधारणात् १० विषक्षाराग्निदग्धेषु सर्पिर्धार्यं पयोऽथवा तैलसैंधवगंडूषो दंतचाले प्रशस्यते ११ शोषं मुखस्य वैरस्यं गंडूषः कांजिको जयेत् सिंधुत्रिकटुराजाभिरार्द्रकेण कफे हितः १२ त्रिफला मधुगंडूषः कफास्रपित्तनाशनः दार्वी गुडूची त्रिफला द्राक्षा जात्याम्रपल्लवाः १३ जवासश्चेति तत्क्वाथः षडंशः क्षौद्रसंयुतः पीतो मुखोद्धृतो हन्यान्मुखपाकं त्रिदोषजं १४ यस्यौषधस्य गंडूषस्तथैव प्रतिसारणं कवलश्चापि तस्यैव ज्ञेयोऽत्र कुशलैर्नरैः १५

अग्नि से जरा मुख अच्छा हो ११ दांत हलने पर तिल तैल सैंधव युक्त कुल्ले करे से दांत हलना दूर हो १२ मुख शोष पर मुख सूखना और फीका रहना कांजी के कुल्ले से शांति होइ १३ कफ दोष पर अदरक के रस में सैंधव त्रिकुटा राई पीसि मिलाइ कुल्ले करे से कफ दोष मिटे १४ कफ रक्त पित्त पर त्रिफला चूर्ण सहत में धारि फ वा करे से कफ रक्त पित्त दोष मुख में न रहै १५ मुख रोग पर दारु हल्दी गुर्च त्रिफला दाख चमेली जवासा समान ले क्वाथ करि छठवां भाग सहत दे ठंढे कुल्ले किये त्रिदोष मुख पाक मिटै गंडूष करने वाली द्रव्य प्रति सारण और कवल में भी देना १६

कवल विधान केरार विजौरा गूदी सेंधव त्रिकुटा इन सब का कौर बनाइ मुख में विलोवै तौ मुख की कठोरता और कफ बात की अरुचि दूर है १७ प्रति सारण प्रकार प्रती सारण में तीन प्रकार औषधि देने के हैं कल्क अव लेह चूर्ण जैसा मुख में दोष देखै तैसी औषधि अंगुली के अग्र भाग से मुख के भीतर मलै १७ प्रति सारण चूर्ण कूट दार हर्दी धव पुष्प पाढा कुटकी हर्दी तेज बल मोथा लोध इन का चूर्ण जीभ और दांत की जड़ में बारबार मल गिरावै जो इस प्रति सारण से दांत पीड़ा रक्त गिरना मसूढा सूजन दाह ये रोग दूर होंइ १८ गंडूषादि हीन इढ़ भये से उपद्रव

केशरं मातुलंगस्य सैंधवं व्योष संयुतं १६ हन्यात्कवलतो जाड्यमरुचिं कफवातजां कल्को वलेहश्चूर्णं च त्रिविध प्रतिसारणं १७ अंगुल्यग्र गृहीतं च यथा स्व मुख रोगिणा कुष्टं दार्वी समं गा च पाढा तिक्ता च पीतिका १८ तेजनी मुस्त लोध्रं च चूर्णं स्यात्प्रतिसारणं रक्तस्रुतिं दन्त पीडां शोथं दाहं च नाशयेत् १९ हीन योगात्कफोत्क्लेशो रसाज्ञाना रुचीस्तथा अतियोगान्मुखे पाकः शोषस्तृष्णा क्लमो भवेत् २० व्याधेरुपचयस्तुष्टिर्वैशद्यं वक्त्रलाघवं इंद्रियाणां प्रसादश्च गंडूषे शुद्धि लक्षणं २१ इति शार्ङ्गधरे उत्तरे गंडूषादि विधिर्दशमोऽध्यायः १० अलेपस्य च नामानि लिप्तो लेपश्च लेपनं दोषघ्नो विषहा वर्ण्यो मुख लेपस्त्रिधा मतः १ त्रिप्रमाणश्चतुर्भागस्त्रिभागार्द्धांगुलोन्मतः आर्द्रो व्याधि हरः सस्याच्छुष्को दूषयति छविं २

के लक्षण हीन भये कफ अधिक स्वाद अज्ञानता होती है अन्न से अरुचि अति योग से मुख पकना पिरि की होना मुख शोष ग्लानि ये उपद्रव होते हैं २० सम्यग गंडूष लक्षण मुख व्याधि नाश चित्त प्रसन्न मुख निर्मल हल का जीभ को स्वाद ऐसा जानना २१ इति शार्ङ्गधरे दशमोध्यायः १० अथ लेप विधानं लेप के तीन नाम हैं लिप्त लेप लेपन लेप दोषघ्न है विषघ्न है वर्ण प्रद है मुख लेप कहै हैं १ मुख लेप सो तीन प्रकार का है उस का प्रमाण तीन भांति है जो अंगुल भर मोटा लेप हो सो दोषघ्न है पौन अंगुल मोटा लेप चढ़ावै ॥ २ ॥

सो विषघ्न है अर्द्धांगुल लेप नर्य है ऐसे तीन प्रमाण हैं सो दाह लेप रोग हर्ता है सखा कान्ति हर्ता है २ दोषघ्न लेप गदा पुरैना देवदारु सोंठि सिर्से सहिंजन तुन्वा पांचौ सम भाग कांजी में पीसि सूजन पर लेप करे नवों सूजन दूर हों ३ बहेड़े की मींगी के लेप से दाह पीड़ा नाश हो ४ दशांग लेप सरसों मुरे ठी तगर लाल चंदन इलाइची मांसी हर्दी दारुहर्दी कूठ नेत्रवाला ये दशो सम भाग चूर्ण करि पंच मांश घृत मिलाइ पानी में पीसि लेप करे से वि- सर्प बिष दोष विस्फोटक सूजन दुष्ट फोड़ा ये सब पराजय हों इस का दशांग लेप नाम है ५ विषघ्न लेपः बकरी का दूध तिल पीसि माख

पुनर्नवां दारु शुंठीं सिद्धार्थ सिग्रु मेवच पिष्टान्वै वारनालेन प्रलेपः सर्व शोथहा ३ विभीत फल मज्जास्तु लेपो दाहार्ति नाश- नः सिरीषं मधु यष्टीन्च तगरं रक्तचंदनं ४ एला मांसी निशा युग्मं कुष्टं वालुक मेवच इति संचूर्ण्य लेपोयं पंच मांश घृतप्लु- तः ५ जलेन क्रियते सुत्रै दशांगा इति संज्ञितः विसर्पान्विष विस्फोटांञ्छोथ दुष्ट व्रणाञ्जयेत् ६ अजा दुग्ध तिलै लेपो नवनी- सेन संयुतः शोथ मारुष्करं हंति लेपो वा कृष्ण मृत्तिकैः ७ लांगल्यतिविषा लांबु जालिनी बीज मूलकैः लेपो धान्यां वुसंपि- ष्टः कीट विस्फोट नाशनः ८ रक्त चंदन मंजिष्ठा लोध्र कुष्ठ प्रियंगवः घंटांकुरा मसूराश्च व्यंगघ्नो मुख कांतिदः ९ मातुलिंगज- टा सर्पिः शिला गोशकृतो रसः मुख कांति करो लेपः पिटिका व्यंग कालजित् ॥ १०॥

न युक्त लेप करे वा कारी माटी तिल का लेप करै विष संभव सूजन भिलावा सूजन दूर होइ ६ पुनर्लेप करि यारी अतीस कडु दूध या कडु तु- रई मूरी तीनों के बीज पांचों के समान कांजी में पीसि कै कीट दंश पर विस्फोटक पर लगाये दोष मिटै ७ कांति कारक लेप रक्त चंदन म- जीठ कूठ माल कंगनी वटांकुर मसूर ये सब समान जल में पीसि लेप करै व्यंग रोग मिटै कांति बढ़े ९ पुनः बीज पूर की जड़ घृत मैनशिल गोमय रस मिलाइ लेपे कांति बढ़े मुहा व्यंग रोग ये सब दूर होइ ॥ १०॥ ॥ ॥

यह लेप सातवार करे सब वार गिरे फिर न होंइ जैसे वार बनवाये पर यह रोम सातन अति उत्तम है ३८ पुनः हरताल शंख चूर्ण पलाश क्षार दो दो शाण के लेके दुरका पानी में वा आक पत्र के रस में पीसि सात वार लेप करे से वार गिर जाइ वार गिराने को यह लेप उत्तम है ४० सपेद कुष्ट पर लेप पीरी चमेली गज पीपरि कशीश विडंग मैनशिल गोरोचन सैंधव छयो सम भाग गोमूत्र में पीसि लेप करै स्वेत कुष्ट दूर होइ ४१ पुनः काक ढोढी कूट पीपरि सब समान रसकी मूत्र में पीसि लेप करै स्वेत कुष्ट दूर होइ ४२ तीसरा वकुची अमल वेतस लाख कठगूलरी

तालकं शाण युग्मं स्यात्षट् शाणं शंखचूर्णकं ३७ द्विशाणिकं पलाशस्य क्षारं दत्वा प्रमर्दयेत कदलीदंडतोयेन रवि पत्ररसेन वा ३८ अस्यापि सप्तभिर्लेपै र्लोमशातन मुत्तमं सुवर्णपुष्प काशीसं विडंगानि मनःशिला ३९ रोचना सैंधवं चैव लेपना च्छित्रनाशनं वायस्येडगजा कुष्टकृष्णाभिर्गुटिका कृता ४० वस्त मूत्रेण संपिष्टवा प्रलेपाच्छित्रनाशिनी रसांजन मयश्चूर्णं तिलाः कृष्णास्तदेकतः ४१ चूर्णयित्वा गवां पित्तैः पिष्टवा च गुटिका कृता अस्याः प्रलेपाच्छित्राणि प्रणश्यंत्यति वेगतः ४२ धात्री सर्जरसश्चैव यवक्षारश्च चूर्णितः ४३ सौवीरेण प्रलेपोयं प्रयोज्यः सिध्मनाशने दार्वी मूलक बीजानि तालकं सुरदारुच ४४ तांबूलपत्र सर्वाणि कार्षिकाणि पृथक् पृथक् शंख चूर्णं शाण मात्रं सर्वाण्येकत्र चूर्णयेत् ४५ लेपोयं वारिणा पिष्टः सिध्मान नाशनः परः

पीपरि रसौत लोह चून कारे तिल आठों सम भाग गोमूत्र में पीसि लेप करै स्वेत कुष्ट दूर होइ ४३ सेहुआ पर लेप आंवरा राल यवाखार ये तीनों सोवीर वा कांजी में पीसि लेप करै सेहुआ दूर होइ सोवीर और कांजी विधान देखो अध्याय से जानना ४४ पुनः दारु हरदी मूरी के बीज हरताल देवदारु पान ये सब कर्ष कर्ष भर शंख चूर्ण शाण भर सब पानी में पीसि लेप करै सिध्मन जो सेहुआ सो दूर होइ ४५

स्तनीयः आंवरा तीन हर्र, दो बहेड़ा दो, आम की बिजुरी पांच लोहचून एक कर्ष ये सब कराही में अति सूक्ष्म घोंटे उसी में दिन राति रहने दे फिर लेप करै तौ स्वेत केश काले हों २७ चतुर्थः त्रिफला तिल पत्र लोहचून भंगरा ये सम भाग ले छगरी के मूत्र में पीसि पकेबारों में लगाये का रे होंय २८ पंचम लेप त्रिफला लोहचून अनार की छाल कमल वाल ये पांचों औषधि पांच पल और भंगरे का रस छः प्रस्थ निचोरि पूर्वोक्त द्रव्य एकत्र करि लोहे की कढ़ाई में सूक्ष्म करि घोंटे एक मास भर राखै तिस पीछे निकारे बकरी के दूध में घिस स्वेत बारन पर लेप करै तौ ऊपर से

धात्री फलत्रयं प्रस्थं हूतथैव विभीतकं २७ पंचाम्र मज्जा लोहस्य कर्षं चैव प्रदीयते पिष्ट्वा लोहमये भांडे स्थापये दुषितं निशि २८ लेपोयं हंति न चिरात् कालपलितं महत् त्रिफला नीलिका पुत्रं लोहं भृंगरजः समं २९ अजा मूत्रेण संपिष्टं लेपात् स्कृत्स्नी करं स्मृतं त्रिफला लोह चूर्णं च दाडिमत्वग्बिसं तथा ३० प्रत्येकं पंच पलिकं चूर्णं कुर्याद्विचक्षणः भृंगराज रसस्यापि प्रस्थ षट्कं प्रदापयेत् ३१ मास मेकं ततः कुर्यात् छागी दुग्धेन लेपनं कूर्चे शिरसि रात्रौ च संवेष्ट्यैरंड पत्रकैः ३२ स्वेत्प्रातस्ततः कुर्यात् स्नानं तेन च जायते पलितस्य विनाशश्च त्रिभिर्लेपैर्न संशयः ३३ शंख चूर्णस्य भागौ द्वौ हरितालं च भागिकं मनःशिला चार्धभागा सर्जिका चैक भागिका ३४ लेपोयं वारि पिष्टस्तु केशानुन्मूलयेद्ध्रुवं अनया लेपयुक्त्या च सप्त वेलं प्रयुक्तया ३५ निर्मूल केश स्थानं स्यात्क्षयणस्य शिरो यथा ॥

रंड पत्ता बांधै राति भर बंधे रहैं प्रभात स्नान करते समय धोय डारे योंहीं तीन दिन लेप करने से सपेद बार कारे होंय २९ अथ लोमशातन प्रकार बार गिराने का लेप शंख चूर्ण दो भाग हरताल एक भाग मैनशिल अर्ध भाग सज्जी एक भाग ये सब दवाई पानी में पीसि जहां के बार गिराने मंजूर हों तहां लेप करै बाकी बारन को कपड़े से ढांके राखै लेप के पहिले बार दूर करिके तब उस ठौर में

पुन र्लेपः खसखस पीस दूध में लेप करे वा आम की विजुरी छोटी हड़ दूध में पीसि लेपे तो दारुण रोग नाश होइ १९ इंद्र लुप्त पर लेप करण्य खल की पत्ती का रस तीन दिन लेपे तो वाद खोरा दूर हो २० पुनः भटकटैया सहत लेप करे वा घुंघची के फल का रस सहत लेप करे वा भिलावा पर का रस सहत लेप करे से वाद खोरा दूर हो २१ केश वर्द्धन लेप गुखरू तिल पुष्प समान चूर्ण करे समान घृत सहत फेंटि लगावे तो वार बाढ़ें २२ वार जमें पर हाथी दांत की जवई रसौत और बकरी का दूध में पीसि लेप करे जहां वार न हो यथा हथेरी में तो वार जमें तो और अंग में क्यों

दुग्धेन खसखसं वीजं प्रलेपा द्दारुणं जयेत आम्र बीजस्य चूर्णं तु शिवा चूर्ण समं द्वयं १९ दुग्ध पिष्टः प्रलेपोयं दारुणं हंति दारुणं रसास्तिन्न पटोलस्य पत्राणां नहिलेपवान् २० इंद्रलुप्तं शमं याति त्रिभिरेव दिनैर्ध्रुवं इंद्रलुप्त पहोलेपो मधुना वृहती रसः २१ गुंजा मूल फलं वापि भल्लातक रसो पिवा गोक्षुरस्ति ल पुष्पाणि तुल्येच मधुसर्पिषी २२ शिरः प्रलेपने तेन केशं संवर्धनं परं हस्तिदंत मषीं धृत्वा छागी दुग्धं रसांजनं २३ रोमाण्य नेन जायंते लेपात्पाणि तलेष्वपि यष्टी दीवर मृद्वीका तैलाज्य क्षीर लेपनैः २४ इंद्र लुप्त शमं याति केशाः स्युस पनादृढाः चतुष्पदानां त्वग्रोमन खशृंगास्थि भस्मभिः २५ तैलेन सह लेपोयं रोम संजननः परः इंद्रिवारुणि का वीज तैले नाभ्यं गमा चरेत् २६ प्रत्यहं तेन कालाग्निसन्निभाः कुंतलाश्च लं अयो रजो भृंगराज त्रिफला कृष्ण मृत्तिका २७ स्थित भिक्षु रसे मासं लेपना त्पालितं जयेत ॥

न जमेंगे रसौत विधि निरूहण वस्ती में कही हैं २३ इंद्र लुप्त पर लेप मुरेठी कमल दारव तीनो घृत तिल तेल गऊ के दूध में पीसि लेप करे वाद खोरा दूर होइ २४ पुनः चतुष्पद चर्म रोग नख सींग हाड़ इन की भस्म तिल तेल फेंटि लेप करे तो नष्ट वार जमें २५ केश कृष्ण करन इंद्रायन के बीज का तेल पाताल यंत्र से निकारि सपेद वार लगावे तो काले हो जांय २६ पुनः लोह चूनः भंगरा त्रिफला काली माटी ये छवों समान चूर्ण करि ऊख रस में सानि मास भर राखि कुछ दिनों लेप करे तो अकाल के श्वेत बाल काले होंइ ॥ २७ ॥

तरुण पिटिका पर लेप जो तरुण मनुष्य के मुंह पर छोटी छोटी पिरकी उभरें वह तरुण पिटिका है लेप लोध वच धनियां तीनों सम भाग पीसि लेप करै तैसे गोरोचन मरिच पानी में पीसि लगावै वा सरसों वच लोध सैंधव सम भाग जल में पीसि लेपै ये तीन प्रकार लेप लगावै तो मुंह पर की तरुण पन की पिटिका अच्छी होंइ ११ व्यंग रोग पर लेप अर्जुन की छाल वा मजीठ वा श्वेत घोड़े की नख की भस्म तीनों में कोई द्रव्य सहत संयुक्त लेप करै व्यंग रोग मिटै १२ मुख पर की झांई पर लेप मदार के दूध हर्दी घिस लगावै तौ बहुत दिन की भई मुख पर की झांई निश्चय दूर होइ १३

लोध्रधान्य वचा लेपं तारुण्य पिटिका पहः तद्वद्गोरोचना युक्तं मरिच मुख लेपनात् ११ सिद्धार्थक वचा लोध्र सैंधवस्य प्रलेपनं व्यंगेषु चार्जुनत्वग्वा मंजिष्ठा वा स माक्षिकः १२ लेपः सनवनीतो वाश्वेताश्व खुरजा मखी अर्कक्षीर हरिद्राभ्यां मर्द यित्वा विलेपनात् १३ मुख कार्ष्ण्यं शमं याति चिरकालोद्भवं ध्रुवं वटस्य पांडु पत्राणि मालती रक्त चंदनं १४ कुष्ठ कालीयकं लोध्र मेभिर्लेपं प्रयोजयेत् तारुण्य पिटिका व्यंग नीलिकादि विनाशनं १५ पुराण मथ पिण्याकं पुरीषं कुक्कुटस्य च मूत्रपिष्टः प्रलेपोयं शीघ्रं हन्यादरूंषि काम् १६ खदिरारिष्ट जंबूनां त्वग्भिर्वा मूत्र संयुतैः कुटजा त्वक् सैंधवं वा लेपो हन्यादरूंषिकां १७ प्रपौंलि वीजं मधुक कुष्ठ माषैः स सैंधवैः कार्यो दारुणके मूर्द्धि प्रलेपो मधु संयुतः १८

तारुण्ये पिटिका पर लेप वट का पीला पत्र चमेली रक्त चंदन कूट दारु हलदी लोध सब एक में पीसि लेप तौ तरुण पिटिका व्यंग झांई दूर होइ १४ रुखी पर लेप पुराने तिल वा उसकी लकड़ी कुक्कुट बीट दोनों गो मूत्र में पीसि लेप करै रुखी दूर होइ १५ पुनः प्रकारः खैर नींब जामुन तीनों छाल गोमूत्र में पीसि लेप करै नाबा नास होइ दारुण रोग पर लेप चिरौंजी मुरेठी कूट माष सैंधव ये पांचों सम भाग पीसि सहत युक्त लेप करै दारुण रोग मिटै ॥ १८ ॥

नेत्र लेप हड़ सैंधव गेरू रसौत चारों समान पानी में पीसि पलक पर लेप करै सर्व नेत्र रोग दूर होंइ ४६ पुनः रसौत सौंठि मिर्च पीपरि चारों समान पानी में पीसि गोली बनाइ पलक पर लेप करै इस अंजन नामिका लेप से नेत्र कोरनि की खजुरी और गुहांजनी जो पलक की कोर पर छोटी छोटी पिरिको होती है सो दूर होंइ ४७ खजुरी पर लेप चकोड़ बिया बकुची सरसों तिल कूठ हरदी दारुहल्दी मोथा ये आठों सम भाग म ट्ठे में पीसि लेप करै खजुरी दाद विचर्चिका पाय फुटना ये रोग न रहैं ४८ सूखी खाज पर लेप चोक बिडंग सिंगरफ गंधक चौकोड बिया कूठ

हरीतकी सैंधवं च गैरिकं च रसांजनं ४६ बिडालको जले पिष्टः सर्वनेत्रामयापहः रसांजनं व्योषयुतं संपिष्य वटकीकृतं ४७ कंडूपाकान्वितां हंति लेपादंजननामिका प्रपुन्नाटस्य बीजानि वाकुचीसर्षपास्तिलाः ४८ कुष्ठं निशाद्वयं मुस्तं पिष्टं तक्रेण लेपनं प्रलेपादस्य नस्यंति कंडूदद्रुविचर्चिकाः ४९ हेमक्षीरी विडंगानि दरदं गंधकस्तथा दद्रुघ्नः कुष्ठसिंदूरं सर्वमेकत्र मर्दयेत ५० धत्तूरनिंबतांबूलीपत्राणां स्वरसैः पृथक् अस्य प्रलेपमात्रेण पामादद्रुविचर्चिकाः ५१ कंडूश्च रकसश्चैव नाशं यांति वेगतः दूर्वाऽभयासैंधवं च चक्रमर्दः कुडेरकः ५२ सभिस्तक्रयुतो लेपः कंडूदद्रुविनाशनः चंदनोशीरयष्ट्याह्वबला व्याघ्रनखोत्पलैः ५३ क्षीरपिष्टैः प्रलेपस्याद्रक्तपित्तशिरोरुजि सिद्धार्थरजनीकुष्ठप्रपुन्नाटतिलैः सह ५४

सेंदुर ये सातों समान ले नीम पत्र धतूरा पत्र पान तीनों रस निकारि जुदे जुदे पूर्वोक्त द्रव्य रस में पीसि लेप करै सूखी खाज दाद विचर्चिका पग फूटना खाज रकस कुष्ट ये सब नाश होंइ ४९ पुनः दूब छोटी हड़ सैंधव वच चक घड दिया कट सरैया पांचों मट्ठे में पीसि लेप करै ख- जुरी दाद दूर होइ ५० रक्त पित्त पर लेप लाल चंदन खस मुरेठी वरियारा व्याघ्र नख कमल ये छहौं सम भाग दूध में पीसि लेप करै तो रक्त सं- बंधी शिर के रोग मिटैं ५२ उदर रोग पर लेप सरसों हरदी कूट चकोड़ बिया तिल ये सब समान कडुवे तेल में पीसि लेप करै शीत पित्त संबंधी

वात विसर्प पर रासन नील कमल देवदारु रक्त चंदन मुरेठी वरियारा ये सम भाग दूध में पीसि घृत मिलाइ लेप किये वात विसर्प दूर होइ ५५ पि-
त्त विसर्प पर कमल नाल रक्त चंदन लोध खस कमल को जावेली सारिवन आंवरा जंगी हड़ ये सब सम भाग पानी में पीसि लेप किये पित्त विस
र्प हानि होइ ५६ कफ विसर्प पर त्रिफला पद्माक खस धव पुष्प कनेर नरट मूल जवासा ये सब समान लेप किये कफ विसर्प हरे ५७ पित्त वा-
त रक्त पर करेर फली नील कमल पद्माक सरसों फूल इन का चूरन सौ बार धोया घृत में फेंटि लेप किये पित्त वात रक्त हानि होय ५८ नाक रक्तस्राव

कटु तैलेन संमिश्र मुदर्दघ्नं विलेपनं रास्ना नीलोत्पलं दारु चंदनं मधुकं बला ५५ घृत क्षीरयुतो लेपो वातवीसर्पनाशनः मृ-
णालं चंदनं लोध्रमुशीरं कमलोत्पलं ५६ सारिवामलकी पथ्या लेपो पित्तविसर्पनुत् त्रिफला पद्मकोशीरं समंगा कर
वीरकं ५७ नलमूलमनंता च लेपश्श्लेष्मविसर्पहा दूर्वा नीलोत्पलं पद्मं शिरीष कुसुमैः सह ५८ प्रलेपः पित्तवातास्रे श
तधौत घृतप्लुतः आमलं घृतभृष्टं तु पिष्टं कांजिकवारिणा ५९ जयेन्मूर्ध्नि प्रलेपेन रक्तं नासिकया स्रुतं कुष्ठमेरंडतैलेन ले-
पात्कांजिकपेषितम् ६० शिरोर्तिं वातजां हन्यात् पुष्पं [illegible] देवदारु नतं कुष्ठं नलदं विश्वभेषजम् ६१ सकां
जिकः स्नेहयुक्तो लेपो वातशिरोर्तिनुत् दूर्वोशीरनलानां च मूलैः कुर्यात्प्रलेपनं ६२

पर आंवरा घी में भूंजि कांजी में पीसि लेप किये नाक से रुधिर गिरना बंध करे ५९ वातज शिरो पीड़ा पर कूट वा गुर्च कंद पुष्प कांजी में पीसि
रंड तेल युक्त मस्तक पर लेप किये वात जन्य शिरो पीर मिटे ६० पुनर्लेपः देवदारु तगर कूट सुगंधवाला पाठो समान कांजी में पीसि रंड ते-
ल युक्त मस्तक पर लेप किये वात संभव शिरो पीर नाश करे ६१ पित्त संभव शिरो रोग पर लेप आंवरा कसेरू सुगंधवाला कमल पद्मा-
क रक्त चंदन दूब जड़ खस नरकट जड़ ये नवों द्रव्य सम ले पानी में पीसि माथे पर लेप किये पित्त संबंधी और रक्त पित्त संबंधी मस्तक पी-

१५५

लेपे निषेध रात को लेपन करै और वार का लेप सूखै न पावे क्योंकि सूखने से रोम उचरैं तो देह में अधिक पीड़ा करै ७१ रात्रि लेप निषेध कारण रात्रि को तम वेग से शरीर की उष्णता उफाद् रोम मुख पर आद् रहती है विना लेप निकरि जाती है इस कारण रात्रि को लेपन करै ७२ रात के लेप की विधिः रात्रि को लेप चतुर वैद्य निश्चय करै जहां व्रण पकता नहीं चिर काल तक और गंभीर शोथ हो वा रक्त कफ संभव हो ७३ व्रणो पचार सप्त प्रकार लेप क्रम प्रथम लेप सूजन दूर करने को दूसरी जगह में रुधिर को यथा स्थान में पिघला के फैलाने को तीसरा व्रण पर

न रात्रौ लेपनं कुर्याच्छुष्क माणं न धारयेत् शुष्कमाणमुपेक्षेत प्रदेहे पीड़नं प्रति ७१ तमसा पिहितो ह्यूष्मा रोमकूप मुखे स्थितः विना लेपेन निर्याति रात्रौ न लेपयेत्ततः ७२ रात्रावपि प्रलेपादि विधिः कार्यो विचक्षणैः अपाकि शोथे गंभीरे रक्त श्लेष्म समुद्भवे ७३ आदौ शोथ हरो लेपो द्वितीयो रक्त सेचनः तृतीयश्चोपनाहः स्याच्चतुर्थः पाटनः क्रमः ७४ पंचमो शोधनो भूया त्वष्टो रोपण इष्यते सप्तमो वर्ण करणो व्रणे ष्वेते क्रमा मताः ७५ बीजपूरजटा हिंसा देवदारु महौषधं रास्नाग्नि मंथ लेपोयं वीत शोथ विनाशनः ७६ मधुकं चंदनं मूर्वा नव मूलंच पद्मकं उशीर वालकं पद्मं पित्तशोथे प्रलेपनं ७७ कृष्णा पुराण पिण्याकं शिगुत्वक्सिकता शिवा मूत्रपिष्टः सुखोष्णोयं प्रदेहः श्लेष्म शोथ हृत् ७८

की खाल को मृदु और पतली करने को चौथा व्रण फोर के बहाने को पांच शुद्ध करने को जो पीवन बाकी रहै छठा घाव पूरने को सातवां घाव के चर्म को शरीर की रंगत करने को जो पीवन व्रणे बात शोथ निवारण लेप बिजौरा मूल मांसी देव दारु सोंठि रासन अरनी मूल सब समान पानी में पीसि लेप करै बात शोथ शांति हो ७५ पित्त शोथ पर मुरेठी रक्त चंदन मुर्रा नरकट जड़ पद्माक खस नेत्र वाला कमल आठो समान पानी में पीसि लेप करै पित्त शोथ दूर हो ७६ ॥ ॥ ॥

कफ शोथ पर लेप पीपरि पीना सहिंजन छाल बालू वा खांड हूर ये पांचों गोमूत्र में पीसि गुन गुना लेप करै यह प्रदेह संज्ञक लेप कफ शोथ
दूर कर्ता है ७९ आगंतुक और रक्त शोथ पर लेप हरदी दारु हरदी रक्त खेत चंदन हड़ दूब गदा पुरैना खस पद्माक लोध गेरू रसौत ये स-
ब सम भाग पानी में पीसि आगंतुक और रक्तज शोथ पर लेप करै से दूर हो ८० व्रण पकाने पर लेप सन की जड़ मूरी सहिंजन का बीज
तिल सरसों यव लोह कीट अरसी ये आठो समान ले पानी में पीसि प्रदेह संज्ञक लेप से व्रण पकैगा ८१ व्रण फोरने पर लेप लट जीरा की
जड़ चीते की जड़ वा छाल सेंहुड मदार का दूध गुड़ भिलावा कसीस सैंधव ये औषधि दूनो दूध में पीसि व्रण पर लेप करे से फूटै ८२ पुनः

हे निशे चंदने हेम शिला दूर्वा पुनर्नवा उशीरं पद्मकं लोध्रं गैरिकं च रसांजनं ७९ आगंतुजे रक्तजे च शोथे कुर्यात्प्रलेपनं शणमूल
कशिग्रूणां फलानि तिलसर्षपाः ८० सक्तवः किण्वमतसी प्रदेहः पाचनः स्मृतः दंतीचित्रक मूलत्वक्तु गार्कपयसी गुडः ८१
भल्लातकस्य कासीसं सैंधवं दारुणो स्मृतः चिरिबिल्वोग्निको दंती चित्रकोहयमारकः ८२ कपोतकंकगृध्राणां मल लेपेन दा
रुणं स्वर्जिकायावशूकाद्याः क्षारा लेपेन दारुणा: हेमक्षीर्यास्तथा लेपो रुणं स्वर्जिकायावशूकाद्याः क्षारा लेपेन दारणं ८३ स्वर्जिका यावशूकाद्याः क्षारा लेपेन दारुणा:
व्रणो परम दारुणः ८४ तिल सैंधव यष्ट्याह्व निंब पत्र निशा युगैः तद्वद्घृतयुतैः पिष्टैः प्रलेपो व्रण शोधनः ॥ ८५ ॥

करंजी मींगी भिलावा दन्ती मूल की छाल चीता कनेर ये पांचों कबूतर की बीट वा कुंज बीट वा गिद्ध बीट में समान मिलाइ लेप क
रै फोड़ा फूटै ८२ तीसरा लेप सज्जी यवाखार दोनो लेप करै वा चोक की जड़ की छाल लेप करै फोड़ा फोड़े में प्रबल है ८३ व्रण शोध
न लेप तिल सैंधव मुरेठी नीम पत्र हरदी दारु हरदी निशोथ ये सब सम भाग चूरण करि घी में घेपि फोड़े फूटे पर लगावै वा इन के कल्क की टि
किया बनाइ घी में छोड़ जलावै जब टिकिया जरजाइ तब उतारि घी राखि छाड़े टिकिया फेंकि देइ ये दोनों प्रकार व्रण शुद्ध करैं ॥ ८४ ॥

व्रणे शोधन रोपन पर लेप नीम पत्र घृत मधु दारु हरदी मुरेठी तिल ये सब पीस लेप किये व्रण शुद्ध होके पूर आवे ८६ कृमिनिवारण लेप करंज नीम बकाइन तीनो पीसि कृमि के स्थान में भरे तो कृमि मरजांद वा लहसुन वा हींग पीसि भरे वा हींग नीम पत्र भरे तो कृमि नाशे ८७ व्रणशोधन रोपण पर लेप नीम पत्र तिल दतूनि की जड़ सेंधव ये सब समान पीसि सहत युत लेप किये व्रण शुद्ध होके पूरि आवे ८८ पेटपीर पर नाभि लेप द मैनफल कुट की कांजी में पीसि कुछ गरम करि नाभि पर लेप किये से पेट शूल मिटे ८९ बातविद्रधी पर सहिंजन छाल बकाइन पत्र रेंड मूल

निंबपत्रं घृतं क्षौद्रं दार्वी मधुकसंयुतं तिलेश्च सह संयुक्तो लेपः शोधन रोपणः ८६ करंजारिष्टनिर्गुंडी लेपो हन्याद्व्रणक्रमीन् लशुनस्याथवा लेपो हिंगुनिंबभवोथवा ८७ निंबपत्रं तिला दंतीत्रिवृत्सैंधवमाक्षिकं दुष्टव्रणप्रशमनो लेपः शोधनरोपणः ८८ मदनस्य फलं तिक्तं पिष्ट्वा कांजिकवारिणा कोष्णं कुर्यान्नाभिलेपं शूल शांतिर्भवेत्ततः ८९ शिग्रुश्च कालिकैरंडयव गोधूम मुद्गकैः सुखोष्णो वहलो लेपः प्रयुज्यो वातविद्रधौ ९० पैत्तिके सर्पिषा लाजा मधुकैः शर्करान्वितैः प्रलेपः क्षीरपिष्टर्वा पयस्या क्षीरचंदनैः ९१ इष्टिकासिकता लोहकीटं गोशकृता सह सुखोष्णं श्च प्रदेहोयं मूत्रैः स्याच्छ्लेष्मविद्रधौ ९२ रक्तचंदनमंजिष्ठा निशा मधुक गैरिकैः क्षीरेण विद्रधौ लेपो रक्तागंतुनिमित्तजे ९३ निश्चेलुः शिग्रुवाजानि दशमूल मथापिवा ॥

यव गेहूं मूंग ये सम पीसि सुखोस लेप करे से बात विद्रधी दूर हो ९० पित्त विद्रधी पर लावा मुरेठी शाकर घी में लेप करे से वा असगंध खस रक्त चंदन दूध में पीसि लेप करे से पित्त विद्रधी दूर हो कफ विद्रधी पर ईंट बालू लोह कीट गोबर चारों गो मूत्र में पीसि लेप करे इस प्रदेह लेप से कफ विद्रधी दूर होइ ९१ आगंतुक विद्रधी पर रक्त चंदन मजीठ हरदी मुरेठी ये सब समान दूध में पीसि चोट वा रुधिर विकार पर लेप करे अच्छा हो ९२ बात गलगंड पर बेत सहिंजन बीज समान ले जल में ॥

पीसि प्रीत गरम प्रदेह संज्ञक लेप करै तैसे ही दृश मूल पीसि लेप करै ९४ कफ गल गंड पर देव दारु इंद्रायन दोनो पीसि प्रदेहक लेप कफ गंड माला दूर करै ७९ अपची पर सरसौं नीम पत्र भिलावां तीनो सम भाग राखि करि मेंढ़ के मूत्र में लेप करै अपची दूर हो ९५ गंडमाला अर्बुद गल गंड पर लेप सरसों और सहिंजन के बीज सनई का बीज और अलसी यव मूली के बीज ये सब औषधि समान भाग ले खटाये भएम ठ्ठे में पीसि के लेप करै तौ गंड माला अर्बुद गल गंड ये रोग दूर होंइ ९६ अपबाहुक पर लेप केवल बात पीड़ित कोई अंग अपने सोभाविक क-

प्रदेहो बात गंडेषु सुखोष्णः संप्रदीयते ९४ देव दारु विशालाभ्यां कफ गंडे प्रदेहकः सर्षपारिष्ट पत्राणि दग्ध्वा भल्लातकैः सह ९५ छाग मूत्रेण संपिष्टमपचिघ्नं प्रलेपनं सर्षपाःशिग्रु बीजानि शण बीजातसीयवाः ९६ मूलकस्य च बीजानि तक्रेण म्लेनपेषयेत् गंडमालार्बुदं गंडं लेपनानेन शाम्यति ९७ अपबाहुकं कुरुतेत्र केवलानल पीड़ितं तत्र प्रदेहं दद्याच्च पिष्टं गुंजाफलैः कृतं ९८ तेनापबाहुजा पीड़ा विश्वाची गृध्रसी तथा अन्यापि बातजा पीड़ा प्रशमं याति वेगतः ९९ धत्तूरैरंड निर्गुंडी वर्षाभू शिग्रु सर्षपैः प्रलेपःश्लीपदं हंति चिरोत्थमपि दारुणं १०० अजाजीहपुषा कुष्ठमेरंड बदरान्वितं कांजिकेनतु संपिष्टं कुरंडघ्न प्रलेपनं १ करवीरस्य मूलेन परिपिष्टेन वारिणा अस्याव्यापि जरत्याशु लिंगोरुक्य त्लेपनात् २

र्म में पीड़ा करै तहां के रोम दूरि करि घुंघुची पीसि सुखोष्ण लेप करै से अपबाहुक वायु विश्वाची हाथ की गृध्रसी जंघा की वायु संभव पीड़ा दूर हो ९७ पील पांव पर लेप धतूरा रंड में वडी तीनों पत्ती गदा पुरैना सहिजन छाल सरसों ये छहों पीसि अति काल के भये पील पांव पर लेप किये अच्छा होइ ९८ उपदंश कहैं गरमी पर लेप कनेर की जड़ पानी में पीसि इंद्री पर लेपे तौ उपदंश संबंधी असाध्य पीड़ा दूर हो-इ ९९ कुरंड रोग पर काला जीरा हाऊ बेर कुड़ाड छाल बेरछाल ये पांचों समान कांजी में पीसि अंड कोश पर लेप किये अच्छे होंइ १००

१८।

पुनः त्रिफला के काढ़े में जराइ राख करि सहत में फेंटि करि लेप करि गरमी के घाव शीघ्र पूरि आते हैं १०० पुनः रसौत सरसों हड़ तीनों स-
मान पीसि सहत में घेपि उपदंश संबंधी गदि बहते व्रण पर लेप करै तो उपदंश को हर लेइ १ अग्निदग्ध पर लेप वंसलोचन पाकरि रक्त
चंदन गेरू गुर्च ये पांचों पीसि घी मेल जरे पर लगावै वा घी चौराई काथ में मिलाइ लेप करै जरे की विथा शांति होइ २ पुनः यवकी रा-
ख तिल के तेल में घेपि लगावै तो दग्धव्रण पूरि आवै ३ योनि संकीर्ण लेपः पलास फल गूलर फल तिल के तेल में पीसि सहत मिलाइ योनि

दह्ये त्कटाहे त्रिफलां सामषीमधु संयुताः उपदंशप्रलेपोयं सद्योरोपयते व्रणं ३ रसौजनं शिरीषेण पथ्यया च समन्वितं स
क्षौद्रं लेपने योज्य मुपदंश गदापहं ४ अग्निदग्धेतु गोक्षीरं मुस्त चंदन गैरिकैः सामृतैः सर्पिषा स्निग्धे रालेपं कारयेद्भिषक
५ तंदुलीय कषायैर्वा घृत मिश्रैः प्रलेपयेत् यवान्दग्ध्वा मषी कार्या तैलेन युतया तया ६ दद्यात्सर्वाग्नि दग्धेषु प्रलेपो व्र-
णरोपणः पलाशोदुंबर फलै स्तिल तैल समन्वितैः ७ मधुना योनि मालिंपेद्गाढी करण मुत्तमं माकंद फल संयुक्तं मधु कर्पू
र लेपनात् ८ गतेपियौवने स्त्रीणां योनिर्गाढाति जायते मरिचं सैंधवं कृष्णा तगरं बृहती फलं ९ अपामार्ग स्तिलाः कुष्टं
यवा माषाश्च सर्षपाः अश्वगंधा च तच्चूर्णं मधुना सह योजयेत् १० अस्य संतत लेपन मर्दनाच्च प्रजायते पुंसो लिंगस्तनो
त्सेधः संहति र्भुज कर्णयोः ॥ ११ ॥

में लेप करै दृढ़ संकुचित होइ ४ पुनः आम्र कपूर पीसि सहत में फेंटि लेप करै गिरी हुई योनि तनि आवै ५ पुरुष इंद्री कठोर करने का ले-
प मरिच सैंधव पीपरि तगर भट कटैया के फल लट जीर के विया काले तिल कूट यव उरद असगंध ये सब समान पीसि सहत मिश्रित करि
नित इंद्री पर मला करै तो इंद्री मोटी होइ स्त्री के स्तन पर लगाया करै तो कठोर पर जांय और पुरुष के भुज दंड पर और कान पर मर्दन कर

पुन लेपः स्वेत फूल का असगंध सैंधव दोनों सूक्ष्म पीसि चौगुना घृत घृत का चौगुना भेड़ का दूध एक करि आंच पर दूध जराइ वा छानि इंद्री पर लगावै इंद्री मोटी होइ २२ योनि द्रव लेप इंद्रूल पत्र का रस ले पारा रक्त कनेर के सोंटे से घोटि वार वार रस डारि जब कजरी पीठी सम होजाइ तब इंद्री पर लेप स्त्री प्रसंग करै तो स्त्री सुख पावै पहिलै वीर्य पात करै २३ देह दुर्गंध निवारण लेप पान कूट हड़ पानी में पीसि लेप करै दुर्गंध दूर होइ २४ पुनः कुरथी भूंजि कूट जटामासी सेद चंदन का बुरादा भूंजे चने इन सब को पीसि कपर छान कर धूरा करै तो दुर्गंध

सिताश्वगंधासिंधूत्थं छागक्षीरे घृतं पचेत् तल्लेपान्मर्दनाल्लिंगे वृद्धिः संजायते परा २२ इंद्रवारुणिका पत्र रसैः सूतं विमर्दयेत् रक्तस्य करवीरस्य काष्ठेनच मुहुर्मुहुः २३ तल्लिप्त लिंग संयोगाद्योनि द्रावोभिजायते तांबूल पत्र चूर्णं तु चूर्णं कुष्ठशिवाभवं २४ वारिणा लेपनं कुर्याद्गात्र दुर्गंध नाशनं कुलित्थ शक्तवः कुष्ठं मांसी चंदनजो रजः २५ एकत्र श्लक्ष्ण कःस्यैव लक्ष्णं वैकत्र कारयेत् स्वेद दौर्गंध्य नाशश्च जायते स्नाव धूलनात् २६ वचा सौवर्चलं कुष्ठं रजन्यौ मरिचानि च एतल्लेप प्रभावेण वशीकरण मुत्तमं २७ अभ्यंगः परिषेकश्च पिचु र्वस्तिरिति क्रमात् मूर्द्ध तैलं चतुर्धास्याद्बलवद्धि यथोत्तरं २८ अयोभ्यंगादयः पूर्वं प्रसिद्धाः सर्वतः स्मृताः शिरोवस्ति विधिश्चात्र प्रोच्यते सुज्ञ संमतः २९

देह सहित दूर हो वशी करण लेप वच काला लोन कूट हर्दी दारु हर्दी मिरच ये सब समान पानी में पीसि देह में लोक वश होने के निमित्त लगावै तो अच्छा है २५ मस्तक में तेल लगाने की विधि अभ्यंग कहैं तेल मर्दन परि सेक कहैं तेल चुपरना पिचु कहैं रूई के पहल को तेल में बोरि माथे में बांधे बस्ती कहैं माथे में चोफेर चर्म बांधि तेल भरै यह चारि प्रकार का है सो क्रम से उत्तरोत्तर बलवान है २६ शिरोबस्ती विधान अभ्यंग परि सेक पिचु ये तीनों सर्वत्र प्रसिद्ध हैं और शिरो बस्ती विधि आमात्रा इहां नहीं कही सो आगे श्लोक में कहेंगे २८

शिरो बस्ति प्रकार: मस्तक पर औषधि धारण करने को शिरो बस्ति कहते हैं बारह अंगुल चौड़ी हाथ भर लंबी शिर के समान आकार हरिण चर्म की सी लेइ दोनो ओर खुली ढील न हो सो माथे पर चढ़ाइ भीतर से चारों ओर उरद की पीठी से निस्संधि करै फिर नीचे चढ़े भये चमड़े को अंगुल भर पीठी से चारों ओर निस्संधि करि सुखोष्ण तेल भरे १९ शिरो बस्ति प्रमाण जब तक नाक मुख नेत्र से जल न बहै वा मस्तक व्यथा न मिटै वा सौ मात्रा तक बस्ती स्थित रहै मात्रा प्रमाण अनुवासन बस्ती में कहि आये हैं २० शिरो बस्ती काल भोजन के प्रथम पांच वा सात दिन शिरो

शिरो बस्तिश्चर्मणः स्याद्धि मुखो द्वादशांगुलः शिरः प्रमाणां तं बध्वा मस्तके माषपिष्टकैः १९ संधिरोधं विधायाथ स्नेहैः कोष्णैः प्रपूरयेत् तावद्धार्यस्तु यावत्स्यान्नासानेत्रमुखस्रुतिः २० वेदना प्रशमो वापि मात्राणां वा सहस्रकं विना भोजनमेवाथ शिरो बस्ति प्रशस्यते २१ प्रयोज्यस्तु शिरो बस्तिः पंचसप्ताहमेव वा विमोच्य शिरसो बस्तिं गृह्णीयाच्च समं ततः २२ ऊर्ध्वकाये ततः कोष्णनीरैः स्नानं समाचरेत् अनेन दुर्जया रोगा वातजा यांति संक्षयं २३ शिरः कंपादयस्तेन सर्वकाले तु युज्यते स्वेदयेत्कर्णदेशं तु किंचिन्नः पार्श्वशायिनः २४ मूत्रैः स्नेहैः रसैः कोष्णैस्ततः कर्णं प्रपूरयेत् कर्णं तु पूरितं रक्षेच्छतपंचशतानि वा सहस्रं वापि मात्राणां श्रोत्रकंठशिरोगदे स्वजानु करावर्तं कुर्याच्छोटिकया युतं २६ एषा मात्रा भवेदेका सर्वत्रैवैष निश्चयः रसाद्यैः पूरणं कर्णे भोजनात्प्राक्प्रशस्यते २७

बस्ति करै २१ शिरो बस्ती पश्चात् कला पली प्रमाण पूर्वक करिके उतारि सुखोष्ण जल से माथा धोय नहाइ २१ शिरो बस्ती गुण बात जन्य शिरो कंपादि रोग दुर्जय दूर होता है इससे वैद्य सदा इस रोग में शिरो बस्ति करावे २२ कर्णोपचार मनुष्यों को कुछ स्वेद करि तुरंत गोमूत्र वा तेल वा स्वरस सुखोष्ण कान में पूरे कर्ण द्रव्य धारण प्रमाण कान कंठ शिर रोगों के निवारणार्थ सौ मात्रा वा पांचसौ वा हज़ार मात्रा तक राखे २३ मात्रा प्रमाण घुटनों पर चुटकी बजाते हाथ घूमें चौफेर सो मात्रा प्रमाण है २५ कर्णोपचार समय कान में औषधि भोजन के प्रथम रसादिक पूरे

कर्ण व्यथा पर औषधि अर्क वृक्ष में जो पत्ते पीले पर जाते हैं तिन्हें खोजि उन पर घृत लगावै तब लघारी आगि में सेंक लेइ जब गरम होइ त- ब निकारि कान में छोड़ै तो सब कर्ण शूल दूर होइ २८ पुनः छारा मूत्र में सैंधव मुरि कुछ न ता करि कान में पूरै तो कान के भीतर की पिटिका- दूर होइ २९ तृतीय अदरक का रस मुरेठी सहत सैंधव आंवरा तिल पर्णी दूव में होती और गुरुच कैसी सब सूरति पत्ती समेत फली तिल सदृश होती है वह तिल पर्णी है सरसों का तेल सुहागा नीबू का रस ये सब पीसि कान में डारै तो कान की पीड़ा दूर करै ३० चौथी और कैथ फ-

तैलाद्यैः पूरणं कर्णे भास्करे स्तमुपागते पीतार्कपत्रमाज्येन लिप्तमग्नौ प्रतापयेत् २८ तद्रसः श्रवणे क्षिप्तः कर्णशूल हरः परः कर्णशूलातुरेको लं वस्तमूत्रं ससैंधवं २९ निःक्षिपेत्तेन शाम्यंति शूल पाकादिका रुजः शृंगवेरं च मधुकं मधु सैंधव मामलं ३० तिलपर्णी रसस्तैलं टंकणं निंबुकं ध्रुवं कदुष्णं कर्णयोर्दद्यमेतद्धि वेदनापहं ३१ कपित्थं मातुलिंगाम्ल शृंगवेर रसैः शुभैः सुखोष्णैः पूरयेत्कर्णं कर्णशूलोपशांतये ३२ अर्कांकुरानम्लपिष्टान्तैलकान्लवणान्वितान् सन्निदध्यात्स्नुही कांडे कोरिते तत्सदावृते ३३ पुटपाकक्रमं कृत्वा रसे तस्य प्रपूरयेत् सुखोष्णैस्तेन शाम्यंति कर्णपीडाः सुदारुणाः ३४ महतः पंचमूलस्य कांडान्यष्टांगुलानि तु क्षौमेण वेष्टयित्वा सिच्य तैलेन दीपयेत्ततः ३५ यत्तैलं च्यवते तेभ्यः सुखोष्णं तेन पूरयेत्

ल का रस बिजौरा रस अमल बेत के रस बिना चूक रस अदरक रस ये चारों सुखोस कान में डारने से कर्ण शूल नाश होय ३१ पंचम और मदार का कोमल टिंगुसा नींबू रस में पीसि तिल का तेल सैंधा नोन मिलाइ गोला बांध सेंहुड के मोटे खंड में पोला करि गोला धरै अ- च्छी भांति दादि उसी के पत्र लपेटि कपरौटी करि माटी चढ़ाइ मंद आंच में पकाइ पुट पाक सदृश पक जाय तब निकारि माटी कपड़ा उता- रि कूटके रस निचोर लेइ फिर उस रस को सुखोस करि कान में डारै तो कान की दारुण शूल शांति होय ३२ ॥ ॥

कर्णशूल पर दीपिका तैल महा पंच मूल की जड़ आठ अंगुल रुई वा वस्त्र लपेट दीप में बारि चमेली से पकरि कटोरी में टपकावै वही गुन गुने ते-
ल कान में डारे से कान की तपक दूर होइ महत् पंच मूल बेल रुंड टेंटी अरनी पाटल इन की जड़ को कहते हैं ३६ पुनः देवु तेल देवु मूल पानी में पी-
से कल्क करि और गुनगुने तिल तेल मेल सम जल देइ जल जलाइ उतारि सहता सहता कान में डारने से त्रिदोष जन्य कर्णशूल मिटै ३७ कर्ण नाद
पर तेल सुरेठी माष असगंध धनियां इन चारों का काथ और कल्क सूकर की चरबी में पचाइ चरबी रहि जाय तब कान में डारै तो कर्णनाद को
निकारै ३८ कर्णनाद पर श्रेष्ठ तेल सज्जी सूखी मूरी हींग पीपरि सोंठ ये पांचों सम भाग चौगुने तिल तेल में समान मध्य खंडोक्त सूक्त में पचावै जव

दंवं तद्दीपिका तैलं सद्यो गृह्णाति वेदनां ३६ एवस्या दीपिका तैलं कुष्ठ देव तरोतथा तैलं श्योनाक मूलेन मंदेग्नौ परिपाचितं ॥

३७ हरे दाशु त्रिदोषोत्थं कर्णशूलं प्रपूरणात् कल्क क्वाथेन यष्ट्याह्व काकोली माष धान्यकैः ३८ सूकरस्य वसां पक्का कर्णना दा-
र्ति हारिणी स्वर्जिका मूलकं शुष्कं हिंगु कृष्णा समन्वितं ३९ शतपुष्पा चते स्तैलं पक्कं सूक्तं चतुर्गुणं त्रणादं शूल वाधिर्य श्रावं कर्णस्य
नाशयेत् ३९ अपामार्ग क्षार जले तत्क्षारं कल्पितं क्षिपेत् तेन पक्कं जयेत्तैलं वाधिर्यं कर्णनादकं ४० शंबुकस्य तु नाशेन पचेत्तैलं तु
सार्षपं तस्य पूरण मात्रेण कर्णनाडी प्रशाम्यति ४१ चूर्णं पंच कषायाणां कपित्थ रस मेव च कर्णश्रावे प्रशंसंति पूरणं मधुना स
ह ॥ ४२ ॥

केवल तेल कान में चुवावै तो कर्णनाद शूल बधिरत्व कान बहव इन रोगन को नसावै ३९ बधिरत्व पर अपामार्ग क्षार तेल लटजीरे की राख
चौगुने पानी में घोलि घंगोल निशि भर धर प्रात निर्मल जल ले चौथाई तेल दे पचाइ पानी जराइ कान में डारै तो बधिरत्व मिटै सुनने लगे
४० कर्णव्रण सलुक तेल घोघे का मांस चौगुने तेल में लाल करि पचाइ ले वह तेल कान में डारै तो व्रण दूर करै ४१ कर्ण श्राव पर औ-
षधि पंच कषाय का चूर्ण कैथ रस और मधु मिलाइ कान में डारै तो कान बहव बंद होय ॥ ४२ ॥

पंच कषाय वृक्ष तें दू हड़ लोध मजीठ आंवरा हड़ आंवरा फल वाकी छाल २१ कर्ण स्राव पर पुनः सज्जी बिजौरा रस में घोटि कान में डारै कान बहना बंद होइ २१ पुनः आंब जामुन महुआ बरगद चारों की कोपल की लुगदी चौगुने तिल तेल में जराइ तेल कान में डारने से पीव बहना बंद होइ २३ कर्ण कीट पर तेल हरताल पीसि गोमूत्र वा कड़ु तेल में मिलाइ तो कर्ण जंतु दूर होइ २४ पुनः सहिंजन मूल का रस स्वर्ण मुरखी का रस सोंठि मिर्च पीपरि पीसि बन किमाच की जड़ का रस ये सब मिलाइ पोटि कान में छोड़ै तो कर्ण कीट मरे १२५ इति श्री शार्ङ्गधरे

तिंदुकान्यभयालोध्रः समगाचामलकं तथा ज्ञेयाः पंच कषायास्तु कर्मण्यस्मिन्निवच्चदैः ४३ स्वर्जिकाचूर्ण संयुक्तं वीज पूर रसं क्षिपेत् कर्णस्राव रुजोदाहाः प्रणश्यंति न संशयः ४४ आम्रजंबुप्रवालानि मधुकस्य वटस्य च एभिः संसाधितं तैलं पूतिक र्णोपशांतिकृत् ४५ पूरणं हरितालेन गवांमूत्रयुतेन च अथवा सार्षपतैलं कर्णकीट हरं परं ४६ स्वरसं शिग्रु मूलस्य सूर्या वर्तरसं तथा त्र्यूषणं चूर्णितं चैव कपिकच्छूरसं तथा ४७ कृत्वै कत्र क्षिपेत्कर्णे कर्णकीट हरं परं इति श्री शार्ङ्गधरे लेपादि क र्णपूरण विधि रेकादशोध्यायः ११ शोणितं स्रावयेज्जंतोरामयं प्रसमीक्ष्य च प्रस्थं प्रस्थार्द्धकं वापि प्रस्थार्द्धार्द्ध मथापि वा १ शरत्काले स्वभावेन कुर्याद्रक्तस्रुतिं नरः त्वग्दोषग्रंथि शोथाद्या न स्यू रक्तस्रुते यतः २

रुकादशोध्यायः ११ अथ रुधिर मोक्षण प्रयत्न मनुष्य के शरीर में रक्त जन्य विकार से कुष्टादि रोग जानि रुधिर निकरवाने का प्रमाण कहते हैं प्रस्थ भर वा अर्द्ध प्रस्थ वा चौथाई प्रस्थ कहैं कुडव भर १ रुधिर मोक्षण काल देह से रुधिर निकसाने से त्वचा पर के रोग फोड़ा फुंसी शोथादिक रोग दूर होते हैं इस कारण शरद काल में मनुष्य का रुधिर निकसाना उचित है ॥ २ ॥

रुधिर गुण रुधिर मधुर है लाल और कुछ गरम पर्स गरुआ चिकना विसायध गंधी पित्त समान उलप लोहू का रूप गुण है ३ और रक्त पंच तत्त्व मय है विसायधीगंध पृथ्वी गुण गीला पन जल गुण उस पर्स अग्नि गुण चलना वायु गुण नीला होना और श्यामता लाना आकाश गुण है ४ रुधिर दुष्ट होने के लक्षण रुधिर दुष्ट भये देह में पीड़ा व्रण दाह रक्त मंडल खाज शोथ देह पाक सादर्द ५ रक्त बढ़ने का लक्षण रुधिर बढ़े तो देह और नेत्र लाल रहैं और नसैं रक्त पूरित हों फूल जाती हैं देह गरु रहती है नींद विशेष मद दाह ये उपद्रव होते हैं ६ शीता

मधुरं वर्णतो रक्तमपीतोस्नं तथा गुरु शोणितं स्निग्धविस्रं स्याद्दाहश्च पित्तवत् ३ विस्रता द्रवता रागः स्पन्दनं च विलयस्तथा भूम्यादिपंचभूतानामेते रक्तगुणाः स्मृताः ४ रक्त दुष्टे भवेन्नास्य त्वाको दाहश्च जायते रक्तमंडलता कंडूः शोथश्च पिटिकोद्गमः ५ दृष्टं रक्तांगनेत्रत्वं शिराणां पूरणं तथा गात्राणां गौरवं निद्रा मदो दाहश्च जायते ६ क्षीणेऽस्लमधुराकांक्षी मूर्च्छा च त्वविरूक्षता शैथिल्यं च शिराणां स्याद्वातो दुन्मार्गगामितः ७ अरुणं फेनिलं रूक्षं सुरुषं तनु शीघ्रगं अस्कंदि सूचिनिस्तोदं रक्तं स्याद्वातदूषितं ८ पित्तेन पीतं हरितं नीलं कृष्णं च विस्रकं अस्कं दुष्टं मक्षिकाणां पिप्पलीनामनिष्टकं ॥ ९ ॥

रक्त लक्षण रुधिर बढ़े तो देह और नेत्र लाल रहैं और नसैं रक्त पूरित हों फूल जाती हैं देह गरु रहती है नींद विशेष मद दाह ये उपद्रव होते हैं ६ जिस के रुधिर शरीर प्रमाण से घट जाता है तिस की रुचि खट्टे और मीठे पर अधिक रहती है और मूर्च्छा तुचा रूखी शिथिल शरीर वायु ऊर्द्ध गामी ऐसे जानो ७ वायु वरिष्ट रक्त उस लक्षण वायु कुपित रुधिर लाल रंग फेन सहित हो रूखा कर्कस हलका शीघ्र गामी पतला देह में सुई समान चोंचै ८ पित्त करि दुष्ट रुधिर लक्षण पित्त कुपित रुधिर पीला हरित नीला वा उस पके आम की गंधी तत्ता अथिर चेंटी माखी न खाय ॥ ९ ॥

कपा कारि दुष्ट रुधिर लक्षण कफ कुपित रक्त का स्पर्श ठंढा चिकना गेरू का रंग मांस कुटकी मिश्रित गाढ़ा अस्थिर होता है १० दो वा तीन दोष कुपित रुधिर लक्षण द्वे दोष कारि दूषित लोहू में दो दोष के लक्षण पाये जाते हैं त्रिदोष दूषित में पीप के गंध होती है और सब लक्षण त्रिदोष के पाये जाते हैं और कांजी सदृश रूप होता है ११ अति दुष्ट रक्त लक्षण काले रंग रक्त ऊपर चढि के नाक की राह पीता है आम की-सी वास होती है कांजी सदृश सब धातुन को बहुत दुष्ट करता है १२ शुद्ध रक्त लक्षण शुद्ध रक्त वीर बहूटी के रंग और पतला होता है पर्यो में उत्तशीघ्र

शीतंच बहलं स्निग्धं गैरिकोदक संनिभं मांस पेशीप्रभं स्कंदि मंदगं कफ दूषितं १० द्विदेषदुष्टं संसृष्टं त्रिदुष्टं पूतिगंधकं सर्व लक्षण संयुक्तं कांजिकाभंच जायते ११ विष दुष्टं भवेच्छ्यावं नासिका मार्गगं तथा विस्र कांजिक संकाशं सर्वदुष्ट करं बहु १२ इंद्रगोपप्रभं ज्ञेयं प्रकृतिस्थमसंहतं १३ शोथे दाहेंगपाकेच रक्तवर्णे स्रुतः स्रुतौ वातरक्ते तथा कुष्टेस पीडे दुर्जये निले १४ पाणिरोगेप्लीपदेच विषदुष्टेच शोणिते ग्रंथ्यर्बुदापची क्षुद्ररोग रक्ताधिमंथिषु १५ विदारी स्तनरोगेषु गात्राणां गादगौर वे रक्ताभिष्यंदतंद्रायां पूतिघ्राणास्यदेहके १६ यकृत्प्लीह विसर्पेषु विद्रधी पिटिकोद्गमे कर्णोष्ठघ्राणवक्त्राणां पाके दाहे शि रोरुजि १७ उपदंशे रक्तपित्ते रक्तस्रावः प्रशस्यते रक्तरोगेषु शृंगैर्वा जलौकालाबुकैरपि १७ अथवापि शिरामोक्षैः कुर्याद्रक्त स्रुतिं नरः

चारी १३ रक्त मोक्षण योग्य शोथ में दाह में अंग पाक में रक्त वर्ण अंग में, नाक से बहने में वात रक्त कुष्ट कष्ट साध्य पीड़ा वात संयुक्त में हाथरो ग में पील पांउ वा विष कारि गिर रक्त में ग्रंथि अर्बुद गंड माला क्षुद्र रोग अपची रक्ताधिमंथ विदारी कुच रोग देह जकड रक्ताभिष्यंद तंद्रा दुर्गंध यकृत प्लीह विसर्प विद्रधी पिटिका मात्र ओठ नाक मुख कान पकने में माथे पीड़ा उपदंश रक्त पित्त इन रोगन में रुधिर निकराना उचित है १४ रक्त मोक्षण प्रकार सींगी जोंक तोंबी फस्त इन चारि करिकै रक्त निकरावे ॥ १८॥

सिरा छेदन अयोग्य दुर्बल विषयी नपुंसक भीत गर्भिणी गोद वाली पांडु स्नेहादि पंचकर्म कृती लेपादि कर्म कृती अर्श रोगी सर्वांग उदर श्वास कास उवाकी अतीसार अति स्वेदी सोरह के भीतर सत्तर के ऊपर अवस्थावालेको अकस्मात नाक से रक्त गिरेको ऐसे मनुष्य अयोग्य कदाचित फोडा फुंसी होतो जोंक लगावै ऐसे रोगियों का विषवाद संयोग्य से रक्त अति दुष्ट होतो शिरा मोक्षण करै २३ दोषादिक में रक्त निकारने विधान वायुदूषित रक्त सिंगी से लेइ पित्त दूषित जोंक से लेइ कफ दूषित तोंबी से लेइ है वा तीन दोष दूषित दुष्ट रुधिर शिरा छेदन करि लेइ २४ सिंगी आदि से

न कुर्वीत शिरा मोक्षं कृशस्यातिव्यवायिनः १९ क्लीबस्य भीरोर्गर्भिण्याः सूतिकापांडुरोगिणां पंचनामविशुद्धस्य पीतस्नेहस्य वार्शसां २० सर्वांग शोथयुक्तानामुदरिश्वासकासिनां छर्द्यतीसारयुक्तानामतिस्विन्नतनोरपि २१ ऊनषोडशवर्षस्य गतसप्ततिकस्य च अघनस्रुतरक्तस्य शिरा मोक्षो न शस्यते २२ एषां चात्ययिके योगे जलौकाभिस्तु निर्हरेत् तथातिविषयुक्तानां शिरा मोक्षोपि शस्यते २३ गोशृंगेण जलौकाभिरलाबुभिरपि त्रिधा वातपित्तकफैर्दुष्टं शोणितं स्रावयेद्बुधः २४ द्विदोषाभ्यांतु संसृष्टं त्रिदोषैरपि दूषितं शोणितं स्रावयेद्युक्त्या शिरा मोक्षभवैस्तथा २५ गृह्णाति शोणितं शृंगं दशांगुलमितं बलात् जलौका हस्तमात्रं च तुंबी च द्वादशांगुलं २६ पदमंगुलमात्रेण शिरा सर्वांग शोधिनी शीते निरन्ने मूर्छायां तंद्रा भीतिमदश्रमैः २७ ॥

रुधिर खिंचने का प्रमाण सिंगी जिस ठौर लगै तिस के चारों ओर दश अंगुल ताईं का रक्त खैंचती हैं जोंक हाथ भर ताईं तोंबी बारह अंगुल ताईं सूक्ष्म शिरा अंगुल भर का और मोटी शिरा जो सब नसों को रक्त देइ वह सब शरीर के रुधिर को शुद्ध करती है २५ रुधिर मोक्षण अयोग्य शीत काल में उवास में तंद्रा में मद में भय मान को परिश्रम में मल मूत्र निरोध में ऐसे मनुष्य के शरीर से रुधिर नहीं निकलता ॥ २६॥

सिरा रक्त न देने का यत्न जो नस छिद के रुधिर भली भांति न द्रवै तौ कूटा पीता सेंधव सम पीसि उस छेद पर रगरने से अच्छे प्रकार रक्त देइगी २८ रक्त मोक्षण काल न जाड़ा हो न गरमी हो न स्वेद किये को न उस शरीरी को जो रक्त निकारै तौ प्रथम जवा गूदे तृप्ति कर लोहू निकरावे २९ अति रु धिर स्राव जिसे स्वेद किये वा उष्मा से स्थूल नस से रक्त अधिक आवे बंद न हो तिस्के हित यत्न आने वाले श्लोक में कहते हैं ३० रुधिर न थंभ ने पर जो सिरा मोक्ष से रक्त न बंद हो तौ लोध राल रसौत तीनों का चूर्ण वा यव गेहूं का चून बांधव जवासा गेरू का चूर्ण वा सर्पकी केचुवा रेसमी

युतानां नस्रवेद्रक्तं तथा विरमृत्र संगिनां अप्रवर्तिनि रक्ते च कुष्ट चित्रक सैंधवैः २८ मर्दयेद्व्रणवक्त्रं च तेन सम्यक् वर्तते तस्मान्न सीतेना त्युष्णेन श्विन्ने नातिना पिते २९ पीत्वा यवागूं तप्तस्य शोणितं स्रावयेद्बुधः अति स्विन्ने सोष्णकाले न थै वाति शिरा वधात् ३० अति प्रवर्तिते रक्ते तत्र कुर्यात्प्रति क्रिया अति प्रवृत्त रक्ते च लोध्र सर्ज रसांजनैः ३१ यव गोधूम चूर्णै वा धव धन्वन गैरिकैः सर्प निर्मोक चूर्णै वा भस्म ना क्षौम वस्त्रियः ३२ मुखं व्रणस्य वध्वा च शीतैश्चोपचरेद्व्रणं वि ध्येद्वूर्ध्वं शिरां तां वा दहेत्क्षारेण वाग्निना ३३ व्रणं कषाय संधत्ते रक्तं स्कंदयते हिमं व्रणास्यं पाचयेत्क्षारो दाहः संकोच येच्छिरां ३४ वामांड रोग्ये दक्षस्य करस्यांगुष्ट मूलनां दहेच्छिरां व्यत्ययेतु वामांगुष्ट शिरां दहेत ॥ ३५॥

लत्ता की भस्म इन में कोई फस्त के मुख पर बलकारि दाबदे उस पर चंदनादि शीतोपचार करै शीतल लेप करैं जो इस से बंद न होय तो उसके कुछ ऊपर बढ़ि के फस्त दे वा अग्नि सम खार उस के मुंह पर लगावे वा अग्नि से दाग दे तौ बंद होगा इसे क्यों बंद हो सो कहते हैं लोधादि से घाव मुख जम लाता है शीतल लेप से रक्त थंभता है क्षारादि से क्षत पचता है जलाने से नस का मुख सि कुरता है ३४ दग्ध कते रोग शांति जिस का दहिना अंड कोश फूले उस के वामें हाथ के अंगूठे की जड़ दागें ॥ ३५॥

जो वातं अंड कोश फूले तो दहिने हाथ के अंगूठा की मूल दागे जो यूव आरंभ में करे तो अवश्य अच्छा होय और जिसे सीत रस हो उस के गोड के तलवे अत्यत से के तो रस वाहिनी और कफ वाहिनी के मुख सिकुर जाते हैं अग्नि दीप्ति होती है ३६ दुस्तरता असेवन होने पर दुष्ट रुधिर काढ़ने में कुछ बाकी रहि जाय तो रोग भी कोप न करैगा और अशेष होने वा जादा निकसने में उपद्रव उत्पत्ति होते हैं अंधता आक्षेपक वायु तृषा तिमिर माथे में पीर पक्षाघात वायु श्वास कास हुचकी जरन पांडु ये रोग होते हैं और सब रुधिर निकस जाने से मरने का भी आश्चर्य नहीं

शिरा दाह प्रभावेण शुष्क शोधः प्रशाम्यति विषूच्यां पाद दाहेन जायते ग्निदीपनं ३६ संकुंचति यत स्तेन रस श्लेष्म वहा शिरा यत वृद्धिर्य कल्लीन्हो: शिशो: संजायते स्रजः ३७ नहात स्थानं दाहेन संकुंच्वत्य स्तत: शिरा: रक्ते दुष्टेव शिष्टे पि व्याधिर्नैव प्रकुप्यति ३८ अतः स्रावं स्राव शोषं रक्ते नातिक्रमो हितः आधमाक्षेपकं तृष्णां तिमिरं शिरसो रुजं ३९ पक्षाघातं श्वास कासो हिक्का दाहंच पांडुतां कुरुते विस्रतं रक्तं मरणं वा करोतिच ४० देहस्योत्त्पत्ति स्त्रजा देह स्तेनैव धार्यते विना तेन ब्रजे ज्जी वो रक्षेद्रक्तं मता वुधः ४१ शीतो पचारैः कुपिते क्षत रक्तस्य मारुते कोस्तेन सर्पिषा शोधं सर्वतः परिषेचयेत् ४२ क्षीरा सोरा शशोरस्य हरिण छाग मांसजःरसः समुचितःपाने क्षीरं वा षष्ठिका हिता ॥ ४३॥

३७ और रक्त से शरीर की उत्पत्ति है और देह को आधा रहै रक्त रहने से जीवत्व है इसी कारण बुद्धिमान वैद्य रक्षा रुधिर की करते हैं ३८ रुधिर मोक्षण पर दोष कोप रुधिर निकरे पर घाव पर पित्त कोप दीसे तो शीतल चंदनादि लेप करै वायु कोप दीसे तो वा घाव पर सूजन न होद पीड़ा करै तो सुखोष्ण घी लगावे ३६ रुधिर मोक्षण पर पथ्य जो रक्त निकासने पर निर्वल भया हो तो हरिण खरगोस भेड कुल मृग छाग इन का मांस खिलावे वा साठी के चावर गो दूध में खीर करि खिलावे वा गऊ का दूध भात खिलावे ये पथ्य हित कारक हैं ॥ ४० ॥

सम्यक् रक्त मोक्षण लक्षण पीड़ा विगत शरीर हल का उभय रोग देवै प्रसन्न मन ऐसे लक्षण हों तो रक्त मोक्षण अच्छा भया २८ रक्त मोक्षण पर निषेध परिश्रम मैथुन क्रोध ठंढे पानी से न्हाना बाहर जाना दो बार भोजन दिन में निद्रा यवारवार खटाई कटुक त्यागै शोक बकना अजीर्ण और जिस में जोर परता देखै सो न करै ३० इति शार्ङ्गधर द्वादशोऽध्यायः १२ अथ नेत्रोपचार प्रकार नेत्र रोग पर सात प्रकार औषधि कहते हैं सेक आश्च्योतन पिंडी विडाल तर्पण पुट पाक अंजन इति १ सेक विधान दूध घृत रस आदिक रोगी की आंखें मुंद वाद चा-

पीड़ा शांतिर्लघुत्वंच व्याधे रुद्रेक संक्षयः मनःस्वास्थ्यं भवेच्चिन्हं सम्यग्विस्राविते ऽसृजि ४४ व्यायाम मैथुन क्रोध शीत स्नावप्रवातकान् एकाशनं दिवा निद्रां क्षाराम्लकटु भोजनं ४५ शोकं वादमजीर्णंच त्यजेदाबल दर्शनात् इति श्री शार्ङ्गधरे उत्तर खंडे रक्त मोक्षण विधिर्नाम द्वादशोऽध्यायः १२ सेक आश्च्योतनं पिंडी विडालस्तर्पणं तथा पुटपाकोंजनं चैभिः कल्कै नेत्रमुपाचरेत् १ सेकस्तु सूक्ष्म धाराभिः सर्वस्मिन्नयने हितः मीलिताक्षस्य मर्त्यस्य प्रदेयश्चतुरंगुलात् २ सत्तापि स्नेहनो वाते रक्ते पित्ते च रोपणः लेखनश्च कफे कार्यस्तस्य मात्राऽधुनोच्यते ३ षड्वाक्शतैः स्नेहनेषु चतुर्भिश्चैव रोपणे वाक्शतैश्च त्रिभिः कार्यः सेको लेखन कर्मभिः ४ कार्यस्तु दिवसे सेको रात्रौ चात्ययिके गदे ॥

र अंगुल ऊपर से महीन धार दे औषधि गिरावै इसे सेक कहते हैं २ सेक भेद बात दूषित नेत्र रोग में स्नेहन सेक देद रक्त पित्त पर रोपण सेक पर लेखन सेक दूध घृतादि स्नेहन द्रव्य है लोध मुरेठी त्रिफलादि रोपण द्रव्य है इन्हें दूध में पीसि ले सोंठि मिरच पीपरि लेखन द्रव्य है आगे इन की मात्रा कहते हैं ३ स्नेहन सेक की मात्रा छः से रोपण सेक की चारि से लेखन तीन से मात्रा ताई रखे ४ सेकादि काल सेकन दिन में और रात्रि

वाताभिष्यंद पर सेक रंड के पत्र छाल मूल क्वाथ बकरी का दूध सुखोष्ण करि सेंके तौ वात अभिष्यंद नेत्र से दूर हो ६ पुनः छगरी का दूध सैंधव डारि सुखोष्ण करि सेंके वा हरदी देवदारु सैंधव डारि छगरी पय ते सेंके तौ अभिष्यंद वातविपर्य शुष्काक्षिपाक रोग दूर होइ ७ पित्त रक्त पर और अभिघात पर सेक लोध मुरेठी दोनों समान घृत में भूंजि दूधमें मिलाइ तप्त करि सेंक करै तौ पित्त रक्त विकार अभिघात जनित दोष दूर होइ ८ रक्ताभिष्यंद पर सेंक त्रिफला लोध मुरेठी शक्कर मोथा ये सब समान पीसि ठंढे पानी में सेंक किये रक्त अभिष्यंद दूर होइ ९ रक्ताभिष्यंद

एरंडत्वक्पत्रमूलैः शृतमाजं पयो हितं सुखोष्णं सेचनं नेत्रे वाताभिष्यंदनाशनं ६ परिषेको हितं नेत्रे पयः कोष्णं ससैंधवं रजनी दारु सिद्धं वा सैंधवेन समन्वितं ७ वाताभिष्यंदशमनं हितं मारुतपर्यये शुष्काक्षिपाके च हितमिदं सेचनकं तथा ८ सावरं मधुकं तुल्यं घृतभृष्टं सचूर्णितं छागक्षीरे घृतं सेकात्पित्तरक्ताभिघातजित् ९ त्रिफलालोध्रयष्टीभिः शर्कराभद्रमुस्तकैः पिष्टैः शीतांबुना सेको रक्ताभिष्यंदनाशनः १० लाक्षामधुकमंजिष्ठालोध्रकालानुसारिवा पुंडरीकयुतः सेको रक्ताभिष्यंदनाशनः ११ श्वेतलोध्रं घृते भृष्टं चूर्णितं पटविस्तृतं उष्णांबुना विमर्दितं सेकाच्छूलघ्नमंबके १२ अथ आश्च्योतनं कार्यं निशायां न कथंचन उन्मीलितेऽक्षिण ह्यमध्ये बिंदुभिर्द्व्यंगुलाहितं ॥ १३ ॥

पर पुनः लाख मुरेठी मजीठ लोध्र छपसा मासे तकमल ये सब पीसि पानी में सेंक करै तौ नेत्र नसे रक्ताभिष्यंद दूर हो १० नेत्रशूल पर सफेद लोध घृत से भूंजि चूर्ण करि पोटरी में बांधि उष्ण जल में बोरि बोरि आंखि की पलकन पर फेरे नेत्रशूल दूर होइ ११ आश्च्योत विधान आ-श्च्योतन कहैं बिंदु चुवावना आंखि खोलि दूध क्वाथ स्वरसादि द्रव्य पदार्थ दुइ अंगुली से बोरि आंखि में चुवाय देइ इस को आश्च्यो-न कहते हैं सो निशा समय कभी न करै ॥ १३ ॥ ॥ ॥

पिंडी विधान औषधि बांटि पिंडी करि नेत्रन पर धरि पट्टी से बांधि देइ यह पिंडी और कवलिका होती हैं सो अभिष्यंद पर और व्रन पर बांधने हैं २२ नेत्राभिष्यंद पर सिरो रेचन जिसे कफ कृत अभिष्यंद और अधि मंथ हो सो मस्तक में तेल लगाइ पसीना निकराइ नास लेइ यह मस्तक शुद्ध करने को नीका है २३ सर्वाधि मंथ पर सब अधि मंथ में शिर की फस्त ले अर्श मंथ में भौंह दग्ध करै तो आराम होइ २४ अभिष्यंदादि पर सर्वाभिष्यंद में कही द्रव्य का कल्क नेत्र पर बांधै वाताभिष्यंद में चिकनी और उस द्रव्य की पिंडी बांधै २५

पिंडी कवलिका प्रोक्ता वध्यते पट्ट वस्त्र कैः नेत्राभिष्यंद योगान सान्नरो ह्यपि निवध्यते २२ अभिष्यंदेपि मंथेच संजाते श्लेष्म संभवे स्निग्धा स्वेन्येत मागस्य शिर स्तो ह्रसौ विरेचयेत् २३ अधिमंथेषु सर्वेषु ललाटे वेधयेत्सिरां अप्रांते सर्व था मंथे भुवो स्तु परिदाहयेत् २४ वाताभिष्यंद शांत्यर्थं स्निग्धोला पिंडिका भवेत् एरंड पत्र मूलत्वग्भिर्लिला वातनाशिनी २५ पित्ताभिष्यंद नाशाय धात्री पिंडी सुखावहा महानिंब फलोद्भूता पिंडी पित्त विनाशिनी २६ शिग्रु पत्र कृता पिंडी श्लेष्माभिष्यंद नाशिनी निंब पत्र कृता पिंडी श्लेष्म पित्त हरा भवेत् २७ त्रिफला पिंडिका प्रोक्ता नाशिनी श्लेष्म पित्तयोः पिष्ट्वा कांजिक तोयेन घृत भृष्टा च पिंडिका २८ लोध्रस्य हरति क्षिप्र मभिष्यंद मसृग्दरं ॥

वात और पित्त अभिष्यंद पर रंड मूल वा छाल वा पत्र पीसि पिंडी करि नेत्र पर बांधने से वाताभिष्यंद दूर होइ आंवरे की पिंडी बांधने से पित्ताभिष्यंद दूर होइ २६ पुनः पित्ताभिष्यंद पर बकाइन के फल की पिंडी बांधे से पित्ताभिष्यंद दूर होइ २७ कफाभिष्यंद पर सहिंजन के पत्र की पिंडी बांधे से कफाभिष्यंद दूर होइ २८ कफ पित्ताभिष्यंद पर निंब पत्र वा त्रिफले की पिंडी बांधे तो कफ पित्ताभिष्यंद दूर होइ २९ रक्ताभिष्यंद पर लोध कांजी में बांटि घृत में भूनि पिंडी करि बांधे से रक्ताभिष्यंद विनाश होइ ॥ ३० ॥

नेत्र शोथ और खाज पर सोंठि नीम पत्र थोरासा सैंधो मिलाइ गुनगुनी पिंडी बांधे नेत्र सूजन खजुरी दूर होइ २९ बिडाल विधान आंखि मूं
द तले ऊपर की पलक पर लेप करै बरुनी बराइ के इसे बिडाल कहै इस की मात्रा मुख लेप समान जानो ३० सर्वाक्षि रोग पर बिडाल्ल मुरेठी गे
रू सेंधो दारु हर्दी खपरिया ये पांचों समान पानी में पीसि लेप करै तो सब नेत्राभिष्यंद जाइ ३१ पुनः रसोत जल में पीसि लेप करै वा हड सोंठि
रक्त कमल पत्र वा बच हर्दी सोंठि वा घी क्वार चीता वा अनार पत्र वा बच हर्दी सोंठि गेरू ये भिन्न भिन्न पानी में पीसि लेप किये सब नेत्र रोग

शुंठी निंब दलैः पिंडी सुखोष्णा स्वल्पसैंधवा २९ धार्या चक्षुषि संयोगा च्छोथ कंडूव्यथापहा बिडालको बहिर्लेपो नेत्रप
क्ष्म विवर्जितः तन्मात्रा सा परिज्ञेया मुखलेपविधानवत् ३० यष्टी गैरिक सिंधूत्थ दार्वी तार्क्ष्यैः समांशकैः जलपिष्टै र्बहि
र्लेपः सर्वनेत्रभयापहः ३१ रसांजनेन वा लेपः पथ्याविश्वदलैरपि कुमारिकाग्निपत्रैर्वा दाडिमी पल्लवैरपि ३२ वचा हरिद्रावि
श्वैर्वा तथा नागरगैरिकैः दग्ध्वाग्नौ सैंधवं लोध्रं मधूच्छिष्ट युते घृते ३३ पिष्टं संजन लेपाभ्यां सद्यो नेत्ररुजापहं लोहस्य पात्रे
संघृष्टो रसो निंबफलोद्भवः ३४ किंचिद्घनो बहिर्लेपा न्नेत्रबाधां व्यपोहति संचूर्ण्य मरिचं केशराज स्वरससंमर्दनात् ३५ लेपना
र्सर्वरोगाणां नाशं करोत्येषः प्रयोगराट् स्विन्नां भित्वा विनिष्पीड्य भिन्नामंजननामिकां ३६ शिलैलानत सिंधूत्थैः स क्षौद्रैः प्रति
सा हरेत् ॥

दूर होइ ३४ पुनः सैंधव लोध भूनि मोम घी में रगर अंजन करि लेप भी करै तो वेग ही नेत्र रोग अच्छे होंय ३५
पुनः नीबू रस लोह पात्र में रगर गाढा भये लेप किये नेत्र बाधा दूर होइ ३६ अर्म लेपः भंगरे के रस में मरिच को रगरि लेप करै तो अर्म रो
ग सब नाश करै यह राज प्रयोग है ३७ प्रति सारण अंजन नामिका पिरकी पर यह आंखिन की कोर पर होती है इस पिरकी पर बफा
रा दे फिरि अंगुरी से दाबि तिस पर मैनशिल इलायची तगर सैंधव धामि सहत में रगर लगावै तो पिरिकी दूर करै ॥ ३८ ॥

नेत्र पर तर्पण नेत्र संतुष्ट करने को तर्पण कहैं तर्पण योग्य जो नेत्र रूखे रूखे कठोर का शुकता युक्त हों करिन बरनी फिर इत्यात कच्छोन्मील न करैं जल दी घल वै लगै तिमिर अर्जुन फुही अभिष्यंद आधि मंथ शुक्र सिपाक सूजन बात संबंधी और विया ये रोग तर्प योग्य हैं ३८ तर्पण वर्जित दुर्दिन में अति उस काल में अति शीत काल में चिंता परिश्रम युक्त को और नेत्र उपद्रव शांति न हो ये तर्पण लायक नहीं ३९ तर्पण विधान जिस स्थान में बयारि गरमी धूरि न जाइ इन के बचाव की ठौर रोगी उताना पौढे तब उस के नेत्र के चारों ओर जो हड्डी है तिस पर उरद

अथ तर्पण कं तक्लि नेत्र हृष्टि करं परं ३७ यद्रुक्षं परिशुष्कं च नेत्रं कुटिलमाविलं शीर्णपक्ष्मा शिरोत्पात कृच्छ्रोन्मीलन संयुतं ३८ तिमिरार्जुन शुक्राद्यैरभिष्यंदाधिमंथकैः शुक्राक्षिपाक शोथाभ्यां युक्तं वात विपर्ययैः ३९ तन्नेत्रं तर्पणे योग्यं नेत्र कर्मविशारदैः दुर्दिनात्युष्ण शीतेषु चिंतायासं भ्रमेषु च ४० अशांतोपद्रवे चाक्ष्णि तर्पणं न प्रशस्यते वातातप रजो हीने देशे शीतान शायिनः ४१ आधारा माष चूर्णेन क्लिन्नेन परिमंडलौ समौ दृढावसंबाधौ कर्तव्यौ नेत्र कोशयोः ४२ पूरयेद्धृत मंडेन विलीनेन सुखोदकैः अथवा शत धौतेन सर्पिषा सोऽजे नवा ४३ निमग्नान्यक्ष पक्ष्माणि यावत्स्युस्तावदेव हि पूरयेन्मीलिते नेत्रे ततउन्मीलयेच्छनैः ४४ धारयेद्वर्त्म रोगेषु वाक्शता शतं बुधः स्वच्छे कफे संधि रोगे मात्रा पंच शतं हितं ४५

की पीठी ले मेंड बांधै जैसे कटोरी दिवली होती है तब आंखि मुंद जाइ उस में पिघला घी वा औषधिन का मंड करि क सुखोस जल वा सौवार का धोया एल वा दूध का फेन वा नौनीत इन में से कोई भरै कुछ देर में धीरे धीरे पलक मिल मिलावै जिस में सूक्ष्म सी औषधि भीतर भी जाइ ४० तर्पण मात्रा जो पलक वा पौटे के रोग पर तर्पण हो तो वाक् मात्रा ताई औषधि भरी राखै जो कफादि जन्य नेत्र में कोई व्याधि हो तो

पर्यंत औषधि स्थिर रहै सुपेदी के रोग में छसै तांई काले डेले के रोग में सात सै तांई रहै पुतरी रोग में आठ सै तांई आधि मंथ वा बात रोग में ह-
जार मात्रा तांई औषधि भरी रहै ४१ तर्पणे कफादि के उपाय जो स्निग्ध तर्पण से कफ उत्पन्न होतो यव पीसि धूम पान करावे कफ शोधन करै
४२ तर्पणे दिन प्रमाण तर्पण एक दिन वा तीन दिन वा पांच दिन करै ४३ सम्यक् तर्पण लक्षण तर्पण अच्छा हो तो सुख से सोवै जागै नेत्र
निर्मल हों कांति बढ़ै दृष्टि शुद्धि हो रोग नाश पल कें हल की ये लक्षण अच्छे तर्पण के हैं ४४ अथ तर्पण लक्षण अति तर्पण से नेत्र पानी बहावे

शुक्लेच षट् शतं कृष्णा रोगे सप्त शतमतं दृष्टि रोगेष्वष्ट शतमधिमंथेसहस्रकं ४६ सहस्रं बात रोगे षु धार्यमेवं हि तर्पणे स्नि-
ग्धेनयवपिष्टेन स्नेह दीर्घेरितंततः ४७ यथा स्वं धूम पानेन कफमस्य विशोधयेत् एकाहं वाव्यहं वापि पंचाहं चेष्यते परं ॥
४८ तर्पणे तृप्त लिंगानि नेत्रस्येमानि भावयेत् सुखस्वप्नावबोधत्वं वैशद्यं वर्णपाटनं ४९ निवृति र्व्याधि शांतिश्च क्रिया
लाघवमेवच अथसाश्रुगुरु स्निग्धं नेत्रं स्यादतितर्पिणं ५० रूक्षमसाविलं रुग्णं नेत्रं स्याद्धीन तर्पणं रूक्षस्निग्धोपचारा
भ्यामेतयोः स्यात्प्रति क्रिया ५१ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि पुटपाकस्य साधनं द्वौ विल्व मात्रौ मांसस्य पिंडौ स्निग्धौ सुपेषितौ
५२ द्रव्याणां विल्व मात्रं तु द्रवाणां कुडवो मतः तदेकस्थं समालोड्य पत्रैः सुपरि वेष्टितं ५३ पुटपाकेन तत्पक्वा गृह्णीया
त्तत्रसं बुधः तर्पणोक्त विधानेन यथावदुपचारयेत् ॥५४॥

भारी रहै चिप चिपाव ४५ हीन तर्पण लक्षण नेत्र तेज लाल मीड़ी युक्त वा रोग अशांति ४६ नेत्र रूक्ष स्निग्ध यत्न जो नेत्र चिकने होंतो रूक्ष उ-
पाय करै रूखे होंतो स्निग्ध उपाद करै ४७ पुट पाक की रीति कहते हैं हरिणादि मांस २ पल महीन करि एक पल घृतादि स्निग्ध मिलाइ एक पल स-
खी औषधि दूध वा द्रव्य पदार्थ कुडव भरके सब मिलाइ गोला बांधि यथा कार्य पत्र से वेष्टित करि कपरौटी माटी चढ़ाइ पुट पाक कर लेइ तब गो-

नेत्र पुट पाक रस धारण विधान पुट पाक रस वा स्नेह लेखन वा रोपण भेद करि ये तीन प्रकार हैं रोगी को उताना सुला नेत्र खोलि के भीतर डारे
५५ स्नेहादि भेद पुट पाक क्रिया रूखे नेत्र पर चिकना चिकने पर रूखा पुट पाक करना सबल दृष्टि पर रोपण पुट पाक योग्य है जो नेत्र में दुष्ट
रोग वा रक्त पित्त व्रण वा वायु उपद्रव हो तो आने वाले श्लोक में कही द्रव्य का वेग वेग पुट पाक करे ५६ स्नेहन पुट पाक घृत में हरिणादि मां
स वसा मज्जा मेदा औरखा औषधि का कोल्यादि गण का चूर्ण सराव एक करि पीसि गोला बांधि पुट पाक करि रस ले नेत्र में देय दो सै मात्रा

दृष्टिमध्ये निषेच्यः स्यान्नित्य मुत्तान शायिनः स्नेहनो लेखनश्चैव रोपणश्चेति सन्निधा ५५ हितः स्निग्धोति रूक्षस्य स्निग्ध
स्यापि हि लेखनः दृष्टेर्वलार्थमितरः पित्तासृक्व्रणवातनुत् ५६ सर्पिर्मांसवसामज्जामेदः स्वादौषधैः कृतः स्नेहनः पुटपा
कस्तु धार्यो द्वे वाक्शते दृशः ५७ जांगलानांयकृन्मांसैर्लेखनद्रव्यसंयुतैः कृष्णलोहरजस्ताम्रशंखविद्रुमसिंधुजैः ५८
समुद्रफेनकासीसस्रोतोजलधिवस्तुभिः लेखनो वाक्शतं धार्यस्तस्मात्तावद्धि धारणं ५९ स्तन्यजांगलमध्वाज्यतिक्तक
द्रव्यपाचितः लेखनाद्विगुणो धार्यः पुटपाकस्तु रोपणः ६० विनिरेत्तर्पणोक्तांतु क्रियां व्यापत्तिदर्शने अथवं पक्व लोह
स्य प्रान्तमंजनमाचरेत् ६१ हेमन्ते शिशिरे चैव मध्यान्हे जनमिष्यते पूर्वान्हे च परान्हे च ग्रीष्मे शरदि चेष्यते ६२

तक राखै इसे पुट पाक कहैं ५७ लेखन पुट पाक यथोचित करेजा मांस लोह चून तांबा शंख मूंगा सैंधव समुद्र फेन कसीस सुरमा बकरी के
दही का पानी पूर्वोक्त रीत पुट पाक रस नेत्र दशो मात्रा लाई राखै यह लेखन पुट पाक है ५८ रोपण पु स्त्री का दूध मृग मांस मधु घृत कुटकी
ये सब मिलाइ पुट पाक करि रस ले आंखों में देय यह रोपण पुट पाक है तीन सै मात्रा तक राखै जो पुट पाक न्यूनाधिक हो तौ नेत्र भारी रहैं
और निस्तेज का दोष उत्पन्न होइ तब कहे हुए सदृश तर्पण क्रिया करै तो पूर्व वत होइ ५९ संपक्का दोष अंजन जिस की आंखि देख भली भांति

जो अंजन लगाना फिर पांचवें दिन लगावे और यहां धारण में हेमंत शिशिर ऋतु में मध्यान्ह में लगावे ग्रीष्म शरद में पहर दिन चढ़े और पहर दिन रहे लगावे वर्षा में बरसता न हो बदरी न हो ऊष्मा अधिक न हो तब लगावे बसंत में सब समय अंजन लगाना हित है ९२ अंजन भेद अंजन तीन प्रकार का है लेखन रोपण स्नेह सो तीक्ष्ण खट्टा दो रस लेखन अंजन जानना कषाय कटु स्नेह युक्त दो रस रोपण जानो मधुर रस स्नेह युक्त प्रसाद कहैं स्नेहन जानो ९३ अंजन प्रकार गोली अंजन रस अंजन चूर्ण अंजन गोली से रसांजन श्रेष्ठ रस ते चूर्णांजन श्रेष्ठ एक से एक

२४१

वर्षासुनाभ्रेनात्युस्ले वसंतेच सदे वहि लेखनं रोपणं चैव मध्या स्यात्स्नेहनांजनं ९३ लेखनं क्षीर तीक्ष्ण म्लरसै रंजनमिष्यते कषाय तीक्ष्ण रसयुक्सस्नेहं रोपणं मतं ९४ मधुर स्नेह संपन्नमंजनंच प्रसादनं गुटिका रसचूर्णानि त्रिविधान्यंजनानिच ९५ कुर्याच्छलाकया गुल्या हीनानिच यथोत्तरं श्रांते प्ररुदिते भीते पीत मद्येन वज्वरे ९६ अजीर्णे वेगघातेच नांजनं संप्रचक्ष्यते हरेणुमात्रां कुर्वीत वर्तिं तीक्ष्णांजने भिषक् ९७ प्रमाणं मध्यमें धार्यं द्विगुणं तु मृदौ भवेत् रसत्रिधात्तमास्यात्त्रिविडंगमिता हिता ९८ मध्यमा द्विविडंगास्याद्धीना त्वेक विडंगिका वैरेचनिकचूर्णं तु द्विशलाकं विधीयते ९९ मृदोनु त्रिशलाकं स्यात्त्वतस्नः स्नेहकांजनं ॥

उत्तम है सो सलाई वा अंगुली से लगावे ९४ अंजन अयोग्य थकित रोने वाला भय भीत मद्य पिये नवीन ज्वरी अजीर्ण मूत्रादि रोधी इन्हें अंजन अयोग्य है ९५ तीक्ष्णांजन की वर्ती में बडी बीज सम मोटी बनावे मध्यम में डेढ बीज सम मृदु में दो बीज सम ९६ गीले अंजन में मात्रा तीन विडंग सम उत्तम है दो विडंग सम मध्यम है एक विडंग समान छोटी मात्रा है ९७ शुष्क वैरेचनांजन प्रमाण लेखन अंजन सलाई से नेत्र में दो वार देइ मृदु अंजन का चूर्ण तीन वार फेरे घृतादि युक्त चूर्ण चार वार देइ वैरेचन कहै जिस के लगाने से नेत्रन से पानी गिरै ॥ ९८ ॥

वा शला का प्रमाण पत्थर वा धातु की सलाई आठ अंगुल की मुकुलाकार मुख दोनों तिल समान महीन अति चिकने लेखन शला का प्रमा-
ण लेखन सलाई तांबे वा लोहे की बनावे स्नेह अंजन की सोने वा चांदी की बनावे रोपण मृदुला से अंगुरी बोरि नेत्र में आंजै ६९ अंजन स-
मय अंजन संध्या वा प्रभात काल करै सहज समय न करै न अति शीत न उस काल में न अति वायु में न बदरी में अंजन करै और नेत्र में का-
ले भाग के तरे करै ७० चंद्रोदया वर्ती शंख पंदी बेहेरे की मींगी हड मेनशिल पीपरि मिर्च कूट बच ये आठों सम भाग ले बकरी के दूध में बहु

मुखयोः कुंठिताग्रस्तथा शला का स्यादंगुलोन्मिता ७० अश्म जालोहजा वास्यात्कलया परिमंडला ताम्रलोहाश्म संजा
ता शला कालेखने मता ७१ सुवर्ण रजतोद्भूता शला का स्नेहने मता अंगुली च मृदुत्वेन कथिता रोपणे बुधैः ७२ सायं
प्रात र्वांजने स्यात्तत्सदा नैव कारयेत् नाति शीतोष्ण वाताभ्र वेलायां संप्रशस्यते ७३ कृष्ण भागादधः कुर्यादपांगं या
वदंजनं शंखनाभिर्विभीतस्य मज्जा पथ्या मनःशिला ७४ पिप्पली मरिचं कुष्ठं वचा चेति समा शकं छागी क्षीरेण सं
पिष्ट्वा वर्तिं कुर्याद्यवोन्मितां ७५ हरेणु मात्रां संघृष्य जलैः कुर्याद्यथांजनं तिमिरं मांस वृद्धिं च काचं पटल मर्वुदं ७६ रात्र्यं
धनार्बिकं पुष्पं वर्ति चंद्रोदया जयेत् पलाश पुष्प स्वरसैर्बहुशः परिभाविता ७७ करंज बीज वर्तिस्तु शुक्रादीन्छस्त्रवल्लिखेत्

ल घोटि यव भरि सेवडी बीज सम बटी बनाइ पानी में रगरि नेत्र में आंजै तो तिमिर मांस वृद्धि कांचि विंदुः पटल रोग अर्बुद रतौंधी वर्ष
भर की फुल्ली ये सब दूर होंइ ७१ शुक्रादिक पर लेखन वर्ती ढाक के फूल का रस करंज की मींगी कई वार घोटि घोटि यव स्वरूप वर्ती ब-
नाइ पानी में रगरि नेत्र में आंजै तो फुल्ली मांस वृद्धि रत को दूर करती है जैसे शस्त्र से शुद्ध हो जाती है ॥ ७७ ॥

पुनः समुद्र फेन सैंधव शंख मुर्गे के अंडे का छिलका सहिंजन वीज ये पांचों समान महीन करि जल में पीसि गोली बांध सुखाइ पानी में घिसि अंजन करे तौ शस्त्रादिक का कुछ काम नहीं रहता ७८ लेखनी दंत वर्ती हाथी घोड़ा ऊंट वराह बैल बकरा खर इन सातों दांत शंख मोती समुद्र फेन इन सब का चूरण करि जल में पीसि गोली बांधि सुखाइ पानी में घिसि अंजन करे से फुल्ली गिरि जाइ ७९ तंद्रा निवारण लेखनी वर्ती नील कमल सहिंजन बीज नाग केसर ये तीनों सम अति महीन पानी में पीसि गोली करि सुखाय पानी में घिसि आंजै तौ तंद्रा दूर हो ८०

समुद्र फेन सिंधूत्थ शंख खाडव कल्कजैः ७८ शिग्रु वीज युता वर्तिः शुक्रादीन् शस्त्र वह्नि खेनु दंते ईति वराहो ष्ट्रैशो हया जस्व रोहुगैः ७९ शंख मुक्ता वाब्धि फेन युतैः सर्वै विचूर्णितैः दंति वर्ति कला पुलहरण शुकाणां नाशिनी परा ८० नीलोत्पलं शिग्रु वीजं नाग केशर कं तथा एतत्कल्कैः कृता वर्तिः रति तंद्रां विनाशयेत् ८१ तिल पुष्पाण्य शीतिः स्युः षष्टि संख्या कणा स्तनां जाती कुसुम पंचाश न्मरिचानि च षोडश ८२ सूक्ष्मं पिष्टा जले वर्तिः कृता कुसुमि काभिधा तिमिरार्जुन शुक्राणां नाशिनी मांस वृद्धि हृत् ८३ एतस्या श्चांजने मात्रा प्रोक्ता साई हरेणुका रसांजनं हरिद्रे द्वे मालती निंव पल्लवः ८४ गोसकृद्रस संयुक्ता वर्ति र्नक्तांध्य नाशिनी धव्यक्ष पथ्या वीजानि एकद्वि त्रिगुणानि च ८५ पिष्ट्वा वर्ति र्जलैः कुर्या दंजन द्वि हरेणुक नेत्र स्रावं हर त्याशु वात रक्त रुजं तथा ८६ तुल्य माक्षिक सिंधूत्थ सिता शंख मनः शिला ॥

रोपणी कुसुम वर्ती तिल पुष्प अस्सी पीपरि दाना साठि चमेली पुष्प ५० मिर्च १६ इन्हें महीन पीसि डेढ़ मेवड़ी वीज तुल्य बटी बनाइये इसे कुसुमिका वर्ती कहैं इसे आंजे तिमिर अर्जुन फूली मांस वृद्ध सब दूर हों ८१ रतौंधी पर वर्ती रसौत हरदी दारुहरदी चमेली पत्र नीम पत्र ये पांचों समान गोवर के पानी में गोली बनाइ आंजे से रतौंधी नाश होइ ८२ नेत्र स्राव पर स्नेह वर्ती आंवरा मिंगी २ भाग हड़ मींगी ३ भाग जल में महीन पीसि दो मेवड़ी वीज सम गोली करि पानी में घिसि आंजे से पानी बहता और बात रक्त जन्य पीड़ा मिटै ॥ ८६ ॥

रस क्रिया तूतिया सोना माखी सैंधव मिश्री शंख मैनशिल गेरू समुद्र फेन मिरच ये नव नव भाग सूक्ष्म पीसि सहत मिलाइ गोली बां-
धि अंजन करे से पलक रोग तिमिर अर्बुद काच बिंदु फुली ये रोग दूर होंय ८७ शुक पर रस क्रिया वनदुग्ध शुद्ध कपूर पीसि अंजन करे दो मास
की फुली परी दूर हो ८७ तंद्रा पर लेखनी रस क्रिया सहत और घोड़ा की लार से मिरच घिस के अंजन किये तंद्रा दूर हो ८९ पुनरंजन चमे-
ली पुष्प मूंगा मरिच कुटकी वच सैंधव ये सब समान ले छाग मूत्र में गोली बांधि लगावे तो तंद्रा निवारण हो ९० सन्निपात पर लेखन रसक्रिया

गैरिकी दधि फेनंच मरिचं चेति चूर्णयेत् ८७ संयोज्य मधुना कुर्यादंजनार्थं रस क्रियां वर्त्म रोगार्म तिमिरं कांच शुक्र हरं प-
रम् ८८ वट क्षीरेण संयुक्तो मुखाः कर्पूरजः कणः क्षिप्रं मंजनतो हंति कुसुमंच द्विमासकं ८९ क्षौद्र रदनालास घृष्टे मरिचै
नेत्र मंजयेत् शांति निद्रा शमं याति तमः सूर्योदया दिनः ९० जाती पुष्पं प्रवालंच मरिचं कटुकी वचा सैंधवं वस्त मूत्रेण पिष्टं
तंद्राघ्न मंजनं ९० शिरीष बीज गोमूत्र कृष्णा मरिच सैंधवैः अंजनं स्यात्प्रबोधाय सरसो नशिल्ला वचैः ९२ दार्वी
पटोलं मधुकं सनिंबं पद्मकोत्पलं प्रपौंडरीकं चैतानि पचेत्तोये चतुर्गुणे ९३ त्रिपाद्यापादशेषं तु रसं नीत्वा पुनः पचेत्
शीते स्मिन्मधु सितां दद्यात्पादांशकां नरः ९४ रस क्रियैषा दाहाश्रु रक्त रोगरुजं हरेत् ॥

सिरस बिया पीपरि मरिच सैंधव लहसुन मैनशिल बच साती समान ले गोमूत्र में पीसि आंजे तो सन्निपात शांति हो ९१ नेत्र दाह
पर रस क्रिया दारु हर्दी परवल मुरेठी नींव पद्माख कमल स्वेत कमल साती सम भाग कूट के चौगुने पानी में क्वाथ करि चौथाई रहे
उतारि छानि फिर औटाय गाढ़ा हो सिराइ मधु मिश्री मिलाइ अंजन करे तो नेत्र जलना बहना रक्त विकार नेत्र रोग दूर होइ
॥ ९४ ॥ ॥ ॥ ॥

बा. बरुनी रोग पर रस क्रिया रसोत राल चमेली गुड़ मैनशिल समुद्र फेन सैंधव गेरु मिरच आठो सम भाग सहत देके अंजन करै तो पाक रोग बर्मचिपचिपाहट और खाज ये सब दूर हों और पलक झरता न झरै फिर जमैं ९५ तिमिर रोग पर रोपनी रस क्रिया गुरच का मारव का रस कर्ष भर मधु सैंधव मासे मासे भर सब सूक्ष्म पीसि अंजन करै तो पिल्लार्म तिमिर कांच दिंदु खजुरी लिंग नाश सपेद कुल डेले के सब रोग दूर हों ९६ अंजनांते अनोपान जो अंजन करै खाज हो तो गदा पूर्न दूध घसि लगावै तो खजुरी मिटै सहत में लगाये जल बहना दूर हो घृत

रसांजनं सर्जरसो जागीपुष्पं मनःशिला ९५ समुद्रफेनो लवणं गैरिकं मरिचानि च एतत्समांशं मधुनापिस्वा पृक्लिन्नव र्त्मनि ९६ अंजनं क्लेदकंडुघ्नं पक्ष्मणांच प्ररोहणं गुडूची स्वरसः कर्षः क्षौद्रः स्यान्माषकोन्मितं ९७ सैंधवं क्षौद्रतुल्यं स्यात्सर्वमेकत्र मर्दयेत् काचं गंडूं लिंगनाशं शुल्कं कुलगतो न्नादान् ९८ दुग्धेन कंडू क्षौद्रेण नेत्रस्रावं च सर्पिषा पुष्पतैले न तिमिरं कांजिकेन निशांधतां ९९ पुनर्नवाजयेदाशु भाकरस्तिमिरं यथा बब्बूलदलनिःक्वाथो लेहीभूतस्तदंजनात् १०० नेत्रस्रावं जयेत्स्येष मधुयुक्तो न संशयः हिज्जलस्य फलं घृष्ट्वा पानीये नित्यमंजनं १ चक्षुस्रावोपशांत्यर्थं कार्यमेतन्महौषधं केतकस्य फलं घृष्ट्वा मधुना नेत्रमंजयेत् २ वृंथत्कर्पूरसहितं स्मृतं नेत्रप्रसादनं सर्पिः क्षौद्रं चांजनं स्याच्छिरोत्पातस्य शांतये ३

युक्त से फुल्ली दूर हो तिल युक्त लगाये से तिमिर रोग दूर हो कांजी में लगाये रतौंधी दूर हो जैसे सूर्योदय से अंधकार दूर हो तैसे गदा पुरैना से अधिपान सहाय से सब नेत्र रोग दूर होते हैं ९७ नेत्र स्राव पर रोपनी रस क्रिया बबूर पत्र का क्वाथ अति गाढा भये सहत मिलाय आंजे तो निश्चय नेत्र से पानी जाना दूर हो ९८ पुनर्नेत्र स्राव पर निर्मली फल पानी में रगरि लगावै तो नेत्र से पानी बहना बंद होय १०० नेत्र शुद्ध होने के अर्थ स्नेहनी रस क्रिया निर्मली सहत में घसि किंचित कपूर मिलाइ आंजे तो नेत्र अरोग होंइ २ शिरोत्पात पर रस क्रिया घृत और सहत मिलाइ आं-

ना धूंध पर रस क्रिया सांप की चरबी शंख निर्मली ये सब खर्ल करि आंजै तौ अंधियारा दिखाई देना दूर होइ साफ दिखाई देइ ४ स्रोतन चूर्ण अंजन मुर्गे के अंडे का छिलका सपेद कांच शंख चंदन सेंधव ये कयों समान अंजन करि आंजने से फुल्ली मांसार्बुदि नाश हों ५ रतौंधी पर चूर्ण छाग के करेजी पीपरि भरि पकाइ पीपरि ले उसी मांस के रस में घसि आंजै रतौंधी न रहै ६ कंडु आदि पर मरिच अर्द्ध शाण पीपरि समुद्र फेन दो दो शाण सुरमा नव शाण ये सब द्रव्य चित्रा नक्षत्र में ले महीन सुरमा बनाइ नेत्र में आंजे से आंखि खजुवाना कांच

कृष्णसर्पवसा शंखः केतकीफलमंजनं रसक्रियेयमचिरादंधानां दर्शनप्रिया ४ दक्षांडत्वक् शिला कांचैः शंख चंदन गैरिकैः द्रव्यं रंजनयोगोयं पुष्पार्माादि विलेखने ५ कणा छागयकृन्मध्ये पक्वा तद्रसपेषिता अचिराद्धंति नक्तांध्यं तद्वत् सक्षौद्र मूषणं ६ शाणार्द्धं मरिचं द्वौच पिप्पल्यर्णवफेनयोः शाणार्द्धं सैंधवं शाणा नव सौवीरकांजनात् ७ पिष्टं सुसूक्ष्मं चित्रायां चूर्णांजनमिदं शुभं कंडुकाचकफार्तानां मलानां च विशोधनं ८ त्रिफलाया रसं कृत्वा सम्यगाज्ञाय बारिणा रक्षीयात्त-ज्जलं सर्वं त्यजेच्चूर्णमधोगतं ९ शुष्कं च तज्जलं सर्वं पर्पटीसन्निभं भवेत् निचूर्णं भावयेत्सम्यक् त्रिवेलं त्रिफला रसैः १० कर्पूरस्य रजस्तत्र दशमांशेन निःक्षिपेत् अंजयेन्नयनेनेन सर्वदोषहरं स्मृतं ११ सर्वरोगहरं चूर्णं चक्षुषोः सुखकारि च अभिनवं सौवीरं निर्दिष्टं त्रिफला रसैः १२

बिंदु कफ जन्य पीड़ा मल दूर के नेत्र को शुद्ध करै ७ सर्व नेत्ररोग पर मृदु चूर्णांजन खपरिया ले अति महीन खरल करि बासन में पानी भरि घोलि घंघोल ले पानी निताकरि और पात्र में भरि आंच में जराइ कै सुखाय लेइ सो खरल में डारि त्रिफला क्वाथ की तीन भावना देइ तब उसका दशवां अंश कपूर मिलाइ फिर घोटे सो नेत्र में आंजे से सब रोग दूर हों नेत्र सुख पावैं ८ सर्वाक्षिरोग पर सौवीर अंजन सुरमा सात बार

बा· वा स्त्री के दूध में बुझाइ अति महीन पिसाइ नेत्रांजन करे से सब नेत्र रोग दूर होंइ यह नेत्रन को निःसंदेह हित कारक है १२ सीस श
ला का विधान त्रिफला क्वाथ भंगरा रस सोंठि क्वाथ इन की पुट दिया सीसा गलाइ घी गोमूत्र सहत छगरी दूध सबनि में सात सात बार बुझाइ
शलाई बनाय नेत्र में फेर के सब हैं रोग दूर हों अतः पर और अंजनादि भी इसे लगाना भला है १३ प्रत्यंजन विधि जब सीस शलाका फेरे
से दोष दूर होके नेत्र से आसूं गिरते हैं तिस के पीछे शीतल बड़े पात्र में जल भरि थिर बोरि उस पानी में आंखि खोलि देखे फिर नेत्र धोइ

सप्त वेलं तथा स्तन्यैः स्त्रीणां सिक्तं विचूर्णितं अंजयेन्नयने तेन प्रत्यहं च सुघो हितं १३ सर्वानक्षिविकारांस्तु हन्यादेतन्न संश
यः गतदोषमपेतासुं संपश्येत्सम्यगाशुतत् १४ त्रिफलाभृंगशुंठीनां रसैस्तु हन्त्र सर्पिषा गोमूत्रमध्वजाक्षीरैः सिक्तो नागः
प्रतापिनः १५ तच्छलाका भवत्येव सर्वान्नेत्रभवान्नाशान् गतदोषमयेताश्रु संपश्यन्सम्यगंभसि १६ प्रक्षाल्याक्षि पयो
दोषं कार्यं प्रत्यंजनं ततः नवा निर्गतदोषोक्षिणधावनं संप्रयोजयेत् १७ प्रत्यंजनं तीक्ष्णतप्ते नेत्रे चूर्णः प्रसादनः शुद्धे नागे द्रुते
तुल्यं शुद्धं सूतं विनिःक्षिपेत् १८ कृष्णांजनं तयोस्तुल्यं सर्वमेकत्र चूर्णयेत् दशमांसेन कर्पूरं तस्मिंश्चूर्णे प्रदापयेत् १९ एत
त्प्रत्यंजनं नेत्रगदजिन्नयनामृतं जयपालस्य मज्जानं भावयेल्लिंबकद्रवैः २० एकविंशतिवेलं तज्ज्ञातो वर्तिं प्रकल्पयेत्
मनुष्यलालया घृष्ट्वा ततो नेत्रे तयांजयेत् २१ सर्पदृष्टविषं जित्वा संजीवयति मानवं भुक्त्वा पाणितलं घृष्ट्वा चक्षुषोर्यदि दी

प्रत्यंजन लगावे सो आगे कहेंगे २४ सदोषनेत्रपर निषेध जिस नेत्र में दोष की है तो नेत्र धुवावे क्योंकि तीक्ष्ण अंजन करने संतप्त हो तिसे
प्रत्यंजन वा प्रसादन करे सो कहते हैं २५ प्रत्यंजन चूर्ण शुद्ध सीसा गलाइ सम भाग शुद्ध पारा दे तब दो भाग सुरमा दे उतारि लेइ सब खल करि
दशवां अंश कपूर दे फिर घोटे इसे प्रत्यंजन कहैं इससे संपूर्ण नेत्र रोग नाश होते हैं और यह आंखि को अमृत है २६ सर्प विष निवारण अं
जन भीतर का अंकुर दूर किया जमाल गोटा नीबू रस में २१७ पुट दे घोटि गोली बनाइ सर्प डसे की आंखि में आंजै तो विष शांति हो मनुष्य जि·

शीतल जल प्रकार वा॰ जो मनुष्य नित प्रति तीन वेला शीतल जल से कुल्ले किया करै और मुख धोया करै और नेत्रन को सींचा करै छींटे देके वा पात्र में भरि नेत्र उन्मीलन किया करै उस मनुष्य को नेत्र बाधा कधीन होय २३ अथ ग्रंथ प्रशंसा आयुर्वेद समुद्र के विषय गूढार्थ रूपी मणि संचित है तिन को अश्विनी कुमार आत्रि वेदव्यासादिक मुनिन ने सम्यक् प्रकार स्वसंहिता शुद्धि करि रखा सा

जात रोगा विन श्यंति तिमिराणि तथैव च २२ शीतांबु पूरित मुखः प्रति वासरं यः कालत्रयेण नयनं द्वितयं जलेन आ सिंचति ध्रुव मसौ न कदाचि दक्षि रोग व्यथा विधुरतां भजते मनुष्यः २३ आयुर्वेद समुद्रस्य गूढार्थ मणि संचयं ना त्वा केश्चि द्बुधैस्तस्तु कृता विविध संहिताः २४ किंचिदर्थ ततो नीत्वा कृतेयं संहिता मया कृपा कटाक्ष विक्षेप म स्यां कुर्वंतु साधवः २५ विविध गदार्ति दरिद्र नाशिनी या हरि रमणीव करोति योग रत्नैः विलसतु शार्ङ्गधरस्य सं हिता सा कविहृदयेषु सरोज निर्मलेषु २६ अल्पायुषा मल्प धिया मिदानीं कृतः समस्तः श्रुति पाठ शक्तिः तदत्र युक्तं प्रति बीज मात्र मभ्यस्यता मात्महितं प्रयत्नात् ॥२७॥

रांश ले शार्ङ्गधर में संचय करीं इन्हें साधुजन कृपा करि देखें २५ ग्रंथ पाठ फल जिन वैद्य कविन के निर्मल हृदय कमल में कार्या योग रत्न विलास करें ते शार्ङ्गधर संहिता लक्ष्मी द्रव्य धारण करे हैं कैसी लक्ष्मी है कि रोग ग्रसित दरिद्रीन के दरिद्र को नाश करती है २६ इस कलियुग ने मनुष्यों की आयु और बुद्धि अल्प करि दई इस कारण आयुर्वेद पढने की शक्ति नहीं इसमें आत्मरक्षणार्थ इ॰

इति श्री शार्ङ्गधर सुधाकरे जयपाल विरचिते विष शोधनं समाप्तम् शुभम् ग्रंथ शुभम् भूयात् मंगल ददातु ॥ नाथ

इति श्री दामोदर सूनुना शार्ङ्गधरेण विरचितायां संहितायां
मुत्तरखंडे चिकित्सा स्थाने नेत्रामय विधाने त्रयोदशोध्यायः १३

संवत् १९३३ शाके १७९८ चैत्र मासे कृष्णपक्षे पुरणं तिथौ दशम्यां शुक्रवारे समाप्तम् ॥ लि॰ वैजनाथ नागर ब्राह्मण ॥

पुस्तकों की फ़ेहरिस्त

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
चौथी ज्ञान दोहावली	बारह मासा बलदेवप्रसाद	शुक बहत्तरी
पांचवीं रस सारिणी	कथा चित्र गुप्त	छन्दोर्णव पिङ्गल
छठी तिथि बोध	प्रबोधचन्द्रोदय नाटक	बाला बोध
सातवीं पुस्तक मानन्द-	भजनावली	हिदायतनामा माल गु-
न कृत	गीत गोविन्द नागरी	ज़ारी
भरतरी गीत	कृष्ण बाल लीला	हिदायतनामा बन्दोबस्त
सत्य नारायण की कथा	कृष्ण सागर	देवी भागवत नागरी-
टीका सहित	कायस्थ दर्पण	भगवती गीता
शार्ङ्गधर	हारीत स्मृति नागरी	ताजीरात हिन्द अर्थात्
सिद्धान्त चन्द्रिका	भगवत गीता सटीक नागरी	ऐक्ट ४५
मुहूर्त गणपति	सहस्र रजनी चरित्र औ उर्दू	ऐक्ट २४ सन् १८६१ ई०
शनिश्चर की कथा	अलिफ़ लैलासे तर्जुमा हुई	ज़ाबिते फ़ौजदारी
अमरकोष प्रथम काण्ड	रामायण राम बिलास	मजमूआ ऐक्ट लगान
अमरकोष तीनों काण्ड	कल्पसूत्र भाषा नागरी	अर्थात् जिस के साथ नीचे
भाषा टीका सहित	यमुना लहरी	लिखे हुये ऐक्ट संयुक्त हैं
अनेकार्थ प्रकाश	कर्मीशान बड़ोस	ऐक्ट २६ सन् १८६३ ई०
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	षट् पंचाशिका	ऐक्ट २४ सन् १८६५ ई०
राम कलेवा	विनय पत्रिका नागरी	ऐक्ट २६ सन् १८६५ ई०
आनन्दामृत वर्षिणी	रामायण बड़ी मोटे अक्षरों की	ऐक्ट नम्बर ४६ सन् १८६६ ई०
गङ्गा लहरी	तथा हिनाई काग़ज़ की	ऐक्ट २० सन् १८६६ ई०
दोहावली रत्नावली	वृन्द सभा नागरी	ऐक्ट २४ सन् १८७० ई०
चित्र चन्द्रिका	जातक चन्द्रिका नागरी	ऐक्ट १० सन् १८५९ ई०
कविकुल कल्पतरु भाषा	भगवद्गीता विष्णुसहस्र	ऐक्ट ५ सन् १८६१ ई०
स्त्री दर्पण	नाम सहित	ऐक्ट १० सन् १८६२ ई०
सङ्कट शिरोमणि	लघुजातक भाषा टीका सहित	ऐक्ट १८ सन् १८६९ ई०
शिवार्चन	जगद्विनोद	ऐक्ट ४६ सन् १८६७ ई०
समर बिहार विन्द्रावन	भाषा जातकालंकार	ऐक्ट नम्बर १९ सन्
औषधि सङ्ग्रह कल्पवल्ली	ज्ञान स्वरोदय	१८६० ई०
श्री दुर्गा जी मूल	निघण्ट भाषा	क़वायद रेलवे और उ-
गुल बका वली	सुरद सागर	स के साथ क़ानून भी हैं
प्रेम रत्न	ब्रज विलास	ऐक्ट १८ सन् १८७३ ई०
वन यात्रा	सिंहासन बत्तीसी	अर्थात् क़ानून लगान

पुस्तकों की फ़ेहरिस्त

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
मुमालिक मग़रबी व	पत्र दीपिका	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
शिमाली	भारत खण्डिका	मंगल कोश
ऐक्ट २१ सन् १८७४ ई०	क्षेत्र प्रकाश	
ऐक्ट १० सन् १८७२ ई०	पत्र हितैषिणी	महा भारत भाषा छन्द
	रामायण सातों काण्ड	प्रबन्ध में जो श्री मन्म-
	बाल काण्ड	हाराजाधिराज उदित
सररिश्तह तालीम	अयोध्या काण्ड	नारायण सिंह जी का-
की	आरण्य काण्ड	शी नरेश ने गोकुल
पुस्तकें	किष्किन्धा काण्ड	नाथादि कवीश्वरों से
	सुन्दर काण्ड	रचना कराय कलकत्ते
अक्षर दीपिका	लङ्का काण्ड	में छपवाया था वही
विद्याङ्कुर	उत्तर काण्ड	श्री युत माधव सिंह
बाल बोध	अक्षराभ्यास	मह॰ अमेठी नरेश की
भाषा चन्द्रोदय	भाषा तत्त्व दीपिका	सहायता और अनुग्र-
इंगिलस्तान का इतिहास	बाला भूषण	ह से इस यन्त्रालय में
गणित लता १ भाग	हिदायत नामा मुदर्रिसी	अत्युत्तम टैप के पुष्ट
तथा २ भाग	न् हल्कह बन्दी	अक्षरों में १८ पर्व
गणित प्रकाश १ भाग	शिक्षावली	बड़ी शुद्धता से छपा
तथा २	भोज प्रबन्ध सार	है ॥
तथा ३	राजनीति	बाग़ो बहार नागरी
तथा ४	स्त्रियों की हितै पत्रिका	
क्षेत्र चन्द्रिका २ भाग	धात्वर्णव	जो किताबें छप रही हैं
रेखा गणित १ भाग	अवध का भूगोल	उन के नाम नीचे लिखे हैं
तथा २ भाग	अक्षरावली	अमीर हमज़ा नागरी
बीज गणित १ भाग	पशु चिकित्सा	गुल्बे सनोबर नागरी
तथा २ भाग	कवित्त रत्नाकर	अनार्क भाषा टीका सहित
सूरज पुर की कहानी	बिहारी सत सई सटीक	निर्णय सिन्धु
	अपूर्व कथा	कृष्ण प्रिया
	वैलवी सन्ध्या	योग वाशिष्ठ
... सार	विश्राम सागर	विद्वन्मोद तरंगिणी
वर्ण प्रकाशिका	भूगोल दर्पण	भगवद्गीता सटीक